मध्यप्रदेश स्कूल लीडरशिप अकादमी
(SCERT M.P.)

प्रधानाध्यापकों के प्रशिक्षण हेतु

लीडरशिप मॉड्यूल

(वर्ष 2021 - 22)

राज्य शिक्षा केन्द्र, स्कूल शिक्षा विभाग मध्यप्रदेश

निर्देशन

श्री धनराजू एस. (आईएएस),

संचालक

राज्य शिक्षा केन्द्र, स्कूल शिक्षा विभाग, मध्यप्रदेश शासन

मार्गदर्शन

श्री ओ.एल. मण्डलोई

अपर संचालक, राज्य शिक्षा केन्द्र, स्कूल शिक्षा विभाग, मध्यप्रदेश शासन

श्री अतुल डनायक

नियंत्रक शिक्षक शिक्षा, राज्य शिक्षा केन्द्र, मध्यप्रदेश शासन

समन्वय

श्री उस्मान खान

नोडल अधिकारी, म.प्र. स्कूल लीडरशिप अकादमी एवं नियंत्रक शिक्षक प्रशिक्षण,

राज्य शिक्षा केन्द्र, स्कूल शिक्षा विभाग, मध्यप्रदेश शासन

सम्पादन

डॉ. प्रमिला सिंह

समन्वयक शिक्षक प्रशिक्षण, राज्य शिक्षा केन्द्र, मध्यप्रदेश शासन

सह-सम्पादन

श्री आयुष चौबे, तकनीकी विशेषज्ञ, राज्य शिक्षा केन्द्र, मध्यप्रदेश शासन

माडयूल निर्माण विशेषज्ञ दल

श्री राकेश देवांग, श्री मुन्नालाल शर्मा, श्री अश्विनी त्रिपाठी, ज्योति भाटिया, श्रीमती करिश्मा बाजपेई, श्रीमती शीतल शर्मा, श्री सुरेन्द्र सिंह भदौरिया, श्री शैलेन्द्र आचार्य, श्री सज्जाद अहमद कुरैशी, श्री हरीश मारण, श्री ताज फराज़ खान

माड्यूल लेखक

श्रीमती निशी शर्मा एवं श्रीमती अंजुम आरा (डाईट भोपाल), श्रीमती मुक्ता गुप्ता (डाईट सीहोर), श्री रविन्द्र राय (डाईट रायसेन), श्री आर.पी विश्वकर्मा (डाईट हटा जिला दमोह), श्री एस.के.शर्मा (डाईट कटनी), श्री राजेश सिंह चौहान (डाईट शिवपुरी), श्रीमती ममता सक्सेना (डाईट इन्दौर), श्रीमती हिमलेश ओमरे, श्रीमती स्वाती बरखेड़कर (डाईट जबलपुर), श्रीमती शीबा खान, श्रीमती राधा मिश्रा शिक्षक पीपीटीआई (प्री प्राईमरी ट्रेनिंग इन्सटीट्यूट जबलपुर), श्री केशव कुमार पाराशर (डाईट खंडवा), श्री सी.पी. शर्मा (डाईट नीमच)

लेआउट एवं ग्राफिक डिज़ाईनिंग

श्री ज़ाकिर हुसैन

धनराजू एस
(भा.प्र.से.)
संचालक
राज्य शिक्षा केन्द्र

अर्द्ध शा. पत्र क्र. :
दिनांक :
पुस्तक भवन, बी–विंग
अरेरा हिल्स, भोपाल–462011
फोन : (का.) 2768392
फैक्स : (0755)2552363
बेवसाइट : www.educationportal.mp.gov.in
ई–मेल : director-rsk@mp.gov.in

संदेश

प्रिय साथियो,

विद्यालय स्तर पर बच्चों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करते हुए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना विभाग का मुख्य उद्देश्य है। इस उद्देश्य की पूर्ति में प्रधानाध्यापकों की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस दिशा में राज्य शिक्षा केंद्र, स्कूल शिक्षा विभाग भोपाल द्वारा शिक्षक प्रशिक्षण प्रणाली को मजबूत करने पर विशेष ध्यान दिया गया है।

नीपा (एन.सी.एस.एल.) द्वारा निर्धारित प्रक्रिया और मापदंडों के अनुकूल 11 माड्यूल तैयार किए गए हैं। जो आईसीटी, आदिवासी क्षेत्र की शालाओं में अपेक्षित नेतृत्व, कोविड-19 की परिस्थिति में विद्यालय को पुनः खोलने की प्रक्रिया, मध्यप्रदेश में बालिका शिक्षा के बढ़ते कदम, विद्यालयों में मानसिक स्वास्थ्य की अवधारणा, जीवन कौशल शिक्षा एवं शाला नेतृत्व, प्रॉब्लम ऑफ ड्रग, कोविड-19 के दौरान हुए लर्निंग लॉस को कम करने हेतु किये गये नवाचार, वोकेशनल एजुकेशन, स्पोर्ट्स एण्ड इनवायरमेंट एवं ईसीसीई पर आधारित हैं। इन सभी बिंदुओं को मध्यप्रदेश की जरूरतों के अनुरूप तथा नई शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में चिन्हित किया गया है।

आशा है कि ये लीडरशिप आधारित मॉड्यूल म.प्र.तथा अन्य राज्यों के प्रधानाध्यापकों के लिए उपयोगी साबित होंगे। इन उपयोगी दस्तावेजों के निर्माण के लिए स्कूल लीडरशिप अकादमी म.प्र. की पूरी टीम, यूनिसेफ एवं सहयोगी अशासकीय संस्थाओं के सभी सदस्यों को धन्यवाद।

शुभकामनाओं सहित !

04/3/2022

धनराजू एस.
संचालक
राज्य शिक्षा केन्द्र

आमुख

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, बेहतर शाला नेतृत्व एवं प्रबंधन हेतु मध्यप्रदेश में विगत 5-6 वर्षों में राज्य स्तर पर प्रधानाध्यापक नेतृत्व विकास प्रशिक्षण आयोजित किये गए हैं। शाला नेतृत्व एवं प्रबंधन कौशलों के विकास हेतु राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा विभिन्न चरणों में आयोजित 16 दिवसीय और 10 दिवसीय प्रशिक्षण NCERT तथा NCSL NIEPA के मार्गदर्शन और गाइडलाइन के आधार पर संचालित किये गए। फलस्वरुप विद्यालयों में शैक्षिक गुणवत्ता के विभिन्न क्षेत्रों और आयामों में सार्थक बदलाव हुए हैं।

प्रथम चरण में 5 मॉड्यूल तैयार किये गये थे, जिनकी सराहना नीपा द्वारा की गई थी। इन मॉड्यूल को नीपा एनसीएसएल की वेबसाईट पर भी देखा जा सकता है इस सफलता के द्वितीय चरण में वर्ष 2021-22 में प्रधानध्यापकों, डाईट एवं रिसोर्स पर्सन के द्वारा विभिन्न कार्यशालाओं के माध्यम से मॉड्यूल लेखन का कार्य किया गया। नीपा की गाईडलाईन पर यूनिसेफ के सहयोग से द्वितीय चरण में 11 माडयूल तैयार किये गये हैं। ये मॉड्यूल नीपा (एन.सी.एस.एल.) द्वारा निर्धारित प्रक्रिया और मापदंडों के अनुकूल 11 माड्यूल तैयार किए गए हैं। जो आईसीटी, आदिवासी क्षेत्र की शालाओं में अपेक्षित नेतृत्व, कोविड-19 की परिस्थिति में विद्यालय को पुनः खोलने की प्रक्रिया, मध्यप्रदेश में बालिका शिक्षा के बढ़ते कदम, विद्यालयों में मानसिक स्वास्थ्य की अवधारणा, जीवन कौशल शिक्षा एवं शाला नेतृत्व, प्रॉब्लम ऑफ ड्रग, कोविड-19 के दौरान हुए लर्निंग लॉस को कम करने हेतु किये गये नवाचार, वोकेशनल एजुकेशन, स्पोर्ट्स एण्ड इनवायरमेंट एवं ईसीसीई पर आधारित हैं। इन सभी बिंदुओं को मध्यप्रदेश की जरूरतों के अनुरूप तथा नई शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में चिन्हित किया गया है।

इस कार्य को राज्य स्तर पर चार कार्यशालाएं आयोजित कर यूनिसेफ के सहयोग एवं शिक्षा विशेषज्ञ श्री प्रकाश देव तथा नीपा से सुश्री चारू स्मिता मलिक के मार्गदर्शन में किया गया। इसे 11 डाईट द्वारा एवं रिसोर्स पर्सन सुश्री ज्योति भाटिया, श्रीमती करिश्मा वाजपेई, श्री राकेश देवांग, श्री अश्विनी त्रिपाठी, श्री सज्जाद अहमद कुरैशी, श्री शैलेन्द्र आचार्य, श्री मुन्नालाल शर्मा, श्री सुरेन्द्र सिंह भदौरिया, श्रीमती शीतल शर्मा, श्री हरीश कुमार मारन, श्री ताज फराज खान द्वारा सतत् रूप से डाईट के साथ मिलकर अंतिम रूप दिया गया है। जिसका प्रस्तुतीकरण राज्य स्तर पर डाईट एवं विशेषज्ञों द्वारा संचालक महोदय के समक्ष किया गया। अशासकीय संस्था पीएफईएल, अजीम प्रेमजी फाउंडेशन, पीपल इंडिया संस्था से नामांकित सदस्यों द्वारा इस कार्य में सहयोग प्रदान किया गया।

संचालक राज्य शिक्षा केन्द्र श्री धनराजू एस., श्री प्रकाश देव, श्री अतुल डनायक एवं नोडल अधिकारी श्री उस्मान खान एवं प्रशिक्षण सलाहकार डॉ. प्रमिला सिंह के मार्गदर्शन में उपरोक्त माडयूल को तैयार कराने में सतत मागदर्शन प्रदान किया गया। इन माडयूल के निर्माण कार्य को मूर्त रुप प्रदान करने में श्रीमती नेहा मगरदे एवं श्री आयुष चौवे तकनीकी सलाहकार के विशेष सहयोग से सार्थक किये गये। उपरोक्त समस्त कार्य में यूनिसेफ का विशेष सहयोग प्राप्त किया गया। इसमें शिक्षा अधिकारी यूनिसेफ श्री एफ.ए.जामी धन्यवाद के पात्र हैं।

आशा है कि ये मॉड्यूल शालाओं में कार्य करने वाले प्रधानाध्यापकों तक ही सीमित नहीं रहेंगे, बल्कि ये मॉड्यूल नीपा एनसीएसएल के माध्यम से हिन्दी भाषी प्रदेश के प्राधानाध्यापकों के लिए भी उपयोगी होंगे ।

शुभकामनाओं सहित !

ओ. एल. मण्डलोई
अपर संचालक
राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल

अनुक्रमणिका

मॉड्यूल	पृष्ठ क्र.	लेखक का नाम/पता	मेंटर्स का नाम/पता
मॉड्यूल - 1 **जीवन कौशल शिक्षा** **शीर्षक :** मध्यप्रदेश में जीवन कौशल शिक्षा एवं शाला नेतृत्व भाग 1 : जीवन कौशल शिक्षा को समझना भाग 2 : उपयोग किए जाने वाले जीवन कौशलों की पहचान भाग 3 : शाला में नेतृत्वकर्ता द्वारा जीवन कौशलों का उपयोग	 09 11 19 22	**ज्योति भाटिया** पूर्व यूनिसेफ सलाहकार फ्रीलान्स कंसलटेंट, भोपाल (म.प्र.) मोबाइल- +91-9977464977 ई मेल- jyotibhatia81@gmail.com	**ज्योति भाटिया** पूर्व यूनिसेफ सलाहकार फ्रीलान्स कंसलटेंट, भोपाल (म.प्र.) मोबाइल- +91-9977464977 ई मेल- jyotibhatia81@gmail.com
मॉड्यूल - 2 **पूर्व प्राथमिक शिक्षा (चरण 1)** **शीर्षक :** मप्र में पूर्व प्राथमिक शिक्षा (ECCE) में नेतृत्व की शुरुआत भाग1 : पूर्व प्राथमिक शिक्षा को समझना भाग2 : पूर्व प्राथमिक शिक्षा की चुनौतियों और अवसरों की पहचान करना **पूर्व प्राथमिक शिक्षा (चरण 2)** **शीर्षक :** मप्र में पूर्व प्राथमिक शिक्षा (ECCE) में नेतृत्व की शुरुआत भाग 1 : प्रारंभिक साक्षरता एवं गणित की कक्षा संचालन हेतु प्रधानाध्यापक की भूमिका को चिन्हित करना भाग 2 : पूर्व प्राथमिक शिक्षा में आकलन के उद्देश्य को समझना	 28 31 36 44 45 55	**स्वाती बरखेड़कर** (डाईट जबलपुर) **राधा मिश्रा** (डाईट जबलपुर) **शीबा खान** (शिक्षक पीपीटीआई) प्री प्राईमरी ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट, जबलपुर, म.प्र.	**ज्योति भाटिया** पूर्व यूनिसेफ सलाहकार फ्रीलान्स कंसलटेंट, भोपाल (म.प्र.) मोबाइल- +91-9977464977 ई मेल- jyotibhatia81@gmail.com
मॉड्यूल - 3 **व्यावसायिक शिक्षा** **शीर्षक :** मध्यप्रदेश के विद्यालयों में व्यावसायिक शिक्षा की पहल भाग 1 : खिलौने के शिक्षा शास्त्र पर अपनी समझ विकसित करना भाग 2 : आत्मनिर्भर बनने की पहल - हस्तकला भाग 3 : बच्चों को कार्य आधारित शिक्षा देकर उनको आर्थिक रूप से सक्षम बनाना	 65 68 73 77	**ममता सक्सेना** डाईट बिजलपुर, इंदौर, म.प्र.	**सज्जाद अहमद कुरैशी** उच्च माध्यमिक शिक्षक (लेक्चरर) भौतिक शास्त्र, शासकीय मलक कन्या उमावि, शाजापुर जिला-शाजापुर मोबाइल- +91-8871427955 ईमेल- sajjadsrgrsk55@gmail.com **श्री शैलेंद्र आचार्य** शिक्षक शासकीय हायर सेकंडरी स्कूल, डिगा व माली, मंदसौर मोबाइल- +91-9753452233 ई मेल- shailendrasrgrsk93@gmail.com

मॉड्यूल - 4
मानसिक स्वास्थ्य
शीर्षक : विद्यालयों में मानसिक स्वास्थ्य की अवधारणा- मध्यप्रदेश के परिपेक्ष्य में 83
भाग 1 : मानसिक स्वास्थ्य की अवधारणा एवं महत्त्व 84
भाग 2 : परिवार, विद्यालय एवं समुदाय की भूमिका 88
भाग 3 : विद्यालय में मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के तरीकों एवं नवाचारों का विवरण 92

राजेंद्र प्रसाद विश्वकर्मा
डाईट हटा, जिला - दमोह

शीतल शर्मा
सलाहकार - लीपफॉरवार्ड
जिला - भोपाल
मोबाइल- +91 7471115858
ईमेल- write20sheetal@gmail.com

मॉड्यूल - 5
ड्रग्स के विरुद्ध जंग
शीर्षक : ड्रग्स के विरुद्ध जंग - विद्यालय के संग 100
भाग 1 : नशा क्या है एवं शरीर पर इसके दुष्प्रभावों को समझना 102
भाग 2 : विद्यालय स्तर पर नशे की लत से जूझ रहे विद्यार्थियों की पहचान करना 109
भाग 3 : नशे की लत से जूझ रहे विद्यार्थियों को नशे की लत से मुक्त करवाना 112

रविन्द्र राय
डाईट रायसेन, म.प्र.

सुरेन्द्र सिंह भदौरिया
विकासखंड अकादमिक समन्वयक,
जिला-राजगढ़
मोबाइल- +91-9770441418
ईमेल- surendrabhadoria27@gmail.com

मॉड्यूल - 6
विद्यालय में खेल वातावरण
शीर्षक : आओ करें विद्यालय में खेल वातावरण का निर्माण 125
भाग 1 : विद्यालय में खेल वातावरण के महत्व को समझें 127
भाग 2 : अभिभावकों और समुदाय के साथ सार्थक सहभागिता कर विद्यालय में खेल वातावरण निर्माण के तरीकों को समझना 133
भाग 3 : अभिभावकों और समुदाय के साथ सार्थक सहभागिता 139

मनीष जैन
डाईट शिवपुरी, म.प्र.

ताज फराज खान
माध्यमिक शिक्षक
शासकीय माध्यमिक शाला, शहीद नगर, भोपाल
संकुल केन्द्र, शासकीय कन्या उमावि, हमीदिया क्र. 2, फूल महल, भोपाल
मोबाइल- +91 99936 11091
ईमेल- tajfarazkhan@yahoo.in

मॉड्यूल - 7
बालिका शिक्षा
शीर्षक : मध्यप्रदेश में बालिका शिक्षा के बढ़ते कदम 145
भाग 1 : बालिका शिक्षा के प्रति समाज में जागरूकता पैदा करना 147
भाग 2 : बालिकाओं के ठहराव में वृद्धि करना 152
भाग 3 : बालिका शिक्षा से संबंधित शासन की विभिन्न योजनाओं को जानना 154
भाग 4 : बालिकाओं के ठहराव एवं शैक्षणिक स्तर में वृद्धि करना 157

श्रीमती मुक्ता गुप्ता
श्री धर्म सिंह
डाईट सीहोर, म.प्र.

मुन्नालाल शर्मा
उच्च श्रेणी शिक्षक
शासकीय मॉडल उमावि, कोलारस
जिला - शिवपुरी, म.प्र.
मोबाइल- +91-9329261915
ईमेल- munnalalsharma960@gmail.com

मॉड्यूल - 8
शैक्षिक नवाचार
शीर्षक : कोविड- 19 अवधि में शैक्षिक नवाचार 161
भाग 1 : कोविड काल में हुई लर्निंग लॉस पर हुए प्रमुख सर्वेक्षण 164
भाग 2 : दूरस्थ शिक्षण में चुनौतियाँ 166
भाग 3 : कोविड 19 की अवधि में बच्चों के सीखने में हुई क्षति को कम करने के लिए किए गए नवाचार 169

राजा राम अवस्थी
जिला स्रोत समूह (डाइट कटनी), म.प्र.

राकेश देवांग
सहायक परियोजना समन्वयक (अकादमिक)
कार्यालय जिला शिक्षा केन्द्र, भोपाल
जिला - भोपाल, म.प्र.
मोबाइल- +91 9826405474
ईमेल- rakeshdewang448@gmail.com

मॉड्यूल - 9
सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का बदलाव
शीर्षक : मध्यप्रदेश में शिक्षण-अधिगम और प्रौद्योगिकी 176
भाग 1 : शैक्षिक प्रौद्योगिकी (एजुकेशन टेक्नोलॉजी), सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.) का अर्थ समझना 179
भाग 2 : शिक्षण-अधिगम के लिए आईसीटी का उपयोग 185
भाग 3 : शिक्षण-अधिगम में आईसीटी के उपयोग हेतु संस्था प्रमुख की भूमिका 195

सी. पी. शर्मा
डाइट नीमच (म.प्र.) एवं मॉडयूल लेखन टीम जिला नीमच

अश्विनी कुमार त्रिपाठी
शिक्षा सलाहकार (यूनिसेफ), भोपाल, म.प्र.
मोबाइल- +91-9479315133
ईमेल- ashwanitripathiedu@gmail.com

मॉड्यूल - 10
आदिवासी क्षेत्रों की शालाओं में अपेक्षित नेतृत्व
शीर्षक : आदिवासी क्षेत्रों की शालाओं में अपेक्षित नेतृत्व 203
भाग 1 : आदिवासी बच्चों की स्कूल से बाहर की चुनौतियों को समझना 206
भाग 2 : आदिवासी बच्चों की स्कूल के अंदर की चुनौतियों को समझना 209
भाग 3 : प्रधानाध्यापक होने के नाते शाला में किये जाने वाले प्रयास 212

केशव कुमार पराशर
डॉ. अशोक कुमार नेगी
डाइट खंडवा (म.प्र.) एवं मॉडयूल लेखन टीम जिला खंडवा

करिश्मा बाजपई
पूर्व यूनिसेफ सलाहकार
फ्रीलान्स कंसलटेंट, भोपाल (म.प्र.)
मोबाइल- +91-9755380877
ईमेल- karishmamahendru@yahoo.co.in

मॉड्यूल - 11
कोविड 19 - स्कूल पुनः खोलना
शीर्षक : वर्तमान कोविड-19 की परिस्थिति में विद्यालय को पुनः खोलना 222
भाग 1 : कोविड-19 की परिस्थिति में विद्यालय को पुनः खोलने की आवश्यकता 223
भाग 2 : हितधारकों से संवाद और उनको प्रेरित करना तथा विद्यालय को पुनः खोलने में विभिन्न चुनौतियों को केस स्टडी के माध्यम से समझना 226
भाग 3 : विद्यालय को पुनः खोलने की चुनौतियों का समाधान एवं सीखने सिखाने की रणनीति तैयार करना 231

अंजुम आरा
निशी शर्मा
डाइट भोपाल, म.प्र.

हरीश कुमार मारण
प्रभारी प्रधानाध्यापक
शासकीय माध्यमिक शाला, रतनपुर सड़क, भोपाल
जिला - भोपाल, म.प्र.
मोबाइल- +91 9893553807
ईमेल- harishkumarmaran@gmail.com

मॉड्यूल – जीवन कौशल शिक्षा

भाग – 1

जीवन कौशल शिक्षा को समझना

भाग – 2

उपयोग किए जाने वाले जीवन कौशलों की पहचान

भाग – 3

शाला में नेतृत्वकर्ता द्वारा जीवन कौशलों का उपयोग

शीर्षक :
मध्यप्रदेश में जीवन कौशल शिक्षा एवं शाला नेतृत्व

उद्देश्य : इस मॉड्यूल के अंत तक सभी नेतृत्वकर्ता –

1. जीवन कौशल शिक्षा क्या है, इसे समझ सकेंगे।
2. अधिकतम उपयोग किये जाने वाले जीवन कौशलों की पहचान कर सकेंगे।
3. बतौर नेतृत्वकर्ता जीवन कौशल शिक्षा के उपयोग की आवश्यकता को चिन्हित कर सकेंगे।

सत्र परिचय

हम जब भी किसी देश के विकास को मापते हैं तो उसके लिए उस देश की 'प्रति व्यक्ति वास्तविक आय' और वहाँ कि युवाशक्ति को सबसे पहले जाँचते हैं, क्योंकि किसी भी देश के विकास का वास्तविक आधार उसका 'आर्थिक विकास' और वहाँ की 'युवाशक्ति' को माना जाता है। इसी तरह जब हम किसी देश के समाज और वहाँ रहने वाले लोगों के विकास को मापते हैं तो यह जाँचना जरूरी होता है कि वहाँ की शैक्षिक व्यवस्था किस तरह की है । क्या वहाँ की शैक्षिक व्यवस्था वहाँ के नेतृत्वकर्ताओं और बच्चों में सीखने के कौशल, साक्षरता के कौशल और प्रमुख जीवन कौशलों को बढ़ाने में मदद करती है? यदि हाँ तो निश्चित ही वहाँ की शैक्षिक व्यवस्था शिक्षा के प्रमुख उद्देश्यों (प्रमुख जीवन कौशलों और 21वीं शताब्दी के कौशलों से युक्त) को पूरा करती है ।

वैसे तो इसकी जाँच - पड़ताल करने का कोई मापन यंत्र नहीं है। परन्तु वहाँ के लोगों द्वारा किये जाने वाले व्यवहार, उनकी अभिरुचियों और ज्ञान के अवलोकन से ही यह समझा जा सकता है कि वहाँ की शिक्षण व्यवस्था कैसी है । साथ ही यह भी देखा जा सकता है कि वहाँ रहने वाले लोग कितने तार्किक हैं, कितने रचनात्मक हैं, उनका मानसिक स्वास्थ्य कैसा है, वहाँ रहने वाले लोग अपनी जीवन शैली से कितने खुश हैं और वे स्वयं की रुचि और विकास के लिए कितना समय प्रतिदिन खुद को देते हैं इत्यादि।

यह सभी संकेतक सीधे तौर पर किसी भी पाठ्यक्रम का हिस्सा नहीं होते, परन्तु किसी भी पुस्तक और उसमें शामिल पाठ इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति हेतु रखे जाते हैं। जिसमें इसकी जाँच - पड़ताल की जाती है कि क्या वहाँ के बच्चों में कुछ नया सीखने का कौशल है जो उनके स्कूली जीवन और उससे आगे के जीवन के लिए महत्वपूर्ण हैं?

इसी तरह क्या उनमें साक्षरता के कौशल हैं जो बच्चों को पढ़ने के साथ-साथ मीडिया और प्रौद्योगिकी का उपयोग करके कुछ नया ज्ञान प्राप्त करने में मदद करता है। साथ ही क्या वह बच्चे विभिन्न जीवन कौशलों का सही समय पर उपयोग करते हैं जो बच्चों को कक्षा में और दुनिया से परे आगे बढ़ने के लिए तैयार करता है?

हालाँकि जब हम इन सभी संकेतकों को गहराई से देखने की कोशिश करते हैं तो वहाँ रहने वाले लोगों की जीवन शैली और उनके द्वारा किये जाने वाले व्यवहार से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि वह समाज कैसा होगा । विशेषकर तब जब वह देश बहुसांस्कृतिक रूप से समृद्ध हो और वह अपनी विविधता के लिए जाना जाता हो। इसी

बात को ध्यान में रखते हुए नई शिक्षा नीति 2020 में कुछ बातों को प्राथमिकता के साथ रखा गया है । जिसे नीचे बने बॉक्स में पढ़ा जा सकता है ।

NEP 2020, इस नीति के आधार सिद्धांत के पेज 6 पर बताया गया है –

शैक्षिक प्रणाली का उद्देश्य अच्छे इंसानों का विकास करना है, जो तर्कसंगत विचार और कार्य करने में सक्षम हों, जिनमें करुणा और समानुभूति, साहस और लचीलापन, वैज्ञानिक चिंतन और रचनात्मक कल्पनाशक्ति, नैतिक मूल्य और आधार हों । इसका उद्देश्य ऐसे उत्पादक लोगों को तैयार करना है जो कि अपने संविधान द्वारा परिकल्पित - समावेशी और बहुलतावादी समाज के निर्माण में बेहतर तरीके से योगदान करें।

मूलभूत सिद्धांत जो बड़े स्तर पर शिक्षा प्रणाली और साथ ही व्यक्तिगत संस्थानों दोनों का मार्गदर्शन करेंगे, ये हैं -

- **हर बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृति, पहचान और उनके विकास हेतु प्रयास करना –** शिक्षकों और अभिभावकों को इन क्षमताओं के प्रति संवेदनशील बनाना जिससे वे बच्चे की अकादमिक और अन्य क्षमताओं में उसके सर्वांगीण विकास पर भी पूरा ध्यान दें ।
- **रचनात्मकता और तार्किक सोच–** तार्किक निर्णय लेने और नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए
- **नैतिकता, मानवीय और संवैधानिक मूल्य–** जैसे समानुभूती, दूसरों के लिए सम्मान, स्वच्छता, शिष्टाचार, लोकतांत्रिक भावना, सेवा की भावना, सार्वजनिक संपत्ति के लिए सम्मान, वैज्ञानिक चिंतन, स्वतंत्रता, जिम्मेदारी, बहुलतावाद, समानता और न्याय,
- **जीवन कौशल–** जैसे, आपसी संवाद, सहयोग, सामूहिक कार्य, और लचीलापन।

कीवर्ड्स – जीवन कौशल शिक्षा, 21 वीं शताब्दी के कौशल, तार्किक, रचनात्मक, समानुभूति, नई शिक्षा नीति 2020 नीति के आधारभूत सिद्धांत

भाग - 1 :
जीवन कौशल शिक्षा को समझना

उद्देश्य : मॉड्यूल के इस भाग में नेतृत्वकर्ता –

1. जीवन कौशल शिक्षा क्या है, इसे समझ सकेंगे।
2. विभिन्न जीवन कौशलों को समझ सकेंगे।

सत्र परिचय

निश्चित ही हम सभी इस बात को स्वीकार करते हैं कि किसी भी देश की मजबूत नींव का आधार वहाँ की युवाशक्ति ही होती है और जैसा कि हम जिस देश (भारत) में रहते हैं वहाँ की जनसंख्या का 19.61 प्रतिशत किशोरवय उम्र के बच्चों का है और यदि मध्यप्रदेश में देखें तो भारत की कुल आबादी का 1.32 प्रतिशत और मध्यप्रदेश की कुल आबादी का 22.04 प्रतिशत हिस्सा किशोरवय बच्चों का है। जो कि आगे जाकर युवा बनते हैं (जनगणना 2011 के अनुसार)। इसलिए जरूरी है कि हम सभी किशोरावस्था के बारे में जानें, समझें और उस अनुरूप अपनी कार्यनीति को तैयार करें।

आइए विचार करें –

1. किशोरावस्था की उम्र क्या है ?

   ....

2. किशोरावस्था में किस-किस तरह की क्षमताओं का विकास होता है ?

   ....
   ....
   ....
   ....

3. किशोरावस्था की प्रमुख चुनौतियाँ क्या हैं ?

   ....
   ....
   ....
   ....

किशोरावस्था 10 से 19 वर्ष की वह अवधि है जब किसी व्यक्ति (बच्चे) में बौद्धिक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक बदलाव बहुत तेजी से होते हैं। यही वह उम्र है जब उनमें यह सभी क्षमताएँ बहुत अधिक तेजी से विकसित होती हैं, लेकिन दुर्भाग्य से, ज्यादातर किशोर कुछ कारणों से अपनी अधिकतम क्षमताओं का उपयोग नहीं कर पाते हैं। वे कई उभरते मुद्दों जैसे ग्लोबल वार्मिंग, अकाल, गरीबी, आत्महत्या, जनसंख्या विस्फोट, शराब, नशीली दवाओं के दुरुपयोग, यौन शोषण, धूम्रपान, किशोर अपराध, असामाजिक कृत्यों आदि जैसे अन्य मुद्दों का सामना करते हैं, जिनका उन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

यह सभी कारक शिक्षित किशोरों में एक - दूसरे को पछाड़कर आगे बढ़ने की प्रतिस्पर्धा, बेरोजगारी, नौकरी खो जाने का डर आदि कुछ प्रमुख चिंताओं को बढ़ाता है जिसके परिणाम स्वरूप, वे अंधी दौड़ में शामिल हो जाते हैं । इस नई चुनौती से निपटने के लिए सामाजिक रूप से जिम्मेदार हमारी शिक्षा व्यवस्था, शिक्षा प्रणाली और उससे जुड़े लोगों को तत्काल और सकारात्मक प्रतिक्रिया देने की आवश्यकता है। इस हेतु मध्य प्रदेश शिक्षा विभाग द्वारा कक्षा 6 वीं से 8 वीं (UNICEF के सहयोग से) से और कक्षा 9 वीं से 12 वीं (UNFPA के सहयोग से) के विद्यार्थियों हेतु 'उमंग' जीवन कौशल शिक्षा कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में उक्त सभी मुद्दे जिन्हें अभी हमने पढ़ा है, उसे मॉड्यूल में और विद्यार्थियों के साथ चर्चा हेतु शामिल भी किया है।

हम सभी जानते हैं कि 'शिक्षा' हमारे लिए महत्त्वपूर्ण है, परन्तु शिक्षा जीवन को बेहतर ढंग से जीने और उसमें सहयोग देने के लिए ज्यादा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ऐसा देखा गया है कि यदि हम अपने दैनिक जीवन में 'जीवन कौशल शिक्षा' का उपयोग करते हैं तो वह हमें अपने बुनियादी कामकाज को करने और अपनी क्षमताओं को बढ़ाने में मदद करती है। जीवन कौशल शिक्षा एक व्यक्ति की क्षमताओं को बढ़ाता है जिससे वह वर्तमान समाज की जरूरतों और मांगों को पूरा करता है। साथ ही उपरोक्त मुद्दों से निपटने के लिए, किस तरह का व्यवहार किया जाना है उसके चुनाव में भी मदद करता है। जीवन कौशल शिक्षा भारत के उन भावी युवाओं के लिए एक माध्यम है, जिससे वे अपने जीवन में आने वाली कठिनाइयों और चुनौतियों को दूर कर सकेंगे ।

एक नेतृत्वकर्ता के रूप में हमें यह समझना होगा कि जीवन कौशल शिक्षा क्या है, यह हमारे किशोरों के लिए महत्त्वपूर्ण है और हमारे पाठ्य' म में भी जीवन कौशल शिक्षा को ध्यान में रखकर पुस्तकों को तैयार किया जाता है। पाठ्यक्रम के सही-सही संचालन और उस पर होने वाले तार्किक विमर्श छात्रों में सामाजिक, भावनात्मक और चिंतन / विश्लेषणात्मक कौशल को विकसित करने में मदद करता है। जिससे वे एक जिम्मेदार नागरिक बनने की दिशा में आगे बढ़ते हैं और भविष्य की चुनौतियों का सामना कर पाते हैं, और अच्छी तरह से अपना जीवन जीते हैं।

चलिए खुद से कुछ बात करें -

1. क्या एक नेतृत्वकर्ता के रूप में मुझे जीवन कौशल शिक्षा के बारे में जानना चाहिए? यदि हाँ तो क्यों और नहीं तो क्यों?

   ....

   ....

   ....

2. 'जीवन कौशल शिक्षा' क्या है?

....
....
....

3. क्या आपके प्रदेश/जिले/स्कूल में जीवन कौशल शिक्षा के लिए अलग से कोई किताब या कार्यक्रम संचालित है ?

....
....
....
.

जैसा कि अभी तक हम नई शिक्षा नीति 2020 के आधारभूत सिद्धांतों में जीवन कौशल शिक्षा के बारे में जिन प्रमुख बातों को बताया है उसे पढ़ चुके हैं और यह भी समझ चुके होंगे कि जीवन कौशल शिक्षा को देने और उसके अभ्यास करने का सही समय किशोरावस्था ही है। यही कारण है कि यह दस्तावेज वर्तमान समय की आवश्यकता को पहचान कर पारम्परिक शिक्षा व्यवस्था से अलग, बच्चों में 21वीं सदी के कौशल, क्षमताएँ और सीखने की नई विधियों को शामिल करता है। इन सभी को 21वीं सदी के समाज और भविष्य में कार्यस्थल पर सफलता के लिए जरूरी माना गया है। यह बच्चों में आवश्यक कौशलों को बढ़ाता है जिससे कि वे तेजी से बदलते डिजिटल समाज और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हो रहे बदलावों से जूझने, उनका सामना करने और उसमें सफल होने में सक्षम हो सकें। इनमें से कई कौशल ऐसे हैं जिसमें गहराई के साथ चिंतन करने और अभ्यास करने से ही वे किसी व्यक्ति में विकसित होते हैं, जैसे - विश्लेषणात्मक कौशल, कठिन समस्या को सुलझाना और टीम वर्क जैसे कौशल। यह सभी कौशल पारंपरिक शैक्षणिक कौशल जैसे - लिखना, पढ़ना, समझना, गणितीय संक्रियाओं को हल करना, प्रयोग - खोज करना इत्यादि से एकदम अलग हैं क्योंकि यह मुख्य रूप से अभ्यास - आधारित कौशल हैं, न कि ज्ञान-आधारित ।

इसी तरह से जीवन कौशल शिक्षा के बारे में वर्ष 1993 में 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' ने विस्तार से बताया है। जिसके बाद अलग-अलग संस्थाओं द्वारा और शासकीय दस्तावेजों जैसे राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में भी जीवन कौशल शिक्षा और महत्व के बारे में बताया गया है। इसके बाद 21 वीं शताब्दी के प्रमुख जीवन कौशल शिक्षा के बारे में भी वैश्विक स्तर पर दस्तावेज बनाया गया है। इस मॉड्यूल में हम विश्व स्वास्थ्य संगठन और 21 वीं शताब्दी के कौशलों पर अपनी समझ को बढ़ाने और उसकी आवश्यकता को समझने का प्रयास करेंगे ।

जैसा कि 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' (WHO) ने जीवन कौशल शिक्षा को परिभाषित किया है, जिसमें बताया है कि 'जीवन कौशल शिक्षा अनुकूलात्मक एवं सकारात्मक व्यवहार करने की वे दक्षताएँ हैं जो व्यक्ति को दैनिक जीवन की आवश्यकताओं एवं चुनौतियों का प्रभावी तरीकों से सामना करने में सक्षम / सशक्त बनाती हैं।'

इसका मतलब यह हुआ कि यदि कोई व्यक्ति अपने दिन - प्रतिदिन के जीवन में विभिन्न जीवन कौशलों का उपयोग करता है तो वह किसी भी विपरीत परिस्थिति में सकारात्मक व्यवहार करते हुए अपने जीवन में आ रही अथवा आने वाली चुनौतियों / समस्याओं का सामना बिना किसी तनाव के कर सकेगा ।

'विश्व स्वास्थ्य संगठन' ने विभिन्न 10 जीवन कौशलों को प्रमुख 3 व्यापक जीवन कौशलों में बाँटा है :

- **चिंतन/विश्लेषणात्मक कौशल :** चिंतन/विश्लेषणात्मक कौशल वह कौशल है जिसमें कोई व्यक्ति अपनी मानसिक क्षमताओं का उपयोग करके किसी परिस्थिति, घटना या अनुभव का तार्किक विश्लेषण करता है। इस कौशल में व्यक्ति सही-गलत, उचित-अनुचित, पक्ष-विपक्ष आदि का तार्किक विश्लेषण कर रचनात्मक निर्णय लेता है। यह कौशल व्यक्ति में तार्किकता, रचनात्मकता, समस्या-समाधान और निर्णय लेने की क्षमता में सुधार जैसे कौशलों को विकसित करता है।
- **सामाजिक कौशल :** सामाजिक कौशल वह कौशल है जिसमें कोई व्यक्ति स्वयं को जानने का प्रयास सबसे पहले करता है और खुद की कमियों को पहचान कर उसमें बदलाव करने का प्रयास करता है। यह कौशल व्यक्ति में दूसरों को समझते हुए (समानुभूति) उनकी मदद करने के कौशल को विकसित करता है जिससे उसमें पारस्परिक कौशल, संचार कौशल, नेतृत्व कौशल, प्रबंधन कौशल, सहयोग और टीम निर्माण जैसे कौशल विकसित होते हैं।
- **भावनात्मक कौशल :** भावनात्मक कौशल वह कौशल है जिसमें कोई व्यक्ति आत्म-प्रबंधन करना सीखता है, जिसमें भावनाओं का प्रबंधन, तनाव का प्रबंधन/उसका मुकाबला करना सीखता है और उसे विकसित करता है।

जैसा कि अभी हमने जीवन कौशल शिक्षा के व्यापक रूप को समझा है, अब हम बारी-बारी से एक-एक कौशल को पढ़ेंगे और समझने का प्रयास करेंगे कि यह कौशल क्या बता रहा है।

सामाजिक कौशल

- **स्व-जागरूकता :** अपने आप को पहचानने का कौशल। इस कौशल में व्यक्ति स्वयं के चरित्र, मूल्य, विशेषता, ताकत और कमजोरियों, इच्छा, पसंद और नापसंद की पहचान करना शामिल है। यदि हम खुद में स्व-जागरूकता कौशल को विकसित कर लेते हैं तो यह कौशल हमें यह पहचानने में मदद करता है कि हम कब तनाव में हैं या दबाव में हैं। यह कौशल अक्सर प्रभावी संवाद और पारस्परिक संबंधों के साथ-साथ दूसरों के लिए समानुभूति के कौशल को भी विकसित करने में मदद करता है।
- **समानुभूति :** दूसरों की स्थिति में स्वयं को रखकर देखना। दूसरों का जीवन कैसा है यह इसकी कल्पना करने का कौशल है। यह कौशल हमें दूसरों को समझने, स्वीकार करने और आवश्यकतानुसार उसकी मदद करने के लिए प्रेरित करता है। समानुभूति में की जाने वाली मदद में इस बात का भी ध्यान रखा जाता है कि दूसरे के सम्मान को ठेस न पहुँचे। साथ ही ऐसी परिस्थिति को भी स्वीकारने में मदद करता है जिससे हम स्वयं भी परिचित नहीं होते हैं।
- **प्रभावी संवाद / संवाद कौशल :** बातचीत को प्रभावी/बेहतर बनाना। प्रभावी संवाद का अर्थ है कि हम अपने आप को मौखिक और अमौखिक दोनों तरह से व्यक्त करने में सक्षम हों। इसका मतलब, अपनी इच्छाओं/आकांक्षाओं, विचार, डर, चिंताओं को व्यक्त करना तथा जरूरत पड़ने पर मदद एवं सलाह लेना इसमें शामिल होता है। अपनी बात को सही तरीके से रखने का कौशल और दूसरों की बात को ध्यान से सुनकर प्रतिक्रिया देने का कौशल प्रभावी संवाद कहलाता है।
- **अंतर्वैक्तिक संबंध/आपसी संबंध :** आपसी रिश्तों को बेहतर बनाने का कौशल। यह वह कौशल है जो हमें दूसरों से हमारे संबंधों को समझने और लोगों के साथ सकारात्मक तरीके से जोड़ने में मदद करता है। यह कौशल हमें दोस्तों एवं परिवार के सदस्यों से बेहतर रिश्ते बनाये रखने तथा उन्हें सुदृढ़ बनाने में मदद करता है।

चिंतन कौशल / विश्लेणात्मक कौशल

- **समालोचनात्मक चिंतन :** अपनी जानकारी व अनुभवों के आधार पर विश्लेषण करने और निर्णय लेने का कौशल। किसी भी कार्य, घटना, विचार, जानकारी/सूचना और अनुभव के आधार पर उद्देश्यपूर्ण तरीके से सकारात्मक / नकारात्मक पहलुओं का विश्लेषण करने की दक्षता समालोचनात्मक चिंतन कहलाती है। इस कौशल में जब हम किसी के द्वारा कही गई बात या दी गई जानकारी के बारे में सही-गलत की जाँच-पड़ताल कर उस पर निर्णय लेते हैं तो इसे समालोचनात्मक चिंतन कौशल कहा जाता है। समालोचनात्मक चिंतन हमें उन कारकों को पहचानने और उनका आकलन करने में मदद करता है जो हमारे या दूसरे के व्यवहार को प्रभावित करता है।
- **रचनात्मक चिंतन :** रचनात्मक तरीके से सोचना। किसी भी कार्य के प्रति नवीन सोच रखना या उसके बारे में नए तरीके से सोचना रचनात्मक चिंतन कहलाता है। रचनात्मक सोच हमें अपने अनुभवों से ऊपर उठकर, उपलब्ध विकल्पों और अपने कार्यों या गैर-कार्य के विभिन्न परिणामों का अलग नजरिये से विश्लेषण करने में सक्षम बनाती है। यह कौशल हमें निर्णय लेने और समस्या समाधान दोनों में मदद करता है। यह हमें हमारे प्रत्यक्ष अनुभव से परे देखने में मदद करता है, साथ ही हमें अपने दैनिक जीवन की स्थितियों के अनुकूल किसी समस्या की पहचान करने और लचीलेपन के साथ निर्णय लेने अथवा प्रतिक्रिया करने में मदद करता है।
- **समस्या का समाधान :** विषम परिस्थितियों में सही विकल्प के चुनाव का कौशल। यह कौशल हमें किसी भी समस्या को विस्तार से समझने, उसका विश्लेषण करने तथा उसके समाधान के विभिन्न विकल्पों को तलाशने, उचित विकल्प का चयन करने और उससे निपटने में सक्षम बनाता है, जिससे उस समस्या का रचनात्मक तरीके से प्रभावी समाधान हो सके।
- **निर्णय लेने की क्षमता :** परिस्थितियों के अनुसार निर्णय लेने का कौशल। यह वह कौशल है जो हमें अलग-अलग परिस्थितियों में रचनात्मक तरीके से निर्णय लेने में मदद करता है। किसी भी परिस्थिति में क्रमबद्ध तरीके से विकल्पों के बारे में जानकारी एकत्र करना, प्रत्येक विकल्प के फायदे एवं नुकसान के प्रभाव को जाँचकर उचित विकल्प को चुनना, निर्णय लेने का कौशल कहलाता है।

भावनात्मक कौशल

- **भावनाओं का प्रबंधन :** अपने मन की भावनाओं का प्रबंधन करना। भावनाओं का प्रबंधन कौशल में हमें अपनी और दूसरों की भावनाओं को पहचानना आना चाहिए। हमें यह भी पता रहना चाहिए कि भावनाएँ किसी भी व्यक्ति के व्यवहार को कैसे प्रभावित करती हैं। यदि हम ठीक से भावनाओं (क्रोध या दुःख जैसी तीव्र भावना) को प्रबंधित किये बिना ही प्रतिक्रिया दे देते हैं तो इससे यह भावनाएँ हमारे स्वास्थ्य और रिश्तों पर पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकती हैं।
- **तनाव का प्रबंधन :** समस्याओं के दौरान सहज रहने का कौशल। यह तनाव को प्रबंधित करने का कौशल है। जो हमें हमारे जीवन में तनाव के स्रोतों की पहचान करने तथा उसका हम पर किस प्रकार प्रभाव पड़ता है; समझाने में मदद करता है। इसमें तनाव कम करने की प्रिं या भी शामिल है जैसे - बाहरी पर्यावरण में बदलाव, तनाव से दूर रहने के तरीके सीखना आदि।

हालाँकि, जीवन कौशल असंख्य हैं परन्तु किसी व्यक्ति में यदि ऊपर वर्णित यह 10 कौशल नियमित अभ्यास के माध्यम से विकसित हो जाते हैं तो उसके व्यक्तित्व में अभूतपूर्व बदलाव देखे जा सकते हैं।

जब हम बच्चों की शिक्षा, करियर और भावी जीवन के लिए तैयार करने के बारे में सोचते हैं, तो अब सिर्फ किताब के द्वारा पढ़ाना पर्याप्त नहीं रह गया है। उन्हें 21 वीं सदी में सफलता के लिए और हमारी बदलती अर्थव्यवस्था की मांगों को पूरा करने के लिए, हमें गणित, सामाजिक अध्ययन और विज्ञान से परे जाकर खुद में ऐसे जीवन कौशलों को विकसित करने की जरूरत है जिनकी चर्चा आज विश्वभर में हो रही है। जिसे हम 21 वीं सदी के कौशलों के रूप में पुकारते और जानते हैं। 21 वीं सदी के यह कौशल जहाँ सीखने के कौशलों और साक्षरता के कौशलों के बारे में बात करता है, वहीं जीवन कौशलों को भी उतना ही महत्व देता है। जिसका उल्लेख विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा भी किया गया है ।

21वीं सदी के यह कौशल एक सर्वव्यापी विषय हैं, इसलिए इन कौशलों और उसके महत्व के बारे में आज पूरा विश्व बातचीत कर रहा है। तो, 21 वीं सदी के कौशल क्या हैं, ये क्यों मायने रखते हैं, और क्या 21 वीं सदी में सीखने की रणनीतियों को पाठ्यक्रम, मूल्यांकन और कक्षा में दिए जाने वाले निर्देश लागू कर पा रहे है या नहीं? यह समझना जरूरी है।

'21वीं सदी के कौशल ज्ञान, जीवन कौशल, करियर कौशल, आदतों और विशेषताओं से संबंधित हैं, जो आज की दुनिया में बच्चों / छात्रों की सफलता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, खासकर जब बच्चे / छात्र आगे की शिक्षा के लिए कॉलेज, कार्यक्षेत्र और वयस्क जीवन में आगे बढ़ते हैं।'

हालांकि, आज हमारे स्कूलों को बच्चों / छात्रों को उन नौकरियों / करियर के लिए तैयार करना चाहिए जो अभी तक मौजूद नहीं हैं। इसका मतलब यह हुआ कि विद्यार्थियों को ऐसे कौशलों से लैस करना होगा जो उन्हें अज्ञात करियर के लिए तैयार कर सकें और वास्तविक दुनिया में सफल बना सकें।

आज के युग में जहाँ सोशल मीडिया का उपयोग दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है उसने कई तरह की चुनौतियों को सामने लाकर खड़ा कर दिया है, जैसे - सामान्य परिस्थितियों में भी नकारात्मक सोच, आमतौर पर नकारात्मक व्यवहार करना, बेवजह तनाव में रहना, अपराधी प्रवृत्ति का बढ़ना और आत्महत्या। हालाँकि, इस इंटरनेट के युग ने बच्चों / छात्रों तक ज्ञान को बहुत सहजता से पहुँचाया है परन्तु छात्रों को बड़ी संख्या ऐसी भी है जो इन जानकारियों के संसाधन क्या हैं और क्या यह जानकारी सही है इसका विश्लेषण नहीं कर पाती है। छात्रों को यह सिखाया जाना चाहिए कि कठिन परिस्थितियों अथवा समस्याओं के समय तथ्यों और विचारों को कैसे लागू किया जाना चाहिए।

आइए, अब 21वीं सदी के कौशलों की रूपरेखा की समीक्षा करें और देखें कि कैसे स्कूल / शिक्षक इसे व्यवहार में ला सकते हैं।

इस लोकप्रिय ढांचे को '21वीं सदी के कौशल के लिए साझेदारी (The Partnership for 21st Century Skills - P21)' द्वारा डिजाइन किया गया था। P21 का मानना है कि 21वीं सदी के सीखने का प्रमुख 'आधार' किसी विषय ज्ञान को समझना भर नहीं है, बल्कि स्कूलों को उस आधार पर अतिरिक्त कौशल जिसमें लर्निंग स्किल्स, लाइफ स्किल्स और लिटरेसी स्किल्स शामिल हैं। इन सभी स्किल्स (कौशलों) में कुछ अन्य कौशल भी शामिल हैं जिसे नीचे बनी तालिका में देख सकते हैं -

21 वीं सदी के कौशल

सीखने के कौशल (Learning Skills – 4 C's)

समालोचनात्मक चिंतन (Critical Thinking)

रचनात्मकता (Creativity)

साझेदारी (Collaboration)

संवाद (Communication)

साक्षरता के कौशल (Literacy Skills - IMT)

सूचना (Information)

मीडिया (Media)

तकनीक (Technology)

जीवन कौशल (Life Skills - FLIPS)

लचीलापन और अनुकूलनशीलता (Flexibility and Adaptability)

नेतृत्व और जिमेदारी (Leadership and Responsi-bility)

पहल और स्व - निर्देशन (Initiative and Self-Direction)

उत्पादकता (Productivity)

सामाजिक कौशल और एक-दूसरे की संस्कृति से परिचय (Social Skills and Cross-Cultural Interaction)

सीखने के कौशल : 21 वीं सदी के सीखने के 'चार सी' के रूप में भी जाना जाता है, इनमें समालोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता, सहयोग और संवाद शामिल हैं।

साक्षरता कौशल : सूचना साक्षरता, मीडिया साक्षरता, प्रौद्योगिकी साक्षरता।

जीवन कौशल : लचीलापन और अनुकूलनशीलता, नेतृत्व और जिम्मेदारी, पहल और आत्म-निर्देशन, उत्पादकता, सामाजिक कौशल और एक - दूसरे की संस्कृति से परिचय।

इसी तरह विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) प्रमुख 10 मनोसामाजिक जीवन कौशलों पर ध्यान केन्द्रित करता है जिसे समय के साथ, मिलने वाले अनुभवों और सतत अभ्यास से बदला / सुधारा जा सकता है।

जरा सोचिए और बताइए –

1. जीवन कौशल शिक्षा को समझ लेने के बाद एक नेतृत्वकर्ता के रूप में आप खुद में किस तरह के बदलावों को देखते हैं?

   ....

   ....

   ....

2. एक नेतृत्वकर्ता के रूप में आप अपनी शाला में जीवन कौशल शिक्षा को कैसे शुरू कर सकते हैं?

   ....

   ....

   ....

3. जैसा कि अभी तक हमने जीवन कौशल शिक्षा के बारे में जाना और समझा है इन्हें बच्चों में विकसित करने में पाठ्यपुस्तकें किस तरह से मदद कर सकती हैं ? इस बारे में लिखिए ।

   ....

   ....

   ....

समेकन

यदि इस बात को इस तरह से देखा जाए तो नए भारत का सपना जो हम सभी देखते हैं उसकी बागडोर इन युवाओं के हाथों में ही है। परन्तु यह युवा तब तक इस बागडोर को सँभालने में सक्षम नहीं हो सकेंगे जब तक उनमें आवश्यक व्यावसायिक कौशल, जीवन कौशल, साक्षरता कौशल और सीखने के कौशलों का विकास न हो जाए। जब हम कौशलों के विकास की बात करते हैं तो यह जरूरी हो जाता है कि संबंधित कौशलों का अभ्यास हम नियमित रूप से करते रहें।

भाग - 2 :
उपयोग किए जाने वाले जीवन कौशलों की पहचान

उद्देश्य : मॉड्यूल के इस भाग में हम –

1. जीवन में उपयोग किये जाने वाले प्रमुख कौशलों की पहचान कर सकेंगे।
2. पहचाने गए प्रमुख कौशलों का दैनिक जीवन में उपयोग के बारे में जान सकेंगे।

सत्र परिचय

चलिए, तो अब थोड़ा ठहरकर यह विचार करते हैं कि यदि हम 21 वीं सदी के कौशलों को, जिन्हें मोटेतौर पर तीन मुख्य कौशल सेट या 3 एल (लर्निंग, लिट्रेसी, लाइफ स्किल्स) में बाँटा गया है, इनमें से कौन सा कौशल है जिसका उपयोग दिन-प्रतिदिन के जीवन में करते हैं । जबकि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विकास के प्रमुख आधार के रूप में हम इन्हीं कौशल सेट को देख रहे हैं। यदि इन कौशल सेट को ध्यान में रखकर हम अपनी शिक्षण योजना और शिक्षण कार्य करते हैं निश्चित ही यह कौशल बच्चों को नए ज्ञान को सीखने में, मीडिया और डिजिटल संसाधनों के माध्यम से नया ज्ञान खोज कर पढ़ने और प्राप्त करने में, साथ ही रोजमर्रा की जिंदगी को सफलतापूर्वक चलाने के लिए मददगार होगा ।

जैसा कि मॉड्यूल के पहले भाग में हम सभी ने 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' और '21 वीं सदी के कौशलों' को पढ़ा और समझा है। जिसमें जीवन कौशल तो लगभग समान ही हैं पर कुछ कौशल अलग हैं जो बच्चों / छात्रों को अपने बेहतर भविष्य के लिए तैयार करते हैं । उससे ही जुड़ा हुआ एक वीडियो जिसका शीर्षक 'टोकरी - द बास्केट' की लिंक यहाँ दी गई है। इस वीडियो लिंक को क्लिक करके इस वीडियो को देखें। वीडियो देखने के साथ ही उसकी प्रमुख बातों को अपनी नोटबुक में लिखते चलें।

https://www.youtube.com/watch?v=5qKYrajRNwo

https://www.youtube.com/watch?v=Va4sUF65ks4

सोचिए और बताइए –

1. इस वीडियो में कौन-कौन से कौशलों को आप देख सकते हैं?

....

....

....

....

.

2. आमतौर पर आपके द्वारा सबसे ज्यादा किन कौशलों का उपयोग किया जाता है?

....

....

....

3. इस वीडियो में क्या कहीं संवाद कौशल देखने को मिला? यदि हाँ तो वह सवांद किस तरह का था?

....

....

....

....

4. एक नेतृत्वकर्ता के रूप में शाला में शिक्षण के दौरान या सहकर्मियों के साथ, क्या कभी इस तरह का संवाद आपके मध्य हुआ है? यदि हाँ तो उस परिस्थिति को लिखिए।

....

....

....

....

5. ऐसे किन्हीं दो कौशलों के बारे में सोचिए और उनका नाम लिखिए जिनका उपयोग आपके द्वारा सबसे कम किया जाता है और अब आप उसे उपयोग करना शुरू करेंगे।

....

....

....

यदि हम इस वीडियो को ध्यान से देखें तो हमें सभी जीवन कौशल इस वीडियो क्लिप में देखने को मिलते हैं। और यह बहुत स्वाभाविक भी है, क्योंकि सभी जीवन कौशल आपस में एक - दूसरे से जुड़े हुए हैं और हम किसी भी जीवन कौशल को एक स्वतंत्र जीवन कौशल के रूप में नहीं देख सकते हैं। हालांकि हम सभी अपने दिन - प्रतिदिन के जीवन में लगातार एक - दूसरे से संवाद करते रहते हैं। संवाद करने के इस क्रम में अक्सर हम यह भूल जाते हैं कि संवाद हमेशा दो तरफ़ा होना चाहिए। जबकि ज्यादातर लोग एक तरफ़ा संवाद ही करते हैं । एक तरफ़ा संवाद की इस प्रक्रिया में हम अपनी बात को कह देते हैं पर सुनने वाला व्यक्ति क्या कहना चाहता है उसे सुने बिना ही अपनी प्रतिक्रिया भी देने लग जाते हैं। मुख्य रूप से संवाद कौशल, निर्णय लेने की क्षमता और भावनाओं का प्रबंधन कौशल पर बात की जाएगी ।

यदि हम इस बात पर ध्यान दें तो यह समझना बहुत आसान हो जाएगा कि हम अपने दैनिक जीवन में कई जीवन कौशलों का उपयोग करते हैं; पर जरूरी है कि हम सबसे पहले स्व - जागरूकता कौशल का ठीक तरीके से उपयोग करें। क्योंकि जब तक हम खुद के बारे में नहीं जानेंगे तब तक हम किसी भी कौशल के विकास पर ठीक तरीके से काम नहीं कर सकेंगे। क्योंकि आम जीवन में हम दूसरों के बारे में विश्लेषण करने में बहुत समय गंवा देते हैं पर खुद का विश्लेषण करने से हमेशा बचते हैं। इसलिए जरूरी है कि सबसे पहले खुद की विशेषताओं, कमजोरियों, पसंद, नापसंद, मूल्य, गुणों की पहचान करें। स्वयं के व्यक्तित्व की ऐसी कोई बात जो बेहतर है उसे बनाए रखने और व्यक्तित्व की ऐसी बातें जिसमें सुधार करने की जरूरत है, उसे पहचानकर उस पर काम करना ज्यादा जरूरी है। जब यह काम हम स्वयं कर लेंगे तब इसी प्रक्रिया को हम बच्चों और सहकर्मियों के साथ भी कर सकते हैं।

भाग - 3 :
शाला में नेतृत्वकर्ता द्वारा जीवन कौशलों का उपयोग

उद्देश्य : मॉड्यूल के इस भाग में नेतृत्वकर्ता –

नेतृत्वकर्ता के रूप में जीवन कौशल शिक्षा के उपयोग और उसके महत्व को समझ सकेंगे।

सत्र परिचय

निश्चित ही उपरोक्त की गई बातचीत के बाद यह विचार मन में आ रहा होगा कि कोविड 19 की इस महामारी के दौर में हम सभी ने विभिन्न जीवन कौशलों का उपयोग किया है। संभवतः कुछ जीवन कौशलों का उपयोग ज्यादा किया होगा और कुछ का कम। क्योंकि हम सभी कुछ कौशलों का बहुतायत में उपयोग करते हैं और कुछ कौशलों को छूकर निकल जाते हैं। जैसे - जब हम खुद को पहचानने की बात करते हैं तो हममें से कई लोगों को लगता है कि हम बहुत अच्छे वक्ता हैं पर हमारी यह विशेषता उस समय गौण हो जाती है जब हम एक अच्छे श्रोता के रूप में अपनी पहचान नहीं बना पाते हैं । हालाँकि, एक नेतृत्वकर्ता के लिए एक अच्छा वक्ता होना जरूरी है पर उससे ज्यादा एक अच्छे वक्ता के लिए एक श्रोता होना जरूरी होता है । इस बात को समझने के लिए नीचे दिए बॉक्स में लिखे अंश को पढ़ते हैं और फिर उस पर बातचीत करते हैं -

हमारी कक्षा में कई ऐसे बच्चे पढ़ते हैं जो किसी भी सवाल का जवाब झट से दे देते हैं, बाहर से आने वाले किसी व्यक्ति / अधिकारी के समक्ष बेहतर तरीके से पढ़ पाते हैं, उनका प्रस्तुतिकरण हमारे द्वारा किये जाने वाले काम को प्रदर्शित करने में मदद करता है । इसी तरह हमारी कक्षा में कुछ बच्चे ऐसे भी होते हैं जो अपनी गति से सीखते हैं और हम अक्सर उनके साथ आपत्तिजनक शब्दों और व्यवहार का उपयोग करते हैं। वे अपनी बात को कहने में समय लेते हैं और हमें लगता है कि वह बच्चा कुछ नहीं जानता क्योंकि हमारे पास समय नहीं है इसलिए हम उसे सुनने के लिए समय नहीं देते हैं ।

1. हम हमारी कक्षा में पढ़ने वाले बच्चों / छात्रों को किस आधार पर स्तरवार अलग - अलग करते हैं? क्या उन बच्चों को अनदेखा कर देते हैं जो अपनी बात कहने में समय लेते हैं?

   ....

   ....

   ....

2. कक्षा में पढ़ने वाले ऐसे बच्चे जो अपनी बात कहने में ज्यादा समय लेते हैं उनके लिए हमारे पास किस तरह की रणनीति रहती है?

....

....

3. इस तरह के बच्चों को सुनने के लिए हमें अपने अन्दर किस गुण को विकसित करना होगा ?

....

....

....

4. क्या इस तरह (धीमी गति से सीखने वाले बच्चे) के बच्चों के लिए हमारे पास कोई रचनात्मक तरीका है, जिससे वे भी अपनी आयु के अन्य बच्चों के समान स्तर पर सीख सकें और अपनी बात कह सकें?

....

....

....

यदि हमने उक्त खंड को ध्यान से पढ़ा है तो निश्चित ही कहीं न कहीं हमारी कक्षा का दृश्य भी हमारे सामने आ गया होगा। एक नेतृत्वकर्ता के रूप में हमें यह ध्यान रखना है कि जिस तरह से हम स्वयं के विकास के लिए स्व-जागरूकता कौशल और संवाद कौशल को किसी भी कौशल के विकास हेतु महत्त्वपूर्ण मान रहे हैं उसी तरह साथ काम करने वाले शिक्षक साथियों और बच्चों में भी इन गुणों का विकास होना जरूरी है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

अनिवार्य विषयों, कौशलों और क्षमताओं का शिक्षाक्रमीय एकीकरण का बिंदु 4.28, पेज 24

विद्यार्थियों को कम उम्र में 'सही को करने' के महत्व को सिखाया जाएगा, और नैतिक निर्णय लेने के लिए एक तार्किक ढांचा दिया जाएगा। बाद के वर्षों में, इन मुद्दों को विभिन्न थीम जैसे धोखाधड़ी, हिंसा, साहित्यिक चोरी, गंदगी फैलाना, सहिष्णुता, समानता, समानुभूति इत्यादि की मदद से विस्तार दिया जाएगा, जिसमें बच्चों को अपने जीवन का संचालन करने में नैतिक / नैतिक मूल्यों को अपनाने के लिए सक्षम बनाने; कई दृष्टिकोणों से एक नैतिक मुद्दे के बारे में तर्क गढ़ने और निर्णय लेने; और सभी कार्यों में नैतिक आचरण को अपनाने में सक्षम बनाने पर जोर दिया जाएगा । इस तरह विकसित हुए नैतिक बोध के चलते पारम्परिक भारतीय मूल्यों और सभी बुनियादी मानवीय और संवैधानिक मूल्यों (जैसे - सेवा, अहिंसा, स्वच्छता, सत्य, निष्काम शांति, त्याग, सहिष्णुता, विविधता, बहुलवाद, नैतिक - आचरण, लैंगिक संवेदनशीलता, बुजुर्गों के लिए सम्मान, सभी लोगों और उनकी अंतर्निहित क्षमताओं का सम्मान, पर्यावरण के प्रति सम्मान, मदद करना, शिष्टाचार, धैर्य, क्षमा, समानुभूति, करुणा, देशभक्ति, लोकतांत्रिक दृष्टिकोण, अखंडता, जिम्मेदारी, न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व को विद्यार्थियों में विकसित किया जा सकेगा।

सोचिये

1. एक नेतृत्वकर्ता के रूप में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कही गई इन सभी बातों को बच्चों में कैसे विकसित किया जा सकेगा?

....

....

....

2. क्या राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कही गई इन बातों को विषय आधारित कक्षा शिक्षण में किन्हीं नई तकनीकों को प्रयोग किया जा सकता है जिसका बच्चों को लाभ मिल सके?
3. यदि हाँ तो वह कौन सी तकनीकें हो सकती हैं और उसका संभावित क्या लाभ बच्चों को मिल सकता है?

....

....

....

....

बच्चों को कक्षा में 'जीवन कौशल शिक्षा' मिलना शुरू हो जाए; यह सुनिश्चित करना होगा और इसकी जिम्मेदारी शाला नेतृत्वकर्ता को स्वयं उठानी होगी। इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि जब कक्षा में जीवन कौशल शिक्षा पर बातचीत की जा रही हो तब वहाँ जाति, धर्म, वर्ग, लिंग, धार्मिक-आर्थिक-सामाजिक समानता को ध्यान में रखकर बातचीत की जाए जिससे कोई बच्चा आहत न हो। इस बात का प्रयास करना होगा कि यदि हमारी शाला में यह कार्यक्रम संचालित हो रहा है तो वह नियमित रूप से और जिस प्रारूप में इसके संचालन की बात की जा रही है उसी तरह संचालित हो और यदि हमारी शाला में यह कार्यक्रम संचालित नहीं हो रहा है तो इसके लिए हम प्रयास करें कि यह हमारी शाला का भी हिस्सा बन जाए।

हालाँकि कई शोध यह बताते हैं कि जीवन कौशल शिक्षा के लिए जो पाठ्यक्रम तैयार किया गया है यदि उसका संचालन ठीक तरीके से किया जाए तो उसके कई सकारात्मक परिणाम देखने को मिलते हैं। इसके लिये जरूरी है कि हम अपने शिक्षण में कुछ सरल गतिविधियों को शामिल करें जिनका उपयोग बच्चों / छात्रों में जीवन कौशलों को बढ़ाने के लिए किया जा सकता है। जो इस प्रकार हैं -

कक्षा में विषय आधारित चर्चा करना : यह एक गतिविधि, जो बच्चों / छात्रों को समस्याओं को हल करने और एक - दूसरे से सीखने अवसर प्रदान करती है । यह बच्चों / छात्रों को किसी विषय पर अपनी समझ को गहरा करने और स्वयं को उस विषय से जोड़ने में मदद करती है । यह गतिविधि बच्चों / छात्रों में सुनने, दृढ़ता से अपनी बात कहने और समानुभूति के कौशल को विकसित करती है।

ब्रेनस्टोर्मिंग / विचार-मंथन : यह गतिविधि बच्चों / छात्रों को अपने विचारों को जल्दी और सहज रूप से उत्पन्न करने और उसे प्रस्तुत करने के मौके देती है। बच्चों / छात्रों को उनकी कल्पना का उपयोग करने और लीक से हटकर सोचने में मदद करती है। अच्छी चर्चा को कक्षा में शुरू करना चाहिए जिससे कक्षा रचनात्मक रूप से सोच सके।

चर्चा में निकलकर आए सभी विचारों को कुछ मानदंडों पर रखकर उसके सकारात्मक पक्ष और नकारात्मक पक्ष का मूल्यांकन करना आवश्यक है।

रोल प्ले : यह एक मजेदार गतिविधि होने के साथ-साथ सभी को सक्रिय बनाए रखने का काम करती है और सभी बच्चों / छात्रों को उसमें भाग लेने के लिए प्रेरित करती है जिससे पूरी कक्षा उसमें शामिल हो जाती है। यह गतिविधि, यह अनुभव करने में मदद करती है कि कोई व्यक्ति वास्तविक जीवन में संभावित स्थिति को कैसे संभाल सकता है; कैसे अपनी भावनाओं को प्रबंधित करता है, कैसे समानुभूतिपूर्ण व्यवहार करता है और कैसे बढ़िया रणनीति तैयार करने का अभ्यास करता है ।

समूह में काम करना : समय सीमित होने पर समूह में काम करवाना ज्यादा उचित होता है। यह गतिविधि अधिकतम बच्चों को अपने इनपुट देने के लिए प्रेरित करती है। यह गतिविधि बच्चों / छात्रों को आपस में बातचीत की मौके देती है, जिससे वे एक - दूसरे के विचारों को बेहतर तरीके से जान पाते हैं जो एक तरह से टीम निर्माण और टीम में काम करने के कौशल को बढ़ाता है।

शैक्षिक खेल और अभिनय करना : यह मजे के लिए, सक्रिय सीखने और समृद्ध चर्चा को बढ़ावा देने के लिए करवाया जाता है । इस गतिविधि में बच्चे / छात्र अपनी बात साबित करने या अधिक अंक पाने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं। यह गतिविधि बच्चों में ज्ञान, दृष्टिकोण और कौशल के संयुक्त उपयोग की आवश्यकता को बढ़ाती है।

कहानी सुनाना : छात्रों को स्थानीय समस्याओं के बारे में सोचने में मदद कर सकता है और समालोचनात्मक चिंतन कौशल को विकसित कर सकता है। कहानियां लिखने के लिए रचनात्मक कौशल विकसित कर सकता है, या कहानियों को बताने के लिए बातचीत के माध्यम का उपयोग कर सकता है। 'कहानी सुनाना' दृश्य को उभारने, सुनने वाले को आकर्षित करने, किसी दृश्य में तुलना करने और स्वस्थ समाधान खोजने में मदद करने के मौके देती है। यह ध्यान, एकाग्रता, सुनने के कौशल को भी बढ़ाता है और धैर्य और सहनशक्ति को भी विकसित करता है।

वाद-विवाद : किसी विशेष मुद्दे को गहराई से और रचनात्मक रूप से संबोधित करने का अवसर प्रदान करता है। किसी मुद्दे पर गहरी समझ बनाने के लिए बच्चों / छात्रों के बीच वाद - विवाद करवाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, क्या किसी समुदाय में सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान पर प्रतिबंध किया जाना चाहिए। यह छात्रों को एक ऐसी स्थिति का बचाव करने की अनुमति देता है जो उनके लिए बहुत मायने रखती है। यह किसी विषय पर गहराई से सोचने और निर्णय लेने के कौशल का अभ्यास करने के अवसर प्रदान करता है।

समेकन

जैसा कि हम शुरुआत से ही बात कर रहे हैं कि विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा बताये गए कौशल किसी व्यक्ति को अनुकूल परिस्थिति में भी सकारात्मक बनाए रखने और सकारात्मक व्यवहार करने में सक्षम बनाते हैं। वहीं 21 वीं सदी के कौशल जहाँ बच्चों में जीवन कौशलों को विकसित करने की बात करते हैं वहीं साक्षरता कौशल और सीखने के कौशल बच्चों को आज के इस तकनीकी युग में सामंजस्य स्थापित करने में मदद करते हैं। 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' में विद्यार्थियों का समग्र विकास में बताया है 'शिक्षा का उद्देश्य केवल संज्ञानात्मक समझ न होकर चरित्र निर्माण और इक्कीसवीं शताब्दी के मुख्य कौशल से सुसज्जित करना है। वास्तव में ज्ञान एक छुपा हुआ खजाना है और शिक्षा व्यक्ति की प्रतिभा के साथ इसे प्राप्त करने में मदद करती है।' निश्चित ही यदि हम बच्चों को आने वाले कल के लिए तैयार कर देते हैं तो वे किसी भी मनोसामाजिक समस्या का सामना करने से खुद को बचा सकेंगे।

सन्दर्भ सूची (पुस्तक, दस्तावेज, लिंक इत्यादि, अल्फ़ाबेटिकल आर्डर में लिखें)

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
- https://k12.thoughtfullearning.com/FAQ/what-are-learning-skills
- https://k12.thoughtfullearning.com/FAQ/what-are-literacy-skills
- https://k12.thoughtfullearning.com/FAQ/what-are-life-skills
- College and career readiness, A Comprehensive Guide to wvst Century Skills
- Life Skills Education for Children and Adolescents in School by Programme on Mental Health World Health Organization Geneva 1997
- https://www.aeseducation.com/blog/what-are-wvst-century-skills
- https://en.wikipedia.org/wiki/21st_century_skills
- 21st Centuary Skills_A handbook by CBSE, Delhi
- https://www.envisionexperience.com/blog/13-essential-21st-century-skills-for-todays-students
- https://www.edglossary.org/wvst-century-skills/
- Comprehensive Life Skills Framework by UNICEF
- Significance of Life Skills education_ Contemporary Issues in Education Research – First Quarter 2017_ Volume 10, Number 1
- Umang_ Class 11th Teachers Manual by BGMS and UNFPA
- Umang_level 2_MT training Module By UNICEF

मेंटर/एक्सपर्ट सहलेखक का नाम

ज्योति भाटिया

पूर्व यूनिसेफ सलाहकार

फ्रीलान्स कंसलटेंट, भोपाल (म.प्र.)

मोबाइल- +91-9977464977

ई मेल- jyotibhatia81@gmail.com

❑ ❑ ❑

मॉड्यूल – मप्र में पूर्व प्राथमिक शिक्षा में नेतृत्व की शुरुआत

चरण – 1

भाग – 1

पूर्व प्राथमिक शिक्षा को समझना

भाग – 2

पूर्व प्राथमिक शिक्षा की चुनौतियों और अवसरों की पहचान करना

चरण – 2

भाग – 1

प्रारंभिक साक्षरता एवं गणित की कक्षा संचालन हेतु प्रधानाध्यापक की भूमिका को चिन्हित करना

भाग – 2

पूर्व प्राथमिक शिक्षा में आकलन के उद्देश्य को समझना

शीर्षक :
मप्र में पूर्व प्राथमिक शिक्षा में नेतृत्व की शुरुआत (चरण - 1 एवं चरण - 2)

उद्देश्य : मॉड्यूल के इस भाग (चरण 1) में नेतृत्वकर्ता –

1. पूर्व प्राथमिक शिक्षा की आवश्यकता को चिन्हित कर सकेंगे।
2. पूर्व प्राथमिक शिक्षा की प्रमुख चुनौतियों और अवसरों को पहचान सकेंगे।

मॉड्यूल के इस भाग (चरण 2) में नेतृत्वकर्ता –

1. प्रारंभिक साक्षरता एवं गणित की कक्षा संचालन हेतु प्रधानाध्यापक की भूमिका को चिन्हित कर सकेंगे।
2. प्रधानाध्यापक पूर्व प्राथमिक शिक्षा में आकलन के उद्देश्य को समझ सकेंगे।

सत्र परिचय

जैसा कि हम सभी जानते हैं, आज भारत में हमारे पास बड़ी संख्या में बच्चे हैं जो पहली पीढ़ी के शिक्षार्थी हैं। वर्तमान समय में अधिकांश बच्चों तक ईसीसीई की भी पहुँच नहीं है। ऐसे में इन सभी बच्चों के लिए शिक्षा प्राप्त करना कठिन होता है और आगे चलकर बच्चों का एक बड़ा हिस्सा प्रथम कक्षा में प्रवेश पाने के कुछ हफ्तों बाद ही अपने सहपाठियों से पिछड़ जाता है। जिसका प्रमुख कारण उनके घरों में शिक्षा (साक्षरता और संख्या ज्ञान) के वातावरण का नहीं होना है। जबकि किसी भी बच्चे के जीवन काल में प्रारम्भिक वर्ष महत्त्वपूर्ण होते हैं क्योंकि इस समय विकास की दर किसी अन्य जीवन काल की तुलना में अधिक तेज होती है।

कई अध्ययन यह बताते हैं कि वर्तमान में बड़े पैमाने पर बच्चे नहीं सीख रहे हैं और यह एक बड़ा संकट है । इसी तरह राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वे 2017 भी बताता है कि भारत में कक्षा 3 में पढ़ने वाले औसतन 66.7 प्रतिशत बच्चे ही भाषा विषय में अपने स्तर पर हैं जबकि मध्यप्रदेश में औसत 69.1 प्रतिशत बच्चे अपने स्तर पर हैं। परन्तु यदि थोड़ा गहराई से देखें तो मध्यप्रदेश में लगभग 48 प्रतिशत बच्चों में पढ़कर समझने के कौशल का अभाव है। यह आँकड़ा सीधे इस ओर निशाना करता है कि हमें बच्चों के साथ बुनियादी साक्षरता पर काम करने की कितनी जरूरत है।

चलिए, अब बात करते हैं कक्षा 3 के गणित विषय की। तो गणित विषय को औसतन 61.5 प्रतिशत बच्चे राष्ट्रीय स्तर पर और मध्यप्रदेश में 61.5 प्रतिशत बच्चे ही हल कर पाते हैं। तो इसका मतलब यह हुआ कि बच्चों का एक बड़ा समूह बुनियादी संख्या ज्ञान में भी कमजोर है। इसलिए इस संकट से निपटने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में जहाँ प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा को सीखने की नींव के रूप में सभी के समक्ष प्रस्तुत किया है वहीं बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को सीखने के लिए एक तात्कालिक आवश्यकता और पूर्व शर्त बताया है । यह नीति वर्तमान की 10 + 2 (6 से 18 वर्ष) वाली स्कूली व्यवस्था को 5 + 3 + 3 + 4 (3 से 18 वर्ष) के सभी बच्चों के लिए पाठ्यचर्या और शिक्षण - शास्त्रीय आधार पर एक नयी व्यवस्था में पुनर्गठित करने की बात करती है ।

चलिए खुद को जाँचें - (सही जवाब पर (✓) निशान लगाएँ)

1. वह कौन सी उम्र है जिसमें बच्चों में विकास की दर सबसे अधिक होती है ?

   1) 0 से 18 वर्ष

   2) 0 - 14 वर्ष

   3) 0 - 8 वर्ष

   4) 0 - 12 वर्ष

2. प्रारम्भिक शिक्षा में कौन सी कक्षा को शामिल किया जाता है?

   1) कक्षा तीन से पहले की कक्षाएं

   2) कक्षा दो से पहले की कक्षाएं

   3) कक्षा चार से पहले की कक्षाएं

   4) कक्षा एक से पहले की कक्षाएं

3. बुनियादी शिक्षा देने का मुख्य कारण क्या है?

   1) पढ़ना और लिखना

   2) संज्ञानात्मक विकास

   3) बच्चे का सर्वांगीण विकास

   4) शारीरिक विकास

4. बुनियादी भाषा विकास को बढ़ाने के लिए कौन सा कदम महत्त्वपूर्ण नहीं है?

   1) कक्षा की दीवारों का उपयोग करना

   2) प्रिंट समृद्ध वातावरण बनाना

   3) अनुभव साझा करना

   4) बच्चे के घर की भाषा को जगह न देना

5. बुनियादी गणितीय कौशलों को बढ़ाने के लिए कौन सा कदम महत्त्वपूर्ण नहीं है?

   1) गणित को दैनिक जीवन के साथ जोड़ना

   2) बिना अवधारणा समझाए सवालों को हल करवाना

   3) गणित को अन्य विषयों के साथ जोड़ना

   4) बच्चों की गलतियों को समझना और शिक्षण में उस अनुसार बदलाव करना

6. सीखने की नींव वाली स्टेज कौन सी है?

1) फाउन्डेशनल स्टेज

2) सेकेन्ड्री स्टेज

3) प्रिपरेटरी स्टेज

4) मिडिल स्टेज

7. नीचे दिए सिद्धांतों में यह भाषा शिक्षण का सिद्धांत नहीं है?

1) रट कर बोलना / बार-बार दोहराना

2) सुनकर समझना

3) प्रिपरेटरी समझना

4) लिखित अभिव्यक्ति

8. इनमें से क्या गणित की दक्षता नहीं है?

1) संख्याओं की समझ

2) जोड़ और घटाव

3) इबारती सवाल का श्रुत लेख

4) लम्बाई और वजन

9. ईसीसीई का पूरा नाम क्या है?

1) आरंभिक बालविकास और शिक्षा

2) बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा

3) बच्चों के लिए बाल्यावस्था और शिक्षा

4) प्रत्येक बच्चा देखभाल और शिक्षा

10. एफएलएन का पूरा नाम क्या है?

1) साक्षरता और संख्या ज्ञान की समझ

2) शुरुआती साक्षरता और संख्या ज्ञान

3) आरंभिक साक्षरता और संख्या ज्ञान

4) बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान

कीवर्ड्स - ईसीसीई (ECCE), पूर्व प्राथमिक शिक्षा, एफ़एलएन (FLN), बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान।

भाग - 1 :
पूर्व प्राथमिक शिक्षा को समझना

उद्देश्य : मॉड्यूल के इस भाग में सभी प्रतिभागी –

1. पूर्व प्राथमिक शिक्षा के राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य को समझ सकेंगे ।
2. पूर्व प्राथमिक शिक्षा क्या है, इसे समझ सकेंगे ।

परिचय

1947 में मिली आज़ादी के बाद भी भारत में रहने वाले हर वह माता-पिता जिसे हम आमजन कहते हैं, उनके मन में उनके बच्चे के प्रारंभिक वर्षों के विकास के बारे में आज भी अनेक अनसुलझे प्रश्न हैं जैसे-उसे अच्छा स्वास्थ्य, उचित पोषण, आचार-विचार, उचित वातावरण एवं बेहतरीन शिक्षा कैसे प्राप्त हो सकेगी? क्योंकि, अधिकांश परिवारों में पढ़ने-लिखने का माहौल नहीं है और लगभग सभी अभिभावक अपने परिवार के भरण-पोषण में व्यस्त रहते हैं। इसलिए, पूर्व प्राथमिक शिक्षा ही एकमात्र विकल्प है जहाँ बच्चों को स्वास्थ्य, पोषण और शिक्षा मिल सकती है।

इसी कड़ी में, जब हम पूर्व प्राथमिक शिक्षा की बात करते हैं तो आज़ादी के बाद पहली बार भारत में समय की मांग के अनुकूल शिक्षा में होने वाले परिवर्तन, शिक्षा में सुधार एवं राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली की सथापना करने के उद्देश्य से 14 जुलाई 1964 को, राष्ट्रीय शिक्षा स्तर पर **'कोठारी आयोग'** का गठन किया गया था। जिसमें पहली बार पूर्व प्राथमिक शिक्षा का उल्लेख किया था।

इस आयोग ने सरकार की शिक्षा संबंधी नीतियों, शिक्षा के राष्ट्रीय स्वरूप एवं शिक्षा के हर क्षेत्र में विकास की संभावनाओं पर विचार कर अपनी सलाह सरकार को दी। इस सलाह में आयोग के सुझाव एवं सिफारिश के भाग दो शिक्षा की संरचना और स्तर में विद्यालय शिक्षा की नवीन संरचना में 4 या 5 वर्ष की पूर्व विद्यालय शिक्षा को संरचना का हिस्सा बनाया। इसी तरह विद्यालय की शिक्षा की नवीन संरचना के संबंध में सुझाव दिया गया है कि प्राथमिक शिक्षा की अवधि 7-8 वर्ष की रखी जाए। इसे निम्न दो भागों में विभाजित किया जाये - (i) 4 या 5 वर्ष का निम्न प्राथमिक स्तर, (ii) 3 या 2 वर्ष का उच्च प्राथमिक स्तर। आयोग की सिफारिश के बाद राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के भाग 4 में ई सी सी ई (पूर्व बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा) की आवश्यकता के बारे में बताया गया। हालाँकि इसके पूर्व ही मिस मांटेसरी के सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए 1954 में मध्यप्रदेश में 'पूर्व प्राथमिक शिक्षा प्रशिक्षण केन्द्र, जबलपुर' की स्थापना की गई और बच्चों की आवश्यकता को समझते हुए प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षित करने का काम शुरू किया। इतना ही नहीं इस केन्द्र के द्वारा पूर्व प्राथमिक शिक्षा का संचालन भी किया जाना सुनिश्चित कर दिया था। मारिया मांटेसरी के अनुसार प्रत्येक बालक अपने आप में विशिष्ट है और उस बालक के सर्वतोन्मुखी विकास के लिए शिक्षक को शिक्षण शास्त्र की समझ होने के साथ ही कक्षा में बाल केन्द्रित वातावरण के निर्माण और मूल्याकंन के आनंददायी और रोचक तरीकों की पहचान भी होना चाहिए।

इसी तरह पूर्व प्राथमिक शिक्षा के संबंध में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में पूर्व प्राथमिक शिक्षा की आवश्यकता, अवधारणा और क्रियान्वयन पर एक अध्याय रखा गया है। जबकि पूर्व प्राथमिक शिक्षा के मनोविज्ञान, सीखने के क्षेत्र और आकलन की प्रक्रिया को समझने की दृष्टि से आधार पत्र भी तैयार किया गया है। जबकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में 3 वर्ष के बच्चों को शिक्षा में शामिल कर प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) की एक मजबूत बुनियाद को शामिल किया है। साथ ही सम्पूर्ण भारत में इसके विस्तार के बारे में भी बताया है ।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 पृष्ठ 74-3.10.1 प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा

प्रारंभिक बाल्यावस्था स्तर, छः से आठ साल तक की उम्र का समय, बहुत ही संवेदनशील और निर्णायक होता है, जब जीवन भर के विकास के आधार और समस्त संभावनाओं के द्वार खुलते हैं। जैसा कि शोध से पता चलता है कि मस्तिष्क की संभावनाओं के पूर्ण विकास के लिहाज से ही इसे संवेदनशील कहा जाता है। बाद की प्रवृत्तियों, मूल्यों और ज्ञान की आकांक्षा की नींव भी इसी चरण में पड़ती है। अगर इस चरण में सहयोग न मिले या उपेक्षा बरती जाए तो इसके नकारात्मक परिणाम हो सकते हैं। कई बार यह परिणाम सुधारे भी नहीं जा सकते। शाला-पूर्व शिक्षा और देखभाल की यह मांग है कि छोटे-छोटे बच्चों की उचित देखभाल हो, उनके सर्वांगीण विकास के लिए पर्याप्त अवसर और अनुभव दिए जाएं। सर्वांगीण विकास में शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, भावनात्मक विकास एवं विद्यालय के लिए तैयारी शामिल है।

बच्चों में सीखने और अपने आसपास की दुनिया को समझने की स्वाभाविक इच्छा होती है। इसलिए शुरुआती वर्षों में अधिगम बच्चों की अभिरुचियों और प्राथमिकताओं के मुताबिक़ होना चाहिए और बच्चों के अनुभवों में संदर्भित होना चाहिए, न कि औपचारिक रूप से बनाया हुआ। बच्चों को समर्थ बनाने वाला माहौल वह होता है जो बच्चों को विविध प्रकार के अनुभवों की दिशा में प्रेरित कर सके, जो बच्चों को कुछ करने, खुलकर अपने-आपको अभिव्यक्त करने के अवसर प्रदान करे। साथ ही वह सामाजिक संबंधों में रचा बसा हो जिससे उन्हें स्नेह,संरक्षण और विश्वास की अनुभूति हो। खेलकूद, संगीत, गीत, कलाओं तथा अन्य गतिविधियाँ, जो स्थानीय सामग्री, कला और ज्ञान पर आधारित हों, साथ ही, बोलने, स्वयं को अभिव्यक्त करने, अनौपचारिक सम्पर्क-संवाद के अवसर आदि इस चरण में ज्ञान के आवश्यक अंग हैं। यह आवश्यक है कि शुरुआती वर्षों की शिक्षा में वही भाषा प्रयोग में लाई जाए जिससे बच्चा अपने परिवेश में परिचित हो, वहीं अगर कक्षा बहुभाषी और अनौपचारिक हो तो बच्चों की दूसरी भाषा (अंग्रेजी) की जल्द शुरुआत से बच्चे असहज नहीं होते। यह मदद कक्षा 1 से ही शुरू होने वाली उस भाषा को समझने में भी मिलेगी जिसके माध्यम से पढ़ाई होती है। क्योंकि पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के कार्य-क्षेत्र में जो बच्चे आते हैं उनका समूह बड़ा ही विषमजातीय होता है। जिसमें शिशुओं से लेकर नर्सरी के विद्यार्थी होते हैं। यह महत्त्वपूर्ण है कि उनके लिए आयोजित की गई गतिविधियाँ और अनुभव विकासात्मक दृष्टिकोण से उपयुक्त हों।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020- पृष्ठ 9-अध्याय 1-प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षाः सीखने की नींव

1.1 बच्चों के मस्तिष्क का 85 प्रतिशत विकास 6 वर्ष की अवस्था से पूर्व ही हो जाता है। बच्चों के मस्तिष्क के उचित विकास और शारीरिक वृद्धि को सुनिश्चित करने के लिए उसके आरंभिक 6 वर्षों को

महत्त्वपूर्ण माना जाता है। वर्तमान समय में, विशेष रूप से सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि के करोड़ों बच्चों के लिए, गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा उपलब्ध नहीं है। इसलिए ईसीसीई में निवेश करने से इसकी पहुँच देश के सभी बच्चों तक हो सकती है जिससे सभी बच्चों को शैक्षिक प्रणाली में भाग लेने और तरक्की करने के समान अवसर मिल सकेंगे। ईसीसीई संभवतया, समता स्थापित करने में सबसे शक्तिशाली माध्यम हो सकता है। प्रारंभिक बाल्यावस्था विकास, देखभाल के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के सार्वभौमिक प्रावधान को जल्द से जल्द, निश्चय ही वर्ष 2030 से पूर्व, उपलब्ध किया जाना चाहिए, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि पहली कक्षा में प्रवेश पाने वाले सभी बच्चे स्कूली शिक्षा के लिए पूरी तरह से तैयार हों।

1.2 ईसीसीई में मुख्य रूप से लचीली, बहुआयामी, बहु-स्तरीय, खेल-आधारित, गतिविधि-आधारित, और खोज-आधारित शिक्षा को शामिल किया गया है। जैसे अक्षर, भाषा, संख्या, गिनती, रंग, आकार, इंडोर एवं आउटडोर खेल, पहेलियाँ और तार्किक सोच, समस्या सुलझाने की कला, चित्रकला, पेंटिंग, अन्य दृश्य कला, शिल्प, नाटक, कठपुतली, संगीत तथा अन्य गतिविधियों को शामिल करते हुए इसके साथ अन्य कार्य जैसे सामाजिक कार्य, मानवीय संवेदना, अच्छे व्यवहार, शिष्टाचार, नैतिकता, व्यक्तिगत और सार्वजनिक स्वच्छता, समूह में कार्य करना और आपसी सहयोग को विकसित करने पर भी ध्यान केन्द्रित किया गया है ईसीसीई का समग्र उद्देश्य बच्चों का शारीरिक-भौतिक विकास, संज्ञानात्मक विकास, समाज-संवेगात्मक-नैतिक विकास, संवाद के लिए प्रारंभिक भाषा, साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान के विकास में अधिकतम परिणामों को प्राप्त करना है।

जैसा कि हमने राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में रेखांकित पूर्व प्राथमिक शिक्षा की महत्त्वपूर्ण बातों को पढ़ा है। अब थोड़ा रुककर कुछ सवालों पर विचार करते हैं-

1. राष्ट्रीय स्तर के दो महत्वपूर्ण दस्तावेजों में पूर्व प्राथमिक शिक्षा के संदर्भ में कही गई बातों में क्या समानता है? किन्हीं 5 प्रमुख समानताओं को लिखिए ।

....

....

....

....

2. क्या ईसीसीई समता स्थापित करने का सबसे शक्तिशाली माध्यम हो सकता है? यदि हाँ तो उसकी 3 प्रमुख बातों को लिखिए।

....

....

....

3. पूर्व प्राथमिक शिक्षा और प्राथमिक शिक्षा के बीच क्या कोई महत्वपूर्ण संबंध है? यदि हाँ तो क्या ।

....

....

....

चलिए सवालों के जवाब लिख लेने के बाद अब हम समझते हैं कि पूर्व प्राथमिक शिक्षा किसे कहेंगे ? जैसा कि राष्ट्रीय स्तर के कई दस्तावेज दृढ़ता के साथ अपने दस्तावेज में बताते हैं कि जीवन के आरम्भिक वर्ष वृद्धि, विकास और सीखने की दृष्टि से बेहद महत्त्वपूर्ण होते हैं। इस तरह से सभी बच्चों का यह अधिकार है कि उन्हें सर्वांगीण विकास एवं वृद्धि के वे सभी अवसर मिलें जिनसे उनमें निहित क्षमताओं का भरपूर विकास हो सके। यह बात उन बच्चों पर भी लागू होती है, जिनकी शारीरिक अक्षमताओं के कारण उनकी कुछ विशिष्ट आवश्यकताएँ होती हैं। 3 से 6 वर्ष की आयु के दौरान बच्चों की जिन सर्वांगीण क्षमताओं का विकास होता है, वे विद्यालय में समायोजन एवं उनके खुशहाल जीवन के लिए बहुत ही आवश्यक होती हैं। यह औपचारिक शिक्षा का प्रथम चरण है जिसे हम पूर्व प्राथमिक शिक्षा के नाम से जानते हैं। पूर्व प्राथमिक शिक्षा आँगनवाड़ी, नर्सरी स्कूल, पूर्व-प्राथमिक विद्यालय, प्रीप्रेटरी स्कूल, किंडरगार्टन, मॉन्टेसरी स्कूल और सरकारी एवं निजी विद्यालयों के पूर्व प्राथमिक अनुभाग में अलग-अलग स्वरूप में दी जा रही है ।

> भारत के संविधान में राज्य के नीति निदेशक तत्व में बच्चों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का उपबंध 46 वाँ संशोधन अधिनियम 2002 में इस संशोधन द्वारा राज्य अनुच्छेद 45 के स्थान पर नया अनुच्छेद रखा गया है। यह अनुच्छेद उपबंधित करता है कि राज्य 6 वर्ष की आयु के सभी बालकों के पूर्व बाल्य काल की देखरेख को शिक्षा के लिए अवसर प्रदान करने के लिए उपबंध करेगा।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा का व्यापक लक्ष्य है। बच्चों का सर्वांगीण विकास और आजीवन सीखने हेतु मजबूत नींव डालना। साथ ही बच्चों को विद्यालय के लिए तैयार करना ।

संक्षेप में यदि हम ईसीसीई को समझना चाहते हैं तो यह अनौपचारिक शिक्षा है, जो कि बच्चे के जन्म से लेकर 6 वर्ष की आयु वर्ग के बालकों के स्वास्थ्य, संरक्षण, कुपोषण से बचाने का कार्यक्रम है। साथ ही यह बच्चों में सुनने-बोलने की कुशलताओं के विकास तथा भाषा एवं गणित की पूर्व तैयारी के लिए उनमें बौद्धिक, सृजनात्मक एवं शारीरिक विकास हेतु गतिविधियों से भरपूर एक संतुलित खेल आधारित कार्यक्रम है जो पढ़ने लिखने की तैयारी को महत्व देता है।

> बच्चों को समर्थ बनाने वाला माहौल वह होता है जो बच्चों को विविध प्रकार के अनुभवों की दिशा में प्रेरित कर सके, जो बच्चों को कुछ करने, खुलकर अपने-आपको अभिव्यक्त करने के अवसर प्रदान करे।
>
> **एन सी एफ 05**

एक नेतृत्वकर्ता को चाहिए कि वह बच्चों को उसके प्रारंभिक वर्षों में उपयुक्त शैक्षणिक वातावरण देने का पूरा प्रयास करे। यह वातावरण बच्चों को स्वाभाविक रूप से गतिविधियों में शामिल होने, प्रभावशाली तरीके से अपनी बात बोलने, और सुनने के तरीकों को सीखने में मददगार होगा। बच्चों के लिए ऐसे वातावरण का निर्माण करना होगा जहां वे स्वयं को महत्त्वपूर्ण, सम्मानित और सुरक्षित महसूस करें, साथ ही स्वयं के प्रति सकारात्मक भाव रख सकें। यह वातावरण बच्चों को विविध प्रकार के अनुभवों को लेने और अपने आपको खुलकर अभिव्यक्त करने के अवसर देता है।

भाग - 2 :
पूर्व प्राथमिक शिक्षा की चुनौतियों और अवसरों की पहचान करना

उद्देश्य : मॉड्यूल के इस भाग में नेतृत्वकर्ता –

1. पूर्व प्राथमिक शिक्षा की प्रमुख चुनौतियों की पहचान कर सकेंगे।
2. विभिन्न चुनौतियों के बीच से अवसरों की पहचान कर सकेंगे।

परिचय

जैसा कि देश में किए गए अनेक उपलब्धि सर्वेक्षणों के परिणामों में देखा गया है कि बच्चे इस आधारभूत अवस्था (foundational stage) के अंत तक पढ़ने, लिखने, अंकगणित करने के बुनियादी कौशल, योग्यता और दृष्टिकोण को नहीं सीख पाते हैं। जो कि एक नेतृत्वकर्ता के लिए प्रमुख चुनौती है। इसके साथ ही यह चुनौती भी जुड़ी हुई है कि प्री-स्कूल शिक्षा और प्रारंभिक प्राथमिक कक्षाओं को दो अलग-अलग चरणों में देखा जाता है जबकि हमें इसे 3 से 8 या 9 वर्ष की उम्र तक निरंतरता के रूप में देखना और उसके लिए योजना बनाना चाहिए। जबकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी आधारभूत अवस्था (foundational stage) को 5 वर्ष (3 वर्ष आंगनवाड़ी/शाला पूर्व शिक्षा और 2 वर्ष कक्षा 1 व 2 जो 6 से 8 वर्ष आयु को शामिल करता है) के लिए उपयुक्त माना है। हालांकि, इन शुरुआती वर्षों में अक्सर हम शिक्षा को पर्याप्त महत्व नहीं देते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से पूर्व, शासकीय विद्यालयों में पूर्व प्राथमिक शिक्षा (3 से 6 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों के लिए) का कोई प्रावधान नहीं था। छात्र सीधे कक्षा 1 में प्रवेश लेते और कई बार विद्यालय छोड़ भी देते थे। कुछ छात्र शासकीय विद्यालय परिसर में संचालित आंगनवाड़ी से आते हैं। इन आंगनवाड़ियों में शैक्षिक दृष्टि से सुविधाओं का अभाव रहता है। यहां शासन की अनेक योजनाएँ संचालित रहती हैं जैसे-पोषाहार योजना, पोषण एवं स्वास्थ्य परामर्श, किशोरी शक्ति परियोजना, बच्चों का टीकाकरण, मातृ वंदना योजना, स्कूल-पूर्व शिक्षा आदि । अधिकांशतः बच्चे स्कूल-पूर्व शिक्षा के अतिरिक्त शेष सभी सुविधाओं का लाभ लेते, स्कूल-पूर्व शिक्षा की कुछ थोड़ी गतिविधियां करते और चले जाते। जबकि हम सभी जानते हैं कि मस्तिष्क का लगभग 80 प्रतिशत विकास 8 साल की उम्र तक पूरा हो जाता है और स्कूल के पूर्व की शिक्षा और स्कूल में प्रारंभिक वर्षों की शिक्षा भविष्य की शिक्षा का आधार प्रदान करती हैं। ऐसे में नेतृत्वकर्ता के समक्ष कई चुनौतियाँ होंगी। जैसे -

- पूर्व प्राथमिक शिक्षा के लिए कक्षा (शिशु कक्षा)की व्यवस्था कैसी हो ?
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा की कक्षा (शिशु कक्षा) में क्या-क्या सुविधाएं दी जाएं?
- अभिभावकों को कैसे जागरूक करें कि वे अपने बच्चों को पूर्व प्राथमिक शिक्षा की कक्षा (शिशु कक्षा)में भेजें?
- अभिभावकों की पूर्व प्राथमिक शिक्षा की अवधारणा पर सकारात्मक सोच कैसे बनाएँ?

- प्रारंभिक शिक्षा हेतु शिक्षकों की भूमिका क्या हो?
- प्रारम्भिक वर्षों में बच्चे कैसे सीखते हैं?
- शिक्षक प्रशिक्षण कैसा होगा?
- क्या यह प्रशिक्षण सभी शिक्षकों को दिया जाएगा?

यदि हम इन चुनौतियों से निपटना चाहते हैं तो एक नेतृत्वकर्ता के रूप में हमारा अपना दृष्टिकोण होना बहुत जरूरी है। जिसमें उक्त प्रश्नों के जवाब हम खुद खोज सकें। संभवतः इन प्रश्नों के जवाबों के लिए हमें अपने विद्यालय में आने वाले बच्चों से, शिक्षक साथियों से, और उनके माता-पिता से बातचीत करना होगा। तो चलिए, नीचे दिए सवालों के जवाब खोजते हैं-

एक नेतृत्वकर्ता के रूप में आप अपनी शाला में 'पूर्व प्राथमिक शिक्षा की कक्षा' को कैसे आकर्षक बनाएंगे?

....

....

....

....

कक्षा को आकर्षक बनाते समय किन प्रमुख 3 बातों का ध्यान रखेंगे?

....

....

....

....

3 वर्ष का बच्चा जब पहली बार पूर्व प्राथमिक कक्षा में आता है तो इसके पूर्व वह घर में, माता-पिता से, आसपास के वातावरण से कुछ न कुछ सीख कर आता है। जिस तरह का वातावरण बच्चे को उसके घर व आसपास में मिलता है उसी तरह से वह अवलोकन कर सीखता है। अतः नेतृत्वकर्ता का दायित्व हो जाता है कि वह सीखने का सकारात्मक वातावरण पूर्व प्राथमिक कक्षा के लिए तैयार करें, साथ ही पर्याप्त संसाधन व व्यवस्थाएं सुनिश्चित करे। जैसे -

- कमरा स्वच्छ व आकर्षक हो ।
- बच्चों के लिए स्वच्छ पेयजल व स्वच्छ शौचालय की व्यवस्था हो।
- बच्चों की देखभाल और शिक्षण हेतु सुरक्षित वातावरण हो।
- कक्षा का वातावरण स्नेह, संरक्षण और विश्वास से भरा हो।

- बच्चे के उचित स्वास्थ्य, पोषण की व्यवस्था हो।
- नियमित स्वास्थ्य परीक्षण की व्यवस्था हो।
- अभिभावकों से सतत सम्पर्क किया जाता हो।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा से प्रशिक्षित शिक्षकों की व्यवस्था हो।
- सीखने के पर्याप्त अवसर की उपलब्धता हो।

चलिए अब बात करते हैं कि एक नेतृत्वकर्ता विभिन्न चुनौतियों के बीच से अवसरों की पहचान कैसे कर सकते हैं? इसके लिए दो अलग-अलग केस स्टडी को पढ़ते हैं और विचार करते हैं कि यहां किस तरह के नेतृत्व की आवश्यकता है।

केस स्टडी 1-नेतृत्वकर्ता द्वारा शिक्षकों का मार्गदर्शन

जबलपुर में स्थित 'शासकीय पूर्व प्राथमिक प्रशिक्षण संस्थान' के प्रशिक्षणार्थियों का अवलोकन करने पर पाया कि विनीता अपने सभी कार्यों में दक्ष है। वह सैद्धांतिक विषयों के साथ प्रायोगिक विषयों में बहुत रुचि लेती है। जब कभी बच्चों के साथ अभ्यास शाला में जाने का मौका आता है, तब वह मन लगाकर उनके साथ कार्य करती है, जैसे भाषा विकास के लिए बच्चों को बोलने के अधिक अवसर देना, सामग्री का उचित उपयोग करना, कहानी का मंचीय प्रदर्शन करना, मॉडल बनाकर उस पर बच्चों से चर्चा करना, बालोद्यान में कार्य करना, सूखी पत्तियों को जोड़ना, गिनना, पैटर्न बनाना आदि।

वहीं अगर सीमा को देखें, जो विनीता की कक्षा में ही प्रशिक्षणार्थी है। वह कक्षा में नियमित है और सैद्धांतिक विषयों में अधिक दक्ष है, किंतु प्रायोगिक विषयों में उसकी अधिक रुचि नहीं है। बच्चों के साथ अभ्यास शाला में जाने का समय आता है तब वह बच्चों के साथ तालमेल स्थापित नहीं कर पाती। ना तो वह सामग्री का सही उपयोग कर पाती है ना ही बच्चों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर पाती।

इन दोनों परिस्थितियों का अवलोकन करने के बाद अब विचार कीजिए -

- यदि ऊपर दी गई परिस्थिति में नेतृत्वकर्ता के रूप में आप होते तो यहां किस तरह का नेतृत्व करते?

....

....

....

....

....

केस स्टडी 2-शिशुओं का शाला में समन्वय

जबलपुर की शासकीय शाला की प्रधानाध्यापिका ने अपना अनुभव बताया। जब मैंने मेरे बेटे को पूर्व प्राथमिक शाला में डाला तो पहले दिन का अनुभव मैं कभी नहीं भूल पाई क्योंकि उन दिनों प्राइवेट शालाओं में ही नर्सरी कक्षाएं संचालित हुआ करती थीं। इसलिए मैंने अपने बेटे को प्राइवेट शाला की नर्सरी कक्षा में दाखिल करवा दिया।

प्राइवेट शालाओं के नियम तो आप सभी जानते ही हैं, बहुत कठोर होते हैं। वहां बच्चों को गेट पर ही छोड़ने की अनुमति थी। अभिभावकों के लिए बच्चे को कक्षा में देखना, कक्षा के क्रियाकलापों को देखने की अनुमति नहीं थी। मेरा बेटा शाला जाने के समय बहुत उत्सुक था, उसकी प्रसन्नता उसके चेहरे पर नजर आ रही थी।

छुट्टी होने का समय आया। मैं गेट पर खड़े होकर इंतजार कर रही थी, तभी एक-एक करके बच्चे रोते हुए निकल रहे थे। मुझे पूर्ण विश्वास था कि मेरा बच्चा नहीं रोएगा, किंतु अन्य बच्चों की तरह वह भी रोता हुआ आया। उसको रोता देखकर मेरा मन व्यथित हो गया। उसके बाद वह शाला जाने से संकोच करने लगा।

अब शाला के लिए उसके मन में पहले जैसी रुचि नहीं थी। मैंने बड़ी मुश्किल से उसको विभिन्न प्रलोभन देकर वापस शाला जाने के लिए मनाया। यह सब देखकर मैंने सोचा कि जब कभी शासकीय शालाओं में पूर्व प्राथमिक शिक्षा खोली जाएगी तब मैं बच्चों की मानसिक भावनाओं को ध्यान में रखकर ही शिक्षण और दैनिक कार्यकलापों की योजना बनाऊंगी।

इस परिस्थिति का अवलोकन करने के बाद अब विचार कीजिए -

- यदि ऊपर दी गई परिस्थिति में नेतृत्वकर्ता के रूप में यदि आप होते तो क्या करते?

....

....

....

....

....

....

अभी यहां हमने अलग-अलग तरह की दो केस स्टडी को पढ़ा है और निश्चित ही हम यह समझ पाए होंगे कि पूर्व प्राथमिक शिक्षा की कक्षाओं को शुरू करना, उस दौरान उस आयुवर्ग के बच्चों को संभालना और उनके लिए शिक्षण योजना बनाना, एक अलग तरह के नेतृत्व की माँग करता है। यह नेतृत्व उस समय और भी मुश्किल हो जाता है जब पूर्व प्राथमिक शिक्षा और उस आयुवर्ग के बच्चों के साथ पहली बार काम करने का अवसर मिलता है। इसलिए पूर्व प्राथमिक शिक्षा को शुरू करते समय कुछ बातों का ध्यान रखना जरुरी है -

पूर्व प्राथमिक शिक्षा को शाला में शुरू करते समय ध्यान देने वाली बातें -

- शुरुआत में कुछ दिनों तक बच्चों के साथ अभिभावकों को भी शाला में कक्षा के बाहर बैठने की अनुमति दी जा सकती है ताकि अभिभावक शाला में होने वाली गतिविधियों को देख सकें तथा बच्चे भी अपने आप को अभिभावकों की उपस्थिति में सुरक्षित महसूस कर सकें।
- शुरुआत में कम समय के लिए बच्चों को बुलाया जाए और धीरे-धीरे समय को बढ़ाया जा सकता है जिससे बच्चों का मन भी लगा रहे ।
- बच्चों के फीते बांधने, शौच आदि की समस्याओं का समाधान के लिए शाला के समय अभिभावकों का सहयोग भी लिया जा सकता है।

- पूर्व प्राथमिक शिक्षा की कक्षा में बच्चों के आराम के लिए एक कोना भी बनाया जा सकता है और जरूरत के अनुसार बच्चों को कुछ देर आराम करने का समय भी दिया जा सकता है ।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा की कक्षा में बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु निम्नलिखित सुझावात्मक व्यवस्थाएं की जा सकती हैं –

- बैठने हेतु दरी /छोटी टेबल-कुर्सी/चौकियाँ।
- विश्राम/सोने के लिए कक्षा में व्यापक पलंग रखा जा सकता है।
- बच्चों की पानी की बोतल, टिफिन, आदि रखने की अलग व्यवस्था हो।
- जूते-चप्पल रखने की रैक रखी हो।
- सीखने के सात क्षेत्रों साक्षरता क्षेत्र, गुड्डे-गुड़ियों का क्षेत्र, विज्ञान क्षेत्र, ब्लॉक बिल्डिंग का क्षेत्र, गणित का क्षेत्र, कला क्षेत्र के लिए संबंधित सामग्रियाँ रखने हेतु अलग-अलग स्थान या अलमारियाँ हो ।
- कक्षा-कक्ष रंगीन व आकर्षक हो।

जैसा कि अभी हमने पूर्व प्राथमिक शिक्षा की कक्षा की आवश्यकताओं और चुनौतियों की पहचान कर ली है, तो अब हम नीचे दिए हुए कुछ सवालों के जवाब खोजते हैं -

चिंतन मनन के प्रश्न –

- ऐसे कौन-कौन से कारक हैं जो पूर्व प्राथमिक शिक्षा में बच्चों के सीखने में बाधक हैं?(घर और समुदाय से सम्बंधित कारक, शाला और कक्षा से सम्बंधित कारक)

....

....

....

- पूर्व प्राथमिक शिक्षा की कक्षा में बच्चों को सिखाने के समय किन बातों का ध्यान रखना जरूरी है?

....

....

....

- आपको क्या लगता है, क्या पूर्व प्राथमिक शिक्षा की कक्षा हेतु बस्ते की आवश्यकता है? यदि हाँ तो क्यों?

....

....

....

पूर्व प्राथमिक शिक्षा हेतु वर्तमान परिदृश्य में शालाओं में नेतृत्वकर्ता के समक्ष जो चुनौतियां आ सकती हैं उस पर हमने चर्चा की है। विशेष रूप से नेतृत्वृकर्ता को बच्चों के अभिभावकों को प्रेरित करने की चुनौती का सामना करना होगा कि वे अपने नन्हें बच्चों को पूर्व प्राथमिक शिक्षा हेतु शाला में भेजें। साथ ही पूर्व प्राथमिक शिक्षा की कक्षा को उनके अनुरूप व्यवस्थित करने का दायित्व भी निभाना होगा। बच्चों की रूचिनुसार खेल सामग्री की उपलब्धता, स्वस्थ आदतों का विकास करने के अवसर भी देने होंगे। शाला में बच्चों की सुरक्षा के पर्याप्त इंतजाम करने होंगे ताकि अभिभावक एवं बच्चे अपने आप को सुरक्षित महसूस करें। इस हेतु नेतृत्वकर्ता को सभी क्षेत्रों की मॉनीटरिंग भी करना होगी। साथ ही सीखने-सिखाने के पर्याप्त अवसर एवं संसाधनों की व्यवस्था करनी होगी।

चरण 2 भाग - 1 : प्रारंभिक साक्षरता एवं गणित की कक्षा संचालन हेतु प्रधानाध्यापक की भूमिका को चिन्हित करना

उद्देश्य : मॉड्यूल के इस भाग में नेतृत्वकर्ता –

प्रारंभिक साक्षरता व गणित शिक्षण हेतु आनंददायी वातावरण निर्माण की आवश्यकता को समझ सकेंगे।

जैसा कि हम सभी इस मॉड्यूल के पहले चरण को पढ़ चुके हैं और निश्चित ही यह भी समझ सके हैं कि पूर्व प्राथमिक शिक्षा क्या है। जब हम पूर्व प्राथमिक शिक्षा की बात करते हैं तो इस दौरान कई सारी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। यह चुनौतियां न सिर्फ शिक्षकों के समक्ष सामने आती हैं वरन बच्चों के समक्ष भी सीखने के दौरान आती हैं। एक शिक्षक होने के नाते हममें यह कुशलता होना जरूरी है कि हम चुनौतियों को अवसरों में बदल सकें, बच्चों का सीखना सुनिश्चित कर सकें और पारंपरिक आकलन की परिपाटी से दूर गैर पारंपरिक आकलन की शुरुआत कर सकें। जिससे बच्चों की पढ़ाई बाधित न हो और वे अपनी पढ़ाई को पूरा कर सकें। **मॉड्यूल के चरण 2** में हम इन्हीं मुद्दों को पढ़ेंगे और समझेगें कि कैसे एक नेतृत्वकर्ता इन परिस्थितियों में बेहतर नेतृत्व कर सकते हैं।

परिचय

3-6 वर्ष की उम्र में जब बच्चा पहली बार घर छोड़कर शाला में आता है तब नेतृत्वकर्ता के लिए जरूरी होता है कि वह बच्चों को आनंददायक और स्नेह युक्त वातावरण उपलब्ध करवाएं। इस हेतु बच्चों के साथ लगातार बातचीत करना, उन्हें भयमुक्त वातावरण देना नेतृत्वकर्ता का पहला महत्त्वपूर्ण काम होता है। इसी तरह बच्चों को शाला के लिए, आगामी कक्षाओं के लिए तैयार करना और उनमें प्रारंभिक साक्षरता व गणित की समझ विकसित करना दूसरा महत्त्वपूर्ण काम है। इसी तरह अभिभावकों को शाला से जोड़ना और शिक्षा का महत्व समझाना तीसरा महत्वपूर्ण काम है ।

इन कामों को सरल करने के लिए स्कूल रेडीनेस की कुछ गतिविधियों को प्राथमिकता के साथ करवाना जरुरी होता है जिसके अंतर्गत गीत, कहानी, शैक्षणिक खेल, बौद्धिक खेल और सृजनात्मक एंव रचनात्मक गतिविधियां बच्चों से करवाई जा सकती हैं। इन गतिविधियों की मदद से बच्चों में शाला के प्रति रुचि जागृत हो सकेगी। इस हेतु, नेतृत्वकर्ता को शिक्षकों के साथ मिलकर साप्ताहिक योजना की रणनीति भी बनानी होगी।

यहाँ एक नेतृत्वकर्ता के लिए यह भी समझना जरूरी है कि प्रारंभिक साक्षरता और गणित के मायने क्या हैं और इस आयु में ही इसके शिक्षण के शुरुआत की आवश्यकता क्यों है? तो सबसे पहले बात करते हैं भाषा के बारे में -

भाषा सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने से कहीं आगे है। भाषा अनुमान लगाने और तर्क करने की प्रक्रिया का एक माध्यम है। यह कई उद्देश्यों को पूरा करती है जैसे- अपनी बात को दूसरों तक पहुंचाना (संचार), दूसरों की सोच और दुनिया को समझना। असल में, प्रारंभिक भाषा और साक्षरता कौशल ही औपचारिक शिक्षा व्यवस्था में बेहतर तरीके से सीखने का आधार है। इसी तरह समझ के साथ पढ़ना, सीखना और स्वतंत्र रूप से लिखना, यह गुणवत्ता सुनिश्चित करने के सबसे महत्त्वपूर्ण तत्व हो सकते हैं क्योंकि यह वे बुनियादी कौशल हैं जो भविष्य के सीखने के

लिए मार्ग तैयार करते हैं। यदि कोई शाला प्रारंभिक प्राथमिक कक्षाओं में सभी बच्चों को अच्छी तरह से पढ़ना-लिखना नहीं सिखा पाता है, तो निश्चित रूप से उस शाला, कक्षा और वहां के नेतृत्व में सुधार करने की आवश्यकता है और एक नेतृत्वकर्ता को काम करने के तरीके पर पुनर्विचार कर आवश्यक संशोधन करने की आवश्यकता है ।

चलिए अब बात करते हैं कक्षा में प्रारंभिक गणित के शिक्षण की -

- गणित के विभिन्न घटकों, जैसे संख्या और संख्या का आपसी संबंध, संक्रियाएं, मापन, ज्यामितीय आकृतियां, पैटर्न और आंकड़ों का प्रबंधन के बारे में समझ के साथ सीखना।
- गणित सीखने को एक मनोरंजक, उद्देश्यपूर्ण और सार्थक गतिविधि बनाना।
- पहली बार शिक्षा से जुड़ने वाले बच्चों/शिक्षार्थियों के बीच अलग-अलग तरह की रणनीतियों, विज़ुअलाइज़ेशन और उनमें समस्या-समाधान क्षमताओं के विकास को सुगम बनाना।
- बच्चों/शिक्षार्थियों को गणितीय रूप से सक्षम बनाना जिससे वे उपयुक्त भाषा का उपयोग करके बात करने और संवाद करने, तार्किक रूप से सोचने और उनके तर्क को सही ठहरा सकें।
- पहली बार शिक्षा से जुड़ने वाले बच्चों/शिक्षार्थियों को व्यस्त और आत्मविश्वासी गणितीय छात्र बनने के लिए समृद्ध और विकासात्मक रूप से उपयुक्त गणितीय अवसर प्रदान करना।

जैसा कि हम सभी जानते हैं, संख्या पूर्व अवधारणा और संख्याओं की समझ का विकास पूर्व प्राथमिक शिक्षा के वर्षों में तेजी से होता है। प्रारंभिक प्राथमिक कक्षाओं में ही तुलना, क्रम से जमाना, वर्गीकरण और पहचानने के पैटर्न का ज्ञान और कौशल आगे जाकर गणित सीखने की नींव के रूप में कार्य करता है।

हालांकि ऐसा माना जाता है कि गणित एक कठिन विषय है। जबकि कक्षा 3 तक आते-आते बच्चे गणित के लिए पसंद या नापसंद के बारे में बताना शुरू कर देते हैं। गणित सीखने में विभिन्न अवधारणाओं की श्रेणीबद्ध प्रकृति को देखते हुए, यह जरूरी हो जाता है कि हम बच्चों को गणित सीखने के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करें। जहां सभी बच्चे गणित को सार्थक और मनोरंजक तरीके से सीख सकें। गणित सिखाते समय दिए जाने वाले निर्देश/कार्य इस तरह के होने चाहिए जो बच्चों को सोचने, बात करने, खोज/अन्वेषण करने, प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करें ताकि वे बेहतर गणितीय शिक्षार्थी बन सकें। जैसा कि हम सभी का अभी तक का अनुभव प्राथमिक और माध्यमिक कक्षा के बच्चों को पढ़ाने का है लेकिन अब हम पूर्व प्राथमिक शिक्षा के बच्चों को सिखाने के बारे में बात कर रहे हैं और हमारे लिए यह जानना जरूरी है कि 'पूर्व प्राथमिक शिक्षा की कक्षा' में कौन-कौन सी गतिविधियाँ करवाई जाना चाहिए जिससे उनके सभी प्रमुख 5 क्षेत्रों का विकास हो सके ।

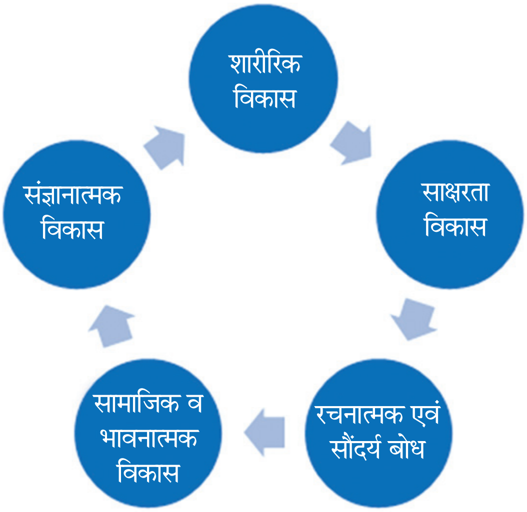

इन पांचों क्षेत्रों में की जाने वाली गतिविधियों और उससे संबंधित चित्रों को हम इस मॉड्यूल में भी देख सकते हैं जो हमें यह समझने में मदद करेगा कि पूर्व-प्राथमिक शिक्षा की कक्षा में आनंददायी वातावरण कैसे तैयार किया जा सकता है और बनाए रखा जा सकता है।

व्यावहारिक गतिविधियां

सृजनात्मक गतिविधियां

ज्ञानेन्द्रिय के साधन

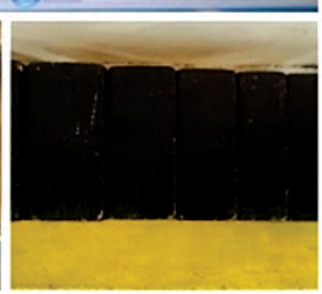

1. स्कूल रेडीनेस हेतु गतिविधियां

- **बाल प्रार्थना** - भोजन प्रार्थना, शांति पाठ
- **बाल गीत**- अभिनय गीत, वर्णन गीत, त्यौहारों पर गीत, बड़बड़ गीत
- **शैक्षणिक खेल** - जानवरों की चाल, आवास के खेल, स्वतंत्र खेल (मेंढक दौड़, घोड़ापछाड़ खाई)
- **मुक्त खेल** - दौड़ना, कूदना, फेंकना, रेत में खेलना
- **गणित खेल** - रेत, बीज, सूखी पत्तियों पर गतिविधियां
- **कला के खेल** - चित्रकारी, रंग भरना
- **भाषा का खेल**- अभिव्यक्ति चार्ट, कठपुतली मंच, वर्णों की पहचान, शब्द निर्माण, वर्णों और शब्दों की जोड़-तोड़।

2. प्रारंभिक साक्षरता एवं भाषा विकास हेतु शिक्षकों की भूमिका

जैसा कि हम सभी भाषा के महत्व को भलीभांति समझते हैं। भाषा द्वारा ही हम अपने भावों को दूसरों तक पहुंचाते हैं और दूसरों के भावों को समझते और अनुभव करते हैं। भाषा के मुख्यतः तीन रूप होते हैं, मौखिक भाषा, लिखित भाषा और सांकेतिक भाषा। सामान्य तौर पर भाषा के केवल दो रूप होते हैं एक बोलने की जिसे हम मौखिक भाषा कहते हैं और दूसरी लिखने की जिसे हम लिखित भाषा कहते हैं। लिखित भाषा मौखिक भाषा का मूर्त स्वरूप है। वर्णमाला में हमारे सब प्रकार के विचारों को मूर्त रूप देने की असीमित योग्यता होती है । इसलिए बच्चों में प्रारंभिक भाषा विकास हेतु शिक्षकों को कुछ बातों का विशेषतः ध्यान रखना होगा, जैसे -

1. बच्चों के स्तर अनुरूप भाषा का प्रयोग करना ।
2. मानक भाषा के साथ-साथ स्थानीय भाषा / बच्चों के घर में बोली जाने वाली भाषा का भी उपयोग करना।
3. बच्चों के साथ की जाने वाली गतिविधियों के निर्देश स्पष्ट हों तथा गतिविधियों का चयन बच्चों के स्तर अनुरूप हो।
4. रोचक व सरलतम गतिविधियों का चयन हो।

5. कहानी छोटी एवं रूचिपूर्ण हो। कहानी कहने का तरीका हाव-भाव के साथ हो। वार्तालाप, पपेट्स, चित्रों, अभिनय द्वारा कहानी सुनाई जाए। इस बात का ध्यान रखें कि कहानी सुनाते समय बच्चों में जिज्ञासा, कौतुहल बना रहे। कहानी सुनाते समय बच्चों से बीच-बीच में प्रश्न पूछें और यदि कोई बच्चा कहानी के बीच में अपनी कोई बात साझा करना चाह रहा हो तो उसे बोलने का अवसर दें।

6. बच्चों को लिखने का अभ्यास करवाने हेतु कुछ प्रारम्भिक गतिविधियां करवाना जैसे रेत पर हाथ घुमाना। इस गतिविधि में सबसे पहले बच्चों को संबंधित वर्ण के आकार और उसकी ध्वनि की पहचान करवाई जाती है जिसके बाद बच्चा लिखने की तैयारी हेतु तैयार होता है। यह अभ्यास बच्चे को प्रारंभिक शिक्षण के लिए तैयार करने में मदद करता है।

7. मौखिक भाषा विकास हेतु बच्चों को अलग-अलग विषयों पर अभिव्यक्ति चार्ट दिखाकर उस पर बातचीत की जाती है। इस गतिविधि में बच्चा चार्ट में दिख रहे चित्रों को देखकर बताता है उसे उसमें क्या-क्या दिख रहा है।

8. बच्चों से विभिन्न प्रकार की पहेलियां पूछी जाती हैं और उन्हें उसे बूझने के मौके भी दिए जाते हैं। यह पहेलियां पशु-पक्षी, वस्तुओं, फल-सब्जी, शरीर के अंगों पर आधारित रहती हैं।

9. बच्चों के साथ शब्द अंताक्षरी का प्रयोग किया जा सकता है। इस गतिविधि में बच्चे वर्ण की अंतिम ध्वनि की पहचान करना सीखते हैं।

10. बच्चों के साथ उनके मौखिक भाषा विकास हेतु कुछ तुकबंदी भी बनवाई जा सकती है जैसे-जल, कल, नल, पल, तल, थल।

11. एक अक्षर से बनने वाले शब्दों को बनवाना जैसे- रस, रसगुल्ला, रसमलाई, रस्सील, रबड़ी।

शिक्षण में मददगार कुछ गतिविधियां –

अब इससे आगे की बात करते हैं और यह समझते हैं कि पूर्व प्राथमिक शिक्षा शाला में आने वाले बच्चों के साथ किस तरह की गतिविधियों को करवाना चाहिए जिससे वे शिक्षा और शाला से जुड़ सकें। इसके लिए यह समझना जरूरी है कि पूर्व प्राथमिक शिक्षा शाला में आने वाले बच्चों के लिए किस तरह के वर्णकार्ड का उपयोग किया जाना चाहिए। जैसा कि मांटेसरी पद्धति में वर्णमाला के सभी अक्षर रेगमार कागज पर कटे हुए होते हैं। जिसे दो अलग-अलग रंग के कार्ड पर चिपकाया जाता है। स्वर वाले रेगमार अक्षर को नीले कार्ड पर चिपकाया जाता है और व्यंजन को गुलाबी कार्ड पर चिपकाया जाता है। यहां कुछ सुझावात्मक गतिविधियां दी गई हैं -

भाषा विकास की गतिविधि –

सबसे पहले अध्यापक बच्चों को अंगुलियां धोने के लिए कहें, ताकि अँगुलियों का अग्रभाग भावशील हो जाए। अब बच्चों को अक्षर कार्ड लाने को कहें। ध्यान रहे कार्ड के जिस ओर अक्षर दिख रहा हो वो बाहर की ओर होगा। जब बच्चे अक्षर कार्ड ले आएं तो उसे मेज पर इस प्रकार रखने को कहें कि बच्चा उसे आसानी से देख व पढ़ सके। अब बच्चे को अपने बाएं हाथ से उस कार्ड को पकड़ने के लिए कहें और दाएं हाथ की पहली दो अंगुलियों को धीरे-धीरे अक्षर पर फेरने के लिए कहें। अंगुलियाँ फेरते समय ध्यान रखें कि अक्षर को पूरा करने वाली शीर्ष रेखा पर बच्चा सबसे आखिर में अंगुली फेरे। जब बच्चा आखिर में शीर्ष रेखा पर अंगुली फेरे तब शिक्षक अक्षर का नाम उच्चारण करें जिसे बच्चा

दोहराए। बच्चा जब-जब अंगुलियां फेरेगा तब-तब वह अक्षर का उच्चारण करेगा और जब वह ठीक प्रकार से अंगुलियां फेर और सही उच्चारण करने लगे तब शिक्षक वहां से हट जाए। बच्चा इसी प्रकार धीरे-धीरे अक्षर को पहचाने लगता है और ठीक उच्चारण करने लगता है। जब बालक ठीक उच्चारण करने लगे तो उसे शब्द की ध्वनियों में उस सीखे हुए अक्षर की ध्वनि को पहचानने के लिए कहा जाएगा। उदाहरणार्थ यदि बच्चे को आ की ध्वनि की पहचान करवानी हो तो उसे आम, आलू जैसे शब्द दिए जा सकते हैं।

गणित की खेल गतिविधियां –

छोटे बच्चों के लिए बातचीत और गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी सीखने के महत्त्वपूर्ण माध्यम होते हैं। इसके लिए कक्षा में उत्साहवर्धक और सौहार्द्रपूर्ण माहौल बनाना, बच्चों की घर की भाषा, उनके पूर्व ज्ञान व अनुभव का इस्तेमाल जरूरी है। इसी तरह संख्याओं की समझ हेतु गणनाओं को आसान बनाना जरूरी है, जिसमें मिलान करना, छंटाई करना और वर्गीकरण करवाया जा सकता है। संक्रियाओं को हल करवाते समय अवधारणाओं और प्रतीकों को समझना, तथ्यों के साथ सरल जोड़ और घटाव करवाना महत्त्वपूर्ण है। यह सभी अभ्यास बच्चों में गणितीय संक्रियाओं पर एक वैचारिक समझ को विकसित करने में मदद करते हैं। साथ ही वे अभ्यास कर गणनाओं को आसान बनाने और समस्या समाधान में आत्मविश्वास हासिल करने के लिए विभिन्न तरीकों से संख्याओं का उपयोग करने पर अपना ध्यान केन्द्रित कर पाते हैं।

गणित में मूल्यांकों के नाम (अंक के नाम) और परिमाणों (ठोस आकृति से अमूर्त संख्या को मूर्त करना) के ज्ञान के लिए अंक सीढ़ी, मूल्यांकों के प्रतीकों के परिचय के लिए रेतीय अंक (रेगमार कागज पर कटे हुए), इकाई के रूप में गिनती का अभ्यास और परिमाण और प्रतीकों के सहचर्य (जोड़ी बनाना) के लिए कार्ड कोड़ी, इकाई-दहाई की समझ के लिए सेंधा फलक (सख्याओं की फ्रेमिंग), शून्य को परिचित कराने के लिए शलाका पेटी, आकृतियों की पहचान करवाने के लिए भौमितिक आकृतियां आदि साधनों का उपयोग किया जाता है। इन सब साधनों को उठाने, पकड़ने और रखने का तरीका भी बताया जाता है ताकि बच्चों की सूक्ष्य मांसपेशियां मजबूत हों और आगे जाकर उनका पेंसिल

पकड़ने का अभ्यास हो जाए। प्रारंभिक गणित से संबंधित समझ के लिए विभिन्न गतिविधियाँ की जा सकती है।

शिशु के आसपास पाई जाने वाली प्रत्येक वस्तु की कोई न कोई आकृति होती है। कोई वस्तु गोल, त्रिकोण, चौकोर, अण्डाकार, आयताकार होती है। यह सभी आकृतियां हमें घर, मैदान, आंगन, फल-फूल, सब्जी, पेड़-पौधों में देखने को मिलती हैं। इन आकृतियों की पहचान हम बच्चों को खेल-खेल में करवा सकते हैं एवं कुछ समय बाद बच्चों द्वारा स्वयं भी खेला जा सकता है। इस हेतु कक्ष में या बाहर मैदान में बड़ा गोला, बड़ा त्रिकोण, तथा बड़ा चौकोन बनाना होगा तथा बच्चों को एक पंक्ति में इस तरह खड़ा करना होगा कि सभी बच्चे आकृति को ठीक तरीके से देख सकें। इस तरह की गतिविधि करवाने के लिए बच्चों को इस तरह से निर्देश दिए जाने चाहिए जिससे बच्चे तेजी से चलकर बोली गयी आकृति में खड़े हो सकें। बच्चा अगर गलत आकृति में खड़ा होता है तो उसे खेल से अलग न करें, बच्चे को आकृति से जुड़ने में मदद करें। इस तरह बच्चे मूल आकृतियों से अच्छी तरह परिचित हो सकेंगे।

ज्ञानेन्द्रियों के विकास हेतु गतिविधियां –

मांटेसरी पद्धति में इंद्रियों के शिक्षण का बहुत अधिक महत्व है यह बालक के इंद्रिय अनुभव और ज्ञान साधनों को विधिपूर्वक वैज्ञानिक रूप से बढ़ाती है तथा स्पष्टीकरण भी करती है। वह उनमें परिपाटी और शिष्टता का विकास करती है।

विभिन्न इंद्रियों के विकास के लिए सामग्री और साधन –

दृश्येन्द्रिय– बच्चे आसानी से देखकर ऊँचा-नीचा, बड़ा-छोटा, चौड़ा-संकरा, लंबा-छोटा एवं रंगों का भेद समझ सकें, इसके लिए गट्टा पेटी, गुलाबी मीनार, चौड़ी सीढ़ी, लंबी सीढ़ी, रंगों की चपटी रीलें साधनों का प्रयोग किया जाता है।

स्पर्शेन्द्रिय– बच्चों की अंगुलियों के अग्रभाग से अलग-अलग तरह के कपड़ों को स्पर्श करवाकर कोमल और खुरदुरा का ज्ञान कराया जाता है।

कर्णेन्द्रिय– विभिन्न ध्वनि की पहचान करवाने के लिए अलग-अलग डिब्बियों में कुछ कंकड़, दालें डालकर बजाने और उसकी ध्वनि को सुनाने से बच्चों को तेज-धीमी ध्वनियों का अभ्यास करवाया जाता है।

रसेन्द्रिय– जीभ पर विभिन्न खाद्य वस्तुओं से खट्टा, मीठा, तीखा, कड़वा आदि का ड्रॉपर द्वारा स्वाद कराया जाता है।

घ्राणेन्द्रिय– विभिन्न प्रकार की गंध जैसे फल, फूल, जलती हुई वस्तु, सड़ी-गली वस्तु, मिर्च, चाय, कॉफी, जड़ी-बूटी आदि की गंध का सूंघवाकर अनुभव कराया जाता है।

भारेन्द्रिय– विभिन्न भार की लकड़ी की पट्टियों को उठाने के अभ्यास से हल्का-भारी का अनुभव करवाया जाता है।

तापेंद्रिय– बोतल में भिन्न-भिन्न ताप का पानी डाला जाता है, जिससे बच्चों को छूने के लिए कहा जाता है और उन्हें

उष्ण और शीत (ठंडा-गर्म) का अनुभव करवाया जाता है।

इंद्रिय शिक्षण से निम्नलिखित लाभ हैं-

- इंद्रिय साधनों द्वारा चीजों के भेदों का बोध विकसित और तीव्र होता है। बच्चे इंद्रिय साधनों द्वारा चीजों के रंग-रूप, वजन, स्वभाव, सुगंध, ताप, लंबाई, चौड़ाई, मोटाई आदि के भेदों के परखने की शक्तियों का विकास करता है। साथ ही इन शब्दों से परिचित होता है और दैनिक जीवन में इन शब्दों का उपयोग करता है।
- इनके प्रयोग द्वारा शरीर की क्रियाओं में शिष्टता आ जाती है बच्चे चीजें उठाने, निकालने, रखने में शिष्टता दिखाता है।
- विभिन्न इन्द्रियों के प्रयोग से बच्चों के इंद्रिय दोष सहज ही प्रकट हो जाते हैं जो बिना इन साधनों के लम्बे समय तक पता नहीं लग पाते हैं। इंद्रिय दोष का जल्दी पता लग जाना एक बहुत बड़ा लाभ है क्योंकि फिर इसे सहज ही हटाया/दूर किया जा सकता है।
- बच्चों में अलग-अलग चीजों के गुणों की परख बढ़ती है और चीजों के गुणों को अनुभव करने और जानने की शक्ति बढ़ती है।
- बच्चे विभिन्न वस्तुओं की परस्पर एकता और मेल या अनमेल का अनुभव करता है। यह अनुभव उसमें सुंदरता के विकास में सहायक बनते हैं।
- इन इंद्रिय साधनों में से ध्यान की एकाग्रता होती है । इस एकाग्रता के द्वारा बालक की बुद्धि क्षमता का विकास होता है। चीजों की परस्पर तुलना के साथ बच्चा निश्चय करना सीखता है, इससे उसकी निर्णय शक्ति बढ़ती है।
- अतः इंद्रिय साधनों द्वारा बच्चों के समस्त व्यक्तित्व का विकास होता है, इसलिए उसका बालक की शिक्षा में एक मुख्य स्थान समझा जाता है।

चलिए सभी शिक्षक मिलकर इंद्रिय शिक्षण से संबंधित एक गतिविधि करते हैं –

आवश्यक सामग्री– लकड़ी के 10 चौकोन घन जो गुलाबी रंग के होंगे। सबसे छोटा 1 सेंटीमीटर का होगा। प्रत्येक बाद के घन 1 सेंटीमीटर से बढ़ते जाएंगे अर्थात सबसे बड़ा धन 10X10X10 सेंटीमीटर का होगा।

विचार कीजिए :

- लकड़ी के अतिरिक्त और किस सामग्री से आप घन बना सकते हैं ?

प्रक्रिया –

एक दरी बिछा लीजिए और एक-एक करके घनों को चारों अंगुलियों और अंगूठे से पकड़कर उठाइए। जब सब घन आ चुके हों तो उन्हें मिलाजुला दीजिए। अब घनों को एक-एक करके अपने दाएँ ओर रखिए और सबसे पहले सबसे बड़े घन को उठाइए।

ध्यान दीजिए :

- क्या आप घन को एक-एक करके उठाते समय एकाग्रचित्तता का अनुभव कर रहे हैं ?

अब इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए इसी प्रकार आप दूसरे दर्जे वाले घन को गौर से देखें। उसे सबसे बड़े घन पर रख दीजिए। ध्यान रहे कि ऐसा करते समय आवाज ना आए। इसी तरह एक- एक कर क्रमानुसार पहले घन के ऊपर उससे छोटा घन जमाते जाइए। हर घन प्रत्येक उससे बड़े घन के बिल्कुल केंद्र में रखा जाए।

ध्यान दीजिए:

- क्या घन को केंद्र में रखने की क्रिया में आपका मानसिक प्रयत्न स्पष्ट दिखाई दे रहा है?

अब किसी एक बच्चे की आंख बंद करवाकर एक घन को बिना आवाज़ किये बीच में से निकाल लीजिए। फिर उनकी आंखें खुलवाइए और उन से पूछिए कि घन कहां से उठाया? फिर घन को स्वयं या पूछे जाने वाले शिक्षक से सही स्थान पर रखवाइए।

अब घनों को जगह-जगह बिखेर दीजिए और बच्चों से कहिए कि वह घनों को क्रमानुसार लाकर मीनार के रूप में जोड़ें।

विचार कीजिए और बताइए:

- यह गतिविधि किस इंद्रिय के विकास से संबंधित है?
- इस गतिविधि को करने से बच्चों में किन-किन गुणों का विकास होगा?
- भाषा के विकास में यह गतिविधि किस तरह उपयोगी है?
- गणित शिक्षण से इस गतिविधि का क्या संबंध है?

समेकन

मॉड्यूल के इस भाग में हमने जाना कि बच्चे कैसे सीखते हैं? सीखने हेतु वातावरण कैसे बनाया जाए ताकि सीखना भयमुक्त एवं आनंददायी हो सके और प्रारंभिक साक्षरता व गणित शिक्षण इस आयुवर्ग के बच्चों के साथ कैसे किया जाना चाहिए? बच्चे स्वाभाविक रूप से सीख सके। इस हेतु मांटेसरी शिक्षण पद्धति की गतिविधि को कक्षा में लागू करना होगा। विकास के सभी पांच क्षेत्रों को ध्यान में रखते हुए गतिविधियों को सभी बच्चों से करवाना होगा। स्कूल रेडीनेस के इन क्रियाकलापों का क्रियान्व्यन कर बच्चों को शाला आने के लिए आकर्षित किया जा सकता है।

नेतृत्व कर्ता प्रारंभिक साक्षरता एवं भाषा गणित की विभिन्न गतिविधियों को जानकर एवं समझकर अपने साथी शिक्षकों को प्रशिक्षित करना होगा। भाषायी विकास हेतु कविता, कहानी, वार्तालाप, अभिव्यक्ति चार्ट तथा गणित हेतु मांटेसरी के विभिन्न साधनों का उपयोग सुनिश्चित करना होगा। इसी तरह इंद्रिय शिक्षण की गतिविधियों का महत्व समझ कर कक्षा में क्रियान्वयन करना होगा। इस पद्धति में व्यक्तिगत शिक्षण, स्वतंत्रता, ज्ञानेन्द्रियों का प्रशिक्षण तथा तार्किक अनुशासन के विकास को प्रमुखता दी जाती है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005-पृष्ठ-87-3.11.8- विभिन्न चरणों में आकलन

पूर्व प्राथमिक शिक्षा और प्राथमिक चरण की कक्षा 1 एवं 2: इस स्तर पर आकलन में विभिन्न क्षेत्रों में बच्चों की गतिविधियों पर दिये गये गुणात्मक कथन होने चाहिए और उनके स्वास्थ्य और शारीरिक विकास का आकलन होना चाहिए। यह आकलन रोज़मर्रा की अंतः क्रियाओं के दौरान किए गए अवलोकनों पर आधारित होने चाहिए। किसी भी कारणवश बच्चों की लिखित या मौखिक परीक्षा नहीं होनी चाहिए।

चरण 2 भाग - 2 : पूर्व प्राथमिक शिक्षा में आकलन के उद्देश्य को समझना

उद्देश्य : मॉड्यूल के इस भाग में नेतृत्वकर्ता –

1. नेतृत्वकर्ता/शिक्षक पूर्व प्राथमिक शिक्षा में आकलन की आवश्यकता को समझ सकेंगे।
2. नेतृत्वकर्ता /शिक्षक पूर्व प्राथमिक शिक्षा में आकलन की प्रक्रिया को समझ सकेंगे।

परिचय

बच्चों से जब हम उनके पसंद के स्थान के बारे में पूछते हैं, तो अधिकतर वे ऐसे स्थानों को पसंद करते हैं जो रंग-बिरंगी, दोस्ताना और शांत हो। जहां बहुत सारी खुली जगह हो, साथ ही छोटे कोने हों, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे और खिलौने हों। कुल मिलकर यदि हम बच्चों को स्कूल में रोकना चाहते हैं तो विद्यालय में बच्चों को आकर्षित करने के लिए इन चीज़ों का होना बहुत जरूरी है। परन्तु विद्यालय में एक चीज और भी होती है जो बच्चों को विद्यालय से दूर लेकर जाने का काम करती है और वह है उसका आकलन। वह आकलन जो कागज़-कलम के द्वारा किया जाता है, न कि बच्चे के द्वारा किये जा रहे उसके प्रयासों, व्यवहार और दक्षताओं के आधार पर।

जैसा कि अभी तक के पूर्व लिखित तीनों भागों से यह स्पष्ट हो गया है कि पूर्व प्राथमिक शिक्षा औपचारिक होते हुए भी अनौपचारिक है। क्योंकि इस शिक्षा की सभी पद्धतियां जैसे मांटेसरी, किण्डर गार्डन इत्यादि में स्वाभाविक रूप से खेल-खेल में सीखने पर बल दिया गया है। वर्तमान संचालित पूर्व प्राथमिक शिक्षा के विद्यालयों में यदि सीखने में आकलन की बात करें तो वह अभी भी औपचारिक है जिसमें बच्चों की परीक्षाएं ली जाती हैं और गृहकार्य भी दिया जाता है। यह चलन अनावश्यक और नुकसानदेय है जो अभिभावकों की गलत फहमियों तथा स्कूल पूर्व शिक्षा के बढ़ते व्यवसायीकरण का परिणाम है जो बच्चों के सामान्य विकास और सामान्य रूप से सीखने में बाधक है।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005, प्रारंभिक बाल्यावास्था शिक्षा, राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र में विस्तार से प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा को समझाया है और इस आयुवर्ग के लिए आवश्यक विषयवस्तु और मूल्यांकन की आवश्यकता को भी बताया है। नीचे दिए गए गए बॉक्स में विषयवस्तु और मूल्यांकन के संबंध में यह आधार-पत्र क्या है इसे पढ़ते हैं और समझने की कोशिश करते हैं।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005, प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा, राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र

5.4.4 विषयवस्तु (मूलभूत साक्षरता और अंक ज्ञान) और संस्कृति का मिश्रण-पृष्ठ 44

खेल आधारित पाठ्यक्रम के बारे में प्रायः की जाने वाली शिकायतों में से एक यह है कि पढ़ने, लिखने और अंकगणित के शिक्षण पर बल नहीं दिया जाता है। इस अवस्था में बाल मस्तिष्कों को अमूर्त बातों से लादना उचित नहीं होगा। फिर भी अधिक मात्रा में शब्दावली को सीखना, जैसे भारी-हल्का, ज्यादा-कम, थोड़ा-अधिक आदि और गतिविधियों द्वारा अंतर पहचानना अंकों को जानने से पहले की अवधारणा को स्पष्ट करेगा। बार-बार सफलता का अनुभव बच्चे में आत्मविश्वास पैदा करता है जबकि बार-बार की असफलता बच्चे को हीनभावना की ओर ले जाती है। बच्चे यह धारणा खेलों कार्यशीटों तथा अन्य इंद्रिगत संसाधनों जैसे वस्तुओं के साथ खेलना अथवा नाटक में हिस्सा लेने के माध्यम से ग्रहण करते हैं। पूर्व साक्षरता का अर्थ है- आकृतियों एवं आकारों के साथ खेलना, शारीरिक क्रियाकलापों पर दक्षता प्राप्त करने के लिए प्रेरक कौशल को सीखना। कला से संबंधित क्रियाकलाप पूर्व-साक्षरता कार्यों के मुद्दों के साथ जुड़े होते हैं।

बच्चों को अनेक क्रियाकलापों की आवश्यकता होती है जो उन्हें नामों से परिचित कराने,ध्वनियों और शब्दों को पहचानने में सहायता करें। कहानियां, कविताएं सुनने, क्षेत्रीय भ्रमणों पर जाना, चार्टों को देखना, ये सभी सीखने और लिखने में रुचि पैदा करने के आधार हैं।

5.5.3 मूल्यांकन-पृष्ठ 47

निरंतर और संगतपूर्ण निगरानी के द्वारा बच्चों की प्रकृति पर सावधानीपूर्वक नजर रखे जाने की जरूरत होती है। इसके लिए कोई संख्यात्मक मूल्यांकन अथवा स्तरीकृत परीक्षा की सिफारिश नहीं की गई है। वस्तुतः इसकी मनाही है। प्रारंभिक वर्षों में सीखने की उच्चतर कक्षाओं में जाने के लिए बच्चों की परीक्षा नहीं ली जानी चाहिए अथवा मौखिक साक्षात्कार नहीं लिया जाना चाहिए।

शिक्षक कक्षा की दिनचर्या में बच्चे की सहभागिता के बारे में, दूसरे बच्चों तथा वयस्कों के साथ व्यवहार में उनकी योग्यता के बारे में अपना रिकॉर्ड दर्ज कर सकते हैं। विकास के प्रमुख क्षेत्रों में बच्चे की प्रगति का रिकॉर्ड रखने के लिए व्यवहार और कौशल के परीक्षण की एक जाँच-सूची/चेकलिस्ट तैयार की जाए।

जरा सोचिए और बताइए -

1. आपके आसपास पूर्व प्राथमिक स्तर के बच्चों के शिक्षण विषयवस्तु में क्या-क्या शामिल किया जाता है?

....

....

....

2. आपके आस-पास पूर्व प्राथमिक स्तर के बच्चों का आकलन किस तरह से होता है? तीन उदहारण लिखें।

....

....

....

3. पूर्व प्राथमिक स्तर पर बच्चों का आकलन कैसे किया जाना चाहिए?

....

....

....

4. आपके विचार से आकलन की प्रक्रिया में अभिभावकों का सहयोग कैसे लिया जा सकता है?

....

....

....

चलिए समझते हैं कि आकलन (Assessment) और मूल्यांकन (Evaluation) है क्या?

आकलन और मूल्यांकन दोनों का उद्देश्य बच्चों की अभिव्यक्ति, क्षमता, अनुभूति आदि का मापन करना है। आकलन एक संक्षिप्त प्रक्रिया है और मूल्यांकन एक व्यापक प्रक्रिया है। मूल्यांकन किसी भी शैक्षिक कार्यक्रम में किसी भी पक्ष या विपक्ष के विषय में सूचना एकत्र करना, उसका विश्लेषण करना और व्याख्या करना है।

आकलन (Assessment)	**मूल्यांकन** (Evaluation)
किसी व्यक्ति या किसी चीज के बारे में जानकारी प्राप्त करने, समीक्षा करने और उपयोग करने के तरीके को आकलन करना यानि Assessment कहते हैं। आकलन का उद्देश्य है, जहां आवश्यक हो, सुधार किया जा सके।	मूल्यांकन किसी व्यक्ति या किसी चीज को मापने या अवलोकन करने की एक व्यवस्थित और वस्तुनिष्ठ प्रक्रिया है, यह एक व्यक्ति के प्रदर्शन, पूर्ण परियोजना, प्रक्रिया या उत्पादकता का प्रदर्शन करता है, ताकि इसकी कीमत या महत्व निर्धारित किया जा सके। मूल्यांकन एक सतत प्रक्रिया है और शिक्षण प्रक्रिया का अभिन्न अंग है।
आकलन सीखने को प्रेरित करता है। यह बच्चों को उनकी प्रगति से अवगत कराता है। आकलन में ग्रेडिंग की भूमिका होती है।	मूल्यांकन बच्चों में अपेक्षित व्यवहार एवं आचरण परिवर्तन की जाँच करता है। यह बच्चों द्वारा ग्रहण की गई कुशलताओं, योग्यताओं आदि की जांच करता है। यह उपचारात्मक शिक्षण प्रदान करता है। साथ ही अध्ययन और अध्यापन दोनों का मापन करता है।

आकलन मूल्यांकन की निर्णयात्मक और व्यापक प्रक्रिया है। लगातार बच्चों की क्षमता, योग्यता को जांचना एवं परखना आकलन कहलाता है। आकलन बच्चों की क्षमताओं, रुचियों, अभिवृत्ति/कौशल का गुणात्मक निर्णय करता है। इसके द्वारा बच्चे की विशेषता अथवा कमी की जानकारी मिलती है जिसके द्वारा उसमें सुधार कर प्रगति की ओर अग्रसर किया जा सकता है। बच्चे की आयु अनुसार सीखने के विकास के सभी पहलुओं के मापन के लिए आकलन की आवश्यकता होती है जिससे प्रत्येक बच्चे के विकास की क्रमिक जानकारी उपलब्ध हो सके तथा अभिभावकों को बच्चे के विकास से अवगत कराया जा सके। यह बच्चों की प्रगति के बारे में जानकारियों का एकत्रीकरण एवं विश्लेषण करने के साधन हैं। आकलन दर्शाता है कि बच्चे क्या जानते, क्या समझते हैं? क्या कर पाते हैं? और शिक्षक होने के नाते उन्हें हमें क्या सिखाना है? साथ ही यदि बच्चे किसी एक या दो विधा से नहीं सीख पा रहे हैं तो शिक्षक को अपने सिखाने के तरीकों में क्या बदलाव करना है ?

इस तरह आकलन सीखने में मदद करता है। साथ ही शिक्षक को अपनी योजना बनाने में भी मदद करता है। यदि यह आकलन भय रहित होता है तो यह बच्चों में आत्मविश्वास को बढ़ाता है। परन्तु यदि आकलन की इस जटिल प्रक्रिया में बच्चे को कम आंका जाता है और अपशब्दों का उपयोग आम बोलचाल में किया जाता है तो यह आकलन बच्चे को सीखने से दूर धकेलता है। शिक्षक को आकलन द्वारा यह पता चलता है कि बच्चों की भागीदारी, रुचि और जुड़ाव और अन्य क्षेत्रों में सीखने का स्तर कैसा है।

प्रारंभिक बाल्यावस्था में देखभाल और शिक्षा के अंतर्गत शिशुओं के उचित विकास के लिये वातावरण बनाने के बाद आवश्यक है कि उनके क्रमिक विकास का नियमित रूप से अवलोकन किया जाए। यह अवलोकन इस तरह होना चाहिए कि बच्चे को यह एहसास न होने पाए कि उसकी निगरानी की जा रही है। इसके लिए सबसे अच्छा तरीका यह है कि बच्चे के द्वारा माह भर की जाने वाली गतिविधियों का नियमित रूप से अवलोकन किया जाए। इस हेतु पोर्टपोलियो, चेकलिस्ट, रूब्रिक्स, डायरी, स्वास्थ्य कार्ड, स्वाभाविक अवलोकन का उपयोग किया जा सकता है।

आकलन के पश्चात बच्चों की प्रगति का प्रतिवेदन (रिपोर्ट कार्ड) अभिभावकों के साथ साझा किया जाना चाहिए जिससे अभिभावकों का सहयोग और जिम्मेदारी को सुनिश्चित किया जा सके। प्रगतिपत्र में बच्चों के विकास के विविध पहलुओं जैसे स्वास्थ्य/ शारीरिक कुशलता, खेलों में दक्षता, सामाजिक कौशल, कला व हस्तकला में दक्षता पर गुणात्मक कथन दिये जा सकते हैं जिससे शैक्षिक सरोकारों का एक समग्र आकलन हो सके।

नेतृत्वकर्ता की कुछ तैयारी –

1. बच्चों के अवलोकन हेतु बिन्दुओं को लिखिए जिससे माता-पिता घर में बच्चों का आकलन कर सकें।

....

....

....

2. पूर्व प्राथमिक शिक्षा में बच्चों का आकलन पेपर-पेंसिल से हो। क्या इस बात से आप सहमत है? यदि हाँ तो क्यों और नहीं तो क्यों? अपने विचार लिखें।

....

....

....

नेतृत्वकर्ताओं हेतु सुझावात्मक (आकलन पत्रक) प्रगति पत्रक का स्वरूप

मांटेसरी पद्धति के अनुसार बच्चों का सतत आकलन विकास के विभिन्न क्षेत्रों में तीन सत्र (तिमाही) में किया जाता है। प्रत्येक सत्र के बाद अभिभावकों की एक सभा करके बच्चों की प्रगति पर चर्चा की जाती है। यदि किसी क्षेत्र में बच्चा रुचि नहीं ले रहा है तो अभिभावकों के सहयोग से तथा उसकी समस्या को समझकर समाधान के प्रयास किये जाते हैं।

प्रगति पत्र के कुछ महत्त्वपूर्ण बिन्दु
1. प्रथम पृष्ठ पर बच्चे की सम्पूर्ण व्यक्तिगत जानकारी। 2. माता-पिता द्वारा बालक की आदतों और क्रियाकलापों पर जानकारी देना। 3. विकास से संबंधित मापदण्ड जिन पर बच्चों का सतत आकलन किया जाता है-शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, ज्ञानेन्द्रियों के विकास, भाषा, गणित में योग्यता तथा व्यवहारिक कार्य आदि। 4. शिक्षक की टीप।

यद्यपि हम मॉड्यूल के तीसरे भाग में भाषा व गणित शिक्षण के संबंध में काफी कुछ बातचीत कर चुके हैं पर एक नेतृत्वकर्ता होने के नाते यह सोचिए कि -

1. सीखने सिखाने की प्रक्रिया में विकास के विभिन्न क्षेत्रों की गतिविधियों तथा भाषा-गणित में आकलन किस प्रकार किया जाए?

....

....

....

2. आकलन के दौरान किन-किन बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए?

....

....

....

हम सभी जानते हैं कि आकलन द्वारा बच्चों की प्रगति का अवलोकन किया जाता है ताकि उनके द्वारा की जाने वाली त्रुटियों की पहचान की जा सके एवं उन्हें सुधार हेतु अवसर दिया जा सकें। इस हेतु कुछ सावधानियाँ जो शिक्षक को रखनी होंगी -

- गतिविधियों, साधनों के प्रयोग को शिक्षक पहले स्वयं करके दिखाएं उसके बाद बच्चों से धीरे-धीरे करवाया जाए। यदि बच्चों से ना बने तो उनकी सहायता की जाए।
- बच्चों को क्रियाकलापों को दोहराने हेतु कई अवसर दिए जाएं, जब तक वे उसमें कुशल ना हो जाएं।
- गतिविधि के दौरान शिक्षक को सतत अवलोकन करते रहना चाहिए। साथ ही डायरी में नोट करना चाहिए कि बच्चे क्रियाकलापों को किस तरह कर पा रहे हैं।
- उनकी ज्ञानेंद्रियों की नियंत्रण क्षमता को देखें। भाषा में वे किस तरह अभिव्यक्त कर रहे हैं, स्पष्ट बोल पा रहे हैं कि नहीं, शब्दों के बीच विभिन्न ध्वनियों को पहचान पा रहे हैं या नहीं।
- गणित के प्रतीकों, अंकों, आकृतियों को पहचान पा रहे हैं।
- शून्य की पहचान, इकाई-दहाई की समझ बना पा रहे हैं।
- वस्तुओं को गिन पाना, समान आकृतियों की पहचान, वर्गीकरण कर पा रहे हैं या नहीं।

उपरोक्तत सभी बिन्दुओं पर नेतृत्वकर्ता/ शिक्षकों को बड़ी धैर्यता के साथ बच्चों के साथ नम्र व्यवहार करते हुए अवलोकन करना चाहिए। इस प्रकार शिक्षक को यह देखना है कि बच्चे प्रारंभिक स्कूल के हिसाब से पढ़ने और गणित संबंधी निपुणताओं को हासिल कर पा रहे हैं।

शिक्षक यह आकलन कर सकते हैं कि बच्चे ज्ञानेंद्रियों के साधनों के प्रयोग के दौरान, इंद्रिय अनुभव को तीव्र करके अपने अनुभव के क्षेत्र को बढ़ा रहे हैं या नहीं। वास्तविकता के साथ संबंध जोड़ पा रहे हैं या नहीं। चीजों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देख पा रहे हैं। उनकी शारीरिक गतियों में सुधार हो पा रहा है। उनकी एकाग्रता में विकास हो पा रहा है और नीति और सुंदरता भाव को बढ़ा पा रहे हैं। इसके साथ ही बच्चों की इंद्रियों में यदि दोष है तो उसको भी जानने में सहायता प्राप्त होगी। दैनिक जीवन के साधनों का अभ्यास करते समय अध्यापक इस बात का आकलन कर सकता है कि बालक चीजों को उन्हीं दैनिक साधनों के लिए प्रयोग में लाएँ जिनके लिए वह नियुक्त की गई है।

समेकन

इस भाग में हमने देखा कि पूर्व प्राथमिक शिक्षा में आकलन कैसे किया जाए। खेल-खेल में स्वतंत्र रूप से शिक्षकों को आकलन करना होगा। शिक्षक को निरपेक्ष भाव से आकलन करना चाहिए तभी बच्चों की वास्तविक प्रगति पता चल सकेगा। यह शिक्षक के प्रयासों की सफलता-असफलता का दर्पण है। बच्चे की प्रगति के मार्ग में बाधाओं को पहचान कर अनुगामी क्रियाओं को संचालित करना आवश्यक होगा। यदि बच्चा स्पष्ट उच्चारण नहीं कर पाता, अपने साथियों से हिल-मिल नहीं पाता, खेलता नहीं, शर्मीला है तो ऐसे बालकों की रुचि, आवश्यकता तथा क्षमता के अनुरूप शिक्षण योजना बनानी होगी। आकलन करते समय शिक्षकों को सावधान एवं सतर्क रहना होगा। शिक्षक को एक डायरी रखनी होगी उसमें प्रतिदिन बालक के व्यवहारों को नोट कर सकें। साथ ही नेतृत्वकर्ता प्रधानाध्यापक को भी सतत निगरानी एवं सहयोग देना अपेक्षित है।

आमतौर पर हम इस उम्र में बच्चों के विकास हेतु उनके स्वास्थ्य और पोषण पर ही ज्यादा ध्यान देते हैं जबकि बच्चे के संपूर्ण विकास और सीखने के कौशल के विकास पर अधिक ध्यान देना अपेक्षित है। क्योंकि यही वह समय है जो उनके भविष्य की नींव को तैयार करता है जिससे वे आगे चलकर प्राथमिक शिक्षा के साथ सांमजस्य स्थापित करने में सहज हो पाते हैं। इस अवस्था में बच्चों में असीम ऊर्जा होती है, उनकी इस ऊर्जा का उपयोग करने के लिए उन्हें विभिन्न गतिविधियों में शामिल होने के अवसर दिये जाने चाहिए, ताकि उनमें आत्मविश्वास, साझेदारी, अभिव्यक्ति की क्षमता जैसे सामाजिक-मानसिक गुणों का विकास हो सके।

इसी तरह शालाओं में नेतृत्वकर्ता के समक्ष जो चुनौतियां आ सकती हैं उस पर भी हम विस्तार से बात कर चुके हैं और इस हेतु एक नेतृत्वकर्ता को सभी क्षेत्रों की नियमित मॉनीटरिंग करना होगी। साथ ही सीखने-सिखाने के पर्याप्त अवसर एवं संसाधनों की व्यवस्था भी करनी होगी।

जैसा कि कई शोध बताते हैं, जो बच्चे शुरुआती कक्षाओं में पढ़ना-लिखना नहीं सीख पाते हैं उनके आगे जाकर ड्राप आउट हो जाने की सम्भावना बढ़ जाती है।

इस अवस्था में बच्चों को स्कूल की औपचारिक दिनचर्या से धीरे-धीरे परिचित होने तथा साक्षरता के मूलभूत सिद्धांतों (पढ़ने-लिखने), संख्या ज्ञान (गणित की संकल्पनाओं को समझना और उनका प्रयोग तथा सामाजिक और प्राकृतिक वातावरण की व्यवस्थित जानकारी के बारे में सीखने के लिए सहायता की आवश्यकता होती है)। ऐसे में शिक्षकों के लिए जरूरी है कि वे अपना लक्ष्य, कक्षा में परस्पर व्यवहार के लिए रणनीतियाँ तैयार करें, जो शिक्षक और बच्चों के बीच संबंधों को बेहतर बनाने में मदद करेगा।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा 2005, प्रारंभिक बालायावास्था शिक्षा, राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र

शिक्षकों के लिए लक्ष्य-पृष्ठ 49

- विकास के सभी क्षेत्रों में ज्ञान और कौशल का विकास करें।
- बच्चों के कैसे सीखें के बारे में सिखाएं।
- सीखने के वैयक्तिक पैटर्न और समय का सम्मान करें।
- वैयक्तिक अंतरों और सीखने की शैलियों को समझें।

कक्षा में परस्पर व्यवहार के लिए रणनीतियां (युक्तियां)-पृष्ठ 49

- मजबूत अनुभव प्रदान करें।
- आपसी व्यवहार से सिखाएं।
- सहयोगी शिक्षण को प्रोत्साहन दें।

- एकीकृत शिक्षण को प्रोत्साहित करने के लिए परियोजना पद्धति का प्रयोग करें।
- बच्चों की सक्रिय सहभागिता के लिए कार्य करें।
- भाषा पढ़ाने के लिए नाटकों का प्रयोग करें।

शिक्षक और बच्चों के बीच संबंध-पृष्ठ 49

- बच्चों को उनकी भावनाएं अभिव्यक्त करने का मौका दें।
- उनके संकट और जीत को साझा करें?
- उत्तरदायी वयस्कों की बच्चों तक पहुंच।

सन्दर्भ :

1. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005-3.10.1-प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा-पृष्ठ 74
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986-भाग 4
3. कोठारी आयोग की रिपोर्ट-भाग 2
4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020-भाग 1 व 2
5. पूर्व प्राथमिक पाठ्यचर्या- NCERT 2019
6. भारत का संविधान-राज्य के नीति निदेशक तत्व
7. Manual for pre primary class_LLF & UNICEF
8. Guideline for Design and Implementation of Early Learning Programmes_LLF& UNICEF
9. मारिया मॉन्टेसरी एवं शिक्षा के सिंद्धात
   Link – https://www.scotbuzz.org/2017/05/maria-montessori.html
10. माता मॉन्टेसरी के विचार व विधि-प्रो. एस.पी. कनल और पी.एस. कनल
11. शिक्षक संदर्शिका- शिशु शिक्षा प्रकोष्ठ राज्य शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
12. प्रांरभिक बाल्या वस्थु शिक्षा का राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र
13. निष्ठा-मॉड्यूल क्रमांक 15
14. https://hindi.edufever.com

जैसा कि मॉड्यूल के पहले भाग की शुरुआत में हमने कुछ सवालों को पढ़ा था और उसके सही जवाब पर निशान (✓) भी लगाया था। चलिए अब जांचते हैं कि जिन जवाबों को हमने चुना था वह सही हैं या नहीं।

1. प्रश्न 1 - सही विकल्प 3
2. प्रश्न 2 - सही विकल्प 4
3. प्रश्न 3 - सही विकल्प 3
4. प्रश्न 4 - सही विकल्प 4
5. प्रश्न 5 - सही विकल्प 2
6. प्रश्न 6 - सही विकल्प 1
7. प्रश्न 7 - सही विकल्प 1
8. प्रश्न 8 - सही विकल्प 3
9. प्रश्न 9 - सही विकल्प 2
10. प्रश्न 10 - सही विकल्प 4

लेखक का नाम
स्वाती बरखेड़कर (डाईट जबलपुर)
राधा मिश्रा (डाईट जबलपुर)
शीबा खान (शिक्षक पीपीटीआई)
प्री प्राईमरी ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट, जबलपुर, म.प्र.

मेंटर/ एक्सपर्ट का नाम
ज्योति भाटिया
पूर्व यूनिसेफ सलाहकार
फ्रीलान्स कंसलटेंट, भोपाल (म.प्र.)
मोबाइल- +91-9977464977
ई मेल- jyotibhatia81@gmail.com

❑ ❑ ❑

मॉड्यूल – व्यावसायिक शिक्षा

भाग – 1

खिलौने के शिक्षा शास्त्र पर अपनी समझ विकसित करना

भाग – 2

आत्मनिर्भर बनने की पहल – हस्तकला

भाग – 3

बच्चों को कार्य आधारित शिक्षा देकर उनको आर्थिक रूप से सक्षम बनाना

शीर्षक :
मध्यप्रदेश के विद्यालयों में व्यावसायिक शिक्षा की पहल

उद्‌देश्य : मॉड्यूल के इस भाग में पाठक समझ सकेगें कि किस प्रकार –

1. खिलौने के शिक्षा शास्त्र पर अपनी समझ विकसित करना।
2. व्यावसायिक शिक्षा द्वारा छात्रों को आत्मनिर्भर बनाना।
3. बच्चों को कार्य आधारित शिक्षा दे कर उनको आर्थिक रूप से सक्षम बनाना।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार कार्य केन्द्रित शिक्षा का निहितार्थ है कि बच्चों में उनके परिवेश, प्राकृतिक - संसाधनों तथा जीविका से संबन्धित ज्ञान आधारों और कौशलों को विद्यालयी व्यवस्था में गरिमा और मजबूती में बदला जा सकता है ।

इस मॉड्यूल के माध्यम से हम चाहते हैं कि बच्चे स्कूल की पढ़ाई के साथ-साथ व्यावसायिक कौशलों को सीख कर जीविका के लिए तैयार हो सके तथा देश को आर्थिक रूप से सक्षम बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाए । NCF 2005 के द्वारा यह प्रस्तावित किया गया है, कि हम चरणबद्ध तरीके से व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण के एक नए कार्यक्रम की ओर बढ़ें जिसे मिशन के रूप में तैयार किया जाए और लागू भी किया जाए। इसमें गांव के संकुल और ब्लॉक स्तर से लेकर उप जिला, जिला, नगर और महानगर तक व्यावसायिक शिक्षा तथा प्रशिक्षण केंद्र और संस्थानों की स्थापना शामिल हो। व्यवसायिक शिक्षा को एक सम्मानजनक और चुनने योग्य पाठ्यक्रम के रूप में बनाना चाहिए, न कि वर्तमान की तरह अंतिम विकल्प के रूप में, जैसा कि अभी वह है। पाठ्यक्रम तथा संस्थान समावेशी हो, उसमें कौशलों का विकास न केवल आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक कारणों से और ऐतिहासिक रूप से वंचितों बल्कि प्रतिकूल शारीरिक तथा मानसिक स्थिति वाले बच्चों के लिए भी सुनिश्चित किया जा सके ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी व्यावसायिक शिक्षा को प्रमुखता से स्थान दिया गया है, यह नीति 21 वी शताब्दी की पहली नीति है जिसका लक्ष्य हमारे देश के विकास के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करना है। **दुनिया की बदलती अर्थव्यवस्थाओं के कारण अधिक ज्ञान पर आधारित अर्थव्यवस्था में अब हर एक व्यक्ति को किसी भी विशेष कौशल में विशिष्ट (निपुण) होने की आवश्यकता है-**

इस शिक्षा नीति के अनुसार पेशेवरों को तैयार करने से जुड़ी शिक्षा के लिए यह अनिवार्य है कि पाठ्यक्रम में नैतिकता और सार्वजनिक उद्देश्य के महत्व का समावेश हो और इसके साथ ही उस विषय विशेष की शिक्षा और व्यावहारिक अभ्यास की शिक्षा को भी शामिल किया जाए। उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक

है कि व्यावसायिक विकास से जुड़ी शिक्षा बाकी विषयों से कटी हुई या अलग-थलग ना रहे। अतः इस नीति के अनुसार भाषाओं में प्रवीणता के अलावा इन कौशलों में वैज्ञानिक स्वभाव,साक्ष्य आधारित सोच, रचनात्मकता और नवीनता, सौंदर्यशास्त्र और कला की भावना, स्वास्थ्य और पोषण, शारीरिक शिक्षा, फिटनेस, स्वास्थ्य और खेल, सहयोग और साक्षरता, कोडिंग और कंप्यूटेशनल चिंतन, नैतिक तर्क, मानव और संवैधानिक मूल्यों का ज्ञान और अभ्यास,लिंग संवेदनशीलता, मौलिक कर्तव्य, नागरिकता कौशल और मूल्य, पर्यावरण संबंधी जागरूकता जिसमें पानी और संसाधन संरक्षण स्वच्छता और साफ-सफाई शामिल है।

आइये चिंतन करे कि

- किस प्रकार पाठ्यक्रम तथा संस्थान को समावेशी बनाया जा सकता है?
- व्यावसायिक विकास से जुड़ी शिक्षा बाकी विषयों से कटी हुई या अलग-थलग ना रहे इस हेतु आप एक नेतृत्व कर्ता के रूप में क्या-क्या कर सकते हैं ?

इसी कार्य को NCERT द्वारा निष्ठा प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत कला समेकित शिक्षा तथा पूर्व प्राथमिक शिक्षा को प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित किया गया है। कृषि शिक्षा और इससे संबंधी विषयों को पुनर्जीवित किया जाए जो कि स्थानीय ज्ञान, पारंपरिक ज्ञान और उभरती हुई तकनीकों को समझ सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार राष्ट्रीय कौशल योग्यता फ्रेमवर्क (NSQF) में प्रत्येक विषय को व्यवसाय व रोजगार के लिए अधिक विस्तार पूर्वक निर्मित किया जाएगा। इसके अलावा भारतीय मांगों को राष्ट्रीय श्रम संगठन द्वारा बनाए गए व्यवसायियों के अंतर्राष्ट्रीय मानक वर्गीकरण के साथ जोड़ा जाएगा। यह फ्रेमवर्क पूर्ववर्ती शिक्षा की आवश्यकता के लिए आधार प्रदान करेगा। इसके माध्यम से ड्रॉप आउट हो चुके बच्चों के व्यावहारिक अनुभव को फ्रेमवर्क के प्राथमिक स्तर के साथ जोड़कर उन्हें पुनः औपचारिक प्रणाली से जोड़ा जाएगा। क्रेडिट आधारित यह फ्रेमवर्क छात्रों को सामान्य से व्यावसायिक शिक्षा तक जाने को सुगम बनाता है।

वर्तमान में औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान(आईटीआई) में विभिन्न तकनीकी कोर्स में छात्रों को दक्ष किया जा रहा है जिसमें अधिकतर औद्योगिक क्षेत्र की मांग रहती है। जैसे आटोमोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स, मोटर रिवाईंडिंग, कंप्यूटर हार्डवेयर एंड नेटवर्किंग, इलेक्ट्रिकल, स्टेनोग्राफी आदि। इसके अतिरिक्त तकनीकी शिक्षा एवं कौशल विकास केंद्र विभाग के द्वारा औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में विभिन्न शॉर्ट टर्म कोर्स के माध्यम से छात्रों को विभिन्न कौशलों जैसे ड्राइविंग, शेफ, टेलरिंग, गार्डनिंग, मिस्त्री, कारपेंटर, गारमेंट, जनरल हाउस कीपिंग में भी प्रशिक्षण दिया जाता है ।

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना का शुभारम्भ वर्ष 2015 में बेरोजगार युवाओं को रोजगार के प्रशिक्षण देने के लिए किया गया है । इस योजना के अंतर्गत विभिन्न पाठ्यक्रमों में निशुल्क प्रशिक्षण प्रदान किए जा रहे हैं और उनकी योग्यतानुसार रोजगार भी प्रदान किया जा रहा है । PM KaushalVikasYojana 2021 का लाभ देश के 10वीं, 12वीं कक्षा ड्राप आउट (बीच में स्कूल छोड़ने वाले) युवा उठा सकते है। पीएमकेवीवाई के तहत प्रशिक्षण का निरीक्षण क्षेत्र कौशल परिषदों और संबंधित राज्य सरकार द्वारा किया जा रहा हैं। इसके अंतर्गत 40 प्रकार के क्षेत्रों जैसे स्किलकौंसिल फॉर पर्सन विथ डिसेबिलिटी कोर्स, हॉस्पिटैलिटी तथा टूरिज्म कोर्स, टेक्सटाइल्स कोर्स, टेलीकॉम कोर्स, सिक्योरिटी सर्विस कोर्स, रबर कोर्स, रिटेल कोर्स, पावर इंडस्ट्री कोर्स में प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है । विस्तृत जानकारी पीएमकेवीवाई की ओफिशियल वेब साइट http://pmkvyofficial.org/ पर देखी जा सकती है ।

इसी प्रकार राज्य शासन द्वारा मुख्यमंत्री कौशल संवर्धन योजना तथा मुख्यमंत्री कौशल्या योजना के अंतर्गत विभिन्न औद्योगिक एवं स्थानीय मांग पर आधारित रोजगार उन्मुखीप्रशिक्षण दिये जा रहे हैं। इस योजना में 15 साल से अधिक उम्र के महिला या पुरुष भाग ले सकते हैं। एनएसक्यूएफ पाठ्यक्रम के लिए भारत सरकार द्वारा प्रशिक्षण की अवधि 15 दिवस से लेकर 9 महीने अर्थात लगभग 100 से 1200 घंटे तक की होती है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम निःशुल्क है, इसके क्रियान्वयन हेतु आईटीआई कौशल विकास केंद्र, पॉलिटेक्निक, इंजीनियरिंग कॉलेज, कृषि इंजीनियरिंग कॉलेज तथा उच्च शिक्षा विभाग के विद्यालयों का चयन किया गया है। इसमें अर्ध सरकारी संस्थाएं तथा कुछ निजी संस्थाएं भी सम्मिलित है इसके अंतर्गत स्टेनोग्राफी, शीट मेटल वर्कर, प्लास्टिक प्रोसेसिंग ऑपरेटर, फिजियोथैरेपी टेक्निशियन, सोलर टेक्नीशियन, पेंटर, मैकेनिक मोटर व्हीकल, मैकेनिक कंप्यूटर हार्डवेयर, मैकेनिक डीजल इंजन, प्लेट मेकर कम इंपोस्टर, ऑटो बॉडी रिपेयर, इंटीरियर डेकोरेशन एंड डिजाइनिंग, इसी प्रकार मुख्यमंत्री कौशल्या योजना सिर्फ महिलाओं के लिए है जिसमें ब्यूटीशियन, सिलाई बुनाई, कंप्यूटर से जुड़े हुए विभिन्न कोर्स, हेल्थ केयर सिक्योरिटी, टूरिज्म एंड हॉस्पिटैलिटी, बैंकिंग फाइनेंशियल सर्विसेज और इंश्योरेंस जैसे कई कोर्स सम्मिलित हैं।

हम इस मॉड्यूल में शाला स्तर से ही स्थानीय स्तर पर शुरू किए जाने वाले व्यावसायिक कौशलों पर चर्चा कर रहे है।

भाग-1 :
खिलौने के शिक्षा शास्त्र पर अपनी समझ विकसित करना

उद्देश्य : मॉड्यूल के इस भाग में पाठक समझ सकेगें कि किस प्रकार –

1. खिलौने के माध्यम से बच्चों में सीखने की प्रवृत्ति बढ़ाना।
2. बच्चों में सकारात्मक व्यवहार एवं मूल्य विकसित करना।
3. बच्चों की कल्पना शक्ति,रचनात्मकता तथा कलात्मक कौशलों का विकास करना।

परिचय

खिलौने किसी भी समाज के विकास की महत्त्वपूर्ण कड़ी है। पारंपरिक खिलौने परंपरा और संस्कृति की जानकारी देते हैं, बच्चे इन्हीं के माध्यम से कई सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को ग्रहण करते हैं। आधुनिक खिलौने सोच एवं चिंतनशीलता को नए आयाम देते हैं। खिलौने बच्चों के सर्वांगीण विकास के साथ ही व्यक्तित्व निर्माण में मुख्य भूमिका निभाते हैं। नई शिक्षा नीति के अंतर्गत ईसीसीई और एफएलएन 3.0 में मुख्य रूप से खेल आधारित, गतिविधि आधारित और खोज आधारित शिक्षा को शामिल किया गया है- जैसे अक्षर, संख्या, गिनती, रंग, आकार, पर्यावरण के साथ-साथ, इंडोर एवं आउटडोर खेल ,पहेलियां और तार्किक सोच, समस्या सुलझाने की कला, चित्रकला, पेंटिंग अन्य दृश्य कला, शिल्प, नाटक कठपुतली,संगीत तथा अन्य गतिविधियों को शामिल करते हुए इसके साथ अन्य कार्य जैसे सामाजिक कार्य मानवीय संवेदना अच्छे व्यवहार, शिष्टाचार, नैतिकता व्यक्तिगत और सार्वजनिक स्वच्छता समूह में कार्य करना और आपसी सहयोग को विकसित करने पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 प्राथमिक शिक्षा के आरंभ से ही सीखने में नवाचार व शोध पर जोर देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के लक्ष्य के साथ ही टोयकथान (Toycathon) का लक्ष्य देश भर के 33 करोड़ छात्रों को नवीन कौशलों से जोड़ने का है। शिक्षा मंत्रालय ने कहा है कि इससे शिक्षा मंत्रालय के सहयोग से देश के सभी स्कूल कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के संकायों के लिए एक नया आयाम खुलेगा। केंद्रीय शिक्षामंत्री ने कहा कि यह पहली बार है जब स्कूली बच्चे विशेष रूप से दिव्यांग बच्चों के लिए भी नवाचार, डिजाइन और संकल्पना वाले खिलौने बनाएं जाएंगे।

वर्तमान में खिलौना इंडस्ट्री का विश्व में विशाल मार्केट है। हमारे देश को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने में खिलौने इंडस्ट्री का महत्त्वपूर्ण योगदान है, इसलिए खिलौने व्यवसाय से जुड़े कौशलों को सीखना तथा बढ़ावा देना हमारी महत्त्वपूर्ण जवाबदारी है।

> **'साहसे खलु श्रीःवसति' अर्थात साहस में ही श्री (समृद्धि) रहती है। ये Toys और Games हमारी मानसिक शक्ति, हमारी क्रिएटिविटी और हमारी अर्थव्यवस्था ऐसे अनेक पहलुओं को प्रभावित करते हैं। इसलिए इन विषयों पर बात करना बहुत महत्त्वपूर्ण है।**
>
> **माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी**

चिंतन कीजिए कि

- क्या खिलौने हमारे जीवन में विशिष्ट स्थान रखते है ?
- जरा याद कीजिए आप बचपन में किस तरह के खिलौने बनाते थे, क्या आज बच्चे उस तरह के खिलौने बनाते है ?
- ऐसा क्यों है कि हम खिलौनों से दूर और तकनीक के पास होते जा रहे है ?

हमारे देश में प्राचीन समय से ही खिलौनों का समृद्धशाली इतिहास रहा है। भारतीय संस्कृति में सिंधु घाटी की सभ्यता से ही खेलों और खिलौनों का प्रचलन रहा है। बिना किसी खर्च के मिट्टी, लकड़ी, कागज, कपड़े आदि के खिलौने उस समय बनाए जाते थे। जिनके माध्यम से छोटे से ही बच्चों को बहुत सी जानकारियाँ दी जाती थीं। खिलौनों में कई प्रकार की सामग्री प्रयुक्त होती है उदाहरण के लिए मिट्टी, लकड़ी, धातु, पुराने अनुपयोगी कपड़े, कागज की लुगदी पूर्ण धागे और फर वाले टेडी बियर आदि।

सिंधु घाटी सभ्यता से प्राप्त टेराकोटा से बने खिलौने

हमारी प्राचीन सिंधु सभ्यता से प्राप्त खिलौनों में बैल, बंदर, तबले,पशु पक्षियों की आकृतियां, मिट्टी की बनी पहियेदार गाड़ी बहुत प्रसिद्ध है। हमारे खिलौनों का इतिहास 4000 वर्ष से भी अधिक समय हो जाने के बाद भी, आज अपनी पहचान बना हुआ है। जिस प्रकार हमारे देश के विभिन्न प्रांतों का कल्चर विविधता लिए हुए है, उसी प्रकार खिलौनों में भी विविधता मिलती है जो उनकी सुंदरता में चार चांद लगाते है।

भारत के जिस क्षेत्र में जो साधन उपलब्ध होता है उसके अनुसार स्थानीय स्तर पर खिलौने बनाए जाते हैं, विद्यालय में विद्यार्थी भी इन खिलौनों से स्थानीय संस्कृति, कला शिक्षा से जुड़ जाता है। बंगाल, गुजरात और बिहार में कई तरह की सजावट के साथ चित्र वाले मिट्टी के खिलौने होते हैं। उड़ीसा के लकड़ी के चित्रवाले खिलौने, आंध्रप्रदेश के विजयवाड़ा के कोंडापल्ली खिलौने प्रसिद्ध है, जिनमें वहां का पूरा परिचय मिलता है। जैसे- खाना पकाना, दूध से दही व मक्खन मथ कर निकालना, ढोल बजाते हुए स्थानीय वेशभूषा से सजे हुए स्त्री पुरुष एवं बच्चों की आकृतियों के खिलौने, कर्नाटक के चेनपल्लम में रुचिकर चमकदार रंगों के लकड़ी के रंग बिरंगे घास और बालू से भी खिलौने बनते हैं जिसमें बिहार की सीक्की घास को रंग कर प्रयोग किया जाता है, हाथों से मोड़कर आकार देकर, पशु और पक्षियों और विभिन्न प्रकार की आकृतियों को बनाया जाता है, पुराने कपड़े के टुकड़ों से गुड़िया सहित रंग-बिरंगे आकार के खिलौने जिन पर गोटा, चमक, कांच,रंगीन धागों की कढ़ाई आदि से सजाया जाता है। राजस्थान में विशिष्ट प्रकार की जीवन शैली में कठपुतलियों द्वारा नृत्य नाटक से कई सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदेश दिए जाते हैं। तमिलनाडु के तंजावुर की गुड़िया, नातूनग्राम की गुड़िया, बनारसी लकड़ी के खिलौने बहुत प्रसिद्ध हैं।

ये चित्र गूगल से साभार लिए गए है।

बच्चे इनके माध्यम से अपनी जिज्ञासा व कल्पना का प्रयोग कर स्वयं के लिए खिलौने बनाते हैं, आपस में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा द्वारा खिलौनों को नए-नए प्रकार से नया रूप प्रदान करते हैं। तकनीकी व आधुनिकता ने हमारे परंपरागत खिलौने के महत्व को कम जरूर किया है, लेकिन ऐसे खिलौने आज भी प्रचलन में हैं।

वर्तमान में आधुनिक तकनीक एवं डिजिटल माध्यम से खिलौनों में बहुत बदलाव आया है। बिजली से चलने वाले खिलौना कार, हवाई जहाज, बोलते हुए गुड्डे गुड़िया या जानवरों के प्रतिरूप आदि के साथ ये खिलौने स्मार्ट भी हो गए हैं। वही खिलौने बच्चों का विज्ञान और तकनीकी से सहज एवं सरलता से परिचय करवाते हैं। खिलौने विज्ञान,गणित के साथ अन्य विषयों के सिद्धांतों को स्पष्ट कर ,सीखने को रुचिकर बनाते हैं।

खिलौना निर्माण कार्यशाला, शासकीय माध्यमिक विद्यालय, हतौड़ा, जिला-विदिशा।

भारत देश में आज खिलौने निर्माण का व्यापक असर असीम संभावना के साथ देखा जा रहा है। खिलौना उद्योग नई पीढ़ी के लिए नए द्वार खोल रहा है। मध्यप्रदेश की व्यावसायिक राजधानी इंदौर शहर के हातोद-देपालपुर क्लस्टर में खिलौना हब विकसित करने की योजना है, यहाँ पर पहला मेक इन इंडिया ब्रांड लॉन्च होना है। ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के लोग बहुत बेहतरीन तरीकों से इन खिलौना वस्तुओं का निर्माण करते हैं तथा इन निर्मित खिलौनों से स्वयं एवं अन्य लोगों को आत्मनिर्भर बनाते हैं।

आइए करके देखे

- आप अपने क्षेत्र के स्थानीय स्तर पर बनाए जाने वाले खिलौनों की सूची नीचे दी गई तालिका के अनुसार बनाएं तथा
  - I. उन्हें बनाने वाले कारीगरों को शाला में आमंत्रित करते हुए खिलौने किस प्रकार बनाए जाते है बच्चों से चर्चा कराये।
  - II. खिलौनों का प्रदर्शन तथा कुछ खिलौने का बच्चों से निर्माण भी कराएं।

क्रमांक	खिलौनों का प्रकार	बनाने में लगने वाला सामान	लागत	विशेषता

आइए चिंतन करें कि

क्रमांक	कथन	सहमत	असहमत	तर्क
1.	खिलौने मात्र मनोरंजन का साधन होते हैं			
2.	माध्यमिक स्तर पर खिलौने बनाने से संबन्धित कौशलों का विकास संभव नहीं हैं			
3.	स्टार्ट अप से खिलौना उद्योग को बढ़ावा मिला है			
4.	खिलौने बनाने से संबन्धित कौशलों में दिव्यांग बच्चों को सम्मिलित कर सकते हैं			
5.	सिंधु सभ्यता से प्राप्त खिलौनों से हाथ की कारीगरी का पता चलता है			

आइए चिंतन करें कि

हम जानते हैं कि खिलौनों का संसार अत्यंत विस्तृत है। हमें अपने विद्यालयों में खिलौने बनाने की प्रक्रिया को सम्मिलित कर बच्चों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित कर, शिक्षण को प्रभावी बनाकर सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को रोचक व सरल बनाना है। आवश्यकता इस बात की है कि हमारे अध्यापक कितनी कुशलता से विद्यार्थियों के साथ रुचिकर तरीके से खिलौने बनाते हैं। इसके द्वारा शैक्षिक सिद्धांतों व अवधारणाओं को बच्चों तक पहुंचाते हैं। बच्चे इन कार्यों को सीखते समय गणित, विज्ञान, भाषा, पर्यावरण, संस्कृति, नैतिकता, सृजन आदि को अपने तरीके से रुचि व प्रयोग सहित समझकर आत्मनिर्भर बन सकेंगे।

भाग-2
आत्मनिर्भर बनने की पहल - हस्तकला

उद्देश्य : मॉड्यूल के इस भाग में पाठक समझ सकेगें कि किस प्रकार

1. बच्चों की रचनात्मक अभिव्यक्ति को अवसर देना
2. हस्तकला के माध्यम से बच्चों में आत्मविश्वास/आत्मसम्मान की भावना विकसित करना।

परिचय

हस्तकला ऐसे कलात्मक कार्य को कहते हैं जो उपयोगी होने के साथ-साथ सजाने के काम आता है। हस्तकला मुख्यतः हाथ से या छोटे औजारों की सहायता से बनाया जाता है। भारतीय संस्कृति में हस्तकला का विशेष महत्व है, मशीनों के द्वारा बनाई गई वस्तुओं को हस्तकला के अंतर्गत नहीं लिया जाता है।

हस्तकला भारत की प्राचीन संस्कृति की विरासत और विशिष्टता है, भारतीय हस्तकला पूरे विश्व में अपनी एक अनूठी पहचान रखती है। शिक्षा के लक्ष्य के रूप में गांधी जी ने शिक्षा के दर्शन को प्रस्तुत करते हुए कहा है, 'शिक्षा से मेरा अर्थ मानव या बालक के शरीर, आत्मा और मन मस्तिष्क का बहुमुखी विकास करना है।' वे कहते थे कि शिक्षा से मेरा तात्पर्य एक ऐसी प्रणाली से है जो बालक एवं मनुष्य की समस्त प्रतिभाओं जिसमें शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास भी सम्मिलित है, का विकास करें। गांधीजी का मानना था कि केवल पढ़ना-लिखना अपने आप में पूर्ण शिक्षा नहीं है। लोगों को अपने हाथ से काम करना सीखना चाहिए उन्हें विभिन्न निपुणताओं और कौशलों को सीख कर उसे कलात्मक तरीके से व्यक्त करना आना चाहिए।

समाज सुधारक और स्वतंत्रता सेनानी कमलादेवी चट्टोपाध्याय एक सामाजिक कार्यकर्ता, कला और साहित्य की समर्थक थी। कमलादेवी को भारत की आजादी के संग्राम में योगदान के लिए याद किया जाता है। वह भारतीय कला के क्षेत्र में नवजागरण लाने वाली गांधीवादी महिला थी। उन्हें सामाजिक सेवा के लिए पद्मभूषण और मेगसेसे पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।प्रकृति की दीवानी कमला देवी ने ऑल इंडिया विमेन कॉन्फ्रेंस की स्थापना की तथा बहुत साहसिक रूप से राजनीति में काम किया, आपने नमक आंदोलन और असहयोग आंदोलन में भी हिस्सा लिया। आप पहली महिला थी जिन्होंने हाथकरघा और हस्तशिल्प को न केवल राष्ट्रीय बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई, बल्कि कमला देवी ने हाथकरघा और हस्तशिल्प उद्योग को एक नई दिशा देते हुए महिलाओं की सामाजिक आर्थिक भागीदारी को सुनिश्चित करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आपके नाम से मार्च 2017 में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर महिला बुनकरों एवं शिल्पियों के लिए कमलादेवी चट्टोपाध्याय राष्ट्रीय पुरस्कार भी शुरू किया गया है। उनके विचारों से प्रेरित होकर हम भी शिक्षा को हस्तशिल्प से जोड़ सकते हैं और विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बना सकते है।

इसी तरह की एक पहल मध्यप्रदेश के इंदौर जिले की एक शिक्षिका द्वारा की गई है जिसे आप पढ़ सकते हैं।

केस स्टडी

एक ऐसे ही स्कूल में जो इंदौर जिले के महू विकास खंड की बस्ती मालवीय नगर में स्थित है। यहां के शासकीय माध्यमिक शाला की शिक्षिका श्रीमती इन्दिरा उईके से शाला अवलोकन के दौरान मुलाक़ात हुई। जब हमने यहां के बच्चों के पोर्टफोलियो देखे तो पाया कि उनमें बच्चों के द्वारा बहुत सुंदर डिजाइन बनाई गई थी, तो कुछ बच्चों ने पर्यावरण से एकत्र की गई अनुपयोगी चीजों से सजावट के सामान और शाला में काम आने वाली वस्तुओं का निर्माण किया है। जब शाला के बच्चों से पूछा कि आपने ये सब कैसे और कहां से सीखा? बच्चों ने बताया कि ये सब उनकी इन्दिरा मेडमजी ने सिखाया है।

इंदिरा मैडम से हमने चर्चा की तब उन्होंने हमें बच्चों की पोर्टफोलियो तथा उनके स्वयं के द्वारा बनाए गए हस्तकला से निर्मित वस्तुओं को दिखाया गया जो अवलोकन के लिए भी प्रस्तुत है, इन सामानों को देखने से यह पता चलता है कि हमारे पर्यावरण में जो भी वस्तुएं उपलब्ध है उनमें से कुछ भी अनुपयोगी नहीं होता है। अगर हम उनका सही तरीके से उपयोग करना सीख जाएं तो प्रत्येक वस्तु को उपयोगी बनाया जा सकता है।

जैसा कि शिक्षिका इंदिराजी द्वारा प्लास्टिक की खाली बोतल ड्राई फ्रूट्स के छिलके जिसमें अखरोट के छिलके, पिस्ता के छिलके, पेड़ों से गिरने वाले छाल, पीपल के पत्ते, केले के पत्ते, पाम का तना, मिट्टी, माचिस की तिलिया, झाड़ू की तिलिया, स्ट्रॉ, बची हुई अनुपयोगी राखियां, मोती, फलालेन अथवा सूती कपड़ा, रेशमी कपड़ा, थर्माकोल आदि से इन सभी सामानों को बहुत कम समय एवं कम श्रम में बनाया गया है। शाला में आने वाले प्रत्येक बच्चे की सहभागिता इन चीजों को बनाने में होती है। बच्चों से चर्चा के दौरान पता चला कि कुछ बच्चों को मिट्टी के साथ काम करना अच्छा लगता है, तो कुछ बच्चों को कागज के साथ, वहीं कुछ बच्चे थर्माकोल पर या प्लास्टिक की बोतल पर अपना काम करते हैं। अर्थात बच्चे अपनी रूचि के अनुसार हाथों से चीजों का निर्माण करते हैं तथा अपनी-अपनी पोर्टफोलियो में उसे लगाते भी है। इससे स्पष्ट होता है कि जहां शिक्षा के उद्देश्यों में बच्चों के सर्वांगीण विकास पर बहुत प्रमुखता से बात की गई है वह सब हस्तकला से बहुत आसानी से संभव है । बच्चे आनंद से अपनी रुचि के अनुसार कार्य करते हैं तथा एक दूसरे से सीखते हैं। जिससे परस्पर प्रेम, सहयोग की भावना का भी विकास होता है।

चर्चा के बिन्दु

- शिक्षिका श्रीमती इन्दिरा उइके द्वारा हस्तकला से संबन्धित कौन-कौन से कार्य किए गए?
- आपके क्षेत्र में हस्तकला से संबन्धित कौन कौन सी वस्तुएं बनाई जाती हैं?

समेकन

हस्तकला में हाथ की कारीगरी होती है। इसकी मुख्य विशेषता है कि यह कम लागत में तैयार हो जाती है। जहां हम मनुष्य के सर्वांगीण विकास की बात करते हैं तो हस्तकला उसमें अपना प्रमुख स्थान रखती है, हस्तकला के माध्यम से मानव का भावनात्मक, शारीरिक, संवेगात्मक और आध्यात्मिक विकास तो होता ही है इसके साथ ही साथ इसकी मांसपेशियों के विकास में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः हस्तकला इन विशेषताओं के साथ-साथ समावेशी भी होती है। हम देखते हैं कि जो बच्चे दिव्यांग होते हैं वह भी हस्तकला के माध्यम से आत्मनिर्भर बन आत्मसम्मान से जीवन यापन करते हैं। हस्तकला के माध्यम से हमारी कई प्राचीन कलाएं आज भी जीवित हैं। जैसे कसीदाकारी, मीनाकारी, बाँस से बनाई वस्तुएं, क्ले आर्ट, मांड़ने (संजा), दीवारों पर चित्रकारी, धार्मिक सामाजिक कार्यों में उपयोग में आने वाली वस्तुएं जैसे दीयों पर मोती तथा मीनाकारी,वंदनवार, बटुए (छोटे पर्स), श्रृंगार का सामान आदि ।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (सही/गलत) में दीजिए :-

प्रश्न 1 छात्रों के शारीरिक मानसिक एवं सामाजिक विकास में हस्तकला की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

उत्तर (सही/गलत)

प्रश्न 2 हस्तकला से बनने वाली वस्तुओं में बहुत अधिक आर्थिक खर्च की आवश्यकता होती है ।

उत्तर (सही/गलत)

प्रश्न 3 पूरे भारत में हस्तकला से बनने वाली वस्तुओं में विविधता होती है।

उत्तर (सही/गलत)

प्रश्न 4 हाथ की कारीगरी से बनने वाले कार्यों में हम दिव्यांग बच्चों को सम्मिलित नहीं कर सकते हैं।

उत्तर (सही/गलत)

प्रश्न 5 कमलादेवी चट्टोपाध्याय के नाम से मार्च 2017 में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर महिला बुनकरों एवं शिल्पियों के लिए कमलादेवी चट्टोपाध्याय राष्ट्रीय पुरस्कार शुरू किया गया है।

उत्तर (सही/गलत)

भाग-3
बच्चों को कार्य आधारित शिक्षा दे कर उनको आर्थिक रूप से सक्षम बनाना

उद्देश्य: मॉड्यूल के इस भाग में पाठक समझ सकेगें कि किस प्रकार

1. विधार्थियो में कार्य आधारित शिक्षा के महत्व की समझ विकसित करना।
2. विभिन्न व्यवसाय में कार्य करने वाले लोगों एवं उनके द्वारा किए गए कार्यों के बारे में जानना।

परिचय

भारत में आधुनिक शिक्षा का मूल स्त्रोत गुरुकुल शिक्षा व्यवस्था से रहा है। प्राचीन समय में विद्यार्थी गुरुकुल से शिक्षा प्राप्त करते थे तथा वहां पर संबंधित ज्ञान के साथ बहुत सी विधाएं एवं कौशल सीखते थे। भारत में व्यावसायिक शिक्षा कक्षा 1 से 8 वीं तक कार्यानुभव या समाज उपयोगी उत्पादक कार्य एस. यू. पी. डब्ल्यू. (Socially Useful Productive Work) के माध्यम से शुरू की गईं थी। समग्र शिक्षा के तहत यह कक्षा 6 से 8वीं तक पूर्व व्यवसायिक शिक्षा का एक स्वरूप है। जिसके अंतर्गत बच्चों को विभिन्न प्रकार के कौशलों से संबन्धित कार्य सिखाये जाते थे।

व्यावसायिक शिक्षा में विभिन्न प्रकार के कौशलों के विकास पर आधारित पाठ्यक्रम है जिनके द्वारा बच्चों को अध्यनगत रूचि के साथ आत्मनिर्भर बनाने हेतु आधार तैयार किया गया है। इस पाठ्यक्रम में राजमिस्त्री, बढ़ई, नलसाज, ब्यूटीशियन, खिलौने बनाना, इलेक्ट्रिशियन, टेलरिंग आदि कोर्स हैं। हम इस मॉड्यूल में कार्य आधारित (ब्यूटीशियन) शिक्षा द्वारा माध्यमिक स्तर के बच्चों में समझ विकसित करने पर चर्चा करेगें।

सौन्दर्य सेवाओं का व्यापार बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा है, 2012-13 में भारत में कार्य आधारित बाजार का अनुमानित आंकड़ा 41.224 करोड़ रु. है, इसी प्रकार 2017-18 में यह आंकड़ा 50.370 करोड़ रु. है। कार्य आधारित शिक्षा में एक हिस्सा हेयर स्टाइल का है। अगले चरण में यह ब्राइडल मेकअप से जुड़ता है। इससे पहले वर्षो में केवल यह दुल्हन व दूल्हा के शादी के समय और उनके साथी रिश्तेदार इसी प्रकार की सेवा लेते थे, पर अब युवाओं में इसकी मांग दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

आजकल के आधुनिक समाज में हम सभी अपने सौंदर्य को लेकर सजग हो गए है। ब्यूटी पार्लर ,सेलून,स्पा जाने वाले लोगों में लगातार बढ़ोतरी हो रही है, जिससे सौंदर्य के क्षेत्र में रोजगार के अवसर भी बढ़ रहे हैं। एन. एस. डी. ए. की रिपोर्ट के अनुसार इस क्षेत्र में 20 प्रतिशत की दर से सालाना बढ़ोतरी हो रही है। सौंदर्य सेवाओं का लाभ लेने हेतु प्रशिक्षित स्टॉफ की आवश्यकता है। इसमें महिला और पुरुष दोनों के रोजगार के अवसर बढ़े हैं। सौंदर्य क्षेत्र में आपकी रचनात्मकता एवं मौलिकता के लिए बहुत अधिक संभावना है।

आप अपने आस पास के क्षेत्र में कार्य आधारित कौशलों को पहचान कर उनकी सूची बनाए तथा विचार कीजिए कि क्या ये कौशल बच्चों को सिखाये जा सकते हैं?

शासकीय कन्या अहिल्या आश्रम क्रमांक 1 इंदौर की छात्राएं कार्य आधारित कौशल सीखते हुए।

आइए विचार करें

- हमारे जीवन में कार्य आधारित कौशलों का क्या महत्व है?
- क्या कार्य आधारित कौशलों को समावेशी बनाया जा सकता है ?

केस स्टडी

आइए, हम एक प्रयास से समझें। सुमन की बहन के विवाह पर सुमन अपने परिवार के साथ बहुत खुश थी। विवाह के नजदीक आते -आते कई तैयारियां हो रही थीं जिसमें वस्त्र, आभूषण, द्वार रंग रोगन, दीवारों की सजावट, तोरण, मेंहदी, रंगोली आदि सभी तैयारियां जोरों पर थीं। विवाह के एक दिन पूर्व वह अपनी बहन के साथ ब्यूटी पार्लर गई तथा उसने विभिन्न तैयारियों के साथ दुल्हन की सजावट कार्य को होते देखा। अब कई प्रश्न उसके मस्तिष्क में उठने लगे, फिर उससे रहा नहीं गया। तभी वह अपनी बहन से जिज्ञासावश प्रश्न करती है, 'दीदी यह सब क्या है?' उसकी दीदी कहती है- विवाह के समय सभी तैयारियों के साथ दुल्हन को सुन्दर और आकर्षक दिखने के लिए ब्यूटी टेक्नीशियन की आवश्यकता होती है तथा वह विभिन्न प्रकार के तकनीकी ज्ञान द्वारा दुल्हन को तैयार करती है। इसमें चेहरे पर फेशियल, आई ब्रो को आकार देना, केश सज्जा, केश डिजाइन आदि तकनीकी ज्ञान द्वारा सुन्दर मोहक बनाया जाता है, जिसे विवाह एवं अन्य अवसरों के योग्य बनाया जाता है।

सुमन यह सभी कार्य होते देखती है, फिर वह ब्यूटी टेक्नीशियन से प्रश्न करती है, कि 'मेम आपने यह शिक्षा कहां से प्राप्त की है?' तब टेक्नीशियन द्वारा बताया जाता है कि शिक्षा के साथ साथ यह कोर्स भी किया जा सकता है, इसके अंतर्गत विभिन्न कोर्स होते हैं। जैसे ब्यूटी पार्लर या सेलून, हेयर स्टाइल, उत्पादों की बिक्री, कायाकल्प

केंद्र, फिटनेस और स्लिमिंग, अल्टरनेटिव थेरेपी आदि भी आते हैं। हम अपनी रुचि व क्षमता के अनुसार इस क्षेत्र में करियर चुनकर शिक्षा प्राप्त कर सकते है। सुमन पुनः प्रश्न करती है, 'यह कोर्स कौन सी कक्षा से प्रारम्भ होता है?' तब ब्यूटी टेक्नीशियन कहती है, 'विभिन्न चरणों में इस कोर्स की व्यवस्था है। यह सभी जानकारी अपने विद्यालय के शिक्षक द्वारा प्राप्त की जा सकती है।'

उपरोक्त काल्पनिक चित्रण द्वारा समझाने का प्रयास किया गया है कि, व्यवसायिक शिक्षा के लक्षित उद्देश्यों को प्राप्त करने में ब्यूटी पार्लर तथा वेलनेस भी एक अहम भूमिका निभाता है। नई शिक्षा नीति में भीयही बताया गया है कि इस प्रकार हम शिक्षा के साथ विद्यार्थियों को रोजगार आधारित प्रशिक्षण भी दें, जिसमें उच्चतर माध्यमिक के साथ-साथ माध्यमिक स्तर के बच्चे भी सम्मिलित हों।

शा. कन्या अहिल्या आश्रम क्रमांक 2 पोलो ग्राउंड इंदौर की छात्राएं कार्य आधारित कौशल सीखते हुए।

समेकन

सौंदर्य और वेलनेस क्षेत्र बहुत तेजी से बढ़ रहा है। आज भारत में भी यह एक महत्त्वपूर्ण उद्योग है। यह धीरे-धीरे रोजगार प्रदान करने वाला महत्वपूर्ण क्षेत्र बन गया है। बदलते हुए परिवेश में भारतीय उपभोक्ताओं के रहन-सहन के स्तर में भी बदलाव आया है। सौंदर्य और वेलनेस उद्योग की मांग के साथ कई छोटी-बड़ी कंपनियों ने भी इस उद्योग की ओर रुख कर लिया है अतः प्रशिक्षित ब्यूटी थैरेपिस्ट की मांग बहुत बढ़ गई है। व्यावसायिक शिक्षा में ब्यूटीशियन का पाठ्यक्रम शामिल करके विद्यार्थियों को स्वरोजगार हेतु आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है। यह समय की मांग है कि हम इस क्षेत्र में भी विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करें। बहु कौशल गतिविधियों से अन्य बातों के साथ-साथ सौंदर्य मूल्य, सहयोग, टीमवर्क कच्चे माल का बेहतर उपयोग आदि को भी प्रोत्साहन मिलेगा।

- आइए अपने छात्रों को अपने क्षेत्र के औद्यौगिक प्रशिक्षण संस्थान(आईटीआई) और ब्यूटी एंड वेलनेस सेंटर का भ्रमण कराएं तथा छात्रों के अनुभवों को आपस में साझा करें ।

निम्नलिखित प्रश्नों के योग्य विकल्प बताइए -

प्रश्न 1- व्यावसायिक शिक्षा द्वारा बच्चों में गुणों का विकास होता है -

(अ) नेतृत्व (ब) प्रशिक्षक (स) व्यावसायिक (द) सामाजिक

प्रश्न 2 -व्यावसायिक शिक्षा द्वारा बच्चे बनेंगे -

(अ) सक्रिय (ब) आत्मनिर्भर (स) परिष्कृत (द) उद्यमी

प्रश्न 3 - व्यावसायिक शिक्षा को विज्ञान, भाषा, सामाजिक विज्ञान विषयों से -

(अ) हटाया गया है (ब) जोड़ा गया है (स) संशोधित किया गया है (द) उपरोक्त से कोई नहीं

प्रश्न 4 - भारत में व्यावसायिक शिक्षा की शुरुआत हुई -

(अ) विद्यालय से (ब) घर से (स) गुरुकुल से (द) महाविद्यालय से

प्रश्न 5 - व्यावसायिक शिक्षा विधार्थियों को तकनीकी क्षेत्रों के पाठ्यक्रमों हेतु अवसर प्रदान करती है -

(अ) सहमत (ब) पूर्णतः सहमत (स) असहमत (द) कोई नहीं

समग्र समेकन

स्वाधीन भारत में नीति निर्माताओं द्वारा महात्मा गांधी के शैक्षिक दर्शन 'नई तालीम' को स्वीकार करते हुए बच्चों में बचपन से ही आत्मनिर्भरता व आत्मसम्मान के भाव को विकसित करने पर ज़ोर दिया है। उत्कृष्टता के साथ शिक्षा के लक्ष्य को पाने के लिए तथा देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने हेतु माध्यमिक स्तर से ही व्यावसायिक शिक्षा के कौशलों को सिखाने पर हमने इस मॉड्यूल में चर्चा की है। इसमें हस्तकला, खिलौने बनाना तथा ब्यूटीशियन एवं वैलनेस को सम्मिलित किया है। इसके अतिरिक्त भी अनेक कौशल हैं जो आई.टी.आई. में सिखाए जा रहे हैं, जैसे इलेक्ट्रिशियन, प्लंबिंग, कोडिंग, प्रोग्रामिंग, टेलरिंग, होम डेकोरेशन, गार्डनिंग इत्यादि।

हम जानते हैं कि खिलौनों का संसार अत्यंत विस्तृत है। हमें अपने विद्यालयों में खिलौने बनाने की प्रक्रिया को सम्मिलित कर बच्चों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित कर, शिक्षण को प्रभावी बनाकर सिखने सीखने की प्रक्रिया को रोचक व सरल बनाना है। इसी प्रकार हस्तकला भी हमारे देश की प्राचीनतम कलाओं में से एक है, आवश्यकता इस बात की है कि हमारे अध्यापक कितनी कुशलता से विद्यार्थियों के साथ रुचिकर तरीके से खिलौने बनाते हैं, हस्तकला पर आधारित वस्तुओं का निर्माण करते हैं। इसके द्वारा शैक्षिक सिद्धांतों व अवधारणाओं को बच्चों तक पहुचांते है। बच्चे इन कार्यों को सीखते समय गणित, विज्ञान, भाषा, पर्यावरण, संस्कृति, नैतिकता, सृजन आदि को अपने तरीके से रुचि व प्रयोग सहित समझकर आत्मनिर्भर बन सकेंगे। आवश्यकता यह है कि हम अपने बच्चों की रुचि को पहचान कर उसके झुकाव को उचित कौशल से जोड़कर व्यावसायिक प्रशिक्षण की राह तक ले जाएँ।

संदर्भ : -

a. मानव संसाधन विकास मंत्रालय 1986 राष्ट्रीय शिक्षा नीति

b. मानव संसाधन विकास मंत्रालय 2020 राष्ट्रीय शिक्षा नीतियां

c. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005

d. केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड http://cbse.nic.in

e. कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय http://www.skilldevelopment.gov.in

f. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद http://ncert.nic.in

g. प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना http://pmkvyofficial.org/

h. मुख्यमंत्री कौशल संवर्धन योजना तथा मुख्यमंत्री कौशल्या योजना

i. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद की पुस्तक सिंधु घाटी की कलाएँ

(https://ncert.nic.in/te&tbook/pdf/khfav®w.pdf)

लेखक का नाम

ममता सक्सेना

डाईट बिजलपुर, इंदौर, म.प्र.

मेंटर/ एक्सपर्ट का नाम

सज्जाद अहमद कुरैशी

मोबाइल- +91-8871427955

उच्च माध्यमिक शिक्षक (लेक्चरर) भौतिक शास्त्र

शासकीय मलक कन्या उमावि, शाजापुर

जिला-शाजापुर

ई मेल- sajjadsrgrsk55@gmail.com

श्री शैलेंद्र आचार्य

शिक्षक

शासकीय हायर सेकंडरी स्कूल, डिगा व माली, मंदसौर

मोबाइल- +91-9753452233

ई मेल- shailendrasrgrsk93@gmail.com

❑ ❑ ❑

मॉड्यूल – मानसिक स्वास्थ्य

भाग – 1

मानसिक स्वास्थ्य की अवधारणा एवं महत्त्व

भाग – 2

मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में परिवार विद्यालय एवं समुदाय की भूमिका

भाग – 3

विद्यालय में मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के तरीकों एवं नवाचारों का विवरण

शीर्षक :
विद्यालयों में मानसिक स्वास्थ्य की अवधारणा मध्यप्रदेश के परिप्रेक्ष्य में

मॉड्यूल का क्षेत्र- विद्यालयों में मानसिक स्वास्थ्य की अवधारणा

उद्देश्य :

1. मानसिक स्वास्थ्य के बारे में जागरूक हो सकेंगे।
2. विद्यालयों में मानसिक स्वास्थ्य के महत्व को संबोधित कर सकेंगे।
3. प्रधानाध्यापक, परिवार एवं समुदाय की भूमिका एवं जिम्मेदारियों को पुनः परिभाषित कर सकेंगे।
4. विद्यालय में मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के तरीको एवं नवाचारों को लागू करने में सहयोग प्रदान कर सकेंगे।

की–वर्ड– मानसिक स्वास्थ्य,परिवार, समुदाय, विद्यालय, परामर्शदाता, तनाव

मानसिक स्वास्थ्य

स्कूल और परिवार महत्त्वपूर्ण सामाजिक इकाइयां हैं, जो सभी व्यक्तियों के स्वास्थ्य और कल्याण के साथ जुड़ी हुई हैं। विद्यालयों की प्रमुख जिम्मेदारी है कि वे विद्यार्थियों के शारीरिक, सामाजिक और मानसिक स्वास्थ्य को प्रोत्साहित करें और इन्हें बेहतर बनाएं। उभरती चुनौतियों के कारण यह जरूरी हो गया है कि स्कूल विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं पर ध्यान केंद्रित करें और उनके समग्र कल्याण का ध्यान रखें। समय पर पहचान और रोकथाम अनिवार्य रूप से विद्यालय वातावरण को सुरक्षित बना सकते हैं।

इस मॉड्यूल में आपको विद्यार्थियों के विभिन्न विकासात्मक चरणों में उनकी तत्काल देखभाल के लिए माता-पिता, विद्यालयों, शिक्षकों, काउंसलर, विशेष शिक्षकों एवं समुदाय की भूमिका और महत्व को संरेखित करने का प्रयास किया गया है। पूरी आशा है कि इससे प्रधानाध्यापकों को अपने विद्यालयों में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु मार्गदर्शन मिलेगा।

मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने और विद्यार्थियों के कल्याण के लिए नवाचार के तरीकों और सर्वोत्तम प्रथाओं को लागू करना।

भाग - 1 :
मानसिक स्वास्थ्य की अवधारणा एवं महत्त्व

मानसिक स्वास्थ्य की अवधारणा:

हमारे देश में मानसिक स्वास्थ्य और मनोसामाजिक कल्याण सबसे उपेक्षित क्षेत्रों में से एक है। राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य सर्वेक्षण 2016 दर्शाता है कि हमारे देश में ऐसे लगभग एक सौ पचास मिलियन नागरिक हैं जिन्हें मानसिक स्वास्थ्य कल्याण के लिए देखभाल और सहायता की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त, यह पता चला कि इनमें से 70 से 90 प्रतिशत लोग सही समय पर गुणवत्ता युक्त सहायता प्राप्त नहीं कर सके।

मानसिक स्वास्थ्य की परिभाषा:

मानसिक स्वास्थ्य के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों द्वारा अनेक परिभाषाएं दी गई हैं। इनमें से कुछ प्रमुख परिभाषाओं को निम्न प्रकार से बतलाया गया है-

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार, मानसिक स्वास्थ्य एक ऐसी स्थिति है, जिसमें व्यक्ति को अपनी क्षमताओं का एहसास होता है। इस स्थिति में व्यक्ति दूसरों के साथ सकारात्मक तरीके से बातचीत कर सकता है। साथ ही तनाव की समस्या से निपटने की क्षमता भी रखता है। **सम्पूर्ण व्यक्तित्व की पूर्ण एवं सन्तुलित क्रियाशीलता को मानसिक स्वास्थ्य कहते हैं।**

अन्य शब्दों में मनुष्य द्वारा वातावरण से पर्याप्त समायोजन करने की योग्यता हैं। मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ दैनिक जीवन में भावनाओं, इच्छाओं, महत्वाकांक्षाओं एवं आदर्शों में संतुलन बनाए रखने की योग्यता है। इसका अर्थ जीवन की वास्तविकताओं का सामना करने तथा उनको स्वीकार करने की योग्यता है।

मानसिक स्वास्थ्य क्यों आवश्यक है?

- मानसिक रोगों तथा विचारों से अपने को बचाना।
- मानसिक तनाव से बचाव करना।
- मानसिक रोगों का प्रारंभिक उपचार करना।
- नकारात्मक सोच समाप्त कर भावनात्मक सोच उत्पन्न करना।
- आत्मविश्वास जाग्रत करने के अवसर प्रदान करना।
- मानसिक रोग के उपचार हेतु उपयोगी विधियों को प्रयोग में लाना।
- व्यक्तित्व को गतिशील बनाना।

मानसिक स्वास्थ्य संकेतक :

- मनोवैज्ञानिक, भावनात्मक बौद्धिक और आध्यात्मिक रूप से विकास।
- पारस्परिक रूप से संतोषजनक संबंधों की शुरुआत, विकास और इन्हें बनाए रखना।
- एकांत और इसका आनंद लेना।
- खेल-कूद में भाग लेना और सीखना।
- सही और गलत की भावना विकसित करना।
- समस्याओं को हल करना और उनसे सीखना।

मानसिक कठिनाइयों से जूझ रहे बच्चे शिक्षण-प्रकिया तथा सामान्य व्यवहार में शिक्षक, अभिभावक एवं मित्रों के लिए नई-नई कठिनाइयाँ पैदा करते है। चूँकि इस प्रकार की अनेक कठिनाइयों का मूल कारण बालक की मानसिक परेशानी है, जिससे उनका संपूर्ण व्यक्तित्व, उसकी कार्यप्रणाली तथा व्यवहार प्रभावित होता है। सीधी सी बात है जिसका मन स्थिर नहीं रहता है, वह हर जगह नई-नई समस्याएं उत्पन्न करते हैं। मानसिक रूप से अस्वस्थ बालक में निम्न समस्याएँ देखी जा सकती हैं -

1. व्यवहारगत समस्याएं :-

- विद्यार्थियों का आपस में मित्रवत व्यवहार न होना।
- बोलने,बैठने व समूह कार्य करने में व्यावहारिक कठिनाई होना।

2. विद्यार्थियों के समायोजन की समस्याएं :-

- कक्षा के शैक्षिक वातावरण से समायोजन न कर पाना।
- झूठ बोलना, लड़ना, झगड़ना आदि।
- घर व शाला के परिवेश में समायोजन में कठिनाई।

3. विद्यार्थियों के सीखने-सिखाने की समस्याएं :-

- सीखने की प्रकिया मंद होना।
- कक्षा तथा गृह कार्य नियमित न करना।
- कक्षा-अंतः क्रिया में भाग न लेना।

नेतृत्वकर्ता को शाला में प्रत्येक समस्या एवं विद्यार्थियों को चिन्हित कर सूची बनाना चाहिए।

हम सभी को विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति, प्रवृत्ति आदि की जानकारी होनी चाहिए। वातावरण एवम् वंशानुक्रम का भी विद्यार्थियों के सीखने तथा व्यवहार पर सीधा प्रभाव पड़ता है। ये व्यवहार और आदतों में अपनी पुरानी शैली नहीं भूल पाते हैं। अतः इन विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य में अपेक्षित सुधार कर सीखने-सिखाने की प्रकिया को बढाया जा सकता है।

1.1 मानसिक अस्वस्थता को समझना-

मानसिक अस्वस्थता की वजह से कार्य क्षमता कम होने से अनमने व चिड़चिड़े हो जाते है। कुंठा व दबाव के कारण मानसिक परेशानी देखी जा सकती है। जिससे शिक्षण के विभिन्न क्षेत्रो जैसे -

1. कक्षा शिक्षण-

- शाला में पाठ्य सामग्री न लाना, गृह कार्य न करना, नकल करना, आदेशों को न मानना, कोलाहल व शरारत करना, कक्षा से भाग जाना आदि।

2. सांस्कृतिक कार्यक्रम-

- कार्यक्रमों में भाग न लेना, उपस्थित न होना,
- तैयारी न करना।

3.खेलकूद संबंधी गतिविधियां-

- नियमित अभ्यास न करना,खेल-सामग्री की तोड़-फोड़ करना,साथियों से लड़ना- झगड़ना तथा अन्य अवांछित कार्य आदि।

1. विद्यालयों में मानसिक स्वास्थ्य के प्रोत्साहन की आवश्यकता -

विद्यार्थियों की शारीरिक और मनोवैज्ञानिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए, विद्यालयों में मानसिक स्वास्थ्य सेवा और सहायता की उपलब्धता पहला कदम है। मानसिक स्वास्थ्य के दायरे में भावनात्मक, व्यावहारिक और सामाजिक कल्याण को शामिल किया जाना चाहिए। मानसिक स्वास्थ्य की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता 'अनुकूलनशीलता', दैनिक जीवन की चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना करने की क्षमता है। इसलिए विद्यालयों में विधार्थियों को सुरक्षित वातावरण देना महत्वपूर्ण है।

वर्तमान समय की आवश्यकता का कारण: शोध बताते हैं कि पांच में से लगभग एक किशोर तनाव, चिंता, धमकाने, अधिगम निःशक्तता शराब और मादक द्रव्यों के सेवन जैसी मानसिक स्वास्थ्य समस्या का सामना करता है। मानसिक जटिलताओं के प्रति उपेक्षा भाव और गलत अवधारणाओं की वजह से बड़ी संख्या में विद्यार्थियों पर ध्यान नहीं दिया जाता और उन्हें आवश्यक देखभाल नहीं मिल पाती है। इसलिए, स्कूली विद्यार्थियों के सामने आने वाली मानसिक स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों का समाधान करने के लिए व्यापक जागरूकता होना जरूरी है।

प्रशिक्षित व्यावसायिकों की आवश्यकता: स्कूल काउंसलरों की आवश्यकता का एक कारण है कि, इन्हें विशेष रूप से विद्यार्थियों और किशोरों के समक्ष आने

वाली व्यावहारिक और भावनात्मक चुनौतियों से निपटने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। इन शिक्षकों में विद्यार्थियों के संघर्ष एवं बाल विकास को समझने की व्यावहारिक क्षमता होती है।

प्रशिक्षण संस्थानः

a. नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेंटल हेल्थ एण्ड न्यूरो साइंसेस (निमहंस), बेंगलूरू

b. टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ़ सोशल साइंस, मुंबई

निष्कर्ष :-

विद्यार्थियों और विद्यालयों की शारीरिक और मनोवैज्ञानिक सुरक्षा को बेहतर बनाने के लिए विद्यालयों में ऐसा वातावरण बनाना महत्त्वपूर्ण है जो विद्यार्थियों को अपनी सुरक्षा के बारे में जागरूक करने में समर्थ हो। स्कूल के मानसिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता विद्यार्थियों की अधिक गहन या चल रही जरूरतों की पहचान करते हैं और इन पर सहयोग प्रदान करते है।

भाग - 2 :
परिवार, विद्यालय एवं समुदाय की भूमिका

2.1 परिवार की भूमिका :

परिवार वह पहली समाजीकरण संरचना है जिसमें विद्यार्थियों को दुनिया से परिचित किया जाता है। यह विद्यार्थियों के लिए एक महत्त्वपूर्ण आधारशिला है क्योंकि लगाव, भावनाएं, व्यक्तित्व लक्षण, व्यवहार परिवार से उत्पन्न होते हैं। भोजन की प्राथमिकता से लेकर रुचि और सामाजिक संपर्क तक सभी इस एक इकाई पर निर्भर करते हैं।

सामाजीकरण की अगली संरचना स्कूल है। यह समग्र विकास के लिए अधिकाधिक अवसर और मनोवैज्ञानिक दायरा प्रदान करता है।

विकासात्मक दृष्टिकोण से समुदाय का एक व्यापक अर्थ है। इसमें परिवारों और आस-पड़ोस द्वारा दी गई मनोसामाजिक सहायता भी हो सकती है। इस समुदाय में शिक्षक भी शामिल होते हैं।

संक्षेप में, इसमें विभिन्न स्थान, व्यक्ति शामिल हैं, जिनसे विद्यार्थी अपनापन महसूस करते हैं और अपनेपन की भावना रखते हैं।

विद्यार्थियों का रिश्ता परिवार से शुरू होता है और फिर विद्यार्थी धीरे -धीरे बाहर के लोगों को शामिल करता है। शिक्षक इस रिश्ते का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा हैं। विशेष रूप से, परिवार, स्कूल और समुदाय मिलकर विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण के लिए काम करते हैं और उसके पालन-पोषण में बराबर के हिस्सेदार होते हैं।

- अभिभावक-विद्यार्थियों के रिश्ते जटिल हो सकते हैं। यदि विद्यार्थी भावनात्मक और व्यवहार संबंधी कठिनाइयों का सामना कर रहा है तो कई बार माता-पिता के लिए देखभाल करना मुश्किल हो सकता है।
- माता-पिता को ध्यान और धैर्य रखना चाहिए।
- नियमित रूप से विद्यार्थियों के साथ गुणात्मक समय बिताना चाहिए और संभावित हस्तक्षेपों के बारे में काउंसलरों और अन्य मानसिक स्वास्थ्य व्यावसायिकों से परामर्श करना चाहिए।

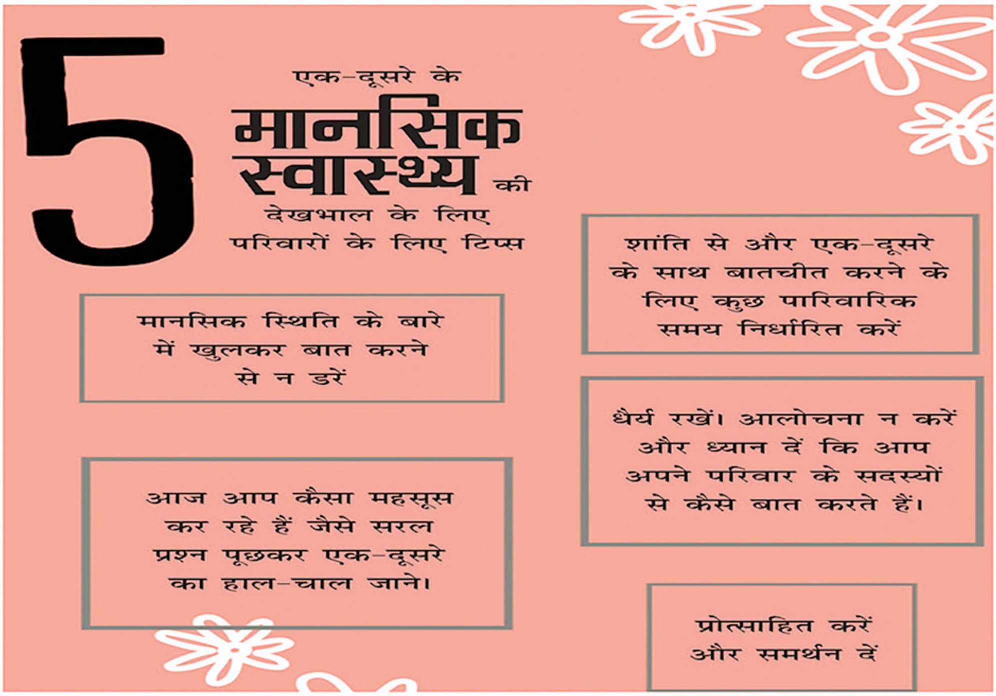

2.2 विद्यालय की भूमिका :

सभी विद्यार्थी स्कूल जाते हैं और उस परिवेश में वे हर दिन 6-7 घंटे का समय सीखने में बिताते हैं। इसलिए स्कूली पाठ्यचर्या में मानसिक स्वास्थ्य को शामिल करने से विद्यार्थियों के कल्याण पर काफी प्रभाव पड़ सकता है। वह स्कूल जो लगातार अपने विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने और उनके कल्याण के लिए जागरूक प्रयास करता है, वह जीवन जीने और सीखने के लिए एक स्वस्थ व्यवस्था और अपनी क्षमता को मजबूत करता है। पिछले दशक में, विद्यालयों में हिंसा, बदमाशी, मादक द्रव्यों के सेवन, भेदभाव से निपटने और स्वस्थ अनुशासन बनाए रखने के लिए स्कूल मानसिक स्वास्थ्य का दायरा बढ़ा है।

यहां दो मुख्य लक्ष्य हैं – विद्यार्थियों के व्यवहार में सकारात्मक बदलाव लाना और शैक्षणिक रूप से उनकी क्षमता को अनुकूलित करना ताकि विद्यार्थियों पर नकारात्मक प्रभाव रोके जा सकें। इसलिए, स्कूल परामर्श कार्यक्रम और नीति स्कूल व्यवस्था, माता-पिता, शिक्षकों, प्रशासन और प्रबंधन में विद्यार्थियों और उनके कई हितधारकों के लिए लाभकारी प्रयास हैं।

विद्यालय स्तर पर परिवर्तनों को सुगम बनाने के लिए प्रयास –

बदलाव को स्वीकार करना और सामंजस्य स्थापित करना सबसे महत्वपूर्ण चुनौतियों में से एक है और विद्यार्थियों से

अपेक्षा की जाती है कि वह विभिन्न चुनौतियों को स्वीकारे, जिन्हें वह अपने विकास के दौरान अनुभव करता है। हमें यही सिखाया जाता है कि जीवन में स्थिर रहने वाली एकमात्र घटना 'परिवर्तन' है। एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाना हमारे जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा है और यह हमारी बाल्यावस्था से शुरू होने वाली विभिन्न जीवन स्थितियों में होता ही रहता है। इसलिए, विद्यार्थियों के दृष्टिकोण से स्थिति परिवर्तन बहुत चुनौतीपूर्ण हो सकता है। उदाहरण के लिए, प्री-प्राइमरी ग्रेड पर कुछ विद्यार्थी उस समय असुरक्षित महसूस करते हैं जब उनकी प्राथमिक स्कूल में प्रवेश होता हैं तो दिनचर्या बदल जाती है।

निम्नलिखित तालिका में महत्वपूर्ण विद्यालय स्तर पर होने वाले परिवर्तनों के सुझाव दिए गये हैं –

कक्षा स्तर	**विभिन्न प्रस्तावित बदलाव**
प्राइमरी शाखा	▪ विद्यार्थियों को दिनचर्या में बदलाव के लिए तैयार करना चाहिए - बैठने की व्यवस्था बदलने की बात करनी चाहिए। ▪ समूह कार्य से जुड़ी गतिविधियों को सुगम बनाना चाहिए। ▪ विद्यार्थियों का नई कक्षाओं या नए विद्यार्थियों से परिचय कराना चाहिए।
शिक्षक से विषय शिक्षक के रूप में	▪ शिक्षक विद्यार्थियों को यह समझने में मदद कर सकते हैं कि परिवर्तन के दौरान चिंतित होना स्वाभाविक है। ▪ सत्र शुरू होने से पहले ही परिचय कराने की एक योजना बनानी चाहिए- विद्यार्थियों को उन सभी शिक्षकों से मिलवाना बेहतर होता है, जो उन्हें पढ़ायेंगे।
पेंसिल से पेन में बदलाव	▪ विद्यार्थियों की तैयारियों को इन बातों के संदर्भ में देखा जाना चाहिए- 9 साल की उम्र एक अच्छा समय है। ▪ परामर्शदाता सुझाव देते हैं कि विद्यार्थियों को पेन से लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। ▪ समन्वय गतिविधियों का अभ्यास करवाना चाहिए।
प्राइमरी से मिडिल	▪ शारीरिक परिवर्तनों के बारे में कार्यशालाओं का आयोजन किया जा सकता है। ▪ धमकाने और इसके बुरे प्रभावों के बारे में कक्षाओं में छोटी-छोटी बातचीत की योजना बनाई जा सकती है। ▪ पाठ्यचर्या में नए बदलावों; उदाहरण के लिए इतिहास, नागरिक शास्त्र, राजनीति विज्ञान, भूगोल, अर्थशास्त्र में विभाजित सामाजिक विज्ञान के बारे में विस्तार से बताया जाना चाहिए। ▪ जिनके प्रति शैक्षणिक और व्यवहार संबंधी चिंताएं हैं, उन विद्यार्थियों के लिए साथी प्रणाली शुरू की जा सकती है। ▪ किशोरों की चिंताओं से संबंधित कुछ कार्यशालाएं; जैसे- लक्ष्य निर्धारण इत्यादी पर भी आयोजित की जा सकती है।

विद्यार्थियों के व्यवहार में वांछित परिवर्तन करना।

प्रधानाचार्यों, शिक्षकों एवं अभिभावकों द्वारा मानसिक रूप से अस्वस्थ विद्यार्थियों के व्यवहार में सुधारात्मक प्रयास किये है, जिन्हें इसके अध्ययन से समझा जा सकता है।

केस स्टडी -1

सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेना एवं सीखने की प्रकिया में सुधार होना

छात्रा- रीना (काल्पनिक नाम), कक्षा-8वीं शाला-शा.महारानी लक्ष्मीबाई उ.मा.वि, हटा जिला-दमोह (म.प्र.)

रीना सत्र 2019-20 में कक्षा- 6वीं की छात्रा थी, उसके लिये शाला नयी थी, उसके पापा उसे लेकर शाला आए, वह रोने लगी। सभी ने समझाया,पर वह कक्षा में नहीं बैठी। घर से वह रोज शाला आने के लिए मना करती, पिता उसे शाला छोड़कर जाते, तो वह रोने लगती। कक्षाध्यापिका श्रीमती सुनीता सैनी ने उसकी कुछ सहेलियाँ बना दी। वे उनके साथ कुछ समय बैठती, लंच करती, फिर भी वह रोने लगती। सहेलियों के पूछने पर कहती, कि मुझे कुछ समझ में नहीं आता। क्योंकि मैं पढ़ने में बहुत कमजोर हूँ।

शनिवार का दिन था,बाल सभा की तैयारी चल रही थी। रीना ने मौका पाकर शाला से दौड़ लगा दी वह घर भाग गई। सैनी मैडम ने उसके पिता को फोन किया, तो उसके पिता उसे लेकर तुरन्त शाला ले आये। सभी शिक्षिकाओं ने उसे समझाया, उसने माफी भी मांगी।

एक दिन शाला में बाल सभा चल रही थी, उक्त छात्रा भी कार्यक्रम देखने लगी एवं उसकी पास बैठी सहेलियों को बतलाया कि बहुत मजा आ रहा है। क्या मै भी भाग ले सकती हूँ? उसकी सहेलियों ने हाँ कहा। उसकी सहेली ने शिक्षिका को जाकर रीना की सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने की इच्छा बताई।

कुछ समय बाद जब रीना का नाम बोला गया, तो बाल सभा में उपस्थित सभी छात्राओं ने खूब तालियाँ बजाई, फिर रीना ने छोटा सा डांस किया, तो चारों ओर तालियों की गड़गडाहट हुई। रीना का डर दूर हो गया, वह रोज स्कूल आने लगी। वह स्मार्ट क्लास में तथा विज्ञान क्लब में भी भाग लेने लगी। वह कक्षा शिक्षण में भी रुचि लेने लगी एवं नियमित विद्यालय आने लगी।

उपरोक्त केस स्टडी से यह बात परिलक्षित होती है कि प्रोत्साहन एवं सहयोग देकर विद्यार्थियों का आत्मबल एवं विश्वास बढ़ाया जा सकता हैं। परिवार और शिक्षकों को आपसी विश्वास और सम्मान की स्थिति से बच्चों के साथ खुला परामर्श करना चाहिए। आइए, एक विडियो की मदद से समझते हैं कि शिक्षकों को किस प्रकार अपने विधार्थियों को प्रोत्साहित करना चाहिए। विडियो देखने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर जाएं -

https://youtu.be/hqRZ6GiaXsI

2.3 समुदाय की भूमिका

'समुदाय' शब्द का दायरा विशाल है, शब्द का सार बनाए रखते हुए, समुदाय वह है जिसमें विद्यार्थियों को सुरक्षा और समर्थन की भावना महसूस होती है। समर्थन और सुरक्षा की भावना उन्हें खेलने, खोजने और सीखने का आत्मविश्वास देती है। इसलिए, समुदाय से संबंध जुड़ने से एक संवेदनशील, सुरक्षित और स्थिर वातावरण बनता है। समुदाय सकारात्मक बातचीत और संबंध को बढ़ावा देते हैं।

भाग - 3 :

विद्यालय में मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के तरीकों एवं नवाचारों का विवरण

3.1.परामर्शदाता के रूप में शिक्षक की भूमिका :

स्कूल विद्यार्थियों के लिए सीखने के अवसर और उनके भौतिक, भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक विकास के लिए होता है। वे विद्यार्थियों को स्वावलंबी बनाते हैं एक शिक्षक अनिवार्य रूप से शिक्षण सहायता प्रदान करता है, शिक्षण में प्रयोग कर यथासंभव मार्गदर्शन करता, एक व्यापक रूपरेखा प्रदान करता है। विद्यार्थियों के सकारात्मक मानसिक स्वास्थ्य के लिए शिक्षक सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है। वे एक विद्यार्थी के जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे ज्ञान, नैतिक समर्थन, प्रोत्साहन और प्रेम के प्रतिरूप हैं।

विद्यार्थियों के भविष्य को आकार देने में शिक्षकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है कक्षा स्तर पर, शिक्षक विद्यार्थियों की व्यक्तिगत, भावनात्मक या परिवार संबंधी समस्याओं के लिए परानुभूति दिखा कर मार्गदर्शन और सहायता कर सकते हैं। शिक्षक उन कारण को समझने की कोशिश कर सकता है जो विद्यार्थियों के भावनात्मक विकारों और उनके गलत व्यवहारों का आधार बनते हैं। विद्यार्थियों के साथ गैर आलोचनात्मक और खुले तौर पर संवाद से उनकी काफी मदद हो सकती है। कई स्थितियों में, शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच एक स्वस्थ और संवादपूर्ण व्यवहार विचलन और भावनात्मक संघर्षों की पहचान करने में मदद करता है, जिससे अनेक महत्त्वपूर्ण चिंताओं की रोकथाम होती है।

- विद्यार्थियों की समस्या को समझने के बाद, शिक्षक की भूमिका विद्यार्थियों को मुख्य रूप से समस्या को हल करने में सक्षम बनाने की है। इसका अर्थ है कि व्यक्ति को यदि ठीक से निर्देशित किया जाए तो उसमें मुकाबला करने के बेहतर कौशल विकसित हो सकते हैं। समानुभूति एक शिक्षक का सबसे महत्त्वपूर्ण कौशल माना जाता है। कई बार शिक्षक स्कूल से परे और स्कूल से सम्बंधित समस्याओं का भी समाधन करता है।

- एक शिक्षक काउंसलर की विशेषज्ञता को प्रतिस्थापित नहीं कर सकता है, लेकिन एक प्रशिक्षित काउंसलर की अनुपस्थिति में, एक सहायक की भूमिका अदा कर सकता है। यदि शिक्षक किसी भी अस्वस्थ भावना या व्यवहार संबंधी अभिव्यक्तियों को नोटिस करता है तो सबसे पहले चेतावनी देने और काउंसलर या स्कूल से जुड़े किसी भी मानसिक स्वास्थ्य कर्मी तक इसे प्रेषित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

इन परिस्थितियों में शिक्षक- काउंसलर टीम विद्यार्थियों की मदद करने के लिए सहयोग और काम करने में सक्षम हो सकती है।

जानने योग्य बिंदु- प्रधानाध्यापक विद्यार्थियों की सहायता निम्न बिन्दुओं के माध्यम से कर सकता है –

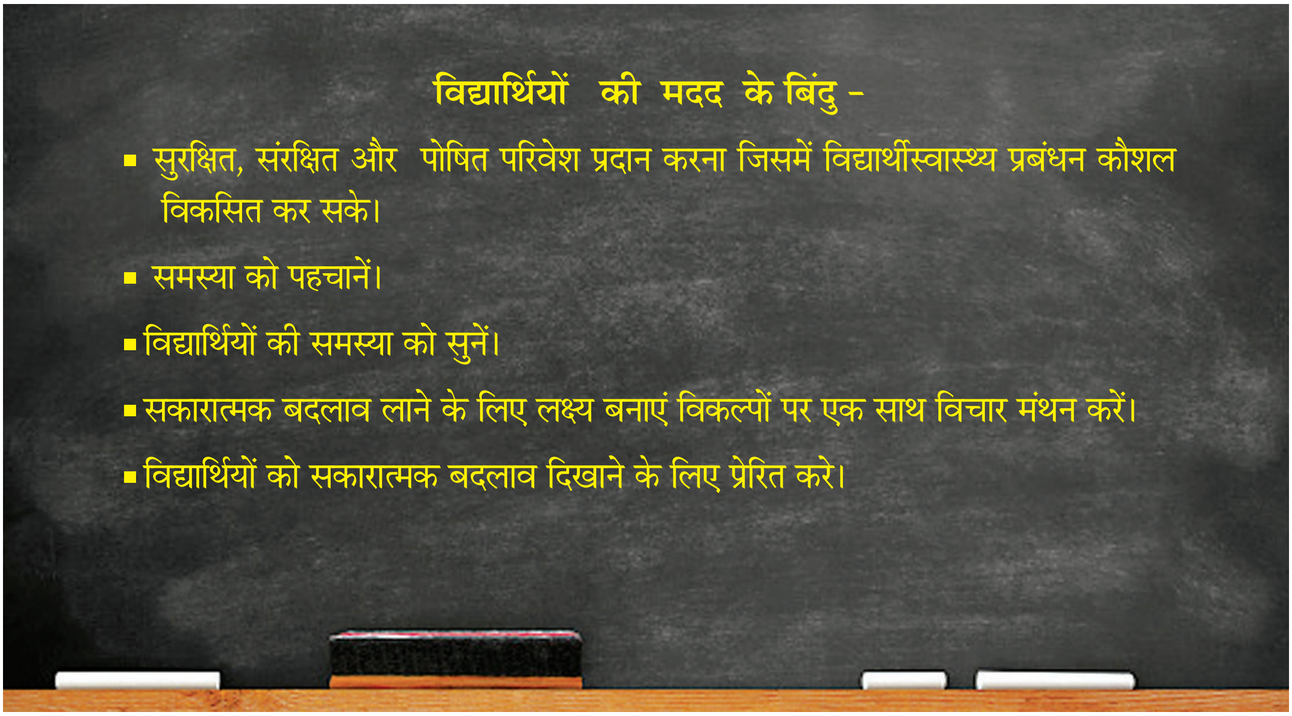

घनिष्ठता बनाना : शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को सहज होने की छूट देनी चाहिए। मौखिक , सकारात्मक प्रतिक्रिया देकर और गैर-मौखिक सकारात्मक प्रतिक्रिया देकर।

भावनाओं की उन्मुक्त अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करना : खुलकर बातचीत होने पर विद्यार्थियों के मन की बात बाहर निकल सकती है और साझा की गई बातों की सही व्याख्या व विद्यार्थियों को स्वयं को बेहतर समझने में मदद कर सकती है।

गैर-आलोचनात्मक रूप से सुनना और प्रतिक्रिया देना : विद्यार्थियों के प्रति समानुभूति दिखाना।

पूर्ण गोपनीयता: प्रायः 'आप जो भी मुझसे कहेंगे वह केवल मुझ तक रहेगा जब तक कि आप खतरे में नहीं हैं या आप दूसरों को खतरे में नहीं डालते हैं।' कहकर शिक्षक को आगे संवाद शुरू करना चाहिए।

मानसिक स्वास्थ्य को कैसे बेहतर बनाए रखें –

मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए कई तरीकों को आजमाया जा सकता है। उन तरीकों के बारे में हम नीचे विस्तार से बता रहे हैं।

1. व्यायाम (एक्सरसाइज)

मानसिक स्वास्थ्य के उपाय के तौर पर व्यायाम कर सकते हैं। दरअसल, व्यायाम के दौरान होने वाली शारीरिक गतिविधि से तनाव और अवसाद कम होता है। साथ ही यह मूड में सुधार करने का भी काम कर सकता है। इसलिए, शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिए व्यायाम करना जरूरी है।

2. ध्यान योग (मेडिटेशन)

यह मन और शरीर का अभ्यास होता है, जिसे ध्यान केंद्रित करने के लिए किया जाता है। इससे मानसिक स्वास्थ्य बेहतर हो सकता है। मेडिटेशन के कई तरीके होते हैं, जिसे दिनचर्या में शामिल किया जा सकता है। इनमें माइंडफुलनेस मेडिटेशन और ट्रांसेंडेंटल मेडिटेशन भी शामिल हैं। ये दोनों ध्यान करने की तकनीक हैं, जिनके माध्यम से मन को शांत रखा जा सकता है।

3. रचनात्मक गतिविधियों एवं खेल-कूद के सतत आयोजनः-

विद्यालयों में रचनात्मक गतिविधियों का आयोजन अति आवश्यक है। इससे विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ाने में योगदान मिलता है व मानसिक तनाव को कम करने में सहायता मिलती है। इससे मानसिक स्वास्थ्य भी बेहतर होता है।

4. लिखना (राइटिंग)

कई सारी चीजों को दिमाग में रखने से टेंशन हो सकती है। इससे मानसिक स्वास्थ्य धीरे-धीरे बिगड़ते जाता है। ऐसे में लेखन की मदद से चीजों को दिमाग से निकालने से मन को हल्का महसूस हो सकता है। इससे मूड बेहतर करने में भी सहायता मिल सकती है।

5. समय प्रबंधन के तरीके (टाइम मैनेजमेंट स्ट्रेटेजीज)

एनसीबीआई (National Center for Biotechnology Information) की वेबसाइट पर प्रकाशित वैज्ञानिक परीक्षण में मानसिक स्वास्थ्य के लिए टाइम मैनेजमेंट ट्रेनिंग को प्रभावी बताया गया है। टाइम मैनेजमेंट स्ट्रेटेजी चिंता, अवसाद, नींद की गुणवत्ता में सुधार करने के साथ ही नकारात्मक भावनाओं से बचाने का काम कर सकता है। इस ट्रेनिंग के दौरान यह खास ध्यान दिया जाता है कि व्यक्ति का ध्यान परेशान करने वाली बातों में न जाए और उसका दिमाग किसी-न-किसी कार्य में व्यस्त रहे।

परामर्श द्वारा कई तरीकों से विद्यार्थियों की मदद होती है। जैसे –

- दुर्भावनापूर्ण और हानिकारक व्यवहार की अभिव्यक्तियों को अनुकूल और स्वस्थ विचारों में बदलने में।
- समय प्रबंधन और संगठनात्मक कौशल के निर्माण में स्पष्ट शैक्षणिक लक्ष्य स्थापित करने में।
- पारस्परिक समस्याओं के समाधन और सकारात्मक समूह व्यवहार को बढ़ावा देने में।
- संघर्ष के समाधन में।
- आत्मसम्मान को बढ़ाने में।
- व्यक्तिगत समस्याओं के समाधन में जो भावनात्मक संकट का कारण बनती हैं।

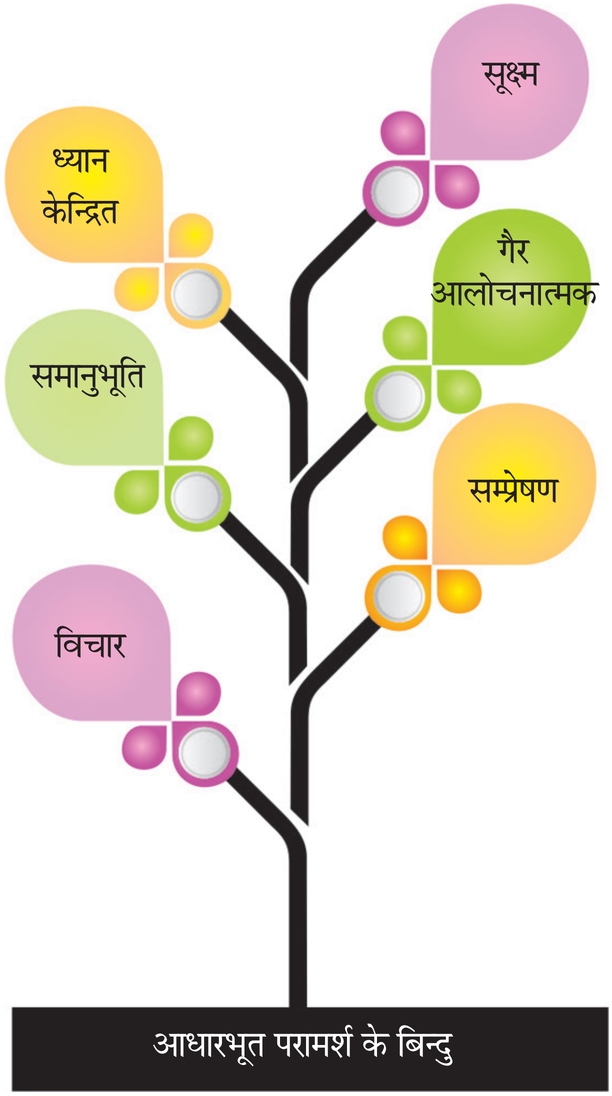

समेकन

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार किशोर आयु समूह में आत्म-क्षति दर वैश्विक स्तर पर सबसे अधिक संख्या में पाई जाती है। अधिकांश शारीरिक बीमारियों के लिए भावनात्मक तनाव और अन्य चिंताएं एक प्रमुख कारक हैं। मनोचिकित्सक, नैदानिक मनोवैज्ञानिक, काउंसलर और पेशेवरों जैसे मानसिक स्वास्थ्य सेवा प्रदाता इस बात से सहमत हैं कि हम ठीक समय परसहायता देकर भविष्य की कई मानसिक स्वास्थ्य स्थितियों को रोक सकते हैं। स्वस्थ व्यक्ति समग्र रूप से लाभकारी गतिविधियों में संलग्न होता है, दूसरों के साथ संबंधें का ख्याल रखता है और परिवर्तन के साथ अनुकूलन करने और प्रतिकूल परिस्थितियों से निपटने की क्षमता प्रदर्शित करता है।

शोध निष्कर्ष बताते हैं कि शारीरिक बीमारी, सीमित बुनियादी संसाधन, स्वयं और परिवार के साथ-साथ जीवन में अधूरी इच्छाओं को पूरा करने में असमर्थता प्रमुख कारक हैं जो मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण को प्रभावित करते हैं।

उपलब्ध निःशुल्क हेल्पलाइन नंबर –

1. नाम– नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ एण्ड न्यूरो साइंसेस (निमहंस), बेंगलूरू हेल्पलाइन

- नंबरः 080-461100007
- कब कॉल कर सकते हैं?
- 24×7

2. नाम– ICall , टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ़ सोशल साइंस, मुंबई (TISS) की हेल्पलाइन

- नंबरः 9152987821
- कब कॉल कर सकते हैं?
- सोमवार से शनिवार सुबह 10 बजे से रात के 8 बजे तक

3. नामः फोर्टिस नेशनल हेल्प लाइन

- नंबरः 8376804102
- कब कॉल कर सकते हैं?
- 24×7

4. नामः उमंग हेल्प लाइन

- नंबरः 14425

विचारात्मक प्रश्नः–

1. विद्यालय में किन-किन गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थी समायोजन की प्रक्रिया को सुनिश्चित किया जा सकता है?

....

....

2.यह विचार करें कि आपके विद्यालय में मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ाने के लिए क्या-क्या प्रयास किये जा सकते हैं ? सूची बनाये।

....

....

....

....

3.परिवार एवं समुदाय की भूमिका विद्यार्थी के समायोजन में किस प्रकार उपयोगी हैं?

....

....

....

....

4 . समाज में व्याप्त रूढ़िवादी परम्पराएं सामाजिक समावेशन को किस प्रकार अवरुद्ध करती हैं?

....

....

....

सन्दर्भ सूची –

1. www.ncert.nic.in
2. www.aiims.edu.ac.in
3. www.nimhans.ac.in
4. www.tata.edu.ac.in
5. नेशनल बुक ट्रस्टः www.nbtindia.gov.in
6. अमेरिकन साइकियाट्रिक एसोसिएशन; 2013, डायग्नोस्टिक एण्ड स्टेटिस्टिकल मैनुअल आफ मेंटल डिस्आर्डर
7. थोम्पसन, चाइल्ड साइकोलॉजी; 2017
8. एस पी चौबे, एक्सपेरिमेंटल साइकोलॉजी 2016
9. भटनागर, ए.बी. भटनागर, मीनाक्षी भटनागर, अनुराग, शिक्षा मनोविज्ञान, पृ. 352

लेखक का नाम

राजेंद्र प्रसाद विश्वकर्मा

डाईट हटा, जिला - दमोह

मेंटर/एक्सपर्ट का नाम

शीतल शर्मा

सलाहकार - लीपफॉरवार्ड

जिला - भोपाल

मोबाइल- +91 7471115858

ई मेल- write20sheetal@gmail.com

❑ ❑ ❑

मॉड्यूल – ड्रग्स के विरुद्ध जंग

भाग – 1

नशा क्या है एवं शरीर पर इसके दुष्प्रभावों को समझना

भाग – 2

विद्यालय स्तर पर नशे की लत से जूझ रहे विद्यार्थियों की पहचान करना

भाग – 3

नशे की लत से जूझ रहे विद्यार्थियों को नशे की लत से मुक्त करवाना

ड्रग्स के विरुद्ध जंग – विद्यालय के संग

इस मॉड्यूल के माध्यम से हमारा प्रयास है कि विद्यालय स्तर पर ही विद्यालयीन गतिविधियां एवं क्रियाकलापों के माध्यम से ड्रग्स की समस्या से निपटने के लिए बाल मन को समर्थ और सक्षम बनाना ।

विद्यार्थियों को इस प्रकार तैयार करना व स्वयं अपने जीवन में कभी नशा ना करें एवं नशे के प्रतिरोधक के रूप में समाज से इस समस्या को दूर करने में अपनी पूरी क्षमता से सतत प्रयास करते रहें।

नशा-एक थ्री डी बुराई :

ड्रग्स का सेवन यानी नशाखोरी की देन थ्रीडी बुराइयां हैं। पहली 'डार्कनेस' यानी जीवन में अंधेरा, दूसरी 'डिस्ट्रक्शन' यानी बर्बादी के मोड़ पर पहुँचना तथा तीसरी 'डिवास्टेशन' यानी सम्पूर्ण रूप से तबाही। ड्रग्स की बुराइयों एवं दुष्प्रभावों से परिवार, समाज एवं राष्ट्र को बचाने के लिए ही 'ड्रग्स फ्री इंडिया' का सपना देखा है और इस सपने को साकार करने के लिए मजबूत पहल शुरू हो चुकी है। स्वयं देश के प्रधानमंत्री ने 'ड्रग्स फ्री इंडिया' का आह्वान कर अपने मन की बात देशवासियों से साझा की है।

शीर्षक :

ड्रग्स के विरुद्ध जंग - विद्यालय के संग

माड्यूल का क्षेत्र – ड्रग्स के विषय में जागरूकता

उद्देश्य :

1. नशा क्या है इसे समझना एवं इसके प्रभावों को समझना।
2. विद्यालय स्तर पर नशे की लत से जूझ रहे विद्यार्थियों की पहचान करना।
3. नशे की लत से जूझ रहे विद्यार्थियों को नशे की लत से मुक्त करवाना।

परिचय

वर्तमान में हमारे देश में अनेक समस्याएं हैं- नशा अपने आप में एक महत्वपूर्ण समस्या तो है ही साथ ही यह अनेक समस्याओं का जन्मदाता भी है।

इस समस्या से जहां परिवार विघटित होता है, वहीं समाज संक्रमित होता है, राष्ट्र कमजोर होता है। यह मात्र एक सामाजिक समस्या ही नहीं है, अपितु चिकित्सकीय एवं मनोवैज्ञानिक समस्या भी है। एक ऐसा दलदल है, जिसमें धंसने वाला खुद तो तबाह होता ही है, साथ ही उसका पूरा परिवार भी तबाह होता है।

शिक्षा शास्त्र हमें यह बताता है कि बचपन की शिक्षा व संस्कार बाल मन पर स्थाई प्रभाव डालते हैं। इसलिए हमें भी बच्चों को विद्यालय से ही नशे से बचाने के लिए बाल मन को तैयार करना होगा। इसका फायदा बच्चों को अपने जीवन में तो मिलेगा साथ ही अपने परिवार के सदस्यों को नशे से होने वाले दुष्परिणामों के बारे में बता कर नशा रोकने में महती भूमिका निभा सकें।

क्या हम जानते हैं?

1. विभिन्न रिसर्च के परिणाम यह बताते हैं कि नशे से ग्रस्त अधिकांश व्यक्ति बचपन से ही किसी ना किसी नशे की लत के शिकार हो जाते हैं एवं उनका पूरा जीवन बर्बाद हो जाता है।

2. अगर हम बच्चों को बचपन से ही नशे के चंगुल में फँसने से बचा लें तो संभावना है कि वह बच्चा अपने जीवन में हमेशा नशे से दूर रह सकता है ।

केंद्र सरकार के सर्वे में चौंकाने वाला खुलासा 7.13 करोड़ भारतीयों को लगी नशे की लत :

देश में बढ़ती नशे की लत एक गंभीर समस्या बन चुकी है। नशे की बढ़ती लत पर भारत सरकार का एक चौंकाने वाला सर्वे सामने आया है। इनमें नशे की लत इतनी बढ़ चुकी है कि इन्हें तत्काल इलाज की जरूरत है जो पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं है ।

केंद्र सरकार द्वारा दिसंबर 2017 से 2018 के दौरान किए गए सर्वे के संबंध में महत्त्वपूर्ण तथ्य :

सर्वे में भारत के 186 जिलों के 2,00,000 से अधिक परिवारों को शामिल किया गया, सर्वे में पहली बार महिलाओं द्वारा नशा करने का डाटा एकत्रित किया गया ।

उक्त सर्वे में सामने आए महत्वपूर्ण तथ्य :

- 7.13 करोड़ भारतीय नशे की लत से ग्रस्त हैं।
- 5.17 करोड़ लोग शराब की लत से ग्रस्त हैं।
- 72 लाख व्यक्ति भांग का सेवन करते हैं।
- 60 लाख व्यक्ति अफीम व चरस का सेवन करते हैं।
- 11 लाख व्यक्ति नशीली गोलियां व इंजेक्शन से अपने नशे की पूर्ति करते हैं।
- 70,293 व्यक्ति खतरनाक किस्म के ड्रग्स का सेवन करते हैं।
- कुल आबादी के 27.3 प्रतिशत पुरुष और 6.40 प्रतिशत महिलाओं के शराब का सेवन करने के प्रमाण मिले हैं।
- 16 करोड़ शराब पीने वाले व्यक्ति हैं। जिनकी आयु 10 वर्ष से 75 वर्ष के बीच में है। इसमें बड़ी संख्या में विद्यार्थी भी सम्मिलित हैं।
- 46 लाख बच्चे और 18 लाख वयस्क सर्दी जुखाम में दवा के बतौर इस्तेमाल होने वाले इनहेलर नशीली दवाइयों की लत से जूझ रहे हैं।

भाग - 1 :
नशा क्या है एवं शरीर पर इसके दुष्प्रभावों को समझना

उद्देश्य :

1. नशा क्या है इसको जान सकेंगे।
2. नशे से शरीर पर होने वाले दुष्प्रभाव के विषय में जान सकेंगे।

परिचय

इस भाग में हम नशा क्या है एवं नशीले पदार्थ कितने प्रकार के होते हैं एवं विद्यार्थी के मन, मस्तिष्क, व्यवहार पर यह किस प्रकार प्रभाव डालते हैं, इसको विस्तार से समझेंगे।

ड्रग्स क्या है?

- वह पदार्थ जो मादक पदार्थों की श्रेणी में आते हैं।
- जिनका सेवन वास्तविक उद्देश्य से हटकर किया जाता है।
- जिनके सेवन से मन, मस्तिष्क एवं शरीर पर विपरीत प्रभाव उत्पन्न होता है।
- जिनके सेवन से विद्यार्थी की सोचने, समझने एवं निर्णय लेने की क्षमता प्रभावित होती है।
- जिनके सेवन से क्षणिक अस्थाई खुशी का आभास होता है।
- जिनका सेवन नारकोटिक्स विभाग द्वारा प्रतिबंधित किया गया है।

नशे की आदत क्यों पड़ती है?

मादक पदार्थों में छिपा मादक तत्व शरीर में दाखिल होकर ज्ञान तंतुओं को उत्तेजित करता है जिससे रक्त वाहिनियाँ थोड़ी चौड़ी हो जाती हैं। थोड़ी देर के लिए उस जगह की कोशिकाओं को खून अच्छी तरह मिलता है और हमारे शरीर व मन को क्षणिक आभासी खुशी की अनुभूति होने लगती है।

कुछ समय उपरांत एक स्थिति ऐसी आती है कि यदि इन नशीली वस्तुओं का इस्तेमाल ना किया जाए तो बेचैनी बढ़ जाती है और इस तरह बीड़ी, सिगरेट, तंबाकू, गुटका, शराब आदि नशे की आदत या लत पड़ जाती है ।

ड्रग्स सेवन के संभावित कारण -

- मित्रों का आग्रह, दबाव। पियर ग्रुप प्रेशर (उन लोगों का समूह जिनकी आयु और सामाजिक प्रतिष्ठा एक समान हो)।
- माता-पिता या परिवार की लापरवाही एवं माता-पिता से मिलने वाले प्यार में कमी।
- माता-पिता का आवश्यकता से अधिक प्यार, दखलअंदाजी, रोका-टोकी।
- जीवन का एकाकीपन।
- जीवन में भावनात्मक असुरक्षा।
- जीवन में प्राप्त असफलताएं।
- घरेलू कलह, विभिन्न कारणों से मिलने वाला तनाव।
- गलत संगत।
- अपने को आधुनिक दिखाने की लालसा।
- अनूठी खुशी प्राप्ति की लालसा।
- नशे की चीजों के उपयोग का परिवारिक इतिहास।
- नैतिक जीवन के खिलाफ विद्रोह या दबाव।
- आत्मसम्मान की कमी।
- अव्यावहारिक संबंध और किशोर गर्भावस्था की वजह से नशे के सेवन का आदी बनना।
- दुनिया में खो जाने की वजह से नशे का आदी बन जाना।
- वैवाहिक कुंठा और यौन समस्याएं।
- निकट के प्रिय व्यक्ति, बुजुर्ग व्यक्ति का आकस्मिक निधन हो जाना।
- अधिकतम एवं न्यूनतम आय।
- नशीली चीजों का आसानी से मिल जाना।

आदि प्रमुख कारण हैं।

ड्रग्स के प्रकार एवं शरीर के अंगों पर उसके दुष्प्रभाव

वे कॉमन ड्रग्स जो शहरी क्षेत्रों में प्रयोग होते हैं –

ड्रग्स के नाम	प्रभावित अंग	गंभीर बीमारी
हेरोइन या अफीम (Heroin or Opium)	हृदय, मस्तिष्क	हार्ट ब्लॉकेज, तपेदिक और गठिया आदि रोग
मार्फिन (Marfin)	मस्तिष्क	कोमा
चरस (Hashish)	मस्तिष्क	सोचने एवं समझने की शक्ति क्षीण
गांजा (Cannabis)	आखें एवं दिमाग	पागलपन
सुलेशन	तंत्रिका तंत्र, फेफड़े	अवसाद, पागलपन
इंकरीमूवर	तंत्रिका तंत्र, फेफड़े	अवसाद, पागलपन
व्हाइटनर	तंत्रिका तंत्र, फेफड़े	अवसाद, पागलपन
सिगरेट	तंत्रिका तंत्र, फेफड़े	कैंसर
शराब	लीवर	लीवर, आंत का कैंसर
गुटखा, पाउच	मुख, गला	कैंसर

वे कॉमन ड्रग्स जो ग्रामीण क्षेत्रों में प्रयोग होते हैं –

ड्रग्स के नाम	प्रभावित अंग	गंभीर बीमारी
गुटखा, पाउच	मुख, गला	कैंसर
बीड़ी, सिगरेट	तंत्रिका तंत्र, फेफड़े	कैंसर
शराब	लीवर	लीवर, आंत का कैंसर
गांजा (Cannabis)	आखें एवं दिमाग	पागलपन
हेरोइन या अफीम (Heroin or Opium)	हृदय, मस्तिष्क	हार्ट ब्लॉकेज, तपेदिक और गठिया आदि रोग

लत क्या है?

नशे की लत एक क्रॉनिक बार-बार लौटने वाली बीमारी है। इससे दिमाग में लंबे समय तक चलने वाले कैमिकल बदलाव होते हैं, जो नशे की लत को छूटने नहीं देते। लत का मतलब यह है कि दिमाग उस नशे का आदी हो जाता है। यह आपके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए तो हानिकारक और खतरनाक होता ही है, सामाजिक और आर्थिक स्थित के लिए भी अच्छा नहीं होता। लत की वजह से व्यवहारिक दिक्कत हो सकती है। खुद पर नियंत्रण नहीं रहना, याददाश्त कमजोर होना, अपने कार्यों पर किसी तरह का नियंत्रण नहीं होना। जिस चीज की लत लग जाती है, वह जब तक न मिले पीड़ित बैचेन, व्याकुल रहता है।

लक्षण –

घबराहट, बैचेनी, चिडचिड़ापन, शरीर में कंपन, रक्तचाप बढ़ना, नींद न आना, भयभीत होना, आंखों के सामने अंधेरा छाना, निर्णय शीलता की कमी आदि।

नशे का दुष्परिणाम :

नशे का दुष्प्रभाव पूरे मानव जीवन पर होता है इसको हम शारीरिक, आर्थिक, मानसिक एवं सामाजिक रूप से वर्गीकृत कर सकते हैं ।

शारीरिक :-

- नेत्र ज्योति कमजोर होना।
- दांत पीले एवं दांतों के रोग।
- जिवहा के स्वाद में कमी।
- मुंह एवं जबड़े का कम या पूरा नहीं खुलना।
- श्वास नली में संकुचन।
- फेफड़ों का कमजोर होना ।
- ह्दय का कमजोर होना।
- किडनी कमजोर होना।
- लीवर कमजोर होना।
- आँतों की बीमारियां।
- पाचन शक्ति कमजोर होना।
- नपुंसकता की ओर बढ़ना।
- एड्स, हार्मोनल समस्या, शरीर निर्बल हो जाना।
- नशे में दुर्घटना का शिकार होने पर शारीरिक अपंगता या मृत्यु हो जाना।

मानसिक –

- पर्याप्त व समुचित शिक्षा को प्राप्त नहीं कर पाना।
- स्मरण शक्ति का कमजोर होना। आत्मविश्वास में कमी होना।
- निर्णय लेने की क्षमता में कमी आना।
- कुंठा एवं तनाव ग्रस्त जीवन। चिड़चिड़ापन, बात-बात पर गुस्सा होना ।
- मन पर स्व नियंत्रण कमजोर होना। व्यवहार में बेशर्मी, हठधर्मिता व इस प्रकार की अन्य बुराइयों का आना। जीवन शक्ति में कमी होना।
- अवसाद के कारण आत्महत्या का विचार आना या कभी-कभी आत्महत्या तक कर लेना ।

आर्थिक –

- शारीरिक क्षमता में कमी से मेहनत करने की क्षमता में कमी।
- कम आर्थिक उपार्जन।
- नशे में खर्च के कारण गरीबी का बढ़ना।
- व्यय में कमी के कारण घर परिवार की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होना।
- बच्चों का पर्याप्त एवं संतुलित भोजन नहीं मिलने से उनका भी शारीरिक कमजोरी का शिकार होना।
- बच्चों की अच्छी एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की व्यवस्था नहीं कर पाना।
- बीमार होने पर सही समुचित इलाज की व्यवस्था न कर पाना।

सामाजिक –

- घर परिवार में लड़ाई झगड़े मनमुटाव तनाव का वातावरण।
- बच्चों एवं महिलाओं के प्रति हिंसा में वृद्धि।
- चरित्र हीनता में वृद्धि।
- छेड़खानी बलात्कार अपराधों में वृद्धि। समाज में चोरी डकैती अपहरण घटनाओं में वृद्धि।
- नशे के कारण यहां वहां थूकने एवं गंदगी करने की प्रवृत्ति बढ़ना।
- आंतरिक सुरक्षा के लिए खतरा।

व्यसन को लेकर धारणाएं जो सही नहीं हैं :

गलत धारणा	सही तथ्य
1. तंबाखू सेवन से दांत साफ रहते हैं एवं दांत में कीड़े नहीं लगते हैं ।	1. तंबाकू,पाउच सेवन से दांत साफ नहीं बल्कि पीले हो जाते हैं एवं मुंह से दुर्गंध आने लगती है, इस कारण से लोग पास बैठने से भी कतराते हैं।
2. तंबाखू सेवन से पेट साफ रहता है, शौच खुलकर आता है ।	2. तंबाकू सेवन से पेट साफ नहीं रहता है। पेट साफ रहता है समय से शुद्ध संतुलित भोजन से, भोजन चबाकर खाना, पर्याप्त मात्रा में पानी पीने एवं नियमित व्यायाम से पेट साफ रहता है।
3. तंबाखू बीड़ी एवं सिगरेट से ही अतिथियों का स्वागत करना चाहिए।	3. अतिथियों का स्वागत प्रसन्नता एवं मुस्कुराहट के साथ किया जाता है। जलपान के साथ परिस्थिति एवं श्रद्धा अनुसार सोफ, लोग इलायची, आंवले का चूर्ण फल, मिठाई, बिस्किट्स एवं नमकीन आदि उपलब्धता के अनुसार अतिथियों का स्वागत किया जाना उचित रहता है।
4. शराब सेवन से भोजन समय से पच जाता है।	4. शराब सेवन से भोजन नहीं पचता वरन लीवर एवं आतें खराब होने की संभावनाएं बढ़ जाती हैं।
5. अफीम की अल्प मात्रा देने से छोटा बच्चा रोता नहीं है एवं आसानी से सो जाता है।	5. अफीम की अल्प मात्रा से बच्चे का रोना बंद नहीं होता बल्कि बच्चा नशे में सो जाता है। इसका बच्चे के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव होता है।
6. सिगरेट एवं शराब के सेवन से समाज में प्रतिष्ठा मान सम्मान बढ़ता है।	6. सिगरेट एवं शराब के सेवन से समाज में प्रतिष्ठा बनती नहीं बल्कि गिरती है, नशे से ग्रस्त मनुष्य से कोई भी सभ्य व्यक्ति संबंध नहीं रखना चाहता है। वरन् देखा गया है कि कई बार लड़कियां ऐसे व्यक्ति से शादी के लिए इनकार तक कर देती हैं।
7. शराब के सेवन से साहस और ताकत बढ़ती है।	7. शराब के सेवन से रक्त संचार तीव्र होने के कारण हमें लगता है कि साहस और ताकत बढ़ी है। किंतु इससे सोचने समझने की शक्ति कम हो जाती है इससे हमारा मन एवं शरीर पर नियंत्रण समाप्त या कम हो जाता है।

प्रोजेक्ट कार्यः-

समाज में नशे से ग्रस्त व्यक्ति अपनी बुराई को सही सिद्ध करने के लिए अजीब प्रकार की दलील व तर्क देते हैं।

शिक्षक बच्चों के साथ चर्चा करके अपने परिवेश में इस प्रकार दिए जाने वाली गलत मिसाल/तर्कों को एकत्रित करें एवं उनके सही, वास्तविक उत्तर से बच्चों को अवगत कराएं, ताकि बच्चे भी अपने घर, परिवार, परिवेश में नशा निषेध के प्रति जागरूकता फैलाने का काम मजबूती के साथ कर सकें।

भाग - 2 :
विद्यालय स्तर पर नशे की लत से जूझ रहे विद्यार्थियों की पहचान करना

उद्देश्य :

1. नशे की लत से जूझ रहे विद्यार्थियों के लक्षणों को जानकर उनकी पहचान कर सकेंगे।

परिचय

मॉड्यूल के इस भाग में विद्यालय स्तर पर जो विद्यार्थी जाने अनजाने में नशे से जुड़ जाते हैं एवं लत के रूप में नशे को अपनाने की कगार पर पहुंच जाते हैं। उन विद्यार्थियों के क्या-क्या लक्षण होते हैं उनकी पहचान हम किस प्रकार करेंगे इसके विषय में विस्तृत रूप से जानने का प्रयास करेंगे।

केस स्टडी

कक्षा शिक्षिका वंदना मैडम ने नोटिस किया कि, पिछले कुछ दिनों से महेश एवं दिनेश आजकल कुछ गुमसुम व उदास लग रहे हैं। विद्यालय में विलंब से आना, अन्य विद्यार्थियों के साथ उनका व्यवहार चिड़चिड़ापन एवं गुस्से से भरा हो रहा है,होमवर्क भी समय पर नहीं कर रहे हैं। किंतु दोनों की आपस में खूब पट रही है। मध्यान्ह अवकाश में दोनों अन्य विद्यार्थियों से दूर अलग एकांत में जा कर बैठते हैं। शिक्षिका को उनके व्यवहार से कुछ शंका हुई। मध्यान्ह अवकाश में शिक्षिका ने उनके स्कूल बैग की जांच की, तो उसमें गुटका-पाउच एवं बीड़ी का बंडल और माचिस मिली। शिक्षिका पहले हैरान हुई फिर तत्काल उन्होंने कुछ निर्णय लिया। जिला चिकित्सालय में मादक पदार्थों कि लत से मुक्ति, मामलों के जानकार चिकित्सक काउंसलर से संपर्क किया एवं आवश्यक विचार विमर्श किया।

अगले दिन अस्पताल से काउंसलर चिकित्सक विद्यालय में उपस्थित हुए उन्होंने सभी बच्चों को एक स्थान पर एकत्रित कर मादक पदार्थों के दुष्परिणामों के विषय में विस्तृत चर्चा की। गुटके एवं धूम्रपान से होने वाले नुकसान को लेकर वीडियो फिल्म प्रेजेंटेशन किया। साथ ही सभी बच्चों को कभी नशा न करने का संकल्प दिलवाया।

अंत में महेश एवं दिनेश को प्राचार्य कक्ष में अलग से बुलाकर प्यार से सर पर हाथ फेरते हुए नशा छोड़ने के उपायों के बारे में विस्तार से समझाया, उनकी काउंसलिंग की।

परिणाम- उत्साहवर्धक रहा। जिसमें महेश एवं दिनेश ने अपनी शिक्षिका एवं काउंसलर को विश्वास दिलाया कि वे भविष्य में कभी भी नशा नहीं करेंगे।

इस केस स्टडी के आधार पर कुछ प्रश्न

1. क्या कक्षा शिक्षिका का ध्यान सभी विद्यार्थियों पर रहता था?
2. शिक्षिका ने महेश और दिनेश के व्यवहार में क्या-क्या परिवर्तन पाया? समस्या का पता लगाने के लिए शिक्षिका ने क्या किया?
3. शिक्षिका एवं काउंसलर ने महेश एवं दिनेश की नशे की समस्या का निराकरण किस प्रकार किया?

ड्रग्स सेवन से जुड़े व्यक्ति की पहचान कैसे करें?

- गुमसुम रहना।
- एकांत में रहने का प्रयास करना।
- शारीरिक व्यवहार में परिवर्तन। चिड़चिड़ापन, खीजना बात-बात पर गुस्सा करना, देर से घर लौटना।
- पॉकेट में नशीली सामग्री मिलना।
- अधिक धन की मांग करना।
- शौचालय में अधिक समय व्यतीत करना।
- आंखों का रंग बदलना, पुतलियों का सिकुड़ना।
- बड़ों या परिवार जन के सामने नजरें चुराना या नजरें झुका कर बात करना।

शिक्षकों से अपेक्षा

1. बच्चों को बचपन से ही नशे के दुष्परिणामों के बारे में बताएं।
2. बच्चों के सामने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कभी भी नशे का सेवन ना करें।
3. बच्चों के व्यवहार पर गहराई से नजर रखें।
4. बच्चों को प्रभावी नैतिक शिक्षा एवं शारीरिक शिक्षा का महत्व बताएं।
5. अगर कोई बच्चा नशे से जुड़ जाता है तो उसकी काउंसलिंग कर उसे सही मार्ग पर लेकर आएँ।
6. विद्यालय में नशे की रोकथाम को लेकर बने वीडियो एवं फिल्मों का प्रदर्शन करवाएं।
7. विद्यालय में नशा निषेध पर व्याख्यान, कविता, कोटेशन निबंध क्विज़ नाटक का आयोजन करवाएं।

अभिभावकों से अपेक्षा :

प्रधानाध्यापक, शाला प्रबंधन समिति के सदस्यों एवं अभिभावकों को ड्रग्स के सम्बन्ध में कार्यक्रम आयोजित कर निम्नलिखित सन्देश देंगे -

1. अपने बच्चों के सामने कभी भी किसी भी प्रकार का नशा ना करें।
2. अपने बच्चों से कभी भी नशे से संबंधित कोई भी सामग्री बाजार से लाने के लिए ना कहें।
3. घर में नशे से संबंधित किसी भी प्रकार के सामग्री को ना रखें।
4. बच्चे के दोस्तों एवं सहपाठियों के विषय में पूरी जानकारी रखें।
5. अगर जाने-अनजाने में आपका बच्चा किसी नशे से जुड़ गया है तो उसे समझाकर काउंसलिंग करके सही रास्ते पर लाने का प्रयास करें।

भाग - 3 :
नशे की लत से जूझ रहे विद्यार्थियों को नशे की लत से मुक्त करवाना

उद्देश्य :

1. नशे की लत से जूझ रहे विद्यार्थियों को किस प्रकार से नशे की लत से मुक्त करवाया जा सकता है। इसके विषय में जान सकेंगे।

परिचय

हम देखते हैं कि हमारी तमाम सावधानियों के उपरांत भी कुछ बच्चे नशे के शिकार हो जाते हैं। ऐसी अवस्था में हमें संयम से काम लेना है। बच्चे के प्रति सहानुभूति रखते हुए उसको प्यार से समझाना है, काउंसलिंग करना है, उनका आत्मविश्वास बढ़ाना है। उसे यह विश्वास दिलाना है कि तुम प्रयास करके इस नशे के जाल से मुक्त हो सकते हो। मदद करने के लिये तुम्हारे साथ हम सब है।

ड्रग्स की रोकथाम के लिए विद्यालय में आयोजन के संबंध में कुछ प्रस्तावित गतिविधियां

- बाल कैबिनेट में नशा निवारण मंत्री की नियुक्ति।
- बाल सभा में नशा निवारण पर चर्चा।
- बच्चों के माध्यम से नशा निवारण हेतु स्लोगन, दीवार लेखन।
- विद्यालय में नशा निषेध पर निबंध प्रतियोगिता।
- नशा निवारण के लिए बच्चों की रैली।
- साइकिल रैली।
- नशा निवारण को प्रेरित करने वाले नुक्कड़ नाटक का आयोजन।
- होली का पर्व पर नशे की होली जलाना।
- नशा नहीं करने के संकल्प पत्र बच्चों शिक्षकों एवं अभिभावकों से भरवाना।
- प्रार्थना सत्र में नशा निषेध पर शपथ दिलवाना।

शिक्षकों एवं प्रधानाध्यापक के मध्य ड्रग्स सेवन को लेकर एक वार्तालाप :

मोहन सर- बहुत दिनों से आपसे एक बात करने का मन हो रहा है।

सोहन सर- हां बताएं सर।

मोहन सर- मैंने देखा है आप विद्यालय में तम्बाखू, गुटखा का सेवन कर रहें है, उसका बच्चों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है।

कल मैंने कक्षा 4 के कुछ बच्चों को दूर ग्राउंड में नीम के सूखे पत्तों को तंबाकू जैसे मसलकर तंबाकू खाने की नकल करते हुए देखा था। अचानक जब मैं पहुंचा तो बच्चे डर गए और मुट्ठी बंद कर छिपाने का प्रयास करने लगे। जब उनकी मुट्ठी खुलवा कर देखा तो सूखी पत्तियों को तंबाकू जैसा मसला हुआ पदार्थ था। जब मैंने बच्चों से प्यार से समझा कर सारी बात जानने का प्रयास किया, तब माजरा समझ में आया। बच्चों ने बताया कि सोहन सर अपने बटुए में से निकाल कर जो अच्छा सा चूर्ण बनाकर खाते हैं, हम भी उसका मजा लेने का प्रयास कर रहे थे।

बच्चों की बातें सुनकर मेरी आंखें खुली की खुली रह गई।

दोनों सर का वार्तालाप चल ही रहा था कि प्रधानाध्यापिका वहां पर आ गई। उन्होंने पूछा कि किस गंभीर विषय पर चर्चा हो रही है? जब उन्हें चर्चा का विषय मालूम हुआ तो उन्होंने मामले की गंभीरता एवं संवेदनशीलता को समझते हुए हाफ टाइम के बाद समस्त स्टाफ को अपने कमरे में बुलाकर समझाते हुए कहा कि- आज और अभी के बाद विद्यालय का कोई भी कर्मचारी, शिक्षक किसी भी प्रकार का नशा, तंबाकू गुटके का सेवन नहीं करेंगे। प्रधानाध्यापिका ने सभी को समझाया कि बच्चे मासूम और इनोसेंट होते हैं, शिक्षक को अपना आदर्श मानते हैं। वह हमारे प्रत्येक अच्छे बुरे कार्य का अनुसरण करने का प्रयास करते हैं। जाने अनजाने में हमारी वजह से ही व्यसन से जुड़ सकते हैं । हमें पूरा ध्यान रखना होगा कि हम अपने घर में एवं विशेषकर विद्यालय में व्यसन से दूर रहें।

स्टाफ के सभी सदस्यों ने संकल्प लिया कि वह भविष्य में कभी भी किसी प्रकार का नशा नहीं करेंगे एवं बच्चों को भी नशे के दुष्परिणामों को बताते हुए नशे से दूर रहने के लिए जागरूक करेंगे।

प्रोजेक्ट कार्य –

इसी प्रकार के कुछ अन्य प्रश्न बनाकर अभिभावकों से चर्चा करेंगे।

व्यसन से जुड़े पालकों से चिंतन मनन के कुछ प्रश्न

आपको कैसा लगेगा ?

1. आपका बालक आप से छिप कर गुटका, तंबाकू व धूम्रपान का सेवन कर रहा है?

....

....

2. अगर आप खुद किसी व्यसन से जुड़े हैं तो क्या आप अपने परिवार के अन्य सदस्यों को व्यसन छोड़ने के लिए कह सकते हैं?

....

....

3. अगर आपका बच्चा नशे की पूर्ति के लिए छोटी मोटी चोरी करता है?

....

....

नशे की लत से जुड़े विद्यार्थियों को नशे की लत से मुक्त करवाना

सावधानी में ही सुरक्षा है। ड्रग्स को लेकर पूरा प्रयास यह होना चाहिए कि हम इससे जुड़े ही ना। किंतु जाने अनजाने में अगर हम इससे जुड़ चुके हैं और हमारी लत बन चुकी है तो यह आवश्यक है कि जितनी जल्दी हो सके हम इस बीमारी का इलाज प्रारंभ कर दें। इसके लिए सबसे अधिक आवश्यकता है मन में संकल्प एवं आत्मविश्वास की। लत से निराकरण के उपाय -

- एलोपैथी के माध्यम से

1. एलोपैथी में दो प्रमुख उपाय हैं।

1.1 आदत पर कंट्रोल कर व्यक्ति खुद नशा करना छोड़ दें।

1.2 डॉक्टर, काउंसलर की मदद से व्यक्ति को नशा छोड़ने के लिए प्रेरित किया जाए।

- शिथिलीकरण के द्वारा
- होम्योपैथी के माध्यम से
- आयुर्वेद उपचार के माध्यम से।

- घरेलू उपचार के माध्यम से।
- योग प्राणायाम के माध्यम से।
- अपने आप को अच्छे रचनात्मक कार्यों में संलग्न करके।
- पुनर्वास केंद्र में प्रवेश लेकर।

ड्रग छोड़ने पर मिलने वाले लाभ –

- जीवन का पहला सुख निरोगी काया।
- स्वस्थ शरीर।
- धन की बचत।
- परिवार में प्रेम शांति एवं समन्वय।
- परिश्रम करने के लिए भरपूर ऊर्जा एवं शक्ति।
- दुर्घटनाओं से मुक्ति।
- चुस्ती फुर्ती।
- स्मार्ट एवं मुस्कुराते चेहरे।
- समाज में सम्मान स्वाभिमान।
- सुरक्षित सामाजिक वातावरण।
- खुशहाल जिंदगी।

हिंदी फिल्मों के नाम जो कि हमें नशा रोकने के लिए प्रेरित करती हैं –

शैतान, पंख, दम मारो दम, गो गोवा गोन, हरे रामा हरे कृष्णा, चरस, जांबाज, जलवा, फैशन, देवडी, संजू, उड़ता पंजाब आदि।

आइए हम जानें नशा निवारण में सहयोग करने वाले कुछ विभाग, संस्थाए एवं हेल्प लाइन -

विभाग –

1. ग्राम पंचायत
2. शिक्षा विभाग
3. स्वास्थ्य विभाग
4. पुलिस विभाग
5. सामाजिक न्याय विभाग

संस्थाएं

प्रदेश स्तर पर

तपस्या मेंटल हेल्थ रिहैबिलिटेशन, इंदौर	जबलपुर नशा मुक्ति केंद्र, अंकुर रिहैब सेंटर इंदौर
शुद्धि नशामुक्ति एवं पुनर्वास, भोपाल	श्री जी के एस नशामुक्ति पुनर्वास केंद्र, भोपाल
हैप्पी होम, इंदौर	फिट एंड फाइन नशामुक्ति एवं पुनर्वास, भोपाल
प्रतिज्ञा नशामुक्ति केंद्र, ग्वालियर	परिवर्तन नशामुक्ति केंद्र, उज्जैन
रीवा नशामुक्ति, केंद्र,	नशामुक्ति केंद्र, इटारसी
उमंग नशामुक्ति केंद्र एवं पुनर्वास, भोपाल	प्रयास डे एडिक्शन एंड सायको केयर, भोपाल

राष्ट्रीय स्तर पर

तुलासी हेल्थ केयर, दिल्ली, अट थेना, दिल्ली	फोनिक्स फाउण्डेशन इण्डिया, हैदराबाद
ओम बीच रिसार्ट, कर्नाटका	अरेल होप रिकवरी सर्विस प्रायवेट लि., हैदराबाद
अभाया एडिक्शन रिकवरी सेण्टर, बेंगलूरू	पायोनियर रिहेबिलीटेशन सेन्टर, चैन्नई
नशामुक्ति केन्द्र, कानपुर	पुनर्जिनी, केरल

हेल्पलाइन नम्बर

Umang Help Line (स्कूल शिक्षा विभाग, मप्र शासन द्वारा संचालित) : 14425

Child Help Line : 1098, 1089

Drug De-Addiction : 1800-11-0031

E Hospital, National Health Portal : 1800-180-1104

NCE (For Women's Help Line) : 7827-170-170

मादक पदार्थों की लत से निपटने हेतु सरकारी पहल

1. नवंबर 2011 नार्को को आर्डिनेशन सेन्टर (Narco-Coordination Centre- NCORD) का गठन किया गया और राज्य में 'नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो' की मदद के लिये 'वित्तीय सहायता योजना' को पुनर्जीवित किया गया।
2. नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो को एक नया सॉफ्टवेयर विकसित करने हेतु धनराशि उपलब्ध कराई गई है, अर्थात् ज़ब्ती सूचना प्रबंधन प्रणाली (Seizure Information Management System - SIMS) ड्रग अपराधों और अपराधियों का पूरा ऑनलाइन डेटाबेस तैयार करेगी।
3. सरकार द्वारा नारकोटिक ड्रग्स की अवैध ट्रैफिक से निपटने में आने वाले खर्च को पूरा करने हेतु 'मादक पदार्थों के नियंत्रण के लिये राष्ट्रीय कोष' (National Fund for Control of Drug Abuse) नामक फंड की स्थापना की गई जिसका उपयोग नशेड़ियों का पुनर्वास और नशीली दवाओं के दुरुपयोग के खिलाफ जनता को शिक्षित आदि करने में किया जाता है।
4. सरकार एम्स के नेशनल ड्रग डिपेंडेंस ट्रीटमेंट सेंटर (National Drug Dependence Treatment Centre) की मदद से सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय के माध्यम से भारत में मादक पदार्थों के दुरुपयोग को मापने हेतु एक राष्ट्रीय ड्रग सर्वेक्षण (National Drug Abuse Survey) भी कर रही है।
5. स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा वर्ष 2016 में उत्तर-पूर्वी राज्यों में बढ़ते एचआईवी के प्रसार से निपटने हेतु, विशेष रूप से ड्रग्स इंजेक्शन का प्रयोग करने वाले लोगों में इसके प्रयोग को रोकने हेतु 'प्रोजेक्ट सनराइज़' (Project Sunrise) को शुरू किया गया था।

a. द नार्कोटिक ड्रग्स एंड साइकोट्रोपिक सब्सटेंस एक्ट, (NDPS) 1985 यह किसी भी व्यक्ति द्वारा मादक पदार्थ या साइकोट्रॉपिक पदार्थ के उत्पादन, बिक्री, क्रय, परिवहन, भंडारण, और या उपभोग को प्रतिबंधित करता है। NDPS अधिनियम में वर्ष 1985 से तीन बार (1988, 2001 और 2014 में संशोधन किया गया) है।

b. यह अधिनियम संपूर्ण भारत में लागू है तथा भारत के बाहर सभी भारतीय नागरिकों और भारत में पंजीकृत जहाजों और विमानों पर भी समान रूप से लागू होता है।

6. सरकार द्वारा 'नशा मुक्त भारत अभियान' (NashaMukt Bharat Abhiyan) को शुरू करने की घोषणा की गई है जो सामुदायिक आउटरीच कार्यक्रमों पर केंद्रित है।

मादक पदार्थों के खतरे पर नियंत्रण हेतु अंतर्राष्ट्रीय संधियां और सम्मेलन

1. भारत मादक पदार्थों के खतरे से निपटने हेतु निम्नलिखित अंतर्राष्ट्रीय संधियों और अभिसमयों का हस्ताक्षरकर्ता देश है,
2. नारकोटिक्स ड्रग पर संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन (यूएन) 1961,
3. साइकोट्रोपिक पदार्थों पर संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन 1971,
4. नारकोटिक ड्रग्स और साइकोट्रॉपिक पदार्थों के अवैध यातायात के खिलाफ संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन 1988,
5. ट्रांसनेशनल क्राइम (NTOC), 2000 के खिलाफ संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन।

भारत सरकार की गाइड लाइन के अनुसार विद्यालय परिसर से सौ मीटर की दूरी पर मादक पदार्थों का क्रय-विक्रय पूरी तरीके से निषेध है ऐसा करने पर दंडात्मक कार्रवाई का प्रावधान है।

राधिका की पहल रंग लाई- (कहानी)

शिक्षिका वंदना ने नोटिस किया कि राधिका विगत कुछ दिनों से विद्यालय में उदास गुमसुम एवं परेशान प्रतीत हो रही है। हमेशा खुश एवं प्रसन्न रहने वाली एवं कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली राधिका अचानक परेशान क्यों रहने लगी है, कारण जानने के लिए बार-बार प्रयास किया तो राधिका ने बस इतना ही बताया कि मैम घर में कुछ परेशानी चल रही है। शिक्षिका ने राधिका की सहेलियों से कारण पता लगाया कि राधिका के घर में उसके पिताजी ने विगत कुछ दिनों से अधिक शराब पीना प्रारंभ कर दिया है। इस कारण से उनके घर में कलह-विवाद की स्थिति बनी रहती है। गुस्से में पिताजी एवं भाई आपस में लड़ते हैं एवं छोटे बच्चों को अकारण झिड़कते एवं पीटते हैं। इससे घर की शांति नष्ट हो चुकी है।

शिक्षिका ने राधिका से पूछा कि इस महीने तो तुम्हारा जन्मदिन आने वाला है। आओ मैं तुम्हें एक उपाय बतलाती हूं, जिससे तुम्हारे घर की समस्या समाप्त हो जाएगी। ऐसा कहकर शिक्षिका ने राधिका को कुछ समझाया।

अब क्या था राधिका को मनचाही मुराद मिल गई। जन्मदिन के दिन राधिका सुबह-सुबह नहा धोकर तैयार हो गई। घर के सभी लोग खुश थे। पिताजी ने राधिका को प्यार से पूछा 'आज तेरा जन्मदिन है बता क्या गिफ्ट चाहिए।' राधिका ने कहा 'क्या मैं जो चाहूंगी वह गिफ्ट आप मुझे देंगे', पिता ने हंसकर कहा हां मेरी एक ही तो बेटी है क्यों नहीं। बताओ तुम्हें क्या चाहिए? राधिका ने फिर कहा 'आप प्रॉमिस करें जो मैं मांगूगी आप मुझे देंगे'। पिता ने प्यार से सर पर हाथ फिराते हुए कहा 'हां जी पक्का प्रॉमिस बता तुझे क्या चाहिए'। राधिका ने कहा 'पिताजी मुझे बर्थडे गिफ्ट में यह चाहिए कि आगे से आप शराब नहीं पिएंगे यह प्रॉमिस चाहिए'।

अब तो पिता की स्थिति देखने लायक थी वह गंभीर हो गए। उन्होंने काफी विचार किया की मेरी एक ही तो बेटी है क्या मैं इसकी यह इच्छा पूरी नहीं कर सकता हूं?

उन्होंने राधिका के सर पर हाथ फेरते हुए कहा कि आज तो राधिका को एक नहीं दो गिफ्ट मिलेंगे । पहला मैं संकल्प लेता हूं कि आज के बाद मैं कभी शराब नहीं पियूंगा, दूसरा राधिका को आज नई मनपसंद ड्रेस भी दिलवाई जाएगी।

इस प्रकार से शिक्षिका एवं राधिका की सूझबूझ से राधिका के घर की एक बड़ी समस्या का हल निकला।

बच्चों को नशे के दुष्परिणामों को बताने वाली एवं अच्छी आदतों की ओर प्रेरित करने वाली खेल गतिविधि

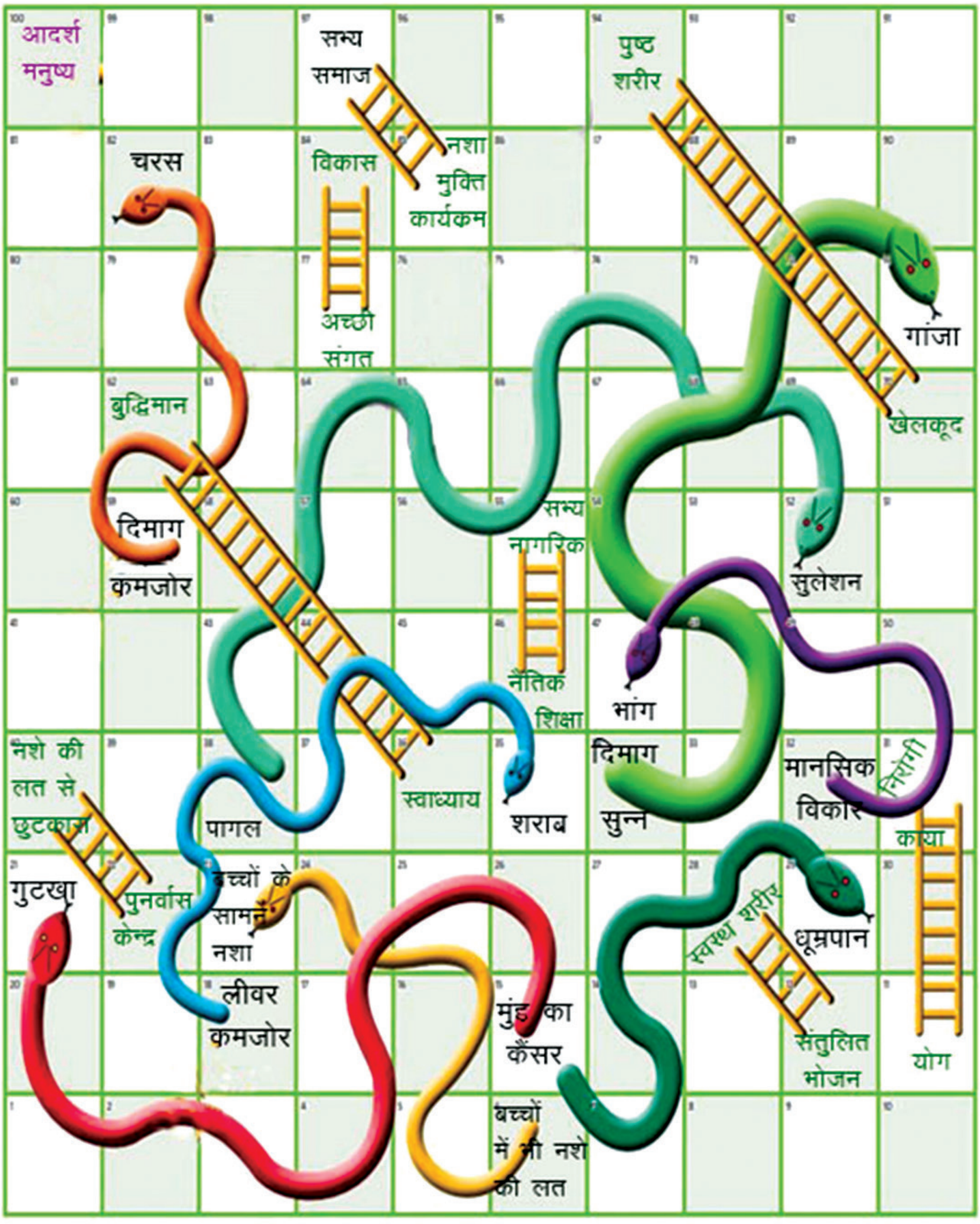

गतिविधियां

मादक पदार्थ के सेवन की घटना एवं कानून।

राहुल 10 वर्ष का है वह अपने दोस्तों के साथ स्कूल के मैदान में खेलने के पश्चात घर जाने के लिए अपने पिताजी का इंतजार कर रहा है। जब उसके पिताजी कार से लेने आए तो वह काफी मात्रा में मदिरा का सेवन किए हुए थे। राहुल पिताजी की कार में बैठना नही चाहता था।

प्रश्नः- क्या ऐसी परिस्थिति में कानून को तोड़ा गया है। यदि आप राहुल की जगह पर होते तो आप क्या लीगल एवं सुरक्षित निर्णय लेते?

सुनिता 14 वर्ष की है और वह अपने परिवार के साथ घर के निकट ढाबे पर भोजन करने गई। जिस टेबल पर वह भोजन कर रही थी उसी टेबल के समीप दो व्यक्ति ने सिगरेट जला कर धूम्रपान करने लगे। सुनिता को सिगरेट का स्मेल बिल्कुल अच्छा नहीं लगा। और न ही उसको उसका भोजन अच्छा लग रहा था।

प्रश्न- यहां किस हद तक कानून को तोड़ा गया?

प्रश्न- आप सुनिता की जगह पर होते तो क्या लीगल सेफ डिसिजन लेते?

राजू ने 13 वर्ष का होने पर जन्म दिन मनाने का आयोजन किया। उसका भाई 18 वर्ष का है। उसे यह पार्टी खराब लग रही थी। इसलिए वह राजू एवं उसके मित्रों के साथ एक कार्टून बियर ले आया और उसने घर के पीछे जन्म दिन पार्टी की। ताकि उसके पालक देख न सके।

प्रश्न- यहां किस हद तक कानून को तोड़ा गया?

प्रश्न- आप राजू की जगह पर होते तो क्या लीगल सेफ डिसिजन लेते?

प्रश्न आपके – उत्तर हमारे

प्रश्न- ड्रग्स सेवन से अनूठे स्वर्ग के आनंद की प्राप्ति होती है ?

उत्तर- यह बिल्कुल गलत धारणा है। ड्रग्स लेने से व्यक्ति होश हवास खो बैठता है। नशा उतरने पर आत्महीनता, कमजोरी, उत्साह में कमी का एहसास होता हैं। नरक की यातनाओं का अनुभव होता है।

प्रश्न- नशे की सामग्री बाजार में खुले में बिकती ही क्यों है?

उत्तर- बाजार में बिकने वाली हर वस्तु सेवन योग्य नहीं होती। बाजार में तो कीटनाशक जहर भी खुले में मिलते हैं तो क्या उनका भी सेवन किया जाए?

प्रश्न- कुछ समुदाय एवं गांव में खुले में शराब बनाने एवं सेवन करने की छूट शासन द्वारा दी गई है क्या?

उत्तर- परंपरा एवं संस्कृति के नाम पर स्वास्थ्य के प्रति विपरीत प्रभाव डालने वाली परंपरा को उचित नहीं कहा जा सकता है। समय के साथ साथ धीरे-धीरे जागरूकता आती जा रही है। जागरूकता के साथ ही ऐसे समुदाय के लोग खुद इस बुराई से दूर होते जा रहे हैं।

प्रश्न- अगर कोई व्यक्ति खुले में नशे का सेवन या धूम्रपान करता है तो हम क्या करें?

उत्तर- ड्रग्स सेवन के दुष्परिणाम को देखते हुए शासन ने इसके लिए नियम कानून बनाए हुए हैं, सबसे पहले हमें सार्वजनिक स्थानों पर सेवन करने वाले व्यक्तियों को समझाने का प्रयास करना चाहिए इसके बाद भी अगर वह नहीं मानते हैं तो संबंधित सार्वजनिक स्थान के प्रमुख के संज्ञान में इसको लाना चाहिए।

उदाहरण के लिए जैसे अगर हम बस में हैं तो कंडक्टर,अस्पताल में हैं तो चिकित्सा अधिकारी, विद्यालय में हैं तो प्रधानाध्यापक को अवगत कराना चाहिए। यह उनकी जिम्मेदारी है कि वह सार्वजनिक स्थानों पर ड्रग्स के प्रयोग को रुकवाएं।

समेकन

इस मॉड्यूल के अध्ययन के उपरांत हमारे शिक्षक, प्रधानाचार्य प्रॉब्लम ऑफ ड्रग को भली भांति समझ चुके हैं। इस समस्या का निदान अपनी शाला में किस प्रकार से करना है इसकी कैपेसिटी भी उनके अंदर बिल्डअप हो चुकी है। माड्यूल में दिए गए सुझाव गतिविधियां एवं सामग्री से हमारे प्रधान अध्यापक बच्चों को व्यसन मुक्ति के विरुद्ध संघर्ष में एक सैनिक की भांति अपनी भूमिका निर्वहन के लिए तैयार करने में सफल होंगे।

नशे की प्रवृत्ति का शिकार होने के लिए माहौल सबसे बड़ा कारक है। जिन बच्चों के माता-पिता या स्कूल में शिक्षक नशा करते है उन बच्चों में यह खतरा सबसे अधिक होता है। इसके अलावा सड़क पर काम करने वाले बच्चे सबसे अधिक नशे के आदि होते हैं। यह अत्यन्त आवश्यक है कि शिक्षक एवं समाज के प्रत्येक व्यक्ति को नारकोटिक ड्रग्स

एवं साइकोट्रापिंक सब्सटेंस एक्ट 1985 को समझना होगा एवं अधिक सख्ती से लागू किया जाना चाहिए।

मादक पदार्थो का उपयोग बच्चों में मुख्यतः सांस्कृतिक मूल्यों में बदलाव एवं आर्थिक तनाव में वृद्धि का कारण है। इन पदार्थों के दुष्परिणाम का प्रचार-प्रसार विद्यालय एवं समाज स्तर पर किया जाना चाहिए ताकि घरेलू हिंसा की घटनाएं दुर्घटना, मृत्यु के उच्च जोखिम से बचा जा सके।

नशामुक्त भारत अभियान संचालित किया जाना चाहिए। यह आवश्यक है कि मादक/नशीले पदार्थों की लत किसी भी व्यक्ति के चरित्र दोष में नहीं देखा जाना चाहिए। बल्कि एक बीमारी के रूप में देखा जाना चाहिए। जिससे कोई व्यक्ति संघर्ष कर रहा है। ऐसे में मादक/नशीले पदार्थों से जुड़े कलंक के समाप्त करने की आवश्यकता है। समाज को यह समझने की जरूरत है कि नशा करने वाले पीड़ित है, अपराधी नहीं है।

कुछ विशिष्ट मादक पदार्थों में 50 प्रतिशत अल्कोहल और नशीली चीजे होती हैं। ऐसे पदार्थों के उत्पादन और खेती पर कड़ाई से रोक लगाने की आवश्यकता है।

शैक्षिक पाठयक्रम में नशामुक्ति इसके प्रभाव और इससे संबंधित विषय शामिल किये जाना चाहिए स्कूलों में ड्रग्स के सेवन की रोकथाम संबंधी संगोष्ठियों/कार्यशाला/फिल्म प्रदर्शन का आयोजन ड्रग्स के दुरूपयोग के विरूद्ध प्रतिज्ञा/शपथ समारोहों का आयोजन।

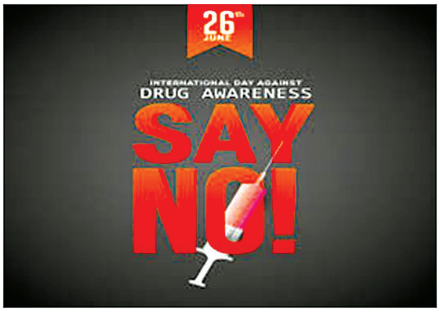

26 जून को नशीले पदार्थों का दुरूपयोग एवं अवैध व्यापार के विरूद्ध अंतर्राष्ट्रीय दिवस के रूप में अनेक कार्यक्रमों/गतिविधियों के साथ मनाना है ताकि समाज में नशीले पदार्थों के दुरूपयोग के हानिकारक प्रभावों के बारे में जनसाधारण के बीच जागरूकता पैदा की जा सके।

- ड्रग्स की विभीषिका से लोगों को जागरूक करने के लिए डब्लूएचओ ने 26 जून को अंतर्राष्ट्रीय विश्व ड्रग डे घोषित किया है।
- तम्बाकू की विभीषिका से लोगों को जागरूक करने के लिए डब्लूएचओ ने 31 मई को अंतर्राष्ट्रीय तम्बाकू निषेध दिवस घोषित किया है।

संदर्भ

इस माड्यूल में समाहित सूचनाएं निम्नानुसार वेबसाइड, एन.सी.बी. एम्स से संग्रहित की गई है।

1. National Institute of Drug Abuse.
   (https://www.drugabuse.gov/publications/understanding- addiction)
2. Easy to Read drug Facts.
   (https://easyread.drugabuse.gov/content/what-are-some-signs-and symptom-someone-drug-use-problem)
3. Medline Plus Medical Encyclopedia:
   (https://medlineplus.gov/drugabuse.html)
4. Central Governments of Narcotics Control Bureau (NCB) Web Portal

---

लेखक का नाम
रविन्द्र राय
डाईट रायसेन, म.प्र.

मेंटर/ एक्सपर्ट का नाम
सुरेन्द्र सिंह भदौरिया
विकासखंड अकादमिक समन्वयक, जिला-राजगढ़
मोबाइल- +91-9770441418
ई मेल- surendrabhadoria27@gmail.com

❑ ❑ ❑

मॉड्यूल – विद्यालय में खेल वातावरण

भाग – 1

विद्यालय में खेल वातावरण के महत्व को समझें

भाग – 2

अभिभावकों और समुदाय के साथ सार्थक सहभागिता कर

भाग – 3

खेलों के लिए आवश्यक संसाधनों को जुटाने में

शीर्षक :
आओ करें विद्यालय में खेल वातावरण का निर्माण

मध्य प्रदेश के सन्दर्भ में

उद्देश्य :

इस मॉड्यूल को पूर्ण करने के पश्चात् प्रधानाध्यापक

1. विद्यालय में खेल वातावरण के महत्व को समझ सकेंगे।
2. अभिभावकों और समुदाय के साथ सार्थक सहभागिता कर विद्यालय में खेल वातावरण निर्माण के तरीकों को समझ सकेंगे।
3. अभिभावकों और समुदाय के साथ सार्थक सहभागिता कर खेलों के लिए आवश्यक संसाधनों को जुटाने में सक्षम हो सकेंगे।

कीवडर्स

एन.सी.एफ. 2005, मध्यप्रदेश खेल नीति 2005, के.जी.बी.व्ही.(कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय), एन.ई.पी.2020, फिट इंडिया, एस.फॉर.डी. (स्पोर्ट फॉर डलबपमेंट), निपुण भारत, लाईफ स्किल, शाला सिद्धि, एन.सी.ई.आर.टी. के परफोरमेंस इडिकेटर 2013, स्वच्छ भारत अभियान 2014, पढ़ो इंडिया बढ़ो इंडिया आदि।

परिचय

खेल जीवन का एक आवश्यक अंग है। प्राचीन काल से ही मनुष्य खेलों से जुड़ा है। भारत में पुराने समय से कई खेल खेलते आ रहे हैं, जिनमें मुख्य खेल धनुष बाण, तलवार चलाना, भाला चलाना इत्यादि हैं। समाज में विभिन्न प्रकार के खिलाड़ी विद्यालय से ही आते हैं। विद्यालयों के खेलों से विभिन्न आयामों का विकास होता है। खेल व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का महत्त्वपूर्ण घटक है। अतः इस आयाम का विद्यालयों में उपस्थित होना अति आवश्यक है। लेकिन यह तभी संभव है जब विद्यालयों में खेलों का वातावरण मौजूद हो। वातावरण एवं खेलों का एक-दूसरे से गहन संबंध हैं। खेल वातावरण का अर्थ है कि खेल खेलने के लिए आसपास का वातावरण रोचक एवं आनंददायी होना चाहिए। ऐसा कोई बच्चा नहीं है जिसे खेल पसंद न हो।

रोचक बात यह है कि बच्चे खेल-खेल में जीवन के कई महत्त्वपूर्ण पड़ाव पार कर जाते है। जैसे कि बोलना, खड़े होना, दौड़ना, उठना, बैठना, चीजों को हाथ में पकड़ना, फेंकना इत्यादि। खेल से छात्रों का केवल शारीरिक विकास ही नहीं होता बल्कि खेलों से मानसिक, भावनात्मक, रचनात्मक, सृजनात्मक, ध्यान केंद्रित करना, निर्णय लेकर क्रियान्वयन करना, मिल जुलकर समूह में कार्य करना, दल नेतृत्व करना आदि कई स्वाभाविक गुणों का विकास भी होता है।

विद्यालय में शिक्षक ऐसे सरल, रोचक और मनोरंजक खेलों का क्रियान्वयन करते हैं जिससे छात्रों का सर्वांगीण विकास होता है। खेलों के माध्यम से कक्षाओं में स्वयं सीखने का वातावरण निर्माण होता है। इससे छात्रों के नामांकन एवं उपस्थिति की दर में बढ़ोतरी होती है। खेलों से बच्चों में भयमुक्त वातावरण आनंददायी शिक्षा, समूह में कार्य करना, एवं प्रतिस्पर्धा की भावना का विकास होता है। शाला सिद्धि के आयाम क्रमांक1 विद्यालय में उपलब्ध संसाधन, उपलब्धता, पर्याप्तता और उपयोगिता के अंतर्गत मानक क्रमांक 2 खेल के मैदान, खेल सामग्री और उपकरण, शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के अनुसार खेल सामग्री, खेल मैदान एवं शारीरिक शिक्षा पर बल दिया गया।

इसी प्रकार एन.सी.एफ.2005 में भी खेल गतिविधियों को फोकस करते हुए शैक्षिक खेलों, शैक्षिक खेल सामग्री के प्रयोग पर बल दिया। इसी प्रकार संयुक्त राष्ट्र के बाल अधिकार अधिनियम 1980 में भी बच्चे के खेलने के अधिकार और खेल सामग्री की उपलब्धता पर चर्चा की गई। इसी प्रकार यूनीसेफ का डिजाइन किया हुआ एस. फॉर. डी. मॉड्यूल (स्पोर्ट्स फॉर डेवलपमेंट) में भी खेल गतिविधियों का विद्यालयों में किस प्रकार क्रियान्वयन किया जाए एवं खेल से बालक-बालिकाओं में किस प्रकार नेतृत्व के गुणों का विकास होता है। इसी के साथ यह कार्यक्रम बालिकाओं की विद्यालय में भी उपस्थिति बढ़ाने में एवं दिव्यांग बालक/बालिकाओं में समावेशी शिक्षा की ओर प्रेरित करता है। दिव्यांग विद्यार्थियों हेतु विद्यालय स्तर से लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर तक विद्यार्थी खेलों में भाग ले सके इस हेतु अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पैरालंपिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।

खेलों से बच्चों की सक्रियता में वृद्धि, होती है। खेल बच्चों को उत्साही, सृजनशील और जिज्ञासु बनाता है। खेलों से बच्चों में अनुशासन का गुण भी प्राप्त होता है। खेलों से विद्यालयों में वातावरण निर्माण के लिए एन.सी.एफ. 2005, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, खेल नीति इक्कीसवीं सदी के कौशलों में एवं निपुण भारत में लाइफ स्किल में, शाला सिद्धि में आदि नीतियों में भी खेलों को महत्व देने की बात की गई है।

भाग - 1 :
विद्यालय में खेल वातावरण के महत्व को समझें

विद्यालय में खेल वातावरण के महत्व को समझने में मॉड्यूल के इस हिस्से को पूर्ण करने के पश्चात प्रधानाध्यापक सक्षम होंगेः-

1. खेल गतिविधियों से संबंधित नीति निर्देशों को समझने में।
2. विद्यालय संबंधित खेल किस प्रकार से विद्यालय का महत्त्वपूर्ण अंग हैं, को समझने में।

सैद्धांतिक पक्ष

राष्ट्रीय पाठचर्या की रूपरेखा 2005 में अनुशंसा की कि खेलों के माध्यम से सर्वांगीण गुणों का विकास होता है। शिक्षा के अधिकार अधिनियम 2009 की धारा 29 के अंतर्गत बच्चों का पूरी तरह शारीरिक एवं मानसिक योग्यताओं का विकास एवं धारा 19 के अंतर्गत खेल मैदान एवं प्रत्येक कक्षा के लिए खेल उपकरण प्रत्येक विद्यालय में उपलब्ध कराने की बात की गई है। इन्हीं बिन्दुओं की पूर्ति हेतु विद्यालयों में राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल के द्वारा प्रति विद्यालय में खेल सामग्री चिन्हित कर उपलब्ध कराई गई है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में भी विकास और सीखने के संदर्भ में बिन्दु 2.3.1 में यह बात कही गई हैं। सभी बच्चों का स्वस्थ शारीरिक विकास सभी प्रकार के विकास की पहली शर्त है। इसके लिए मूलभूत आवश्यकताएं जैसे पौष्टिक आहार, शारीरिक व्यायाम तथा अन्य मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक जरूरतों की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। इसके लिए सभी बच्चों को स्वतंत्र रूप से खेलों (औपचारिक एवं अनौपचारिक) योग की गतिविधियों में सहभागिता कर अपना शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक विकास कर सकें।

इन्ही सभी योजनाओं के अंतर्गत मध्यप्रदेश के समस्त प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों में खेल सामग्री उपलब्ध कराने हेतु पत्र एवं राशि जारी की गई है। जिससे मध्यप्रदेश की समस्त विद्यालयों में खेल सामग्री उपलब्ध हो गई हैं। प्रत्येक प्राथमिक विद्यालय को 5000 एवं माध्यमिक विद्यालय हेतु 10000 की राशि राज्य शिक्षा केन्द्र की ओर से खेल सामग्री हेतु प्रदान की गई है।

विद्यालयों में खेलों से ही मेजर ध्यानचंद्र, श्री मिल्खा सिंह, श्रीमती पी.टी उषा, सचिन तेन्दुलकर, मैरिकॉम, नीरज चोपड़ा आदि राष्ट्रीय खिलाड़ियों का उदय प्रारंभिक विद्यालयों से ही होता है। मध्यप्रदेश के शासकीय एवं प्राइवेट विद्यालयों के विद्यार्थी स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इंडिया के अंतर्गत खिलाए जाने वाले स्कूल गेम जो कि कक्षा 3 से 8 के छात्रों के लिए मिनी कैटेगरी में खिलाए जाते हैं (14 वर्ष से कम आयु वाले विद्यार्थियों को खिलाए जाते हैं) एवं 14 से 17 वर्ष के विद्यार्थियों को जूनियर कैटेगरी के अंतर्गत खिलाए जाते हैं। 17-19 वर्ष के विद्यार्थियों हेतु सीनियर कैटेगरी होती है इन खेलों में मध्यप्रदेश के कई खिलाड़ी अपने विद्यालयों से चयनित होकर संकुल

स्तर, ब्लॉक स्तर, जिला स्तर, संभाग स्तर, प्रदेश स्तर और राष्ट्रीय स्तर तक भाग लेते हैं- नेशनल में गोल्ड मेडल प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को रु.10000 की नगद प्रोत्साहन राशि, सिल्वर मेडल प्राप्त करने विद्यालय वाले विद्यार्थी को रु.7500 की नगद प्रोत्साहन राशि और ब्रोंज मेडल प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को रु.5000 की नगद प्रोत्साहन राशि मध्यप्रदेश शासन द्वारा दी जाती है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु उच्च शिक्षा संस्थानों में भी खिलाड़ियों को संस्थान में प्रवेश की मेरिट सूची में बोनस अंक दिए जाते हैं।

केस स्टडी

खेल गतिविधियां करते विद्यार्थी।

शिवपुरी जिले के शिवपुरी विकासखण्ड के अंतर्गत जिला मुख्यालय से 13 कि.मी. की दूरी पर तानपुर गाँव के प्राथमिक विद्यालय में 141 बच्चे दर्ज थे। इनमें से लगभग 58 बच्चे ही विद्यालय में पढ़ने आते थे। प्रधानाध्यापक राकेश भटनागर बच्चों की कम उपस्थिति को लेकर बड़े चिंतित थे। उन्होंने बच्चों की कम उपस्थिति की चिंता अपने गांव के सरपंच, शिक्षक, पालकों आदि से व्यक्त की। इसकी चिंता स्टाफ के साथियों, पालकों और एस.एम.सी के बीच

रखी। इसी बीच जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में प्रधानाध्यापक नेतृत्व क्षमता वर्धन प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण हेतु श्री राकेश भटनागर ने सहभागिता की। प्रशिक्षण के दौरान उन्होने स्वंय के विद्यालय में आ रहे विद्यार्थियों की उपस्थिति संबंधी चुनौती पर चर्चा की। प्रशिक्षण के दौरान छात्र उपस्थिति को लेकर विभिन्न खेल गतिविधियां करायी गई।

गतिविधयां करते हुए विद्यार्थी।

इन्हीं गतिविधियों को लेकर जब प्रशिक्षण उपरांत विद्यालय के प्रधानाध्यापक अपने विद्यालय पहुंचे तो उन्होंने प्रशिक्षण में सिखायी गई खेल गतिविधियां विद्यालय के शेष शिक्षकों एस.एम.सी., बाल केबिनेट एवं पालकों को सिखायी। इसके बाद उन्होंने खेल गतिविधियों को विद्यालय में छात्रों के बीच कराया। तब छात्र संख्या मात्र 60 थी।

छात्रों ने विद्यालय में सीखी हुई खेल गतिविधियों को विद्यालय अवकाश के बाद गाँव के चौपाल में, अपने आंगन में, खेल के मैदान में गतिविधियों को लेकर खेल खेलने लगे।

गतिविधियां करते हुए विद्यार्थी।

जो बच्चे विद्यालय में नहीं जाते थे उन्होंने उन गतिविधियों को देखा और खेलने के लिए बच्चों से बोला तो बच्चों ने उन्हें खेल में सम्मिलित किया। तो उन बच्चों को बड़ा आनन्द आया। उन्होंने उन छात्रों से पूछा कि तुमने यह खेल कहाँ सीखा। यह तो बड़ा अच्छा खेल है। तब स्कूल से आने वाले छात्रों ने कहा कि हमारे प्रधानाध्यापक जब से प्रशिक्षण से आये हैं तब से वो प्रतिदिन अलग-अलग खेल खिलाते है। उनकी बात सुनकर अनुपस्थित छात्रों ने विद्यालय जाने का निर्णय लिया।

सामूहिक खेल में भाग लेते विद्यार्थी।

अगले दिन से अनुपस्थित छात्र विद्यालय में जाने लगे। अब विद्यार्थी शिक्षक और प्रधानाध्यापक ने अपनी विद्यालय में नियमित रूप से अलग-अलग तरह के ऑउट डोर एवं इनडोर खेलों के साथ-साथ शैक्षिक खेलों को खिलाना प्रारंभ किया जिसमें कार्ड गेम, पत्ता पलट, संख्या खेल, प्रश्नों का पिटारा अंत्याक्षरी, आओ पुस्तक पढ़े, साँप सीढ़ी, अंक पट्टी, ए की होती दो टांगे, हिंगलिस गतिविधि, मैच बॉक्स गतिविधि, कौन बनेगा वर्ण विजेता, सितोलिया, खो-खो, कबड्डी, कुर्सी रेस, जलेबी रेस, नींबू रेस आदि खेल गतिविधियां कराई जिससे अनुपस्थित छात्रों में विद्यालय आने की रूचि जागृत हुई और बच्चे प्रतिदिन विद्यालय आने लगे। धीमे-धीमे छात्र संख्या 130 हो गई और खेल गतिविधियों के माध्यम से शैक्षिक खेल भी नियमित होने लगे और यह विद्यालय लगभग 50 आसपास के गाँवों में एक आदर्श विद्यालय बन गया।

सोचिए और लिखिए

1. तानपुर के प्रधानाध्यापक के द्वारा कौन-सा प्रशिक्षण प्राप्त किया?

....

....

....

....

2. प्रशिक्षण के बाद प्रधानाध्यापक ने क्या रणनीति बनाई?

....

....

....

3. रणनीति का किस प्रकार विद्यालय में क्रियान्वयन किया गया?

....

....

....

4. क्या आपके विद्यालय में भी छात्रों की उपस्थिति को लेकर कोई चुनौती है? आप उसका समाधान कैसे करते हो?

....

....

....

5. आपके विद्यालय में कौन-कौन सी खेल गतिविधियाँ संचालित होती हैं विस्तार से लिखिए?

....

....

....

6. क्या एनसीएफ 05 में खेल वातावरण की बात की गयी है? हाँ/नहीं

7. फिट इंडिया खेल भावना से संबंधित गतिविधियां कराता है? हाँ/नहीं

8. एस 4 डी(स्पोर्ट्स फॉर डेवलपमेंट) कक्षा 8 तक विद्यार्थियों के लिए है? हाँ/नहीं

सुमित अंतिल की सफलता की कहानी

सुमित अंतिल का जन्म 7 जून 1998 ईस्वी को हरियाणा राज्य के सोनीपत जिले के खेवड़ा गाँव में हुआ था। सुमित अंतिल बचपन से ही पहलवान बनना चाहते थे और पहलवानी सीखने के लिए सुमित अंतिल सोनीपत के ही एक अखाड़े में पहलवानी की प्रैक्टिस करते थे। सुमित अंतिल भारतीय पहलवान योगेश्वर दत्त को अपनी प्रेरणा मानकर कुश्ती के क्षेत्र में कुछ बड़ा करना चाहते थे। किंतु एक दुर्घटना में उनका पैर क्षतिग्रस्त हो गया। इस तरह से सुमित अंतिल का पहलवान बनने का सपना टूट गया। हालांकि उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और खेल के क्षेत्र में ही अपना करियर बनाने का निर्णय लिया करीब 6 साल पहले सड़क हादसे में अपना एक पैर गंवाने वाले सुमित ने बुलंद हौसलो, मेहनत और जज्बे के दम पर यह मुकाम हासिल किया है। हरियाणा के रहने वाले सुमित तीन बहनों के इकलौते भाई हैं। सुमित जब 7 साल के थे तब एयरफोर्स में तैनात उनके पिता की बीमारी से मौत हो गई थी। साल 2015 में जब सुमित ट्यूशन लेकर अपने घर वापस आ रहे थे तभी एक ट्रैक्टर ट्रॉली ने टक्कर मार दी इसी हादसे में सुमित को अपना एक पैर गंवाना पड़ा था और वह कई महीनों तक बिस्तर पर रहे। उनका मनोबल उन्हें सफलता दिला पाया।

सुमित अंतिल ने वर्ल्ड रिकॉर्ड थ्रो के साथ जीता गोल्ड मैडल। Source:Tezztarrar.com

भाग - 2 :
अभिभावकों और समुदाय के साथ सार्थक सहभागिता कर विद्यालय में खेल वातावरण निर्माण के तरीकों को समझना

मॉड्यूल के इस हिस्से को पूर्ण करने के पश्चात प्रधानाध्यापक सक्षम होंगे -

1. अभिभावकों और समुदाय के साथ सार्थक सहभागिता कर विद्यालय में खेल वातावरण निर्माण के तरीकों को समझना में।
2. खेलों के प्रति शिक्षकों, छात्रों, एस.एम.सी. बाल केबिनेट, पालकों में खेल वातावरण के निर्माण की समझ विकसित करने में।

सैद्धांतिक पक्ष

खेल बच्चे की स्वाभाविक क्रिया है । भिन्न-भिन्न आयु वर्ग के बच्चे विभिन्न प्रकार के खेल खेलते हैं। ये विभिन्न प्रकार के खेल बच्चों के सम्पूर्ण विकास में सहायक होते हैं। खेल से बच्चों के शारीरिक विकास, संज्ञानात्मक , संवेगात्मक विकास सामाजिक विकास एवं नैतिक विकास को बढ़ावा मिलता है, किन्तु अभिभावकों की खेल के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति एवं कार्यकलाप ने बुरी तरह प्रभावित किया है।

अतः यह अनिवार्य है कि शिक्षक और माता-पिता खेल के महत्व को समझें।

खेलों के प्रकारों में अन्वेषणात्मक खेल, संरचनात्मक खेल काल्पनिक खेल और नियमबद्ध खेल शामिल हैं। खेलों में सांस्कृतिक विभिन्नताएं भी देखी जाती हैं।

खेल से मनुष्य की मनोवैज्ञानिक जरूरतें पूरी होती हैं तथा वह मनुष्य को सामाजिक कौशलों के विकास का भी अवसर देता है। खेल बच्चों की मानसिक क्षमताओं के विकास में भी एक बड़ी भूमिका निभाते हैं। पहले चरण में बच्चा वस्तुओं के साथ संवेदन प्राप्त करने व कार्यसंचालन करने का प्रयास करता है। दूसरे चरण में बच्चा कल्पनाओं को रूप देने के लिए वस्तुओं को किसी के प्रतीक के रूप में उपयोग करने लगता है। अन्तिम चरण में 7 से 11 वर्ष काल्पनिक भूमिकाओं के खेलों की तुलना में बच्चा नियमबद्ध खेल; या क्रीड़ाओं अधिक संलग्न रहता है। खेलों से तार्किक क्षमता व स्कूल सम्बन्धी कौशलों को विकसित होने में मदद मिलती है।

केस स्टडी - ऐसा है मेरे सपनों का विद्यालय

मैं नव्या कक्षा-7 की एकीकृत शासकीय मा.वि., रूहानी की छात्रा हूँ। मेरे विद्यालय में प्रतिदिन सरस्वती वंदना, राष्ट्रीय गीत, मध्यप्रदेश गान होता है और देश भक्ति के नारे लगाये जाते हैं। स्वच्छता अभियान संदेश, योग क्रियाएं, समाचार पत्रों का वाचन बारी-बारी से छात्रों के द्वारा किया जाता है। विद्यार्थियों द्वारा दिवस में पड़ने वाले त्यौहार, पर्व एवं उस दिन की घटने वाली घटनाओं को बताया जाता है। बाल केबिनेट के शिक्षा मंत्री के द्वारा जिला, राज्य एवं देश के बारे में सामान्य

जानकारी बतायी जाती है। प्रार्थना सभा के उपरांत हम सभी विद्यार्थी पंक्तिबद्ध तरीके से अपनी-अपनी कक्षाओं में जाते हैं। सभी बेलाऐं क्रम से चलने के बाद षष्ट्म बेला का सभी छात्रों को बड़ा बेसब्री से इंतजार रहता है, क्योंकि प्रधानाध्यापक नेतृत्व क्षमता वर्धन प्रशिक्षण उपरांत विद्यालय के प्रधानाध्यापक महोदय ने समुदाय और पालक शिक्षक संघ के साथ खेल के महत्व पर कई दौर की चर्चा उपरांत विद्यार्थियों हेतु खेल गतिविधियों के कालखंड एवं उसके समय को सुनिश्चित किया जिसमें समुदाय ने अपनी सहमति एवं सहभागिता सुनिश्चित की।

मैदान में खेलते बच्चे।

यह कालखण्ड खेल का अर्थात क्रीड़ा का होता है। जिसमें हम बारी-बारी से खेल गतिविधियों का आनंद उठाते हैं जिससे हमारे विद्यालय का वातावरण आनंददायी हो जाता हैं। हमारे विद्यालय में सोमवार को खो-खो, मंगलवार को कबड्डी, बुधवार सितौलिया, गुरूवार को चिड़िया बल्ला और शुक्रवार क्रिकेट का खेल खिलाया जाता है।

पन्द्रह दिवस के उपरांत इन्हीं खेलों के साथ-साथ अंताक्षरी, एक मिनिट प्रतियोगिता, निबंध लेखन, वाद विवाद प्रतियोगिता, चित्रकला प्रतियोगिता एवं अन्य प्रतियोगिताएं भी करायी जाती हैं। शनिवार के दिन प्रार्थना सभा के बाद मध्यावकाश के पूर्व शैक्षिक गतिविधियों के बाद बाल-सभा एवं खेल सभा का विशेष आयोजन होता है। इस दिन साप्ताहिक प्रतियोगिताओं को जीतने वाले प्रतियोगी के बीच प्रतिस्पर्धा कराकर विजेताओं को विद्यालय एवं एस.एम.सी के द्वारा पुरस्कृत किया जाता है। खेल गतिविधियों एवं बाल सभा की संपूर्ण जवाबदारी बाल कैबिनेट के मंत्री एवं सदस्यों की होती है। यह समिति खेल मैदान की साफ-सफाई, खेल की सामग्री एवं खेल टीमों का चयन करती है। इन सभी की मॉनिटरिंग प्रधानाध्यापक एवं कक्षा शिक्षक करते हैं। हमारे विद्यालय में विशेष अवसर के दिन अंतर विद्यालयीन प्रतियोगिताओं का आयोजन भी होता है। इसलिए मैं तो कहती हूँ कि मेरा विद्यालय मेरे सपनों के विद्यालय जैसा है।

खो-खो खेलते बच्चे।

निवेदक
नव्या

गतिविधि

आमतौर पर हमारे विद्यार्थियों में खिलाए जाने वाले खेल एवं उनके प्रकार कुछ इस तरह या इनसे मिलते-जुलते स्थानीय स्वरूप में होते हैं।

1. **मेरा विद्यालय और मेरा खेल** – मेरे विद्यालय में विभिन्न प्रकार की खेल गतिविधियाँ करायी जाती है। जैसे पत्ता पलट, अंक चार्ट, सॉप सीढ़ी, लूडो, रेल का खेल, हवाई जहाज का खेल, जानवरों के अभिनय का खेल, केरम, शेर बकरी, लंगड़ी दौड़, चोर सिपाही, कुत्ता बिल्ली, उल्टी दौड़, कौन शेर कौन गीदड़ इत्यादि।

2. **मुक्त खेल और संरचनात्मक खेल** – मुक्त खेल एवं संरचनात्मक खेल बच्चें स्वतंत्र रूप से रहकर खेल खेलते हैं। बाहरी खेल तथा भीतरी खेल भी खेलते है। वैयक्तिक और सामूहिक खेल भी खेलते है। ओजस्वी और शांत खेल भी खेलते हैं। संवेदी, क्रियात्मक और प्रतीकात्मक आदि खेल भी खेलते हैं।

आप भी अपने विद्यालय में विद्यार्थियों को खेलने को कहें। इस हेतु उन्हें खेल के बारे में बताएं एवं उसके नियम समझाएं। पहले शिक्षक खेलें फिर विद्यार्थियों को खेलने के लिए आंमत्रित करें।

सोचिये और बताइए

1. खेल आत्म नियंत्रण के विकास में किस प्रकार सहायक है?

....

....

2. आंतरिक एवं बाह्य खेलों में अंतर बताओ?

....

....

3. आपके विद्यालय में खेले जाने वाले सामूहिक खेलों की सूची तैयार कीजिए?

....

....

4.क्या आपके विद्यालय में इस प्रकार की कोई गतिविधियां होती हैं? यदि होती हैं तो उनके नाम बताएं?

....

....

5.आपके द्वारा करायी गयी गतिविधि/खेल का अवलोकन करें और बताएं क्या सभी विद्यार्थियों ने खेल में सहभागिता की? और क्या सभी बच्चे खेलते समय आनंद का अनुभव करते हैं और नई चीजें सीखते हैं?

....

....

विद्यालय के बाहर खेलते हुए बच्चे।

फोटोग्राफ पर आधारित चर्चा के प्रश्न

1. दिए गये फोटो में कौन-सी खेल गतिविधि खिलायी गई है ?

....

....

....

2. आप के विद्यालय में इस प्रकार के कौन-कौन से खेल खिलाये जाते हैं ?

....

....

....

3. दिए गये फोटो में छात्र-छात्राओं की कुल संख्या कितनी है ?

....

....

....

4. दिया गया खेल चित्र इंडोर या आउटडोर खेल चित्र है ?

....

....

....

बचपन और खिलौना

मैं जब बच्चा था, छोटी-छोटी चीजों से अपने खिलौने बनाने और अपनी कल्पना के नए-नए खेल इजाद करने की मुझे पूरी आजादी थी। मेरी खुशी में साथियों का पूरा हिस्सा होता था बल्कि मेरे खेलों का पूरा मज़ा उनके साथ खेलने पर निर्भर करता था। एक दिन हमारे बचपन के इस स्वर्ग में वयस्कों की बाज़ार प्रधान दुनिया से एक प्रलोभन ने प्रवेश किया। एक अंग्रेज दुकान से खरीदा गया खिलौना हमारे एक साथी को दिया गया। वह कमाल का खिलौना था बड़ा और सजीव। हमारे साथी को उस खिलौने पर घमंड हो गया और उसका ध्यान अब नहीं लगता था। यह उस कीमती चीज को बहुत ध्यान से हमारी पहुँच से दूर रखता था। अपनी इस खास वस्तु पर इठलाता हुआ। वह अपने अन्य साथियों से खुद को श्रेष्ठ समझता था, क्योंकि उनके खिलौने सस्ते थे। मैं निश्चित तौर पर यह कह तो सकता हूँ कि अगर वह इतिहास की आधुनिक भाषा का प्रयोग कर सकता तो वह यही कहता कि उस हास्यास्पद रूप से श्रेष्ठ खिलौनों का स्वामी होने की हद तक हमसे अधिक सभ्य था।

अपनी उत्तेजना में वह एक चीज़ भूल गया कि वह तथ्य जो उस वक्त उसे बहुत मामूली लगा था- कि इस प्रलोभन में एक ऐसी चीज खो गई जो उसके खिलौनों से कहीं श्रेष्ठ थी। एक श्रेष्ठ और पूर्ण बच्चा उस खिलौने से महज उसका मन व्यक्त होता था, बच्चे की रचनात्मक ऊर्जा नहीं। ना ही उसके खेल में बच्चे का आनंद था। और ना ही उसके खेल की दुनिया में साथियों को खुला निमंत्रण।

रवींद्रनाथ टैगौर के निबंध सभ्यता और प्रगति से

(एन सी एफ 05 के पृष्ठ क्रमांक 20)

विचारणीय प्रश्न

1. खेल बच्चों के संपूर्ण विकास में किस प्रकार सहायक है?
2. 7 से 11 वर्ष के बच्चे किन क्रीड़ाओं में संलग्न रहते हैं?
3. दी गयी आत्मकथा किस महापुरुष की है?

भाग - 3 :

अभिभावकों और समुदाय के साथ सार्थक सहभागिता

4.3.1 अभिभावकों और समुदाय के साथ सार्थक सहभागिता कर खेलों के लिए आवश्यक संसाधनों को जुटाने में मॉड्यूल के इस हिस्से को पूर्ण करने के पश्चात् प्रधानाध्यापक सक्षम होंगे।

4.3.2 विद्यालयों में खेलों के लिए आवश्यक संसाधन (खेल मैदान, खेल सामग्री) उपलब्धता सुनिश्चित करने में।

विद्यार्थियों के साथ खेल गतिविधि करते शिक्षक एवं खिलौनों के साथ गतिविधि करते विद्यार्थी।

केस स्टडी (विद्यालयों में खेलों को प्रोत्साहित करना)

श्री नीरज मिश्रा एकीकृत शा.मा.वि.रामनगर में शिक्षक हैं। वह अपने विद्यालय में बच्चों को खेलों के प्रति प्रोत्साहित कर बाल कैबिनेट, एस.एम.सी., पालक शिक्षक संघ, राजस्व विभाग के सहयोग से निर्माण करते हैं। रामनगर विद्यालय में विद्यालय भवन के आगे लगभग 8 बीघा जमीन है जिस पर गाँव के कुछ दबंगों ने कब्जा कर लिया था। इस कारण वहां गाँव के लोग अपने-अपने घरों का कूड़ा फेंकते थे। इस विद्यालय के खेल का मैदान कूड़ा घर बन गया और विद्यालय के छात्र खेलने में असहज महसूस कर रहे थे। बच्चों की इस समस्या से प्रधानाध्यापक चिंतित हुए। संस्था प्रमुख ने विद्यालय के खेल के मैदान पर हुए अतिक्रमण की बात गाँव के लोगों से की और कचरा घर की गंदगी के कारण विद्यालय के विद्यार्थी विभिन्न बीमारियों से ग्रस्त हो रहे हैं, इस बात से अवगत कराया। जब गाँव वाले नहीं माने तो संस्था प्रमुख ने बच्चों से कहा कि वह अपने पालकों को समझाए कि अपने घरों का कूड़ा विद्यालय में ना फेंका करें। इस समस्या को लेकर विद्यालय में आयोजित होने वाली ग्राम सभा की बैठक में चर्चा की गई एवं उक्त समस्या के निराकरण हेतु आवेदन दिया। संस्था के प्रधानाध्यापक द्वारा ग्राम पंचायत के सरपंच, सचिव, सी.ए.सी., बी.ए.सी., बी.आर.सी.सी., डी.पी.सी., राजस्व विभाग एवं जन प्रतिनिधियों को अवगत कराया गया। सभी के सहयोग से दबंग कब्जादारी का अतिक्रमण हटाकर कब्जे से मुक्त कराने हेतु कई आवेदन दिये। एक दिन उक्त ग्राम के विद्यालय में स्थानीय क्षेत्रीय विधायक महोदय का दौरा हुआ। जिसमें संस्था प्रमुख ने अपनी संस्था में बने कूड़ा घर को खत्म कराने हेतु बच्चों के साथ आवेदन दिया एवं विद्यालय से अतिक्रमण हटाने की बात कही। बच्चों की शिकायत पर क्षेत्रीय विधायक महोदय द्वारा स्थानीय सरपंच महोदय एवं ग्राम पंचायत को 10 दिवस में कब्जा मुक्त करने के निर्देश दिए गए। उक्त निर्देशों के क्रम में ग्राम पंचायत और सरपंच महोदय ने स्थानीय मजदूरों से ट्रैक्टर अन्य मशीनों की सहायता से अतिक्रमण को हटावाया। फिर ग्राम पंचायत के सहयोग से बॉऊंड्री वॉल के साथ मुख्य द्वार का निर्माण कराकर खेल का मैदान विकसित किया गया।

खेल का मैदान निर्माण होने के बाद छात्रों, शिक्षकों, बाल केबिनेट एवं समुदाय के युवकों में खेल के प्रति रुचि जागृत हो गई। शिक्षक ने विद्यालय के क्रीड़ा फण्ड के माध्यम से प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए खेल सामग्री क्रय की। जो राशि राज्य शिक्षा केंद्र भोपाल के द्वारा जारी की गयी थी। प्रधानाध्यापक द्वारा छात्रों को विभिन्न खेलों में पारंगत बनाने के लिए माधवराव सिंधिया खेल अकादमी के नियंत्रक महोदय एवं तात्याटोपे शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय के प्रशिक्षक महोदय एवं स्थानीय स्तर पर छोटे खाँ क्रिकेट अकादमी के संचालक (राज्य स्तरीय क्रिकेट खिलाड़ी) को भी विद्यालय में खेलों के महत्व को बढ़ावा देने के लिए समय-समय पर आमंत्रित कर छात्रों में खेल कौशलों को बढ़ावा दिया जाने लगा। जिससे विद्यालय में खेल प्रतिस्पर्धा की भावना बड़ने लगी। संस्था के जागरूक विधार्थियों एवं संस्था प्रमुख की सक्रियता से 8 बीघा खेल मैदान विकसित हो गया।

मध्यप्रदेश के संपूर्ण जिलों के साथ-साथ हमारे जिले में भी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों द्वारा विद्यालय भवन को संसाधन के रूप में विकसिक कर विभिन्न प्रकार के शैक्षिक, मनोरंजक, ज्ञानवर्धक, खेल-खेल में सिखाने की विभिन्न गतिविधियों को विकसित किया और इस प्रकार पूरा विद्यालय खेल वातावरण से भरपूर हो गया। बाला की कुछ खेल गतिविधियाँ इस प्रकार हैं, जो विद्यालय में करायी जाती हैं।

शासकीय माध्यमिक विद्यालय रामनगर - YouTube

https://youtu.be/K1yrrEuyKlc

https://youtu.be/3Tmj48C92RA

गतिविधि -बाला (बिल्डिंग एज लर्निंग एड) विद्यालय एक खेल संसाधन के रूप में

मध्य प्रदेश के संपूर्ण जिलों के साथ-साथ हमारे जिले में भी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों द्वारा विद्यालय भवन को संसाधन के रूप में विकसित कर विभिन्न प्रकार के शैक्षिक मनोरंजक ज्ञानवर्धक खेल- खेल में सीखने की विभिन्न गतिविधियों को विकसित किया और इस प्रकार पूरा विद्यालय खेल वातावरण से भरपूर हो गया।

बाला की कुछ खेल गतिविधियां इस प्रकार हैं जो विद्यालय में कराई जाती हैं -

1. फर्श पर गतिविधियों की विभिन्न प्रकार की आकृतियां पक्के पेंट से स्थाई बनाई गई हैं।
2. कक्षा कक्ष, बरामदा, आंगन, दीवार, छत, दरवाजे, खिड़की पर स्थाई आकृतियां बनाकर शैक्षिक खेल खिलाए जाते हैं।
3. खेल मैदान में मड माउंट, टायर के झूले, माप स्केल धूप घड़ी झूले कुश्ती के लिए मैदान, खो-खो, हाई जम्प लॉन्ग जम के मैदान इस प्रकार पूरे विद्यालय को बाला गतिविधि के अंतर्गत खेलमय गतिविधियों से भर दिया गया है।

चिंतन मनन के प्रश्न -

1. विद्यालय के प्रधानाध्यापक के नाते आप अपने विद्यालय में खेल गतिविधियों को लागू करने हेतु कौन-कौन से संसाधन जुटाएँगे?
2. बाला से आपका क्या अभिप्राय है?
3. बाला के अंतर्गत कौन-कौन सी शैक्षिक गतिविधियाँ करायी जाती हैं?
4. बाला के अंतर्गत आपके विद्यालय में कौन-कौन सी शैक्षिक गतिविधि करवायी गई? विस्तार से लिखिए?

समेकन

अंत में हम कहेगें कि खेलों के प्रति शिक्षकों, छात्रों, एस.एम.सी., बाल केबिनेट आदि में रुचि जागृत कर खेलों को बढ़ावा देने के लिए वातावरण का निर्माण कर आवश्यक खेल संसाधन जुटाएँगे। खेलों से ही विद्यालय के वातावरण का निर्माण होता है। साथ ही खेलों के लिए वातावरण का निर्माण करना एक-दूसरे के पूरक है। खेलों के लिए शिक्षकों, छात्रों, समुदाय, एस.एम.सी., बाल कैबिनेट आदि में रूचि पैदा कर वातावरण का निर्माण कर आवश्यक संसाधन जुटाने के लिए विद्यालय प्रबंधन समिति एवं शासन की विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत संसाधनों को जुटाना पहली प्राथमिकता में होना चाहिए। खेलों को बढ़ावा देने के लिए प्रति विद्यालय खेल शिक्षक का होना आवश्यक है। अतः इस मॉड्यूल के द्वारा विद्यालय प्रमुखों (स्कूल लीडर या संस्था प्रमुख) के द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त कर विद्यालय के शेष घटकों जैसे शिक्षक, छात्रों, समुदाय, एस.एम.सी., बाल कैबिनेट, पालकों आदि का उन्मुखीकरण कर खेलों के प्रति जोड़कर खेल प्रतिभाओं को निखार कर खेलों में सक्रियता के साथ सहभागिता कर छात्रों का शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक, एवं सर्वांगीण विकास करना महत्वपूर्ण है।

संदर्भ सूची

1. एन.सी.एफ. 2005 (पृष्ठ क्रमांक 20, 54 और 55),
2. के.जी.बी.व्ही.,
3. एन.ई.पी. 2020 (4.2 में खेल एक खोज गतिविधि आधारित शिक्षण को महत्व दिया गया है और शारीरिक शिक्षा को महत्व दिया गया है),
4. फिट इंडिया,
5. एस.फॉर.डी. (स्पोर्ट फॉर डेवलपमेंट),
6. निपुण भारत,
7. लाईफ स्किल,
8. शाला सिद्धि,
9. एन.सी.ई.आर.टी.के परफॉरमेन्स इंडिकेटर 2013,
10. स्वच्छ भारत अभियान 2014,
11. बाला, मध्य प्रदेश खेल नीति 2001,
12. नेट से सुमित अंतिल की स्टोरी 09/09/2021,
13. निष्ठा मॉड्यूल आदि।

आओ प्रयास करे

1. यदि आप अपने विद्यालय में खेल वातावरण का निर्माण करना चाहते है तो आप की योजना क्या होगी?

....

....

....

2. सर्वप्रथम आप योजना के किस हिस्से पर कार्य प्रारंभ करेगे?

....

....

....

....

3. विद्यालय में खेल वातवरण के निर्माण करने के लिए शिक्षकों और विद्यार्थियों में किस प्रकार का सांमाजस्य होना चाहिए ?

....

....

....

....

4. खेल के दौरान शिक्षक की भूमिका क्या होनी चाहिए?

....

....

....

....

लेखक का नाम
मनीष जैन
डाईट शिवपुरी, म.प्र.

मेंटर/ एक्सपर्ट का नाम
ताज फराज खान
माध्यमिक शिक्षक
शासकीय माध्यमिक शाला, शहीद नगर, भोपाल
संकुल केन्द्र, शासकीय कन्या उमावि,
हमीदिया क्र. 2, फूल महल, भोपाल
मोबाइल- +91 99936 11091
ई मेल- tajfarazkhan@yahoo.in

❑ ❑ ❑

मॉड्यूल – बालिका शिक्षा

भाग – 1	भाग – 2	भाग – 3	भाग – 4
बालिका शिक्षा के प्रति समाज में जागरूकता पैदा करना	बालिकाओं के ठहराव में वृद्धि करना	बालिका शिक्षा से संबंधित शासन की विभिन्न योजनाओं को जानना	बालिकाओं के ठहराव एवं शैक्षणिक स्तर में वृद्धि करना

शीर्षक :
मध्यप्रदेश में बालिका शिक्षा के बढ़ते कदम

उद्देश्य :

1. समाज में बालिका शिक्षा के प्रति जागरूकता पैदा कर सकेंगे।
2. बालिकाओं के ठहराव में वृद्धि कर सकेंगे।
3. बालिका शिक्षा से संबंधित शासन की विभिन्न योजनाओं से पालकों, बालिकाओं एवं शिक्षकों को अवगत करा सकेंगे।
4. बालिकाओं की उपस्थिति (ठहराव) एवं शैक्षणिक स्तर में वृद्धि कर सकेंगे।

परिचय

बालिका शिक्षा का आशय बालिकाओं के लिए की जाने वाली शिक्षा व्यवस्था से है। पूर्व प्राथमिक, माध्यमिक,उच्च माध्यमिक महाविद्यालय आदि स्तर पर बालिका शिक्षा की व्यवस्था की जाती है तथा शिक्षा संस्थाएं खोली जाती हैं। वे सभी बालिका शिक्षा के अन्तर्गत आती हैं। स्वाधीनता के बाद पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से बालिकाओं की शिक्षा के साथ-साथ महिला शिक्षा के विकास के लिए अनेक प्रयास किये गये। इन्हीं प्रयासों की वजह से देश में बालिका शिक्षा के प्रति जागरूकता पैदा हुई। शिक्षा जीवन का अनिवार्य अंग है चाहे वह लड़का हो या लड़की, शिक्षा बालिकाओं के जीवन के मार्ग को चुनने का अधिकार देने का पहला कदम है। एक शिक्षित बालिका में कौशल, सूचना, प्रतिभा, और आत्मविश्वास होता है। एक सुशिक्षित बालिका देश के विकास में महत्त्वपूर्ण भागीदारी निभा सकती है। शिक्षित लड़की अपने भविष्य को सही आकार देती है। देश की महिलाओं को शिक्षित किये बिना देश का विकास नहीं हो सकता। हमारी सरकार द्वारा प्रारंभ से ही कोठारी कमीशन, राष्ट्रीय शिक्षा नीति1986, प्रोग्राम ऑफ एक्शन 1992, यशपाल समिति, एनसीएफ 2005, बालिकाओं की प्रारंभिक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम (एनपीईजीएलई) इन सबके माध्यम से बालिका शिक्षा में वृद्धि के लिए सकारात्मक प्रयास किये गये।

कीवडर्स

नामांकन (जीईआर), ठहराव (जीएआर), शैक्षणिक स्तर में वृद्धि (जीएएमआर)

शाला त्यागी (ड्रॉप आउट)

भाग - 1 :
बालिका शिक्षा के प्रति समाज में जागरूकता पैदा करना

उद्देश्य :

बालिका शिक्षा के महत्व् को समझ सकेंगे।

परिचय

बालिका शिक्षा भारत सरकार के एजेंडे की सर्वोच्च प्राथमिकता है। देश में बालिका शिक्षा को बेहतर बनाने के लिए 'मेरी सरकार' (MY GOVERNMENT) का बालिका शिक्षा समूह का एक मंच बनाया है जिसमें बालिकाओं के लिए टोल फ्री नंबर (1090), हेल्प लाइन नंबर (1091) भी रखा है। आजादी से पूर्व बालिका शिक्षा में हमारे कुछ महापुरुषों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जैसे- राजा राम मोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती, ज्योतिबा फुले आदि। हमारे देश में बालिका शिक्षा के लिए यह सभी नाम प्रेरणा स्त्रोत के रूप में रहे हैं। बालिका शिक्षा के प्रति जो सकारात्मक प्रयास किये गये, उससे वर्तमान समाज में जाग्रति आयी है।

'वेदना नहीं, वरदान होती है बेटी - आस्था और अरमान होती है बेटी।
वजूद उसका कभी मिट सकता नहीं, भार नहीं जीवन का सार होती है बेटी।।'

बालिका शिक्षा के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए विद्यालयों के माध्यम से विभिन्न प्रकार की गतिविधियां आयोजित कराना आवश्यक है। गतिविधियों के माध्यम से समाज में जागरूकता आएगी। बालिका शिक्षा वर्तमान समय की आवश्यकता है दुनिया की आधी आबादी का हिस्सा महिलाएं ही हैं। महिलाओं का सशक्तिकरण का एक मात्र उपाय बालिकाओं की शिक्षा ही है। बेहतर माता-पिता, जागरूक नागरिक महिलाएं ही बनाती है। शिक्षा महिलाओं को स्वस्थ और खुशहाल जीवन देती है। शिक्षित महिला परिवार को गरीबी से बचाती है।

जैसा कि हम जानते हैं कि एक बालक की शिक्षा उसकी स्वयं की शिक्षा होती है लेकिन एक बालिका के शिक्षित होने पर पूरा परिवार शिक्षित हो जाता है। इसलिए बालिका शिक्षा बहुत ही महत्वपूर्ण है।

जूडो कराटे सीखती बालिकाएं।

समाज में बालिका शिक्षा के प्रति जागरूकता लाने के लिए समाज को बालिका शिक्षा का महत्व बताना आवश्यक होगा। जिससे समाज में कई सारे बदलाव आ सकते हैं। बालिका शिक्षा से समाज में आने वाले बदलाव इस प्रकार हैं। जैसे मातृ मृत्यु दर कम करना, शिशु मृत्यु दर कम करना सामाजिक विकास में सुधार, बाल विवाह रोकना, जन संख्या वृद्धि को कम करने के लिए, कुपोषण को कम करने के लिए,घरेलू हिंसा, यौन हिंसा कम करने के लिए, बेहतर स्वास्थ्य उपलब्ध कराना, आर्थिक सशक्तिकरण, गरिमा और सम्मान की रक्षा को सुनिश्चित कर पाना।

इस प्रकार बालकों के साथ-साथ बालिकाओं को शिक्षित करने से समाज मे ढेर सारे परिवर्तन आ सकते हैं। अतः समाज एवं सरकार का दायित्व है कि बालिका शिक्षा हेतु नई-नई गतिविधियों का आयोजन करें। अतः बालिका शिक्षा में जागरूकता लाने हेतु गतिविधियां निम्न हैं जैसे- माँ बेटी मेला, बालिका शिक्षा वृद्धि हेतु रथयात्रा निकालना,. बालिका शिक्षा के लिए चित्र एवं पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन करना, स्लोगन एवं दीवार लेखन, बालिका शिक्षा पर रैलियां, विद्यालय में निबंध प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित कराना, टेलीविजन, रेडियो, फेसबुक, व्हाटस एप, समाचार पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से बालिका शिक्षा के कार्यक्रम प्रसारित कराना, भ्रूण हत्या पर रोक कानूनी प्रावधान तैयार करना, बाल विवाह पर रोक, लिंगानुपात में वृद्धि हेतु प्रयास, बालिकाओं के स्वास्थ्य सुधार के लिये प्रयास, ये प्रयास यहीं ना रुके आगे बढ़ते जाएं। जिसमें मध्यप्रदेश सरकार ने कुछ नई योजनाएं जोड़ी जो इस प्रकार हैं- लाडली लक्ष्मी योजना, सुकन्या समृद्धि योजना, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं योजना, उड़ान योजना, गांव की बेटी योजना, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय कुछ महत्वपूर्ण योजनाएं विस्तार से इस प्रकार है -

लाडली लक्ष्मी योजना

बालिकाओं के प्रति लोगों में सकारात्मक सोच एवं उनके लिंग अनुपात में सुधार हेतु मध्यप्रदेश सरकार ने लाडली लक्ष्मी योजना शुरू की, यह योजना 1 अप्रैल 2007 को प्रारंभ की गई। इसके बाद यह योजना 6 अन्य राज्यों में भी लागू की गई, इस योजना का उद्देश्य लोगों में बालिकाओं के प्रति स्नेह और शैक्षणिक स्तर एवं स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार करना है।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना

यह योजना महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, स्वास्थ्य मंत्रालय एवं मानव संसाधन एवं विकास मंत्रलाय के द्वारा 22 जनवरी 2015 को शूरू की गई। इसका उद्देश्य बालिकाओं का संरक्षण एवं सशक्तिकरण करना है। इस योजना के द्वारा लड़कियों के घटते हुए अनुपात में वृद्धि करना है।

कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय

समग्र शिक्षा के उददेश्यों में स्कूली शिक्षा के समस्त स्तरों पर जोड़कर और सामाजिक श्रेणी के अंतराल को दूर करना इस योजना का मुख्य उद्देश्य है। इस योजना में कक्षा 6 से 12 तक अध्ययन करने वाली 10 से 18 वर्ष की बालिकाओं को प्रवेश का प्रावधान है। विशेषकर अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति, गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले परिवारों की बालिकाओं को प्रवेश दिया जाता है।

कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय में गतिविधि करती बालिकाएं।

जरा बताइए –

1. नीचे दिये गये चारो चित्रों में जो परिस्थितियां दिखाई गई हैं उनकों क्या बदला जा सकता है? यदि हाँ तो कैसे?
2. एक नेतृत्वकर्ता के तौर पर सोचिए, यदि आपकी शाला में इस तरह की बालिकाएँ आती हैं तो आप अपनी शिक्षण योजना में क्या बदलाव करेंगी? आपकी शिक्षण योजना किस तरह की होगी? एक योजना तैयार कीजिए।

जैसा कि आपने चार चित्रों को देखा, बालिका शिक्षा की स्थिति पर चर्चा की। अब गहराई से समझने के लिये एक केस स्टडी पढ़ेंगे।

केस स्टेडी – ऐसे बदली हरीश के परिवार की तस्वीर

तजपुरा गांव के हरीश के यहां दो बालक एवं दो बालिकाएं हैं। हरीश अपने बालक-बालिकाओं को नजदीक के प्राथमिक विद्यालय में पढ़ाने के लिये नामांकन करा देता है लेकिन बालिका को विद्यालय में पढ़ने नहीं भेजता है। एक दिन गांव के मास्टर जी गांव में छात्र उपस्थिति रजिस्टर लेकर परीक्षण करने आए तो उन्होंने देखा कि हरीश के परिवार में दो बालिकाएं नामांकन के बाद स्कूल नहीं जा रही हैं। छात्र उपस्थिति रजिस्टर में दोनों बच्चियों को शाला त्यागी के कॉलम में दर्ज कर दिया, बाद में मास्टरजी ने एसएमसी एवं शिक्षकों के सहयोग से उन दोनों बालिकाओं

को विद्यालय में नियमित आने के लिये प्रेरित किया। हरीश के परिवार में घरेलू कामों में बच्चियों को लगा दिया जाता था। और बच्चियों को विद्यालय नहीं भेजा जाता था। लेकिन शिक्षकों ने घर जाकर उससे एवं उसके परिवार के लोगों से संपर्क किया और बालिकओं की पढ़ाई का महत्वथ बताया तो वह नियमित विद्यालय भेजने लगा।

प्रश्न 1. हरीश की सोच बालिका शिक्षा के प्रति कैसी थी?

प्रश्न 2. मास्टर जी ने हरीश के घर जाकर क्या किया?

प्रश्न 3. आप मास्टर जी की जगह होते तो हरीश को क्या समझाते?

प्रश्न 4. क्याा बालिकाओं को पढ़ाना जरूरी है?

समेकन :

मॉडयूल के प्रथम भाग में आपने जाना कि बालिका शिक्षा के प्रति समाज में जागरूकता लाने के लिये मध्य प्रदेश सरकार एवं भारत सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार की योजनाओं का क्रियान्वयन शिक्षा विभाग, महिला बाल विकास विभाग, स्वास्थ्य विभाग, असशासकीय संघठनों, समुदाय के सहयोग से किया जाता है। इससे बालिकाओं के शैक्षिक स्तर, रहन-सहन, जीवन स्तर में वृद्धि हुई।

भाग - 2 :
बालिकाओं के ठहराव में वृद्धि करना

उद्देश्य :

विद्यालय में ठहराव के लिये रणनीति तैयार कर सकेंगे।

परिचय

हमारे देश में स्वतंत्रता के समय महिला शिक्षा की स्थिति सम्मान जनक नहीं थी। 2001 की जनगणना के अनुसार महिला साक्षरता का प्रतिशत 54.16 था 2011 की जनगणना में यह बढ़कर 65.46 हो गया। हमारे प्रदेश में दो महिलाओं में से एक महिला निरक्षर है अर्थात पढ़ना लिखना नही जानती। सर्वे के अनुसार कक्षा 1 में दर्ज होने वाली 100 बालिकाओं में से कक्षा 8 तक 60 बालिकाएं, कक्षा 10 तक 20 बालिकाएं पहुंचती है। अतः 80 प्रतिशत बालिकाएं ड्राप आउट हो जाती हैं।

गतिविधियां

अब सबसे पहले यह जानना जरूरी है कि ऐसे कौन से कारण हैं जो बालिकाओं को अपनी शिक्षा पूरी करने नहीं देते और शाला छोड़ने को मजबूर करते हैं। जिन कारणों से बालिकायें शाला में दर्ज नही होती या दर्ज होने से पहले शाला छोड़ देती हैं इसके समाधान के लिये क्या किया जा सकता है इस पर ध्यान दिया जाना जरूरी है।

बालिकाओं के शाला न जाने के कारण –

1. आर्थिक कारण

- खेती या मजदूरी में लगे रहना।
- जानवर चराना।
- परिवार की कमजोर स्थिति।
- पलायन

2. सामाजिक कारण

- माता पिता की रूढ़िवादी सोच।
- समाज द्वारा बालिका शिक्षा को महत्व न देना।
- पारिवारिक जिम्मेदारी का वहन।

3. शैक्षणिक कारण

- ग्राम में शिक्षा की सुविधा न होना।
- शाला का वातावरण उपयुक्त न होना।
- असुरक्षा का भय।
- स्कूलों में महिला शिक्षिका का अभाव।
- भौतिक कारण।
- विद्यालय में शौचालय का अभाव।
- पेयजल सुविधाओं का अभाव।

जैसा कि हमने विद्यालयों में बालिकाओं के शाला न जाने के अलग-अलग कारणों को जाना। अब आप बालिका के शिक्षा के विकास के लिये कुछ सोचिए।

- एक नेतृत्वकर्ता के रूप में बालिकाओं को शिक्षा से जोड़े रखने के लिये आप क्या-क्या कर सकते हैं। इसकी योजना बनायें।
- आप आसपास बालिका शिक्षा की कौन-कौनसी चुनौतियों को देखते हैं? विचार कर लिखें।

समेकन:

अभी तक हमने जाना कि बालिकाओं के ठहराव में वृद्धि किस प्रकार की जाती है, क्योंकि बालिका शिक्षा के क्षेत्र में हमारे समाज की सोच सकारात्मक नहीं है। हमारे समाज में बालिकाओं को शिक्षा के अलावा अन्य- कार्यो में लगा दिया जाता है और जो बालिकाएं विद्यालय में प्रवेश लेती हैं वह भी प्रारंभिक शिक्षा की पढ़ाई पूरी होने से पहले ही विद्यालय को छोड देती हैं। अतः ठहराव एवं गुणवत्ता हेतु किये गये प्रयास विफल हो जाते हैं।

भाग - 3 :
बालिका शिक्षा से संबंधित शासन की विभिन्न योजनाओं को जानना

उद्देश्य :

बालिका शिक्षा से संबंधित शासन की विभिन्न योजनाओं से पालकों, साथी शिक्षकों एवं बालिकाओं को अवगत कराना।

परिचय

भारत सरकार एवं मध्यप्रदेश सरकार द्वारा शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़े 280 विकास खंडों में जहां ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं की साक्षरता की स्थिति कमजोर है एवं महिलाओं और पुरूषों की साक्षरता दर में अंतर अधिक है अथवा अनुसूचित जाति, जनजाति की महिलाओं को बढावा देने के लिये ढ़ेर सारी योजनाएं चलाई गई।

भारत सरकार एवं मध्यप्रदेश सरकार द्वारा बालिका की शिक्षा के संचालन के लिये विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम चलाये गये। जैसे -

बालिका छात्रावास, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय (केजीबीव्ही), जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम, सर्व शिक्षा अभियान, समग्र शिक्षा अभियान, बालिका छात्रावास, निःशुल्क साइकल वितरण, निःशुल्क गणवेश एवं पाठ्यपुस्तक वितरण, सामान्य निर्धन छात्रवृत्ति योजना, मॉडल कलस्टर शाला, खोज यात्रा (एक्स पोजर विजिट), मां बेटी मेला का आयोजन, बालिका शिक्षा में अच्छा कार्य करने वाली शालाओं को पुरस्कार, कन्या साक्षरता प्रोत्साहन, लाडली लक्ष्मी योजना।

बालिका शिक्षा कार्यक्रमों का प्रभावः- इस तरह के कई कार्यक्रम चलाने के बाद बालिका शिक्षा में सकारात्मक प्रभाव देखने को मिला। जिससे उनके ठहराव, गुणवत्ता, जीवनस्तर में सुधार हुआ।

निःशुल्क साइकिल वितरण।

खेल खेलती बच्ची।

केस स्टडी- कोठरी गांव के माध्यमिक विद्यालय में ऐसे बदली शिक्षा की तस्वीर

रंगोली बनाती बालिकाएं।

खेल खेलती बालिकाएं।

विद्यालय में कुल 350 बालक बालिकाएं दर्ज थे। जिसमें बालिकाओं की संख्या 170 थी। वहां पर प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों से चर्चा की कि पहले हमारे विद्यालय में बालिकाओं का नामांकन बहुत कम था। पालकों में बालिका शिक्षा के प्रति रुचि नही थी। बार-बार प्रयास करने के बाद भी माता-पिता अपनी बच्चियों की शादी कम उम्र में कर देते थे। एक बार बीआरसीसी महोदय का आगमन हमारे गांव में हुआ। और उन्होंने छात्र उपस्थिति रजिस्टर देखा तो बहुत सी बालिकाएं अनियमित थी। उन्होंने गांव एवं आसपास के अन्य गांवों का भ्रमण कर पाया कि यहां पर बालिका शिक्षा की स्थिति कमजोर है और अनुसूचित जाति एंव जनजाति की बच्चियां शिक्षा से वंचित हैं। तब उन्होंने कोठरी में कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय खोलने का प्रस्ताव राज्य शिक्षा केन्द्र को भेजा और वहां पर 100 सीटर कस्तूरबा गांधी विद्यालय स्वीकृत हो गया। अब इस विद्यालय में प्रथम सत्र में ही प्रचार प्रसार करने पर 100 छात्राओं ने प्रवेश लिया और प्रवेश के साथ ही पढ़ाई शुरू की। उन छात्राओं की कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय में आवास व्यवस्था रहती है एवं स्थानीय माध्यमिक विद्यालय में अपनी पढ़ाई करती हैं। इस प्रकार कस्तूरबा गांधी विद्यालय के माध्यम से बालिकाओं की शिक्षा में बदलाव आया। वहां पर उनकों आवास के साथ सिलाई, कढ़ाई, रंगोली बनाना, मेंहदी लगाना, संगीत, जूडो कराटे, स्पोर्ट, व्यवसायिक कौशल एवं अन्यं खेल गतिविधियां आयोजित कराई जाती हैं। इससे बालिकाओं के जीवन में बदलाव आ गया और अगले वर्ष और अधिक बालिकाएं शिक्षा की मुख्य धारा से जुड़ गई।

चिंतन मनन के प्रश्न –

प्रश्न- कोठरी गांव में कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय खुलने से पहले शिक्षा की क्या स्थिति थी?

....

....

....

प्रश्न- एक नेतृत्व कर्ता के रूप में बालिका शिक्षा से संबंधित योजनाओं का लाभ सभी बालिकाओं को मिल सके, इसके लिये क्या-क्या कर सकते हैं?

....

....

....

कुमारी मधु कर्मा की सफलता की कहानी
'उम्मीदों की उड़ान'

कु. मधु ग्रामीण क्षेत्र के ग्राम मंजाखेड़ी की गरीब परिवार की बेटी है। यह बालिका खेलकूद की प्रतियोगिताओं में प्रतिभावान है। मधु ने जिले में 1500 मी. की दौड़ में प्रथम स्थान प्राप्त कर गोल्ड मेडल प्राप्त किया। कु. मधु कर्मा ने रांची झारखंड में आयोजित राष्ट्रीय स्तर की फुटबाल प्रतियोगिता में भाग लिया था। मधु पर एक डाक्यूमेंट्री फिल्म बनी जिससे सभी बालिकाओं को प्रेरणा मिलती है। इस फिल्म में अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा द्वारा मधु जैसी होनहार बालिका की प्रशंसा की गई।

कु. मधु कर्मा का कहना है कि बालिका छात्रावास की सुविधा मिलने के कारण मैं पढ़ पा रही हूँ अन्यथा मुझे सिर्फ मजदूरी करने जाना पड़ता। छात्रावास मेरे जीवन में सफलता की सीढ़ी है।

देखें - https://youtu.be/DFI11wEwT1I
(Globel Education Point)

चर्चा के प्रश्नः-

1. मधु ने यह उपलब्धि कैसे प्राप्त की?
2. क्या खेल बालिकाओं की शिक्षा में सहभागिता बढ़ाते हैं?
3. छात्रावास बालिकाओं की शिक्षा के लिए क्या भूमिका निभाता है?

भाग - 4 :

बालिकाओं के ठहराव एवं शैक्षणिक स्तर में वृद्धि करना

उद्देश्य :

विद्यालय में दर्ज बालिकाओं का शत प्रतिशत ठहराव करना एवं गुणवत्ता बढ़ाना।

परिचय

विद्यालय में दर्ज बालिकाओं को विद्यालय का आकर्षक वातावरण बनाकर एवं विद्यालय में पेयजल, शौचालय, खेल गतिविधियां एवं गुणवत्ता युक्त शिक्षण कराकर बालिकाओं का ठहराव सुनिश्चित हो जाता है। तब बच्चियों की गुणवत्ता सुधार के प्रयास किये जाते हैं। विद्यालय में बालिकाओं को बिना किसी भेदभाव के प्रवेश, शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं में बालिकाओं पर अधिक से अधिक ध्यान देना, साथ ही पाठ सहगामी क्रियाओं में बालिकाओं को अधिक से अधिक अवसर दिया जाना। इस हेतु सभी शिक्षकों एवं प्राधानाध्यापकों को प्रशिक्षण के माध्यम से प्रेरित कर बालिकाओं की गुणवत्ता सुधार हेतु प्रयास करना चाहिए।

जैसा कि हम ऊपर पढ़ चुके हैं कि बालिका शिक्षा को समझना कठिन काम है और उनको शिक्षा से जोड़ना और कठिन काम है। बालिकाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने में नेतृत्वकर्ता की महती जिम्मेदारी है कि वह विद्यालय का वातावरण और आकर्षक और समावेशी बनाये रखे ताकि बालिकाएं गुणवत्ता पूर्ण शिक्षण कर सकें।

गतिविधि – हम क्याा कर सकते हैं अगर एक बेहतर नेतृत्वकर्ता हैं तो

- बालिकाएं गणित शिक्षण में कमजोर हों तब?
- बालिकाएं खेल गतिविधियों में भाग नहीं ले रही हैं तब?
- बालिकाएं बाल सभा एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग नहीं ले रहीं है तब?

केस स्टडी

बालिका शिक्षा की बदलती तस्वीर।

बालिका छात्रावास रेहटी जिला सीहोर

मीन्स कम मेरिट परीक्षा में उत्तीर्ण होकर बालिकाओं ने लहराया जीत का परचम।

माना अंधेरा घना है पर दीपक जलाना कहाँ मना है।

बालिका छात्रावास, रेहटी, विकासखंड बुधनी, जिला-सीहोर वर्ष 2019-20 में कक्षा आठवीं में कुल 12 छात्राएं अध्ययनरत थी। समस्त 12 छात्राओं को राष्ट्रीय मीन्स कम मेरिट परीक्षा 2019-20 के लिये तैयारी कराई गई। सतत मार्गदर्शन व प्रेरणा से 12 बालिकाओं में से 09 बालिकाओं ने राष्ट्रीय मीन्स कम मेरिट परीक्षा 2019-20 में सफलता हासिल कर स्वयं का, छात्रावास का, विकासखंड एवं जिले का नाम रोशन किया।

सभी बालिकाओं को छात्रावास में अच्छा लगता है। यहां रहकर वे पढ़ाई के अलावा शास्त्रीय संगीत, शास्त्रीय नृत्य एवं स्केचिंग आदि कला में भी निपुण हो रही हैं। छात्रावास में सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, रंगोली, जूडो कराटे, निबंध, वाद विवाद, अंतक्षारी, खेल गतिविधियां कराई जाती हैं।

चर्चा के प्रश्न –

1. क्या हर छोटा बदलाव बडी कामयाबी का हिस्सा होता है?
2. बालिकाओं के शैक्षणिक स्तर की वृद्धि में कौन-कौन से कारक प्रभाव डालते हैं?

विद्यालय में कराई जाने वाली वास्तविक गतिविधि -

1. शैक्षणिक गतिविधियाँ।
2. खेल गतिविधियाँ।
3. खोज यात्रा
4. समूह गतिविधि।
5. बालसभा की गतिविधियाँ।

एक बेहतर नेतृत्वकर्ता के लिये जरूरी है कि वह अपनी टीम एवं खुद की क्षमता का अवलोकन कर बालिका शिक्षा के विकास के लिये समाज को बदल सके। इसके लिये कई निगरानी समूह बनाने होंगे-

बालिका शिक्षा में बालिकाओं की अधिक से अधिक सहभागिता हेतु पढ़ाई के साथ-साथ पाठ सहगामी क्रियाएं, मां बेटी मेला का आयोजन, आउटडोर और इंडोर खेल, बालसभा आदि गतिविधियों के प्रभाव से बालिकाओं के ठहराव एवं गुणवत्ता में वृद्धि होती है। बालिकाएं विद्यालय में नियमित उपस्थित रहती हैं। बालिकाओं के रहन सहन, साफ सफाई, बोल चाल, शिक्षा की गुणवत्ता से जीवन स्तरों में सुधार हुआ है।

संदर्भ सूची –

- कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय की गाइड लाइन।(MP EDUCATION PORTAL)
- बालिका छात्रावास निर्देश। (MP EDUCATION PORTAL)
- सर्वशिक्षा अभियान की गाईड लाइन। (MP EDUCATION PORTAL)
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूप रेखा 2005
- शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009

लेखक का नाम

श्रीमती मुक्ता गुप्ता

श्री धर्म सिंह

डाईट सीहोर, म.प्र.

मेंटर/ एक्सपर्ट का नाम

मुन्नालाल शर्मा

उच्च श्रेणी शिक्षक

शासकीय मॉडल उमावि, कोलारस

जिला - शिवपुरी, म.प्र.

मोबाइल- +91-9329261915

ई मेल- munnalalsharma960@gmail.com

❑ ❑ ❑

मॉड्यूल – कोविड–19 की अवधि में शैक्षिक नवाचार

भाग – 1	भाग – 2	भाग – 3
कोविड काल में लर्निंग लॉस पर हुए प्रमुख सर्वेक्षण	ऑनलाइन/दूरस्थ शिक्षण में चुनौतियां	कोविड –19 की अवधि में बच्चों के सीखने में हुई क्षति को कम करने के लिए किए गए नवाचार

शीर्षक :

कोविड- 19 अवधि में शैक्षिक नवाचार

सारांश

वर्ष 2020-21 हम सभी के लिए कोविड की दुःखद त्रासदी के कारण याद रहेगा। इस अवधि में पूरे विश्व में मानव की लगभग सभी गतिविधियां बंद रही, हमें अस्पतालों मे रहना पड़ा और हमारे कई मित्रों, सहपाठियों और रिश्तेदारों को खोना पड़ा। हमारे विद्यालय भी बंद रहे। शिक्षक और विद्यार्थी एक दूसरे से दूर रहे। विद्यालय बंद रहने से लगभग सभी स्तरों पर अधिगम क्षति हुई। तीन भागों के इस माड्यूल में कोविड काल में विद्यार्थियों की अधिगम क्षति, दूरवर्ती, ऑनलाइन, शिक्षण में आई कठिनाइयों और शिक्षकों द्वारा किए गए नवाचारों पर चर्चा की गयी है। सामान्य परिस्थिति निर्मित होने पर यह मॉड्यूल प्रधानाध्यापकों को शिक्षण-अधिगम को निरंतर बनाए रखने के लिए वैचारिक रूप से प्रोत्साहित करेगा।

उद्देश्य :

इस मॉड्यूल के प्रमुख उददेश्य हैं–

1. शिक्षक कोविड–19 की कठिन परिस्थिति के बीच विद्यार्थियों के सीखने में लगातार हो रहे लर्निगं लॉस की समस्या की गंभीरता को जान सकेंगे।
2. कोविड–19 की अवधि में सीखने की कमी के प्रभाव को कम करने के लिए शिक्षकों द्वारा किए गए नवाचार को समझेगें।

परिचय

इस सदी में कोविड-19 महामारी बच्चों की शिक्षा की राह में एक बड़ी चुनौती बन कर आई। बच्चों के स्कूल एक बार जो बंद हुए, तो लगभग डेढ़ वर्ष तक खुल ही नहीं पाए। इस अवधि में एक ओर तो बच्चे नई दक्षताएँ सीख नहीं पा रहे थे, तो दूसरी ओर अभ्यास बंद होने से पिछली कक्षाओं में सीखी हुई दक्षताओं में भी कमी आ रही थी। सत्र 2020-21 में कक्षा एक में प्रवेश लेने वाला बच्चा बिना स्कूल गये ही कक्षा दो में चला गया। जो बच्चा 2019-20 में कक्षा पहली में था और पढ़ना-लिखना सीखने के बिल्कुल शुरुआती दौर में था, वह कक्षा तीसरी में चला गया। इस अवधि में बच्चों की शिक्षा पर पड़ने वाला विपरीत प्रभाव कल्पनातीत है। इसके प्रभाव दूरगामी होंगे और यदि इन प्रभावों को निष्प्रभावी करने के लिए समुचित उपाय न किये गये, तो ये पूरी एक पीढ़ी को प्रभावित कर सकते हैं।

कोविड-19 की विषम परिस्थिति में उपरोक्त संभावनाओं का अनुमान लगाते हुए, बच्चों में सीखने की कमी को कम करने के लिए हमारे कई शिक्षकों द्वारा नवाचार करके बच्चों को शिक्षा से जोड़े रखने के प्रयास किए गए हैं। सीखने की प्रक्रिया में 'सीखने' को 'प्रतिफल' तक पहुंचने के लिए अभ्यास बहुत महत्त्वपूर्ण और आवश्यक होता है। जब

सीखने की प्रक्रिया और अभ्यास दोनों ही बाधित हो, तो सीखने का प्रतिफल कितना प्रभावित होगा यह कल्पनातीत है। बच्चों की शिक्षा की राह में आने वाली चुनौतियों से निपटने के लिए प्रशासनिक और अकादमिक स्तर पर किए जाने वाले कार्यों के अलावा हमारे शिक्षकों द्वारा व्यक्तिगत स्तर पर लगातार ऐसे अनोखे प्रयास किए जाते रहे हैं, जिनका उल्लेख शासकीय आदेशों-निर्देशों में नहीं होता, अथवा उन निर्देशों के परिपालन की पूर्णता में आने वाली चुनौतियों के समाधान के लिए जरूरी होते हैं।

सैद्धांतिक पक्ष : प्रारम्भिक शिक्षा स्तर पर सभी प्रकार का शिक्षण-अधिगम राज्य की पाठ्यचर्या के अनुसार और अधिगम प्रतिफलों पर केन्द्रित होता है। इस सन्दर्भ में विद्यालयों से यह अपेक्षा की जाती है, कि वे एक निश्चित अवधि में सभी विद्यार्थियों में विषयगत और कक्षा वार अधिगम प्रतिफलों को अर्जित करवाएं। उसी प्रकार यदि किन्हीं कारणों से अधिगम क्रिया में अंतराल आ जाए तो उसके लिए वैकल्पित अधिगम उपाय किए जाने होते हैं।

अधिगम प्रतिफल : सभी शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं का मूल उददेश्य यह होता है, कि बच्चे उनकी कक्षा और विषय के लिए निर्धारित अधिगम प्रतिफलों को प्राप्त करें। अधिगम प्रतिफल वास्तव में दक्षताओं का एक समूह होता है, और जब कोई विद्यार्थी किसी विषयांश की सभी दक्षताओं को अर्जित कर लेता है, तब वह किसी इकाई के लिए निर्धारित अधिगम को प्राप्त करता है। उल्लेखनीय है, कि यदि अधिगम प्रतिफल से सम्बंधित एक भी दक्षता अर्जित नहीं हो सकी, तो अधिगम प्रतिफल को पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं किया जा सकता। कोविड काल में विद्यालय बंद रहने से विद्यार्थियों की दक्षता में कमी आई। कई विद्यार्थी तो अर्जित की जा चुकी दक्षता को अभ्यास के अभाव में भूल गए।

अधिगम क्षति : जब बच्चे अपने सीखने की सामान्य गति से नहीं सीख पा रहे होते, तो हम इसे ही उनके सीखने में कमी, सीखने की क्षति (Learning Loss) कहते हैं । लर्निंग लॉस से तात्पर्य ज्ञान एवं कौशलों के सीखने में आई क्षति से है जिससे विद्यार्थी की अकादमिक प्रगति में रुकावट आ जाती है। इसके कई कारण हो सकते हैं। वर्तमान में कोविड काल के कारण लर्निंग लॉस हुआ है।

दूरवर्ती शिक्षण : जब विद्यार्थी और शिक्षक के मध्य भौतिक दूरी हो और वे एक सीखने के लिए एक दूसरे से सम्पर्क नहीं कर पाते तब दूरस्थ शिक्षण ही एक मात्र विधा है, जिसके माध्यम से शिक्षण कार्य किया जा सकता है। दूरवर्ती के अंतर्गत इसे दूरस्थ शिक्षण या रिमोट शिक्षण भी कहा जा सकता है। इस विधा में शिक्षक और विद्यार्थी के मध्य भौतिक दूरी को तकनीकी द्वारा कम किया जाता है।

स्व-अधिगम : स्वयं के द्वारा किया गया अधिगम या सीखना स्व-अधिगम कहा जाता है। स्व-अधिगम तभी होता है, जब विद्यार्थी सीखने के प्रति अत्यंत प्रेरित हो। कोविड काल में अधिकांश विद्यार्थियों ने स्व-अधिगम ही किया है। उन्हें उनके पालकों और स्थानीय शिक्षकों द्वारा प्रेरित किया जाता रहा।

ऑनलाइन शिक्षण : शिक्षा में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के उपयोग के अंतर्गत ऑनलाइन अधिगम और शिक्षण अत्यधिक प्रचलन में है। ऑनलाइन शिक्षण प्रणाली को सभी प्रकार इलेक्ट्रोनिक्स समर्पित शिक्षा और अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जाता है जो स्वाभाविक तौर पर क्रियात्मक होते हैं और जिनका उद्देश्य शिक्षार्थी के व्यक्तिगत अनुभव ज्ञान अभ्यास और ज्ञान के सन्दर्भ में ज्ञान का निर्माण को प्रभावित करना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा - 2005 में अपेक्षा की गई है, कि बच्चे ज्ञानात्मक तथ्यों को रटने की बजाय अपने ज्ञान का सृजन स्वयं करें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कौशल के अर्जन पर बहुत जोर दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बिंदु क्रमांक 23 और 24 में शिक्षा में प्रौद्योगिकी के अधिकतम उपयोग और इन पर शिक्षकों को प्रशिक्षित करने की अनुशंसा की गयी है।

जरा सोचिए

- क्या आपने कभी किसी दूर-शिक्षा विश्वविद्यालयों से कोई कोर्स पूरा किया है, आप उसके लिए कैसे प्रेरित हुए?
- क्या आपने कभी वीडियो कान्फ्रेंसिंग में सहभागिता की है या देखी है? आपको इनमें क्या विशेषता परिलक्षित हुई? क्या इनमें कुछ सीमाएँ भी हैं?

स्व-आकलन

1. अपने विषय से सम्बंधित किसी कक्षा के लिए कोई एक अधिगम प्रतिफल लिखें.

....

2. क्या आपने कभी दूरस्थ शिक्षण के माध्यम से कोई कोर्स किया है? यदि हाँ, तो आपने अपने शिक्षक से किन-किन माध्यमों से सम्पर्क किया था? यदि नहीं, तो आपके विचार में यह सम्पर्क किस-किस प्रकार से किया जा सकता है? कोई 4 माध्यम लिखें।
3. अधिगम-क्षति को आप अपनी भाषा में लिखिए।
4. ऑनलाइन पद्धति से क्या आप संतुष्ट हैं? यदि हाँ तो क्यों /नहीं तो क्यों?

भाग - 1 :

कोविड काल में लर्निंग लॉस पर हुए प्रमुख सर्वेक्षण

परिचय

हमारे प्रदेश की ज्यादातर आबादी गांव में रहती है। कोविड-19 अवधि में कक्षा-गत शैक्षणिक प्रक्रियाएं लगभग बंद हो चुकी थीं। शासकीय विद्यालयों में पढ़ने वाले ज्यादातर बच्चों के अभिभावक शिक्षित नहीं होने के कारण वह सहायता प्रदान नहीं कर पाते हैं। बच्चे भी घर में पर्याप्त अभ्यास नहीं कर पाते हैं। इस स्थिति में यह नुकसान दो प्रकार से हुआ। एक तो बाधाओं के कारण बच्चा अपनी सीखने की स्वाभाविक गति से नहीं सीख पाया, तो दूसरा सीखे हुए का अभ्यास न हो पाने के कारण सीखने की बाधित प्रक्रिया उसे वास्तविक प्रतिफल तक नहीं पहुंचने देती। यह भी सीखने में क्षति या सीखने में कमी ही है।

कोविड ने पूरे देश को लगभग पूरे वर्ष प्रभावित किया। यह प्रभाव बच्चों की मानसिक स्थिति, उनके व्यवहार परिवर्तन, स्वास्थ्य और अधिगम पर हुआ। देश की कई प्रमुख संस्थाओं द्वारा कोविड काल में अधिगम पर हुए प्रभावों का एक शोध सर्वेक्षण किया है. इन सर्वेक्षणों का प्रकार और इनके निष्कर्ष आगे दिए गए हैं।

यूनिसेफ सर्वेक्षण

यूनिसेफ द्वारा छः राज्यों के चयनित विद्यालयों में सर्वेक्षण किया गया। इस सर्वेक्षण के प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार हैं -

भाषा में सीखने की क्षति

- 92 प्रतिशत बच्चों में कोविड-19 के दौरान कम से कम उस एक दक्षता में कमी आ गई जो उसने पिछले वर्षों में सीखी थी।
- इन दक्षताओं में किसी चित्र के बारे में बताने, शब्दों को पढ़ पाने, समझ के साथ पढ़ने, किसी चित्र पर सामान्य वाक्य लिख पाने जैसी दक्षताएं शामिल हैं।
- 92% विद्यार्थी कक्षा 2 के, 89% कक्षा 3 के, 90% कक्षा 4 के, 95% कक्षा 5 के एवं 93% कक्षा 6 के विद्यार्थियों ने पिछले वर्ष कम से कम एक दक्षता में कमी पाई।

गणित में सीखने में क्षति

- औसतन 82% विद्यार्थियों में उनकी पिछले साल की दक्षता में से कम से कम एक दक्षता में कमी आई।
- इन दक्षताओं में एक या दो अंकों की संख्याएं, अंकगणितीय अनुप्रयोग आदि शामिल हैं।
- 67% विद्यार्थी कक्षा 2, 76% प्रतिशत कक्षा 3, 85% कक्षा 4, 89% कक्षा 5 और 89% कक्षा 6 के विद्यार्थियों की पिछले साल की दक्षता से कम से कम एक दक्षता में कमी आई है।

अजीम प्रेमजी विश्व विद्यालय का सर्वेक्षण

अजीम प्रेम जी फाउंडेशन द्वारा माह जनवरी 2021 में किये गए सर्वेक्षण अनुसार कोविड 19 महामारी के दौरान विद्यालय बंद रहने के कारण विद्यार्थियों में भूलने की प्रवृत्ति बढ़ी है जिससे लर्निंग लॉस बढ़ा है (अर्थात जो विद्यार्थियों ने पहले सीखा था वह अब भूल गए हैं।) इस सर्वेक्षण के अनुसार प्रदेश के 44 जिलों के 1137 विद्यालयों के 16067 विद्यार्थियों का अध्ययन से पता चला है कि विद्यार्थियों में लर्निंग बढ़ा है।

जरा सोचिए

- अधिगम में क्षति के इन ऑकड़ों को देखकर आपके मन में क्या विचार आता है? क्या यह क्षति सहन की जा सकती है? क्या इससे विद्यार्थियों पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा?
- क्या इन आंकड़ों में कमी लाई जा सकती थी? कैसे?
- आपके विचार में क्या इस कमी का कारण केवल कोविड ही है? क्यों?
- क्या आपके जिले या राज्य में भी ऐसा कोई सर्वेक्षण हुआ है? उसके क्या परिणाम रहे? जानकारी प्राप्त करें। उपरोक्त प्रश्नों पर अपने शिक्षक सहपाठियों से भी चर्चा करें।

भाग - 2 :

दूरस्थ शिक्षण में चुनौतियाँ

परिचय

भारत की 69% आबादी गाँवों में रहती है। यह एक तथ्य है कि सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले ज्यादातर बच्चे बहुत ही गरीब परिवार से आते हैं। इन परिवारों के बच्चों को कोविड काल में शिक्षकों से संपर्क व उस संपर्क के दौरान सभी बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में लगाकर रख पाना मुश्किल कार्य था। ऐसे में केवल दूरवर्ती पद्धति और ऑनलाइन शिक्षण ही वह माध्यम हो सकता था, जिसके द्वारा बच्चों को सीखने-सिखाने में लगाए रखा जा सकता था। राज्य द्वारा प्रशासनिक स्तर पर ऑनलाइन शिक्षण की योजना बनाकर आदेश-निर्देश तो प्रसारित कर दिए गये, किंतु इसे क्रियान्वित कर पाना एक बड़ा चुनौतीपूर्ण और मुश्किल कार्य था। इसके लिए अधिकाँश विद्यालयों को निम्नलिखित शैक्षिक, तकनीकी और प्रबंधकीय समस्याओं का सामना करना पड़ा।

प्रबंधकीय चुनौतियाँ

- अधिकांश गरीब परिवारों के पास साधारण मोबाइल फोन भी उपलब्ध नहीं हैं।
- परिवार में 2-3 विद्यार्थियों के बीच एक ही मोबाइल फोन का होना।
- एंड्रॉयड फोन बहुत कम लोगों के पास होने के कारण, अधिकांश अभिभावकों और बच्चों से फोन के द्वारा संपर्क अथवा उन्हें डिजिटल शैक्षिक सामग्री भेजना संभव नहीं होता।
- दिव्यांग विद्यार्थियों के साथ तकनीकी समस्याएं।
- फोन खराब न हो जाए इसलिए बच्चों को पालकों द्वारा मोबाइल फोन न देना।
- कई परिवारों में टीवी या रेडियो तक ना होना।

तकनीकी चुनौतियाँ

- सीखने के लिए मोबाइल के उपयोग का अल्प तकनीकी ज्ञान होना।
- ग्रामीण क्षेत्र में इंटरनेट कनेक्टिविटी बहुत कम होने के कारण जिनके पास एंड्रॉयड फोन एवं इंटरनेट है, वे भी भेजी गई सामग्री का उपयोग नहीं कर पाते।
- डेटा का अत्यधिक उपयोग।

शैक्षिक चुनौतियाँ

- शिक्षकों और विद्यार्थियों को डिजिटल सामग्री के स्त्रोतों का ज्ञान नहीं होना।

- विद्यार्थियों का ऑनलाइन आकलन न कर पाना।
- विद्यार्थियों को प्रेरित करना और उनके गृह कार्य की जांच न कर पाना।
- प्रत्येक विद्यार्थी को अलग-अलग समाधान न दे पाना।

जरा सोचिए

1) आपने इन चुनौतियों के अतिरिक्त कौन सी चुनौती अनुभव की है ? कोई 3 लिखें.

1 ....

2 ....

3 ....

2) इन चुनौतियों का समाधान आपने कैसे किया ?

....

आइए ऐसी ही चुनौतियों का समाधान एक विद्यालय द्वारा कैसे किया गया देखते हैं।

केसलेट- शासकीय माध्यमिक शाला, धनगाँव, खंडवा

कोविड-19 महामारी की अवधि में बच्चों की कक्षा-गत प्रक्रियाओं के बंद हो जाने से उनके सीखने में निरन्तर कमी की संभावना बढ़ती जा रही थी। ऐसे समय में इस समस्या का यथासंभव समाधान निकाल कर कई नवाचारी शिक्षक सक्रिय थे। कोविड-19 की अवधि में जब शेष विश्व के अधिकांश क्षेत्र के साथ भारत में भी लॉकडाउन लगा दिया गया। सभी तरह की गतिविधियों के साथ शैक्षिक गतिविधियाँ भी पूरी तरह बंद हो चुकी थी। महामारी के बढ़ते प्रकोप और लॉकडाउन की अवधि बार-बार बढ़ने से शैक्षिक प्रक्रियाओं के शीघ्र शुरू होने की संभावना कम होती जा रही थी। ऐसी स्थिति में बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य की चिंता स्वाभाविक थी। अभिभावकों के साथ-साथ सरकार एवं शिक्षकों के मन में चिंताएं भी थी। विद्यालय के शिक्षकों की प्रमुख समस्याएँ इस प्रकार थीं।

(1) बच्चों और उनके माता-पिता व अभिभावकों को कोविड-19 महामारी से बचाव के प्रति कैसे जागरूक किया जाए?

(2) कक्षागत प्रक्रियाएँ बंद रहने की स्थिति में बच्चों को पढ़ने-लिखने की गतिविधियों से कैसे जोड़े रखा जाए?

(3) ऐसा क्या किया जाए कि बच्चे पिछली सीखी हुई दक्षता को भूलने न पाएँ?

(4) ऐसा क्या किया जाए कि बच्चे आगे की दक्षताएँ भी सीखें?

(5) कक्षाएँ न लगने के बावजूद बच्चों में सीखने-सिखाने की रुचि कैसे बनी रहे?

उपरोक्त समस्याओं के समाधान के लिए विद्यालय के शिक्षकों ने चर्चा उपरांत निम्न संभावित उपाय सोचे

1. बच्चों और उनके अभिभावकों से फोन पर अथवा व्यक्तिगत रूप से संपर्क करके कोविड -19 महामारी से बचाव के तरीकों के बारे में बताया जाए और जागरूक किया जाए।
2. बच्चों से फोन पर ही पढ़ने-लिखने की बातें करके उनमें सीखने-सिखाने के प्रति रुचि बनाए रखा जाए।
3. बच्चों को उनकी उम्र, कक्षा और स्तर के अनुसार कुछ गतिविधियाँ करने को कहा जाए एवं उनके माता-पिता, बड़े भाई-बहन, अभिभावकों को भी बच्चों का सहयोग करने का आग्रह किया जाए।
4. बच्चों को पिछली कक्षाओं की दक्षताओं से जुड़ी गतिविधियाँ घर पर ही करने के लिए कहें।
5. इंटरनेट युक्त मोबाइल फोन के द्वारा बच्चों तक लगातार दक्षता आधारित रुचिकर सामग्री भेजी जाए।
6. बच्चों तक कुछ रोचक और दक्षता आधारित सामग्री पहुंचाई जाए जिससे उनके भीतर सीखने- सिखाने की रुचि बनी रहे।
7. बच्चों के पास कुछ अभ्यास योग्य सामग्री भेजने एवं उनके द्वारा किए गए अभ्यास को देखकर सुधारात्मक सुझाव दिए जाएँ।
8. बहुत सीमित संख्या वाले समूहों में बच्चों को बैठकर पढ़ने की कुछ व्यवस्था की जाए, ताकि बच्चे कोरोना से बचाव की सावधानियों के साथ में सीखने-सिखाने का काम भी कर सकें।

भाग - 3 :
कोविड 19 की अवधि में बच्चों के सीखने में हुई क्षति को कम करने के लिए किए गए नवाचार

परिचय (ओटला स्कूल)

(ओटला-गाँव में घर की बाहरी दीवार से लगा हुआ एक चबूतरा या चौड़ी बेंचनुमा पट्टी बनाने का चलन होता है। इसे ही चौरा चबूतरा, पट्टी अथवा ओटला कहते हैं। निमाड़ में इसे ओटला ही कहते हैं। यहाँ सुबह-शाम बच्चे और कभी-कभी बड़े-बुजुर्ग भी बैठकर बातचीत करते हैं।)

मध्यप्रदेश के खंडवा जिला मुख्यालय से खंडवा-इंदौर मार्ग पर 50 किलोमीटर दूर स्थित गाँव धनगाँव की आबादी लगभग 4000 है। यहाँ आबादी का लगभग आधा हिस्सा मजदूर वर्ग का है। यहाँ स्थित शासकीय माध्यमिक शाला धनगांव में अधिकांश बच्चे मजदूर परिवारों से ही आते हैं। राजेश चन्द्र चौरे यहीं एक शिक्षक के रूप में सेवाएं दे रहे हैं। मार्च 2020 में कोविड-19 महामारी के लगातार प्रकोप के कारण बच्चों के कक्षा से दूर हो जाने के कारण उनके सीखने में हो रही कमी और निकट भविष्य में शालाएँ खुलने की संभावना न पाकर राज्य शिक्षा केंद्र भोपाल, मध्यप्रदेश ने 'हमारा घर हमारा विद्यालय', डिजीलैप, रेडियो स्कूल आदि कार्यक्रम प्रारंभ किये, किंतु इस कार्यक्रम की वास्तविक सफलता के लिए पालकों, अभिभावकों, और बच्चों के माता-पिता के पास इंटरनेटयुक्त एंड्राइड मोबाइल फोन और रेडियो की अनिवार्य आवश्यकता थी। शासकीय विद्यालयों में पढ़ने वाले ज्यादातर बच्चे गरीब और मजदूर परिवारों से आते हैं। उनके पास एंड्रॉयड फोन, इंटरनेट संबद्धता और रेडियो सेट, टीवी आदि का अभाव प्रायः देखा गया है। ऐसी स्थिति में उन्हें राज्य शिक्षा केंद्र के कार्यक्रमों से जोड़ते हुए सीखना-सिखाना से जोड़े रख पाना संभव नहीं था। शिक्षक कई तरह से इन समस्याओं का समाधान ढूंढ़ रहे थे। ऐसे में शासकीय माध्यमिक शाला धनगांव के शिक्षक ने एक सफल नवाचार किया। बच्चे कोविड-19 की पहली लहर की अवधि में दूरवर्ती डिजिटल सामग्री प्राप्त नहीं कर पा रहे थे। शिक्षक भी उन तक नहीं पहुंच पा रहे थे, तब शिक्षक ने 'ओटला स्कूल' की अवधारणा को जीवंत कर के बच्चों को न केवल दूरवर्ती डिजिटल सामग्री, डिजीलैप वीडियो, व्हाट्सएप आदि का उपयोग संभव बनाया, बल्कि ग्राम समाज के कुछ पढ़े-लिखे नवयुवकों के भीतर समाज के लिये, बच्चों के लिये, शिक्षा के लिये कुछ करने के साथ आत्मसम्मान व सेवा की भावना से भरा गौरव भी पैदा किया।

समस्या समाधान की प्रक्रिया

- सबसे पहले शिक्षक ने शाला प्रबंधन समिति के सदस्यों से अनौपचारिक बातचीत कर उन्हें अपनी 'ओटला स्कूल' की योजना के संबंध में बताया।
- शिक्षक के विचार को समझते हुए सभी सदस्य न केवल सहमत हुए, बल्कि स्वयंसेवी शिक्षकों के लिए युवकों-युवतियों को तैयार करने में बड़ी भूमिका निभाई। आवश्यक संसाधन जुटाने में भी सहयोग किया।
- ओटला स्कूल के लिए शिक्षक ने गांव के 12 पढ़े-लिखे युवक-युवतियों को चुना और उन्हें कोविड-19 की कठिन स्थिति के बीच भी एसएमसी के सदस्यों के सहयोग से बच्चों के छोटे-छोटे समूहों को पढ़ाने-लिखाने के लिए तैयार किया।
- प्रत्येक ओटला स्कूल के लिए सुरक्षा किट की व्यवस्था की। इस सुरक्षा किट में सभी बच्चों एवं स्वयंसेवी शिक्षकों के लिए पर्याप्तमात्रा में मास्क, सैनिटाइजर आदि रखे गए।
- बच्चों को अभ्यास पुस्तिका, पेन, पेंसिल, स्लेट आदि भी उपलब्ध कराये। इस तरह 12 'ओटला स्कूलों' के माध्यम से बच्चे डिजीलैप, व्हाट्सएप के साथ किताबों और लिखने-पढ़ने आदि के अभ्यास कार्य से जुड़ गए।
- इन स्कूलों में बच्चों को उनकी कक्षा और उनके स्तर अनुसार शिक्षा दी जा रही थी। इन सभी ओटला स्कूलों से शासकीय माध्यमिक शाला धनगाँव के सभी शिक्षक राजेश चंद्र चौरे के नेतृत्व में लगातार संपर्क में रहते थे व उचित मार्गदर्शन प्रदान करते थे।
- ओटला स्कूल को देखने के लिए मीडिया कर्मी भी आने लगे।

ओटला स्कूल अब पूरे मध्यप्रदेश का 'मोहल्ला क्लास' बन गया

ओटला स्कूल से सम्बंधित वीडियो देखने के लिए क्लिक करें:-

https://youtu.be/n6Z3NTFI90Y	ओटला स्कूल की कहानी टीवी पर
https://youtu.be/fmYCNzBxLng	ओटला स्कूल की कहानी टीवी पर
https://youtu.be/YgV5XIDay8k	मोहल्ला क्लास में गणित दिवस का आयोजन

जरा सोचिए

1. ओटला स्कूल के प्रधानाध्यापक यदि विद्यालय प्रबंधन समिति को विश्वास में नहीं लेते तो क्या यह योजना सफल हो पाती? क्या यह करना अनिवार्य था?
2. क्या ऐसे कार्य में स्थानीय और तकनीकी रूप से सक्षम व्यक्तियों का सहयोग मिलना आसान होता ?
3. क्या एक बड़ी कक्षा के विद्यार्थी का छोटी कक्षा के विद्यार्थी को पढ़ाना उचित है? 'हाँ' और 'ना' दोनों स्थितियों में क्यों ?

कोविड काल में शैक्षिक नवाचार

मार्च 2020 में विद्यालय बंद होने पर राज्य शिक्षा केंद्र भोपाल, मध्यप्रदेश ने हमारा घर हमारा विद्यालय और रेडियो स्कूल की शुरुआत की। साथ ही डिजीलैप कार्यक्रम की शुरुआत व्हाट्सएप समूहों के माध्यम से की गई। ये व्हाट्सएप समूह राज्य ने जिला के, जिलों ने ब्लॉक के, ब्लॉक ने जन शिक्षा केंद्रों के, जनशिक्षा केंद्र ने शिक्षकों के और विद्यालय के शिक्षकों ने कक्षावार अभिभावकों के समूह बनाए। अब पहले से बच्चों के सीखने में कमी की समस्या से बेचैन शिक्षकों को कुछ समाधानकारी उपाय और औजार तो मिल गए थे, किंतु जो समस्या सामने आ रही थी, वह विकट थी। कोविड-19 महामारी की अवधि में बच्चों के लिए विद्यालय बंद हो चुके थे। लॉकडाउन के कारण उनका अपने संगी-साथियों से मिलना जुलना नहीं हो रहा था। बस्ता, कॉपी, पेन, किताबों से दूरी बन चुकी थी और इस दूरी की अवधि भी बढ़ती ही जा रही थी। ऐसे में नया सत्र 2020-21 भी शुरू हो रहा था। किंतु, विद्यालय बंद होने से सत्र की शुरुआत प्रतीकात्मक ही थी। बच्चे अगली कक्षा की दक्षताएँ तो सीख ही नहीं रहे थे, उल्टे उनकी पिछली सीखी हुई दक्षताओं में कमी होने का खतरा पैदा हो रहा था। इस बात की चिंता सरकार, शिक्षाविदों, माता-पिता और अभिभावकों के साथ शिक्षकों को भी बेचैन कर रही थी।

स्थितियाँ कितनी भी कठिन हो सकती हैं, किंतु विश्व में शिक्षक ऐसी श्रेणी का होता है जो, बच्चों को शिक्षा देना, उनका सीखना-सिखाना बन्द नहीं होने देता। पेड़ों के नीचे, कच्चे-पक्के घरों के बरामदे में, या ऐसे ही कहीं भी, कैसे भी वह शिक्षा देता ही रहा है। वह कभी रुका नहीं। कोविड-19 महामारी की अवधि में भी वह यह कार्य करता रहा है। चूँकि कोविड-19 महामारी के दौरान महामारी से बचाव के लिए कई तरह के निर्देशों, सावधानियों, जैसे- सामाजिक दूरी, शारीरिक दूरी, मास्क लगाना, सेनीटाइजर का उपयोग आदि की अनिवार्यता थी, तब भी हमारे इन शिक्षकों ने बच्चों को सिखाने के, शिक्षा देने के उपाय खोज ही लिए, इस तरह के उपायों, नवाचारों के बारे में अवश्य ही सब को जानना चाहिए।

केस स्टडी

चलता-फिरता डिजिटल स्कूल

शासकीय माध्यमिक शाला गौरा, भारत के भौगोलिक केंद्र करौंदी ग्राम के निकट और मध्य प्रदेश के कटनी जिला मुख्यालय से 80 किलोमीटर दूर बसे जनजातीय ग्राम गौरा में स्थित है। यहाँ संचालित माध्यमिक शाला गौरा में पढ़ने वाले दिहाड़ी मजदूर परिवार से हैं। शेष सीमांत कृषक परिवारों से आते हैं। इनके पास किसी तरह की डिजिटल डिवाइस नहीं होने से कोविड-19 की अवधि में डिजीलेप, व्हाट्सएप, ऑनलाइन शिक्षण आदि का लाभ उठाने में यह बच्चे असमर्थ थे। परिणाम स्वरूप बच्चे मोहल्ला कक्षाओं में भी नहीं आ रहे थे। इस समस्या के समाधान के लिए माध्यमिक शाला गौरा ने एक चलित डिजिटल स्कूल की शुरुआत की। प्रधानाध्यापक महेंद्र सिंह ठाकुर ने एक हाथ ठेले की व्यवस्था करके उस पर इनवर्टर, साउंड सिस्टम, टीएलएम और स्मार्ट टीवी लगाकर प्रत्येक मोहल्ला कक्षा

में पहुंचते थे। उनके पहुंचने से पहले ही विद्यालय में पदस्थ शेष 5 शिक्षक अपनी-अपनी मोहल्ला कक्षाएं संचालित कर रहे होते थे। प्रत्येक मोहल्ला कक्षा में डिजीलेप वीडियो दिखाया जाता और उस पर चर्चा की जाती थी।

इस चलते-फिरते डिजिटल मोहल्ला स्कूल का प्रभाव यह हुआ, कि जहाँ इसकी शुरुआत से पहले मोहल्ला कक्षाओं में बहुत कम बच्चे आते थे, वहाँ इसके शुरू होने से लगभग सभी बच्चे मोहल्ला कक्षाओं में आने लगे। यह चलती फिरती स्कूल इतनी आकर्षक और मनोरंजक थी, कि बच्चों के लिए इससे आनंददायी वातावरण निर्मित हो गया। अब बच्चों की उपस्थिति और रुचि बढ़ जाने से मोहल्ला कक्षा में बच्चों की उपस्थिति और रूचि बढ़ जाने से शिक्षक अच्छी तरह अध्यापन करा पा रहे थे इस तरह उनकी शिक्षा में आए अवरोध पर नियंत्रण पा लिया गया।

चलता-फिरता पुस्तकालय

प्रदेश के सीधी जिले में श्रीमती उषा दुबे माध्यमिक शिक्षक ने चलता-फिरता पुस्तकालय शासकीय माध्यमिक विद्यालय हर्रई संचालित किया। कोविड-19 की अवधि में बच्चों के सीखने में कमी को कम करने के लिए चिंतित शिक्षकों ने देश भर में अपने-अपने क्षेत्रों में अपनी सीमाओं का अतिक्रमण करके भी नवाचार किये और बच्चों की सीखने में कमी को कम करने में बड़ी भूमिका निभाई। इस अवधि में जब लोगों का मिलना-जुलना, घर से बाहर निकलना, सब कुछ अत्यंत सीमित हो गया था। राज्य शासन के निर्देशानुसार मोहल्ला कक्षाएं, डिजीलैप वीडियो, व्हाट्सएप एसेसमेंट, रेडियो स्कूल कार्यक्रम आदि चल रहे थे। किंतु अभिभावक बच्चों को घरों से निकलने देने में हिचक रहे थे। मोहल्ला कक्षाएं खाली-खाली सी थीं। बच्चे इन कार्यक्रमों में रुचि नहीं ले रहे थे। ऐसे में जरूरत थी कुछ ऐसा करने की, जिसमें बच्चे न सिर्फ सीख सकें बल्कि उनके भीतर मोहल्ला कक्षाओं के प्रति रुचि व आकर्षण पैदा हो। कक्षाएँ उन्हें आकर्षित कर सकें। यही सोचते हुए सीधी जिले की श्रीमती उषा दुबे माध्यमिक शिक्षक ने चलित पुस्तकालय प्रारंभ किया। उन्होंने एक फ्रेम बनवाया। वे उस पर पुस्तकें लगाकर अपनी स्कूटी पर निकलती। सभी मोहल्ला कक्षाओं तक उनका यह पुस्तकालय पहुंचता। बच्चे वहीं कहानियां और कविताएं पढ़ते। उन्हें अच्छा लगता, तो वह घर में पढ़ने के लिए भी पुस्तकें ले जाने लगे। इस चलित पुस्तकालय का तात्कालिक लाभ तो यह हुआ, कि बच्चे न सिर्फ मोहल्ला कक्षाओं में आने लगे, बल्कि मोहल्ला कक्षाओं में पढ़ने के साथ उनके मोहल्ला कक्षाओं में आने से रेडियो स्कूल, डिजीलेप, व्हाट्सएप आधारित मूल्यांकन के साथ शेष विषयों पर उनसे बातचीत और सीखना-सिखाना संभव हो गया। कहानियाँ, कविताएं पढ़कर प्रश्न करने लगे। तर्क करने लगे। यह परिवर्तन NCF-2005 और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप ही है। इनका यह चलित पुस्तकालय न सिर्फ चर्चा में रहा बल्कि अन्य विद्यालयों और शिक्षकों ने भी इस प्रारूप को अपनाया।

नवाचार के वीडियो यहाँ देखें

https://youtu.be/OMPonJOThfw	चलता - फिरता पुस्तकालय, हर्रई
https://youtu.be/xP1z3dfCN7U	चलता - फिरता पुस्तकालय, हर्रई

याद रखने योग्य बातें –

मॉड्यूल के भाग 1 में हमने सीखा कि –

- बच्चों के नई दक्षताओं के नहीं सीख पाने के साथ-साथ पुरानी सीखी हुई दक्षताओं में कमी होने का खतरा पैदा हो जाता है।
- अधिगम क्षति को कम करने के लिए शिक्षकों को विद्यार्थियों की अतिरिक्त सहायता करनी होगी।

मॉड्यूल के भाग 2 में हमने सीखा कि –

- समस्याओं की उपस्थिति किसी रास्ते पर चलने वालों का पथ हमेशा के लिए अवरुद्ध नहीं कर पाती। उल्टे वह नई-नई तकनीकों, नये और समाधानकारी उपायों के अनुसंधान और प्रयोग का अवसर बन जाती है।
- कोविड-19 भी बच्चों की शिक्षा की राह में बड़ी बाधा बनकर आया। बच्चों के सीखने-सिखाने की राह चुनौतियों से भर गई। बच्चे, शिक्षक, अभिभावक सभी चुनौतियों के कारण विचलित हो रहे थे, किंतु सरकारों, स्वयंसेवी संस्थाओं और शिक्षकों ने कई नवाचारों के द्वारा बच्चों के सीखने की कमी को कम करने के सफल प्रयास किये हैं।
- मुश्किल समय में भी रास्ते निकाले जा सकते हैं। समुदाय से भी सहयोग प्राप्त किया जा सकता है।
- किसी भी समय में किए गए नवाचार अपने उस समय में तो परिणाम देते ही हैं, किंतु कुछ नवाचार ऐसे भी होते हैं, जिनका प्रभाव आगे आने वाले सामान्य दिनों में बना रहता है। इन्हें सामान्य दिनों में भी अपनाया जा सकता है।

मॉड्यूल के भाग 3 में हमने सीखा कि –

- कोविड-19 की अवधि में विद्यालय बंद होने के कारण कक्षागत शैक्षणिक प्रक्रियाएँ ही नहीं, दूसरी तरह की शैक्षणिक गतिविधियाँ भी स्थगित-सी हो गईं थीं, किन्तु नवाचारों के माध्यम से उन्हें फिर से स्थापित किया जा सकता है।
- कठिन समय में भी बच्चों का सीखना - सिखाना बनाए रखा जा सकता है, और ऐसे समय में किये गये नवाचार सामान्य स्थितियों में भी प्रभावी साबित हो सकते हैं।
- शैक्षिक नवाचार से भरा नेतृत्व सामर्थ्य वाला शिक्षक कठिनतम परिस्थितियों में भी अपने विद्यार्थियों को अकेला नहीं होने देता। वह उन्हें सिखाने का रास्ता खोज ही लेता है।
- कई नवाचारों ने यह प्रमाणित किया है, कि विषम परिस्थितियों में भी लक्ष्य हासिल किया जा सकता है।
- शिक्षक, स्वयंसेवी संस्थाएँ और शासकीय निकाय भी इन नवाचारों को जानेंगे परखेंगे और अपनाएँगे।
- प्रभावी योजना और सामुदायिक सहयोग व साथी शिक्षकों को प्रेरित कर के चलती-फिरती डिजिटल स्कूल और ओटला स्कूल के माध्यम से किस तरह बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में बनाये रखा, जिससे बच्चे सीख सके।

समूह आकलन और विद्यालय के अन्य शिक्षकों के साथ चर्चा हेतु प्रश्न

(इन प्रश्नों पर विचार करें, साप्ताहिक शिक्षक बैठक में अपने विद्यालय में इन के उत्तरों पर शिक्षकों के मध्य चर्चा और बहस करवाएं)

1. क्या अधिगम क्षति को नापा जा सकता है? कैसे? वैकल्पिक पद्धतियों पर शिक्षकों से चर्चा करें।
2. पुस्तकें पढ़ते हुए बच्चे का प्रश्न अथवा तर्क करने से हमें क्या समझना चाहिए?
3. आपके विद्यालय में हुई अधिगम क्षति का मापन करने हेतु आप क्या करेंगे?
4. ओटला स्कूल क्या सामान्य दिनों में भी उपयोगी हो सकता है? कैसे? अपने शिक्षक साथियों के साथ चर्चा करें।
5. नवाचार क्या होते हैं ? क्या इनका स्थायी होना आवश्यक है?

विद्यालय के लिए सुझावात्मक प्रोजेक्ट कार्य –

1. आपके विद्यालय में कक्षा 2 में हुई अधिगम क्षति के मापन हेतु एक योजना बनाएं।
2. अपने विद्यालय में विद्यार्थियों के परिवारों में डिजिटल उपकरणों की उपलब्धता, उपयोगिता पर एक सर्वेक्षण करें।
3. आपके विद्यालय में उपलब्ध स्त्रोतों के माध्यम से किस प्रकार के डिजिटल उपकरणों की स्थाई व्यवस्था की जा सकती है ? इसका एक प्रस्ताव बनाएं।
4. कोविड काल में विद्यार्थियों के रोचक और नवाचारी अधिगम अनुभवों को दस्तावेजीकरण कर अपने जिले के डाइट को प्रेषित करें।

संदर्भ

1. शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार
2. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005, एनसीईआरटी, नई दिल्ली
3. Loss of Learning during the Pandemic, NCERT
4. National Center for Leadership (NCSL) NCERT
5. Rapid Assessment of Learning During School Closures in the Context of Covid 19-2021(UNICEF).
6. Field Studies in Education-February – 2022 By- Azim Premji University.

लेखक का नाम
राजा राम अवस्थी
जिला स्रोत समूह (डाइट कटनी), म.प्र.

मेंटर/ एक्सपर्ट का नाम
राकेश देवांग
सहायक परियोजना समन्वयक (अकादमिक)
कार्यालय जिला शिक्षा केन्द्र, भोपाल
जिला - भोपाल, म.प्र.
मोबाइल- +91 9826405474
ई मेल- rakeshdewang448@gmail.com

❑ ❑ ❑

मॉड्यूल – मध्यप्रदेश में शिक्षण अधिगम और प्रौद्योगिकी के उपयोग हेतु नेतृत्व

भाग – 1

शैक्षिक प्रौद्योगिकी (एजुकेशन टेक्नोलॉजी) एवं आई.सी.टी. का अर्थ समझना

भाग – 2

शिक्षण-अधिगम के लिए आईसीटी का उपयोग

भाग – 3

शिक्षण-अधिगम में आईसीटी के उपयोग हेतु संस्था प्रमुख की भूमिका

शीर्षक :
मध्यप्रदेश में शिक्षण-अधिगम और प्रौद्योगिकी

उद्देश्य :

इस मॉड्यूल के माध्यम से नेतृत्वकर्ता -

1. आई.सी.टी. (सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी) का अर्थ समझ सकेंगे।
2. शिक्षण-अधिगम में आवश्यकतानुसार उपयोग में ली जाने वाली तकनीकी को पहचान कर उनका उपयोग कर सकेंगे।
3. सीखने- सिखाने की प्रक्रियाओं के लिए आईसीटी के उपयोग में नेतृत्वकर्ता की भूमिका को समझ सकेंगे।

कीवर्ड

ICT, IT, NCF, NEP, NCERT, RSK, Interactive, ऑनलाइन शिक्षण

परिचय

एक नेतृत्वकर्ता के रूप में हमें यह जानना बहुत आवश्यक है कि शिक्षण अधिगम में ICT की भूमिका क्या है। प्रधानाध्यापक के रूप में आप अपने विद्यालय में आई.सी.टी. के उपयोग हेतु नेतृत्व कैसे कर सकते हैं यह मॉड्यूल इसे समझने के अवसर देता है। यह मॉड्यूल विद्यालय प्रमुख और शिक्षक दोनों को शिक्षण अधिगम में आवश्यकतानुसार आई.सी.टी. का उपयोग किस प्रकार करना है; इस हेतु मार्गदर्शन भी प्रदान करता है। गत वर्षों में नीतिगत दस्तावेजों जैसे राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में आई.सी.टी के उपयोग के बारे में क्या कहा गया है, इसे भी रेखांकित करता है। (इस बात को समझने के लिए पाठक इस लिंक पर क्लिक करके देखें। https://www.youtube.com/watch?app=desktop&v=EY-Vor6ha8c)

यह एक सर्वविदित तथ्य है कि कोई भी दो व्यक्ति एक जैसे नहीं होते हैं। चूँकि हर बच्चा अलग होता है, इसलिए वह एक विशिष्ट तरीके से सीखता है। वास्तविकता तो यह है कि शिक्षार्थियों को अगर एक से अधिक ज्ञानेंद्रियों का उपयोग करके पढ़ाया जाए, तो वे बेहतर ढंग से सीख सकते हैं। ज्ञान को स्कूल के बाहर के जीवन से जोड़ने और अधिगम को बेहतर बनाने के लिए एक से अधिक ज्ञानेंद्रिय कार्यनीतियाँ दृश्य, श्रवण, गतिसंवेदी और स्पर्शनीय (यानी सुनना, देखना, सूंघना, चखना और छूना) का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। ऐसे में जरूरी है कि बच्चे पाठ्यपुस्तकों के अलावा, आसपास के परिवेश, कक्षाओं की चार दीवारी के भीतर और बाहर भी, ज्ञान अर्जित करें और इसके लिए डिजिटल तथा बाह्य संसाधनों का उपयोग करें। इसी पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.) शिक्षण-अधिगम परिवेश में सुधार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। आजकल आई.सी.टी. की समझ और बुनियादी कौशल में महारत हासिल करना, पढ़ने-लिखने और संख्यात्मकता के साथ-साथ शिक्षा के मुख्य भाग का एक हिस्सा बन गया है।

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी अथवा आईसीटी उपयोगकर्ताओं को तेजी से बदलते हुए विश्व में सहभागिता करने में समर्थ बनाती है। जिसमें कार्य तथा अन्य क्रियाकलाप निरंतर पहुंच के माध्यम से विविध और विकसित होती प्रौद्योगिकियों में रूपांतरित होते जा रहे हैं। डिजिटल इंडिया अभियान पूरे देश को एक डिजिटल रूप से सशक्त समाज एवं ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था में परिवर्तित करने में मदद कर रहा है। इस रूपांतरण में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ प्रौद्योगिकी की भी शैक्षिक प्रक्रिया एवं परिणामों के सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका है।

इस परिप्रेक्ष्य में हमारे राष्ट्रीय दस्तावेज भी कुछ बातें कहते हैं, जो निम्नलिखित हैं –

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में एजुकेशन टेक्नोलॉजी

24 ऑनलाइन और डिजिटल शिक्षा– प्रौद्योगिकी का न्यायसम्मत उपयोग सुनिश्चित करना

24.1 नई परिस्थितियां और वास्तविकताओं के लिए नई पहल अपेक्षित हैं । संक्रामक रोगों और वैश्विक महामारियों में हाल ही में वृद्धि को देखते हुए यह जरूरी हो गया है कि जब भी और जहाँ भी शिक्षा के पारंपरिक और विशेष साधन संभव न हों वहाँ हम गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के वैकल्पिक साधनों के साथ तैयार हों। इस संबंध में, नई शिक्षा नीति, 2020 प्रौद्योगिकी की संभावित चुनौतियों को स्वीकार करते हुए उससे मिलने वाले लाभों के महत्व पर भी ध्यान केंद्रित करती है। यह निर्धारित करने के लिए कि ऑनलाइन/ डिजिटल शिक्षा की हानियों को कम करते हुए हम कैसे इससे लाभ उठा सकते हैं, सावधानीपूर्वक और उपयुक्त रूप से तैयार किया गया अध्ययन करना होगा। साथ ही, सभी को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्रदान करने से संबंधित वर्तमान और भावी चुनौतियों का सामना करने के लिए मौजूदा डिजिटल प्लेटफॉर्म और क्रियान्वित आईसीटी-आधारित पहलों को अनुकूल और विस्तारित करना होगा। (सन्दर्भ- NEP 2020, पेज 95)

24.3 कुछ प्रकार के पाठ्यक्रम/ विषय, जैसे प्रदर्शन कला और विज्ञान व्यवहारिक ऑनलाइन/ डिजिटल शिक्षा क्षेत्र में सीमाएं हैं, जिन्हें नवीन उपायों के साथ कुछ सीमा तक दूर किया जा सकता है। इसके अलावा, जब तक ऑनलाइन शिक्षा को अनुभवात्मक और गतिविधि- आधारित शिक्षा के साथ मिश्रित नहीं किया जाता, तब तक यह सीखने के सामाजिक, भावनात्मक और साइकोमोटर आयामों पर सीमित फोकस वाली स्क्रीन-आधारित शिक्षा मात्र ही बन जाएगी।

सन्दर्भ- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020; (अध्याय 23, प्रौद्योगिकी का उपयोग एवं एकीकरण पेज 92)

प्रौद्योगिकी हस्तक्षेपों का मुख्य उद्देश्य शिक्षण-अधिगम और आंकलन प्रक्रियाओं को बेहतर बनाना, शिक्षकों की तैयारी एवं व्यावसायिक विकास में सहयोग करना, शैक्षिक पहुँच को बढ़ाना, शैक्षिक नियोजन, प्रबंधन एवं प्रशासन को सरल एवं व्यवस्थित करना जिसमें प्रवेश, उपस्थिति, मूल्यांकन संबंधी प्रक्रियाएँ आदि सम्मिलित हैं ।

सन्दर्भ- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020; (23.5, पेज 93)

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में एजुकेशन टेक्नोलॉजी-बिंदु 5.5.3 तकनीकी का उपयोग -

- अगर बच्चों को मल्टी मीडिया उपकरण और सूचना संप्रेषण तकनीक के उपकरण सीधे उपलब्ध करवाएँ और उन्हें यह छूट भी हो कि वे उन्हें जोड़-तोड़ कर अपनी खुद की रचनाएँ बनाएँ और उनसे अपने अनुभव प्रस्तुत करने के लिए कहा जाए, तो इससे बच्चों को अपनी सृजनात्मक कल्पनाशीलता को निखारने के अवसर मिलेंगे।
- शिक्षण तकनीक के लिए बनाए गए कार्यक्रमों को निष्क्रिय रूप से देखने और सुनने के बदले अगर उपरोक्त तरीके से शैक्षिक तकनीक में उत्पादन के अनुभव हों तो देश के तकनीकी संसाधनों का कहीं बेहतर उपयोग किया जा सकता है।
- एकतरफा अभिग्रहण से नहीं बल्कि दोतरफा अंतः क्रियात्मकता से ही यह तकनीक वास्तव में शैक्षिक हो पाएगी।
- पाठ्यपुस्तक की विषयवस्तु को जस का तस पुनरुत्पादित करने, कक्षायी परिस्थितियों की नकल प्रस्तुत करने और प्रयोगशाला के प्रयोगों को अनुप्राणित करने की जगह शैक्षिक तकनीक का बेहतर उपयोग तब हो सकेगा जब विषयों या मुद्दों को गैर उपदेशात्मक रूप में विकसित किया जाए ताकि शिक्षार्थी ज्ञान के नेटवर्क से बेहतर रूप में जुड़ पाएँ और अपनी रुचि के स्तर के अनुसार सीख पाएँ।

परस्पर संवाद और आत्मीयता, गुणवत्ता वाली शिक्षा की कुंजी है और इस सिद्धांत के साथ समझौता न किया जाए।

'प्राथमिक स्कूलों के बच्चों के लिए वीडियो कार्यक्रम एवं प्रदर्शन स्वयं हाथ से करके सीखने के अनुभवों का पर्याय नहीं बन सकता है।'

सन्दर्भ- (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005; 5.5.3 तकनीकी का उपयोग,पेज 135)

जरा सोचिए -

जैसा आप ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में पढ़ा होगा 'ऑनलाइन शिक्षा को अनुभवात्मक और गतिविधि-आधारित शिक्षा के साथ मिश्रित नहीं किया जाता' क्या इन्हें एक साथ उपयोग में लाना संभव है, यदि हाँ तो कैसे ?

....

....

....

....

....

....

इस मुद्दे पर आपकी समझ आने वाले भागों को पढ़ने समझने से और स्पष्ट होगी।

भाग 1 : शैक्षिक प्रौद्योगिकी (एजुकेशन टेक्नोलॉजी), सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.) का अर्थ समझना

उद्देश्य :

1. शैक्षिक प्रौद्योगिकी एवं सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.) का अर्थ समझ सकेंगे।
2. शैक्षिक प्रौद्योगिकी एवं सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.) के लाभ जान सकेंगे।

परिचय

जैसा कि हमने पहले भाग में शैक्षिक प्रौद्योगिकी (एजुकेशन टेक्नोलॉजी), सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.) के नीतिगत दस्तावेजों को पढ़ा और उस पर अपनी समझ बनाई। अब यह भी जानना जरूरी है कि शैक्षिक प्रौद्योगिकी और आई.सी.टी. क्या होता है? तो इस भाग में इसे समझने का प्रयास करते हैं।

शैक्षिक प्रौद्योगिकी

शैक्षिक प्रौद्योगिकी ज्ञान, अनुप्रयोगों और उपकरणों का एक सेट है जो सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग के माध्यम से शैक्षिक समस्याओं के समाधान के बारे में है। इसे अधिगम प्रौद्योगिकी भी कहा जाता है। शैक्षिक तकनीकी शिक्षाशास्त्र की वह शाखा है, जिसमें अधिगम तथा अधिगम की परिस्थितियों के वैज्ञानिक ज्ञान का प्रयोग, शिक्षण तथा प्रशिक्षण को सुधारने तथा प्रभावशाली बनाने में किया जाता है।

शैक्षिक प्रौद्योगिकी वास्तव में उन विधियों तथा प्रविधियों का विज्ञान है, जिनके द्वारा शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सके। कक्षा में शिक्षण तकनीकों का उपयोग करके सीखने की अवस्थाओं में सुधार किया जा सकता है। इसके तीन प्रमुख प्रकार हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर एवं प्रणाली उपागम (System Approach) हैं।

शैक्षिक प्रौद्योगिकी के क्षेत्र

शैक्षिक प्रौद्योगिकी के तीन प्रमुख क्षेत्र हैं। पहला 'शिक्षा में तकनीक' तथा दूसरा 'शिक्षा की तकनीक' एवं तीसरा 'प्रणाली उपागम (सिस्टम्स अप्रोच)'। शिक्षा में तकनीक एवं शिक्षा की तकनीक ये दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। शैक्षिक प्रौद्योगिकी बहुत बड़ा विषय है। इसमें मशीन आधारित उपागम और गैर मशीन आधारित उपागमों दोनों का अध्ययन होता है।

1. **शिक्षा की तकनीक (टेक्नोलॉजी ऑफ एजुकेशन)** – ICT अप्रोच में अधिकतर हार्डवेयर की बात करते हैं लेकिन हार्डवेयर में जो सॉफ्टवेयर चलाएंगे वह कैसे डिजाइन किया जाएगा यह भी महत्त्वपूर्ण है। उसका नीड एनालिसिस कैसे होगा। अगर आप को कोई वीडियो फिल्म बनाना है तो उसमें अवधारणा को सिखाने की प्रक्रिया

क्या रहेगी, मतलब लर्निंग प्रोसेस, यहाँ इसमें वीडियो फिल्म बनाने की तकनीक की बात नहीं कर रहे हैं। किसी अवधारणा को कैसे बताया जाए कि वो बच्चों को समझ में आए। इसमें बच्चों का मोटिवेशन कैसे करें, सॉफ्टवेयर डिजाइनिंग में कांसेप्ट, उदाहरण, प्रक्रिया पहले क्या, फिर क्या, उसके बाद में क्या बताया जाएगा। इन चीजों को शामिल कर इसकी स्क्रिप्ट लिखा जाता है। यह चीजें शिक्षा की तकनीक (technology of education) से संबंधित है।

2. **शिक्षा में तकनीक (टेक्नोलॉजी इन एजुकेशन)** – अगर इसमें मशीनों का उपयोग हो रहा है, आपको इसमें कोई सॉफ्टवेयर या कोई वीडियो या कोई ऑडियो लेशन बताने से क्लियरटी हो रही है, तो फिर वो टेक्नोलॉजी इन एजुकेशन होगा।

3. **प्रणाली उपागम (सिस्टम्स अप्रोच)** – कक्षा के व्यवस्था में व्याप्त कमियों या समस्याओं को उजागर करता है और वैज्ञानिक पद्धतियों के आधार पर उसका समाधान निकालता है। यह प्रणाली विश्लेषण (सिस्टम एनालिसिस) होता है। कोई भी एजुकेशनल प्रॉब्लम को, भले ही वह टीचिंग लर्निंग से जुड़ा हुआ हो, चाहे दूसरी कोई भी हो, उसका हल करने के लिए कुछ सिस्टम डिज़ाइन करना होता है। जैसे -

- एक प्रोटोटाइप डिजाइन करना,
- मूल्यांकन करना (Evaluate),
- एंड री-डिजाइन।

शिक्षण अधिगम समस्या – यहाँ टीचिंग लर्निंग प्रॉब्लम क्या है मान लो भिन्न का जोड़ है, तो भिन्न के जोड़ को कैसे बताया जा सकता है। भिन्न के जोड़ की अवधारणा को सिखाने का तरीका क्या हो, जिससे बच्चों को समझ में आए, उसके चरण क्या होंगे? पहले क्या फिर क्या और कैसे बताया जाए यह सभी चीजें शिक्षा की तकनीक (टेक्नोलॉजी ऑफ एजुकेशन) के तहत आती हैं।

अब अगर इसमें वीडियो या 3D चित्र आदि हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर का उपयोग करके समझाया जा रहा है, जिससे क्लियरटी हो रही है, तो फिर वो शिक्षा में तकनीक (टेक्नोलॉजी इन एजुकेशन) में आएगा।

इसके ऊपर जो बेस्ट तकनीक होगी, उसकी साइकोलॉजी क्या होगी, बच्चों को क्यों समझ में नहीं आ रहा है, क्या करने से समझ में आएगा। उसकी अवधारणा क्या है, उसे बेहतर तरीके से समझाने हेतु क्या आईडिया है। इन सबके आधार पर निर्णय लेना और एक मॉडल डिज़ाइन करना या तकनीक डिज़ाइन करना, जिस तकनीक से बच्चों को समझ में आ जाए। हमनें जो मॉडल (प्रोटोटाइप) बनाया था भिन्न की अवधारणा को समझाने के लिए, मान लो उसमें केवल 50 प्रतिशत बच्चे ही समझ पाए। इसका मतलब यह हुआ कि हमारा जो पढ़ाने का तरीका या तकनीक है, उसमें सुधार की जरूरत है, क्योंकि अभी भी 50 प्रतिशत बच्चे भिन्न को नहीं समझ पाए। तो आप अपने तकनीक को मूल्यांकन के आधार पर बार-बार रिवाइज करेंगे। उसमें अभी भी क्या कमी रह गई है इसकी पहचान करेंगे। अपने पढ़ाने के तरीके को तब तक बदलेंगे जब तक उस तकनीक से अधिकांश बच्चों को समझ में नहीं आए। यह प्रक्रिया एक प्रोटोटाइप डिजाइन करना, उसका मूल्यांकन करना (Evaluate) और री-डिजाइन करना प्रणाली उपागम (सिस्टम्स अप्रोच) के अंतर्गत आता है।

इस प्रकार यह तीन चीजें मिलकर बनते हैं एजुकेशन टेक्नोलॉजी। ICT का उपयोग इसका एक हिस्सा है। कभी-कभी आईसीटी की बात केवल मशीनी उपकरण तक सिमट कर रह जाती है। जबकि इसके अंदर यह जरूरी नहीं है कि टीवी, कंप्यूटर, हार्डवेयर की चीजें हो ही। बिना हार्डवेयर के भी शिक्षण तकनीक हो सकती है।

जैसे हमने भिन्न के उदाहरण को लेकर शैक्षिक प्रौद्योगिकी के तीनों घटकों को समझने का प्रयास किया है। आप किसी और विषय या अवधारणा को उदाहरण स्वरूप लेकर शैक्षिक प्रौद्योगिकी के तीनों घटकों (शिक्षा की तकनीक, शिक्षा में तकनीक तथा प्रणाली उपागम) का अर्थ समझाते हुए लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.) -

आपके विचार में -

प्रश्न - आई.सी.टी. किससे संबंधित है, इस पर अपने विचार लिखें -

....

....

....

....

आई.सी.टी. की अवधारणा को समझना

डिजिटल दुनिया में होने वाली प्रगति को ध्यान में रखते हुए प्रधानाध्यापकों और शिक्षकों को शिक्षण और अधिगम के लिए आई.सी.टी. का व्यावसायिक रूप से उपयोग करने में सक्षम होना चाहिए। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में आई.सी.टी. को समेकित करने का अर्थ केवल इंटरनेट और डिजिटल उपकरणों का उपयोग करना ही नहीं है, बल्कि जो विषय पढ़ाना और सीखना है, यह उससे संबंधित लक्ष्यों और सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने का भी माध्यम है। शिक्षकों को समझना चाहिए कि कैसे तकनीक को शिक्षण शास्त्र और विषयवस्तु को सीखने के लिए उपयोग किया जाता है।

यूनेस्को के अनुसार आई.सी.टी. विभिन्न श्रेणियों के तकनीकी उपकरणों और संसाधनों का उल्लेख करता है। जिनका उपयोग सचूनाओं के निर्माण, संग्रहण, संचारण, साझा करने या आदान-प्रदान करने के लिए किया जाता है। इन

तकनीकी उपकरणों और संसाधनों में कंप्यूटर, इंटरनेट (वेबसाइट, ब्लॉग और ईमेल), सीधे प्रसारण की प्रौद्योगिकी (रेडियो, टेलीविज़न और वेबकास्टिंग), रिकॉर्डेड प्रसारण प्रौद्योगिकी (पॉडकास्टिंग,ऑडियो और वीडियो प्लेयर और स्टोरेज उपकरण) और टेलीफोन (फिक्स्ड /मोबाइल) उपग्रह, दृश्य/वीडियो-कॉन्फ्रेंसिंग आदि) शामिल हैं।

Figure 1 आई.सी.टी (स्रोत-निष्ठा प्रशिक्षण पैकेज)

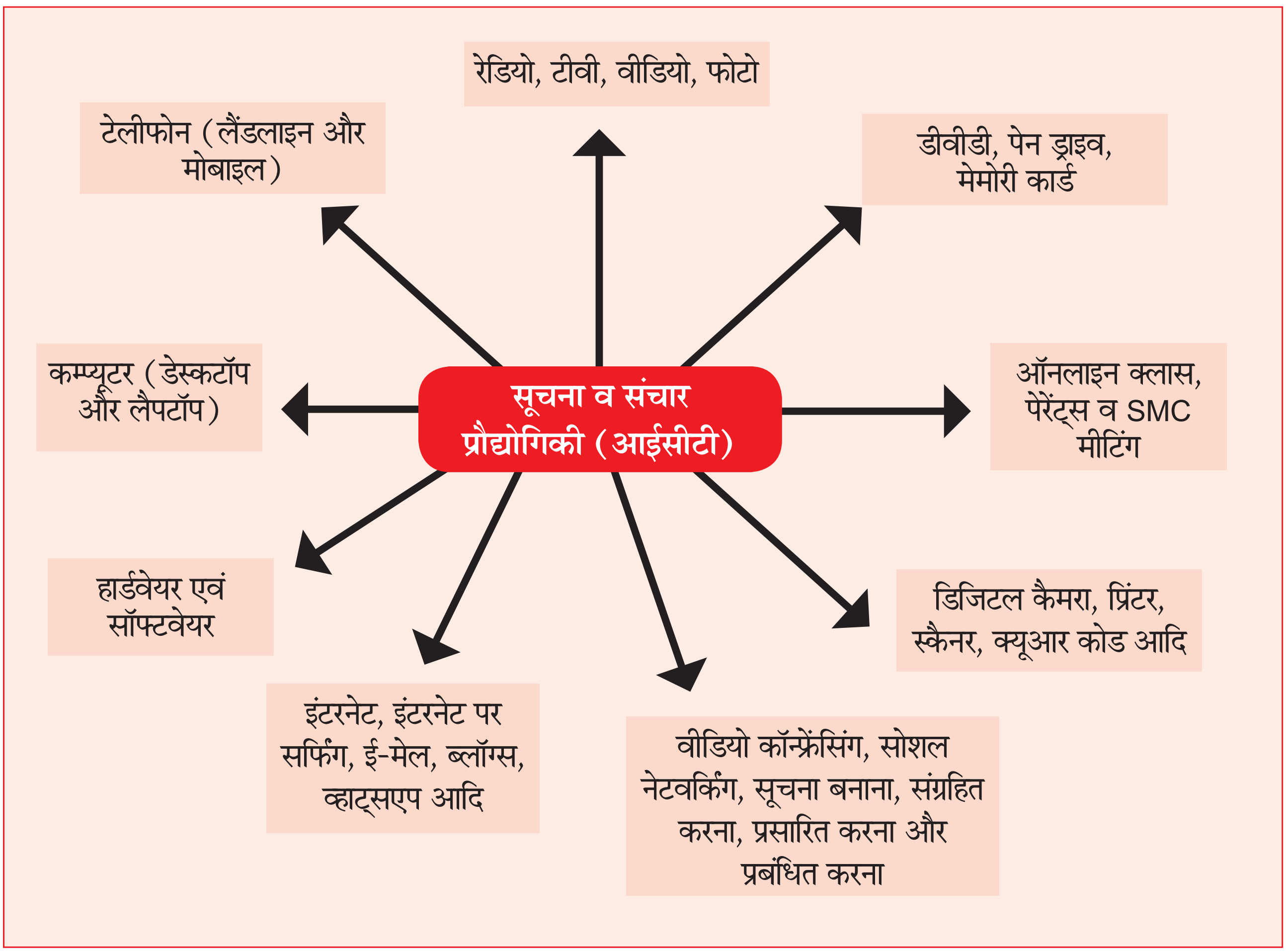

- उपरोक्त सूचना और संचार उपकरणों को विद्यालयों में व्यापक रूप से सूचना बनाने, संग्रहित करने, प्रसारित करने या संचार करने और प्रबंधित करने के लिए उपयोग किया जाता है।

शैक्षिक प्रौद्योगिकी से लाभ- शैक्षिक प्रौद्योगिकी की शिक्षा के लगभग सभी क्षेत्रों में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका है। ये क्षेत्र हैं -

- शिक्षण की नवीन तकनीक
- शाला प्रबंधन में शिक्षण की नवीन तकनीक
- परीक्षा एवं मूल्यांकन
- कठिन अवधारणाओं को सरल बनाना
- दूर-अधिगम
- पुस्तकालय एवं ज्ञान के नवीन स्त्रोत
- शिक्षा का लगभग कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है, जहाँ तकनीकी का उपयोग न हो। आइए देखें, शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न उपयोगकर्ताओं का तकनीकी से क्या लाभ है।

प्रधानाध्यापकों के लिए लाभ –

- शिक्षण अधिगम
  - बच्चों के बेस लाइन, एंड लाइन टेस्ट पेपर बनाना,
  - बच्चों का रिजल्ट कार्ड बनाना,
  - मार्कशीट व दूसरे प्रमाण बनाना,
  - शिक्षण योजना बनाना,
  - सांस्कृतिक एवं अकादमिक गतिविधियों की तैयारी करना,
  - प्रधानाध्यापक और शिक्षकों की मीटिंग मिनट्स बनाना,
  - सभी बैठकों के मिनट एवं पीपीटी बनाना आदि।

विद्यालय प्रबंधन

- बच्चों की उपस्थिति,
- स्कूल के विभिन्न रिकॉर्ड तैयार करना,
- कार्यक्रमों की रूपरेखा निर्धारित करना,
- शाला प्रबंधन समिति (SMC) एवं अभिभावक शिक्षक बैठक (PTM) के मिनट तैयार करना आदि।

शिक्षकों के लिए लाभ- कक्षा शिक्षण में तकनीक का महत्त्वपूर्ण योगदान है, शिक्षकों के लिए प्रमुख लाभ निम्न हैं -

- कठिन अवधारणाओं को सरल किया जाना,
- शिक्षण में समय की बचत,
- कम समय में अधिक शिक्षण,
- ज्ञान के नवीन स्त्रोतों की उपलब्धता,
- अद्यतन व नवीन ज्ञान की तत्काल उपलब्धता,

- खेल-खेल में सिखाने हेतु श्रेष्ठ तकनीक,
- दूर- शिक्षा के माध्यम से स्वयं एवं विद्यार्थियों का उन्नयन आदि।

विद्यार्थियों के लिए लाभ- तकनीकी से शिक्षकों के अलावा विद्यार्थियों को भी कई लाभ हैं कुछ प्रमुख लाभ निम्न हैं -

- स्व- अधिगम में सहायक,
- स्व-मूल्यांकन की सुविधा,
- सूचनाओं के शोध में सहायक,
- किसी भी विषय में अद्यतन जानकारी से अवगत होना,
- शिक्षकों की अनुपस्थिति में भी अधिगम सम्भव,
- कठिन अवधारणाओं को सरलता से समझना,
- दूर-शिक्षा के माध्यम से विभिन्न पाठ्यक्रमों का ऑनलाइन अध्ययन,
- विश्व के किसी भी शिक्षक से अध्ययन हेतु तत्काल सम्पर्क का माध्यम आदि।

समेकन

शैक्षिक प्रौद्योगिकी हमेशा से ही शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण एवं प्रगतिशील क्षेत्र रहा है। एक ओर शिक्षा मानव में व्यवहारगत परिवर्तन के साथ-साथ उसकी सोच और समझ को विकसित करती है, वहीं साथ ही साथ प्रौद्योगिकी का प्रयोग शिक्षा को सरल, सुग्राही एवं रूचिपूर्ण बनाता है। बाल-केन्द्रित शिक्षा हेतु शैक्षिक प्रौद्योगिकी का महत्व और बढ़ जाता है, क्योंकि शैक्षिक प्रौद्योगिकी की विभिन्न तकनीकों एवं सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से बालक स्वयं ज्ञान का सृजन अपनी रुचि, समय, सुविधा और क्षमता के अनुसार कर सकता है। इसलिए प्रधानाध्यापकों और शिक्षकों को शिक्षण और अधिगम के लिए आई.सी.टी. का व्यावसायिक रूप से उपयोग करने में सक्षम होना चाहिए।

भाग 2 :
शिक्षण-अधिगम के लिए आईसीटी का उपयोग

उद्देश्य :

1. शिक्षण-अधिगम में आवश्यकतानुसार उपयोग में ली जाने वाली तकनीकी की पहचान कर सकेंगे।
2. आवश्यकतानुसार उनका उपयोग कर सकेंगे।

परिचय

यह भाग शिक्षण-अधिगम में आई.सी.टी. की संभावनाओं पर चर्चा करता है। जिसमें शिक्षक को समीक्षात्मक रूप से विषय वस्तु, संदर्भ, शिक्षण-अधिगम की पद्धति का विश्लेषण करने और तदनुसार उपयुक्त आई.सी.टी. के उपयोग के बारे में जानने और समझने के अवसर देता है। शिक्षकों को यह जानना आवश्यक है कि सीखने-सिखाने में ICT की सीमाएं क्या हैं? ICT का उपयोग कहाँ करें और इसके उपयोग में किन-किन बातों का ध्यान रखें आदि । विद्यालय प्रमुख और शिक्षक दोनों को शिक्षण अधिगम में आवश्यकतानुसार आई.सी.टी. का उपयोग किस प्रकार करना है, इस हेतु मार्गदर्शन भी प्रदान करता है ।

जैसा आप हम सभी जानते हैं कि पूरा विश्व कोविड से जूझ रहा था। कोविड-19 में जब विद्यालय बंद हो गए, शिक्षकों का बच्चों से संपर्क टूट गया और तब निरंतर शिक्षण जारी रखने के लिए टेक्नोलॉजी को एक साधन के रूप में पहली बार लोगों ने माना। कोविड -19 महामारी के दौरान बच्चों की शिक्षा जारी रखने हेतु ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों ही तरीकों से आई.सी.टी. का उपयोग किया गया। ग्रामीण व शहरी इलाकों में शिक्षकों द्वारा गृह आधारित शिक्षण कार्यक्रमों में भी आई.सी.टी. के विभिन्न टूल जैसे- मोबाइल, व्हाट्सएप, डिजिलेप, व्हाट्सएप्प आधारित मूल्यांकन, रेडियो, टेलीविजन, कंप्यूटर, लैपटॉप आदि के द्वारा विद्यार्थियों के लिए शिक्षा प्रदान करने का कार्य किया गया।

प्रश्न- बच्चे कुछ अवधारणाएं क्यों नहीं सीख पाते? इस पर अपने विचार लिखें -

....

....

....

....

- ऐसा पाया गया है कि बच्चे उन अवधारणाओं को नहीं सीख पाते जिनमें निम्नलिखित चीजें शामिल होती हैं -
  - गति
  - रंग
  - आवृत्ति
  - आयाम
  - अमूर्त

जैसे- यदि उसमें गति बहुत तेज या धीमी है जिसे आँखें देख और समझ नहीं पाती उन्हें समझने में बच्चों को दिक्कत होती है।

- जिनमें कई तरह के रंग होते हैं जिन्हें शिक्षक ब्लैक बोर्ड पर आसानी से नहीं बना पाते, उन्हें भी समझने में दिक्कत होती है।
- जिन अवधारणाओं में 3 आयाम (3D) होते हैं उन्हें भी सीखने में मुश्किल होती है। क्योंकि ब्लैक बोर्ड पर उन्हें समझने में मुश्किल होती है आदि।

मूल्यांकन एवं परीक्षा परिणाम– राज्य, जिले और विद्यालयों में किए जा रहे मासिक, अर्धवार्षिक, वार्षिक मूल्यांकन एवं परीक्षा परिणामों से भी पता चलता है कि गणित, विज्ञान और अंग्रेजी जैसे विषयों में बच्चों की प्रगति तुलनात्मक रूप से कम नजर आती है। अगर हम इन विषयों के प्रश्नों का विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि उन अधिकांश अवधारणाओं में गति, आवृत्ति, 3D याउस अवधारणा का अमूर्त होना शामिल है।

कठिन अवधारणाएं (हार्ड स्पॉट्स), मीडिया और टेक्नोलॉजी –

कठिन अवधारणाएं (हार्ड स्पॉट्स)- कठिन अवधारणाओं को पहचान कर और उसका विश्लेषण करना चाहिए कि, बच्चे इसे क्यों सीख नहीं पा रहे हैं। इसमें टेक्नोलॉजी हमारी क्या और कैसे मदद कर सकती है। इन चीजों को हम टेक्नोलॉजी के माध्यम से आसानी से दिखाकर समझने और सीखने के अवसर उपलब्ध करवा सकते हैं।

जरा सोचिए- आपके विद्यालय में आईसीटी का उपयोग किस प्रकार से किया जा रहा है?

आईसीटी के उपयोग–

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी हैं - आईसीटी शिक्षा के लिए सार्वभौमिक पहुंच, शिक्षा में समानता, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और घर पर छात्रों को पढ़ाने में योगदान कर सकता है। छात्रों के अलावा, आईसीटी बड़ों के लिए संदेश भेजने, विभिन्न विषयों पर जानकारी एकत्र करने आदि में भी सहायक है।

NEP 2020, के सन्दर्भ में 'ऑनलाइन/ डिजिटल शिक्षा की हानियों को कम करते हुए हम कैसे इससे लाभ उठा सकते हैं?', मध्यप्रदेश ने आई.सी.टी. के उपयोग से शिक्षको में नए शैक्षणिक कौशल उभर कर आए हैं। कुछ शिक्षकों द्वारा विभिन्न प्लेटफॉर्म एवं एप के माध्यम से ऑनलाइन कक्षाओं व मीटिंगों का आयोजन किया जा रहा है। जैसे- गूगल मीट, जूम ऐप, वेबसाइट सहित कई तरह के प्लेटफॉर्म के माध्यम से बच्चों को ऑनलाइन पढ़ाई कराई जा रही है। चलिए समझते हैं कि ऑनलाइन शिक्षण के दौरान बच्चों से जुड़ने में क्या ध्यान रखें -

गतिविधि –

- नीचे की सूची में टिक (सही या गलत) कर के यह पहचानें कि कौन से तरीके ऑनलाइन शिक्षण के दौरान बच्चों से जुड़ने में मददगार हैं।

  - शुरुआत में बच्चों से उनके हालचाल पूछना (.........)
  - कक्षा को रोज़ उसी समय शुरू करना (.........)
  - बच्चों को सबसे पहले उस दिन किए जाने वाले कार्य के बारे में बताना (.........)
  - बच्चों के अनुभव, विचार और भावनाओं को जानने की कोशिश करना (.........)
  - अपनी ओर से पिछ्ली कक्षा का सारांश प्रस्तुत करना (.........)
  - बच्चों को साथियों से बात करने के मौके देना (.........)
  - अपनी बातों को समय-समय पर दोहराना (.........)
  - बच्चों की घरेलू प्रक्रियाओं और अनुभवों से जोड़कर अपना शिक्षण करना (.........)
  - बच्चों की भागीदारी को अधिक महत्व देना (.........)

प्रश्न - कई बार ऑनलाइन या आमने-सामने वाली कक्षा में कई बच्चे बोलते नहीं हैं तो हम कैसे बच्चों को प्रोत्साहित करें कि वो बोलने से डरे नहीं और स्वतंत्र होकर बोलें?

जवाब लिखें -

....
....
....
....
....
....
....
....
....

प्रश्न - ऑनलाइन में शिक्षक ही बोलते रहते हैं बच्चों को सुन नहीं पाते इसे कैसे बदला जाए?

जवाब लिखें -

....

....

....

....

....

....

....

....

हमने जाना –

- कक्षा संचालन ऑनलाइन हो या फेस टू फेस उसे सक्रिय सहभागिता के साथ करना, बच्चों को अपनी बातें कहने का मौका देना, प्रश्न पूछने का अवसर व प्रोत्साहन देना आवश्यक है।
- हर बार हर एक बच्चे को मौका देना कठिन है। इसलिए कभी-कभी लॉटरी निकाल कर कुछ बच्चों को मौका दे सकते हैं और फिर अलग-अलग समय अलग-अलग बच्चों को, ताकि हर हफ्ते सभी को अपना काम प्रस्तुत करने का मौका कम से कम एक बार मिल जाए। यह बहुत ज़रूरी है कि किसी भी बच्चे को ऐसा ना लगे कि वह छूट गया है।
- ऑनलाइन हो या आमने-सामने, बच्चों में हिचक और डर दूर करना बहुत जरूरी है।
- बच्चों को प्रश्न पूछने और अभिव्यक्ति के मौके देना, जहां वे अपनी बात कह सकें।
- मुस्कुराने और हंसने की स्थितियां पैदा करना।
- **आमने-सामने वाली कक्षा में जो बातें हमें बच्चों से जोड़ती हैं वे ही ऑनलाइन कक्षा में भी आवश्यक हैं।**

ICT उपयोग की सीमाएं, विचारणीय प्रश्न –

क्या सभी विषय वस्तुओं के शिक्षण या अधिगम के लिए आई.सी.टी. का उपयोग करना आवश्यक है?

....

....

....

....

....

- कुछ मामलों में विषयवस्तु के स्वरूप को देखते हुए आई.सी.टी. का उपयोग करना आवश्यक नहीं है। उदाहरण के लिए, भोजन के बारे में पढ़ाते समय विद्यार्थियों को तस्वीरों के माध्यम से नहीं, बल्कि वास्तविक खाद्य पदार्थ या उनके द्वारा खाने के डिब्बों में लाए गए भोजन या स्कूल में दोपहर में परोसे गए भोजन के माध्यम से समझाना ज़्यादा कारगर साबित होगा।
- इसी तरह पौधों के अलग-अलग भागों को पढ़ाने के दौरान, बेहतर यही होगा कि विद्यार्थियों को असली पौधे दिखाए जाएँ और पौधों को छूने, उनकी पत्तियों, शाखाओं, तने, जड़ों/कलियों आदि की सरंचना व बनावट को महसूस करने के अवसर दिए जाएं। साथ ही उन्हें स्वयं एक गमले/बोतल/गिलास में बीज बोने, पौधों को पानी देने, सूरज की रोशनी दिखाने, पूरी अंकुरण प्रक्रिया और बीज से बीज तक की यात्रा को देखने व उसका अवलोकन करने के अनुभव भी दिए जा सकते हैं।
- इस तरह का अनुभवात्मक शिक्षण कक्षा के प्रत्येक विद्यार्थी के लिए एक यादगार अनभुव होगा, जो पीपीटी, वीडियो और मल्टी मीडिया द्वारा शिक्षण कराए जाने से कहीं बेहतर विकल्प है।
- कुछ मामलों में विषयवस्तु के स्वरूप के आधार पर सही मीडिया/तकनीक का चयन करना भी महत्त्वपर्णू है, इसलिए मीडिया/तकनीक का चयन करते समय जिन प्रश्नों पर विचार किया जाना चाहिए, वे निम्न हैं -

  - क्या आई.सी.टी. किसी विशेष सामग्री को सिखाने और सीखने के लिए आवश्यक है?

  - यदि हाँ, तो किस प्रकार के आई.सी.टी./मीडिया माध्यमों का उपयोग किया जाना चाहिए?

विषय वस्तु के स्वरूप, मीडिया का चुनाव और इस विशेष मीडिया को चुनने का मूलकारण क्या है, इसे समझने के लिए तालिका देखें –

क्रम सं	विषयवस्तु	विषयवस्तु का स्वरूप	मीडिया जिसका प्रयोग किया जा सकता है	मीडिया प्रयोग करने का मूल कारण
1.	एक ठोस सिलेंडर के सतही- भाग को परिभाषित करना (कक्षा 6)	वैचारिक	वीडियो प्रदर्शन	यहाँ, विद्यार्थियों को समझाना होगा कि एक ठोस सिलेंडर के सतही-भाग का निर्धारण कैसे किया जाता है। यहाँ अपने आप में एक श्रव्य माध्यम पर्याप्त नहीं होगा, क्योंकि विद्यार्थियों को सिलेंडर और उसकी विभिन्न सतहों की कल्पना करनी होगी। एक वीडियो प्रदर्शन, जिसमें दिखाया गया हो कि सिलेंडर में दो वृत्त होते हैं और एक आयत, ज्यादा बेहतर व असरदार तरीका हो सकता है।
2.	पाचनतंत्र के कार्य (कक्षा 7)	प्रक्रियात्मक	एनिमेशन वीडियो/संवर्धित वास्तविकता (एक ऐसी तकनीक, जो वास्तविक दुनिया की सूचना को कंप्यूटर द्वारा उत्पन्न छवियों और विषयवस्तु को साथ मिलाती है और किसी कंप्यूटर स्क्रीन और मोबाइल फोन ब्राउज़र पर मिला कर प्रस्तुत की जाती है जिससे उपयोगकर्ता को एक सहभागी अनुभव मिलता है) आधारित मोबाइलएप्स, जैसे– एनाटॉमी(शरीर रचना विज्ञान) 4D, बायोडिजिटल मानव, आदि।	सामग्री ऐसी होनी चाहिए कि विद्यार्थी एक प्रक्रिया को समझ सकें, इसलिए केवल दृश्य या श्रव्य माध्यमों से सही ढंग से सीखना संभव नहीं है। अगर एक एनिमेटेड वीडियो या संवर्धित वास्तविकता आधारित साधन का उपयोग भोजन की पाचन प्रक्रिया को चित्रित करने के लिए किया जाता है, तो छात्र इसे बेहतर ढंग से समझ पाएँगे।

आई.सी.टी. को उपयोग करने के लिए विषयवस्तु के स्वरूप को समझना आवश्यक है। एक उपयुक्त ढंग से चयन करने के लिए शिक्षक को विषयवस्तु के साथ-साथ विभिन्न आई.सी.टी./मीडिया माध्यमों का ज्ञान भी होना चाहिए।

अब हम देखते हैं कि मध्यप्रदेश के एक शिक्षक ने ICT का उपयोग कर बच्चों के अधिगम को कैसे सुनिश्चित किया।

सफलता की कहानी – शासकीय माध्यमिक विद्यालय गेहूंखेड़ी, नरसिंहगढ़, राजगढ़, मध्यप्रदेश

शिक्षण में टेक्नोलॉजी का प्रयोग कर विद्यालय में रुचि पूर्ण माहौल बनाने के लिए आईसीटी का उपयोग कर छात्रों को विद्यालय में एक नयापन देने की कार्ययोजना तैयार की। अगले दिन विद्यालय में उपस्थित छात्रों को हमने सर्वप्रथम टैबलेट के माध्यम से एक फिल्म तारे जमीन पर दिखाई। हमने नोटिस किया सभी छात्र बहुत उत्सुकता पूर्वक फिल्म देख रहे थे। फिल्म समाप्त होने के बाद हम ने छात्रों की समझ जानने हेतु कुछ खुले प्रश्न किए। जैसे -

- फिल्म में छोटा बच्चा ईशान पढ़ाई क्यों नहीं कर पाता था?,
- वह बच्चा ईशान याद किया हुआ क्यों भूल जाता था?,
- उसके शिक्षकों ने उसके साथ कैसा व्यवहार किया?,
- उसके चित्रकला के शिक्षक ने उसके साथ कैसा व्यवहार किया?,
- अगर आप ईशान की जगह होते तो क्या करते? आदि।

हम आश्चर्य से देख रहे थे, कि अधिकांश बच्चे उत्सुकता पूर्वक प्रश्नों के उत्तर दे रहे थे। हमारा प्रयोग सफल होता दिख रहा था। तभी हमने तय कर लिया कि हम कक्षा शिक्षण में भी आईसीटी का उपयोग करेंगे और पढ़ाई को आसान बनाने के लिए, तकनीकी एवं गतिविधि आधारित शिक्षण का उपयोग करेंगे। हम प्रतिदिन घर पर पाठ्यक्रम के कंटेंट आधारित वीडियो तैयार करते। अगले दिन कक्षा में उनको टेबलेट के माध्यम से वीडियो दिखाते। कहानियों को अपनी

टेबलेट से अध्ययन करते छात्र

(TLM से करके सीखते छात्र)

आवाज में ऑडियो और वीडियो के रूप में तैयार कर छात्रों के पास उनके पेरेंट्स के मोबाइल पर पहुंचाते हैं। छात्र प्रतिदिन घर पर वीडियो देखकर अगले दिन प्रश्न मंच प्रतियोगिता के माध्यम से फीडबैक देते हैं। लेकिन हमें यहां भी एक समस्या है कि केवल 15 प्रतिशत से 20 प्रतिशत अभिभावकों के पास ही स्मार्ट फोन है। शेष छात्रों को हम अपने मोबाइल टेबलेट आदि के माध्यम पढ़ाई करवाते हैं।

इस प्रकार शिक्षण में टेक्नोलॉजी के उपयोग से हमें भी बहुत से नए-नए आइडिया पर काम करने का मौका मिला ।

छात्रों के पाठ्यक्रम से किसी कंटेंट को समझाने के लिए उसका वीडियो तैयार करना फिर कक्षा में उसका प्रस्तुतीकरण करना हमारे शैक्षणिक कौशल को भी बढ़ाने में मददगार साबित हुआ। हमारे छात्रों की नेतृत्व क्षमता बढ़े, उनमें प्रस्तुतीकरण स्किल डेवलपमेंट हो, इसके लिए अवसर उन्हें प्रदान किए। कक्षा में 1 दिन निर्धारित किया, जिसमें पूरे समय कक्षा का संचालन छात्र खुद करते हैं। हमारे द्वारा तैयार वीडियो ऑडियो आदि पर समूह में चर्चा करते है। छात्रों के लिए यह नया प्रयोग बहुत ही आकर्षित लगा।

छात्र आईसीटी के प्रयोग के साथ-साथ टीएलएम के माध्यम से खुद करके सीखने लगे। जिससे उनका लर्निंग लेवल भी बढ़ने लगा। प्रारंभ में बेसलाइनटेस्ट का परिणाम 30 प्रतिशत से 40 प्रतिशत रहता था जो एण्डलाइन टेस्ट तक 100 प्रतिशत के लगभग परिणाम प्राप्त होने लगा। रुचिपूर्ण माहौल में सीखने के अवसर मिलने से छात्र-छात्राएं प्रसन्नता पूर्वक अन्य शैक्षणिक और सह शैक्षणिक गतिविधियों में भी बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं।

जरा सोचिये

1) इस केस स्टडी में सीखने- सिखाने की प्रक्रियाओं में आईसीटी के उपयोग में नेतृत्वकर्ता की क्या भूमिका थी? आपने जिन तीन प्रमुख भूमिकाओं को पहचाना उन्हें लिखिए -

....

....

....

....

....

2) अगर आप यहाँ विद्यालय प्रमुख होते तो ICT का बेहतर उपयोग कैसे करवाते ? आप अपने शिक्षक साथियों से चर्चा करके कोई 5 पॉइंट लिखिए -

....

....

....

....

....

समेकन

इस भाग में, हमें पता चला कि विद्यालय प्रमुख को कल्पनाशीलता से सारे विकल्पों को खोजकर, उचित विकल्प का चयन कर, समस्या समाधान करना होगा । जिस प्रकार इस केस स्टडी में विद्यालय नेतृत्वकर्ता द्वारा ICT के उपयोग हेतु पहल की गई है, जिसके परिणाम स्वरूप बच्चों का प्रदर्शन बेहतर हुआ और पालकों का भरोसा भी बढ़ा।

प्रत्येक विद्यालय के संदर्भ एवं स्थितियां भिन्न-भिन्न होती हैं, अतः अपने विद्यालय के लिए साथी अध्यापकों, छात्रों तथा समुदाय के लोगों के साथ मिलकर गुणवत्तापरक शिक्षा की योजना बनाते समय अपने विद्यालय के संदर्भों का विशेष ध्यान रखें। छात्रों के अधिगम में सुधार हेतु प्रत्येक क्षेत्र के कुशल संचालन के लिए रणनीतियां बनाएं जिससे छात्रों के लिए अर्थपूर्ण अधिगम अवसर सृजित कर सकें, जिससे उनके अधिगम और उनकी दक्षताओं में वृद्धि हो सके। जिससे विद्यार्थी कक्षा अनुरूप सीखने के प्रतिफल हासिल कर सकें। इस हेतु फेस टू फेस और ऑनलाइन क्लास, टीचर, पेरेंट्स व SMC मीटिंग हेतु 'वर्चुअल मीटिंग' में भी ICT का उपयोग किया जा सकता है।

कुछ वीडियो के लिंक आगे दिए जा रहे हैं, जिन्हें आप अपनी सुविधानुसार जरूर देखें –

क्रमांक	कंटेंट	वीडियो लिंक
1	मोहल्ला क्लास में ICT का प्रयोग स्मार्ट कक्षा शिक्षण	https://youtu.be/3OBEmV53rcA
2	TLM द्वारा गतिविधि आधारित शिक्षण एवं टेबलेट के माध्यम से डिजिटल शिक्षण	https://youtu.be/DzNImXZ6L-o
3	लॉकडाउन के समय घर पर बच्चों द्वारा TLM से गतिविधि आधारित शिक्षण	https://youtu.be/WqFXVlSZkp4
4	लॉकडाउन में ICT के उपयोग से छात्रों के लिए स्वनिर्मित शिक्षण वीडियो	https://youtu.be/io5RRg_gBHA
5	लर्निंग आउट कम्स आधारित गतिविधि, गति के प्रकार एवं दूरियों का मापन	https://youtu.be/xuTbdqJibDk

आईसीटी के शैक्षिक उपयोग हेतु कुछ महत्त्वपूर्ण वेबसाइट –

1. **सभी विषय–** एनसीईआरटी के एनआरओईआर और एनसीटीई के राष्ट्रीय शिक्षक मंच जैसे सार्वजनिक मंचों पर अब विभिन्न प्रकार के खुले शैक्षिक संसाधन उपलब्ध हैं, जिनका उपयोग देश के सरकारी स्कूलों में ज्ञान के उन्नयन और मौजूदा प्रथाओं से सीखने के लिए किया जा सकता है।
   https://nroer.gov.in
2. www.ncert.nic.in
3. सभी विषय www.educationportal.mp.gov.in
4. सभी विषय https://repository.education.gov.in/

5. **गणित**

Online Math Tests http://www.math-tests.com

खान अकादमी, मुफ्त ऑनलाइन पाठ्यक्रम, पाठ और अभ्यास

https://www.khanacademy.org
https://www.aaamath.com/

6. **विज्ञान**

www.chem4kids.com
www.scienceforgirls.com

7. **इंग्लिश**

ग्रामर (व्याकरण) की गलतियों से छुटकारा
www.grammarly.com

8. **भूगोल**

गूगल अर्थ -
https://earth.google.com
www.mapsofindia.com

9. **Shikshak Parv 2021 :** Technology in Education: NDEAR

https://www.youtube.com/watch?v=hCrBLsR82w4 आदि।

भाग 3 :
शिक्षण-अधिगम में आईसीटी के उपयोग हेतु संस्था प्रमुख की भूमिका

उद्देश्य :

सीखने- सिखाने की प्रक्रियाओं के लिए आईसीटी के उपयोग में नेतृत्वकर्ता की भूमिका को समझ सकेंगे।

परिचय

यह भाग प्रधानाध्यापक के रूप में आप अपने विद्यालय में आई.सी.टी. के उपयोग हेतु नेतृत्व कैसे कर सकते हैं इसे समझने के अवसर देता है। साथ ही शिक्षण-अधिगम में आईसीटी के उपयोग हेतु संस्था प्रमुख की भूमिका समझने हेतु मार्गदर्शन भी प्रदान करता है ।

प्रश्न – आप के शाला में अब तक (कोविड-19 से पहले, उस दौरान या बाद में) ICT के कौन-कौन से प्रयोग किए गए हैं ? उनकी सूची बनाइए।

....

....

....

....

आइए जानें मध्यप्रदेश में आईसीटी के उपयोग के लिए क्या-क्या पहल की गई –

1. हेड स्टार्ट समाधान (राज्य शिक्षा केंद्र भोपाल),
2. राजीव गांधी एजुसेट समर्थित प्रारंभिक शिक्षा परियोजना, इग्नू नई दिल्ली,
3. MP EduSat,
4. सीएम राइज (CM Rise) एवं दीक्षा पर ऑनलाइन शिक्षक प्रशिक्षण,
5. निष्ठा ऑनलाइन प्रशिक्षण,

6. अब पढ़ाई नहीं रुकेगी- हमारा घर हमारा विद्यालय,
7. रेडियो, टीवी-दूरदर्शन म.प्र.,
8. मोबाइल, व्हाट्सएप DigiLEP whatsapp,
9. व्हाट्सएप आधारित मूल्यांकन,
10. वर्चुअल चर्चा (फेसबुक एवं यूट्यूब लाइव),
11. ऑनलाइन क्लास एवं BRCC, BAC, CAC का यूनिसेफ के सहयोग से ऑनलाइन अकादमिक प्रशिक्षण,
12. वर्कबुक एवं पाठ्यपुस्तकें तथा पठन सामग्री (पुस्तकालय की पुस्तकों का उपयोग),
13. मॉनिटरिंगकर्ताओं का ऑनलाइन प्रशिक्षण (विडियो, फोटो, लिकं आधारित मॉनिटरिंग),
14. नियमित कक्षा शिक्षण में ICT का उपयोग आदि।

बतौर प्रधानाध्यापक विद्यालय में ICT का माहौल बनाने हेतु निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें –

1. स्कूल में आई.सी.टी. की कौन-कौन सी सुविधाएं उपलब्ध हैं?
2. बतौर प्रधानाध्यापक आप स्कूल के शिक्षकों को आई.सी.टी. का उपयोग करने के लिए कितना प्रेरित करते हैं?
3. शिक्षकों के पास कौन-कौन सी आई.सी.टी. दक्षताएँ हैं?
4. क्या सभी विद्यार्थी आई.सी.टी. का उपयोग कर सकते हैं?
5. क्या उपलब्ध सुविधाओं और विद्यार्थियों की जरूरत के आधार पर आई.सी.टी. के उपकरण चुने गए हैं?

....

....

....

....

ध्यान रखने योग्य बिंदु –

- आई.सी.टी. उपकरण/मीडिया केवल तभी कारगर साबित होते हैं जब इसका उपयोग विषयवस्तु और शिक्षण-अधिगम पद्धति के साथ उचित रूप से किया जाता है।
- आई.सी.टी. द्वारा उन विषय वस्तुओं को दिखाया जा सकता है, जिन्हें कक्षा में आसानी से सुलभ नहीं कराया जा सकता।
- अतः यह प्रधानाध्यापक और शिक्षक पर निर्भर करता है कि वह अपने विद्यालय में शिक्षण-अधिगम पद्धति पर आधारित उपयुक्त माध्यम का उपयोग करें।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के रूपरेखा 2005; पेज X में लिखा है कि प्रत्येक स्कूल को कंप्यूटर, हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर और कनैक्टिविटी मुहैया कराने जैसी ढ़ाँचागत चुनौतियों का सामना करने की ज़रूरत है।

प्रधानाध्यापक के कर्तव्य –

1. आईसीटी उपकरणों की आवश्यकतानुसार व्यवस्था,
2. उपकरणों की सुरक्षा, मरम्मत की व्यवस्था,
3. समय सारणी में सभी विद्यार्थियों के लिए आईसीटी की व्यवस्था,
4. शिक्षकों को आईसीटी का प्रशिक्षण,
5. विद्यार्थियों को साइबर सुरक्षा की व्यवस्था।

जैसे-जैसे तकनीकी विकास हो रहा है, साइबर जगत में सुरक्षा को लेकर खतरे भी बढ़ गये हैं। यह नीति निर्माताओं पाठ्यक्रम निर्माताओं, विद्यालय प्रशासकों और शिक्षकों का दायित्व है कि वे साइबर, सुरक्षा उपायों, साइबर के नियम, साइबर कानूनों आदि के बारे में जागरूक हों और विद्यार्थियों में भी जागरूकता पैदा करें।

1) अपने विद्यालय के ICT के प्रभावी उपयोग के लिए आपकी क्या योजना होगी, उसे लिखें?

....

....

....

....

....

2) आईसीटी में वे कौन से तत्व हैं जो आप शिक्षक साथियों को सिखा सकते हैं? जिसका उपयोग बच्चे भी कर सकें।

....

....

....

....

....

आईसीटी के प्रयोग के दौरान कक्षा में शिक्षक की भूमिका – आईसीटी के प्रयोग के दौरान कक्षा में शिक्षक की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण होती है। क्योंकि केवल मोबाइल, टैबलेट, कम्प्यूटर, टीवी या रेडियो को चलाने मात्र से अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसी को ध्यान में रखते हुए प्रधानाध्यापक साथी शिक्षक के साथ कक्षा में शिक्षक की भूमिका पर बातचीत करते हैं और आवश्यक सुझावों के आदान प्रदान से कक्षा में अध्यापन के दौरान शिक्षण को बेहतर एवं रोचक बनाने का प्रयास करना होता है। छात्रों की समझ को जांचने हेतु उन्हें भी मोबाइल एवं टेबलेट पर गतिविधि करने के अवसर देना होता है। कुछ बच्चों को इसमें कठिनाई भी होती है। कुछ बच्चे संकोच के

कारण करने में झिझकते भी हैं। लेकिन शिक्षक को उन्हें अवसर प्रदान कर उनके प्रयासों को प्रोत्साहित करना होता है। जिससे उनकी झिझक दूर हो और वे भी उत्साह पूर्वक खुद करके समझ सकें। इतना ही नहीं उचित ICT के टूल का चयन भी सावधानीपूर्वक करना होता है। कहाँ उपयोग करना है? कहाँ नहीं करना है और जहाँ करना है उसके तरीके क्या होंगे आदि पर आपसी सहमति से पहल करना होता है।

समेकन

अब तक हमनें समझा कि विषयवस्तु और शिक्षणशास्त्र के साथ आई.सी.टी. समेकित करना शिक्षकों की दक्षताओं पर निर्भर करता है। हो सकता है कि अधिकांश कक्षाएं पूरी तरह से आई.सी.टी. आधारित सत्र न हों, बल्कि वह मिश्रित कक्षाएं हों, जिसमें आई.सी.टी. आधारित गतिविधियों को पारंपरिक शिक्षण/ सीखने के अनुभवों के साथ मिश्रित किया जाता है। अभ्यास और शिक्षणशास्त्र, प्रौद्योगिकी और विषय ज्ञान (तकनीकी शिक्षा शास्त्र और विशेष टॉपिक) पर आधारित आई.सी.टी. को एकीकृत करने का कौशल शिक्षण, सीखने और मूल्यांकन में मदद करता है। आई.सी.टी. का समेकन इस तरह सार्थक होना चाहिए कि यह किसी अन्य पारंपरिक शिक्षण सहायक या विकल्प बनने के बजाय शिक्षार्थियों द्वारा ज्ञान के सृजन को बढ़ावा दें। इसे निम्नलिखित तरीके से समझ सकते हैं।

बतौर प्रधानाध्यापक हम यह भी कर सकते हैं –

- साथ काम करने वाले शिक्षक और कर्मचारी, छात्रों को सर्वश्रेष्ठ बनाने के लिए प्रेरित करेंगें।
- स्वयं की क्षमता बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रशिक्षणों (ऑनलाइन /ऑफलाइन), व्याख्यानों में सहभागिता करेंगें।
- विभिन्न विद्यालयी गतिविधियों के सुचारू संचालन हेतु लगातार शिक्षक साथियों द्वारा किये जा रहे काम का अवलोकन करेंगें और उसके आधार पर समीक्षा बैठक का आयोजित करेंगें।
- समग्र शिक्षा के अंतर्गत- पूर्व प्राथमिक शिक्षा, पढ़े भारत बढ़े भारत, स्कूलों में पुस्तकालयों, खेलों, इत्यादि को बढ़ावा देंगे।
- स्कूली शिक्षा में सुधार लाने के लिए आवश्यकतानुसार पहल करेंगे तथा अपने विद्यालय की बेस्ट प्रैक्टिसेज (best practices) को अन्य विद्यालयों तक प्रसारित करेंगे।

हम आशा करते हैं, शिक्षण-अधिगम और प्रौद्योगिकी में नेतृत्वकर्ता द्वारा विद्यालयी शिक्षा में किए जा रहे प्रयासों के बारे में आपकी समझ और आपका ज्ञान विद्यार्थियों तक इन प्रयासों और अपेक्षाओं को पहुंचाने में बहुत लाभकारी सिद्ध होगा और इससे स्कूली गुणवत्ता को बढ़ावा मिलेगा।

सन्दर्भ

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
- National Centre for School Leadership (NCSL)
- प्रधानाध्यापक क्षमता विकास प्रशिक्षण- प्रशिक्षण मॉड्यूल (यूनिसेफ के सहयोग से राज्य शिक्षा केंद्र द्वारा निर्मित वर्ष 2018)

- निष्ठा प्रशिक्षण पैकेज- NISHTHA (National Initiative for School 'Heads and Teachers' Holistic Advancement)
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF 2005)
- NCERT द्वारा निर्मित 'प्रज्ञाता डिजिटल शिक्षा के लिए दिशा-निर्देश'

वेबसाइट –

https://itpd.ncert.gov.in/
http://ncsl.niepa.ac.in/
http://pslm.niepa.ac.in/
http://www.educationportal.mp.gov.in/

श्रव्य-दृश्य संसाधनों की सूची

1. ऑनलाइन और डिजिटल शिक्षा-प्रौद्योगिकी का न्यायसम्मत उपयोग सुनिश्चित करना भाग 3-24
   https://www.youtube.com/watch?app=desktop&v=EY-Vor6ha8c
2. कक्षा शिक्षण में ICT का उपयोग- कंदुक खल्लीका संधि, हिंज संधि एवं मानव कंकाल
   https://www.youtube.com/watch?app=desktop&v=DzNImXZ6L-o&feature=youtu.be
3. गतिविधि आधारित शिक्षण TLM के माध्यम से घर पर पढ़ाई
   https://www.youtube.com/watch?app=desktop&v=WqFXVlSZkp4&feature=youtu.be
4. Shikshak Parv 2021 : Technology in Education: NDEAR
   https://www.youtube.com/watch?v=hCrBLsR82w4

अतिरिक्त पठन सामग्री – बतौर नेतृत्वकर्ता हमें आईसीटी के उपयोग में कुछ सावधानियां रखनी चाहिए। इसे जानने-समझने लिए NCERT द्वारा निर्मित **'प्रज्ञाता डिजिटल शिक्षा के लिए दिशा-निर्देश'** को जरूर पढ़ें। आप लिंक पर क्लिक करके डॉक्यूमेंट प्राप्त कर सकते हैं -

https://ncert.nic.in/pdf/announcement/PRAGYATA_Guidelines_hindi.pdf

निष्ठा प्रशिक्षण मॉड्यूल 6 – शिक्षण, अधिगम और आकलन में आई.सी.टी. का समाकलन
https://itpd.ncert.gov.in/pluginfile.php/1508510/mod_label/intro/Module%206%20-%20Shikshan%2C%20Adhigam%20aur%20Aaklan%20men%20ICT.pdf

मॉड्यूल के आकलन हेतु बहुविकल्पीय प्रश्न –

1) आईसीटी का फुल फॉर्म क्या होता है ?

- इंटरनेशनल कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी
- इंडियन कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी

- **इन्फर्मेशन एंड कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी**
- उपरोक्त में से कोई नहीं

2) अधिगम एवं शिक्षण के लिए आई.सी.टी (ICT) क्यों महत्त्वपूर्ण है?

- शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए
- पारंपरिक विधि में बदलाव के लिए
- गुणवत्ता में सुधार के लिए
- **उपरोक्त सभी**

3) आईसीटी कैसे अधिगम शिक्षण और मूल्यांकन में सहयोग देता है?

- स्वयं निर्धारित गति से अधिगम और अवधारणा निर्माण को प्रोत्साहित करता है
- श्रव्य-दृश्य सहित ज्ञानेंद्रिय ग्रहणशील रणनीति प्रदान करता है
- इससे अधिगम की वृद्धि होती है
- **उपरोक्त सभी**

4) इस मॉड्यूल का अध्ययन करने के बाद प्रधानाध्यापक/ शिक्षक .....

- आईसीटी का अर्थ स्पष्ट कर सकेंगे
- विषय वस्तु के मूल स्वरूप और शिक्षण अधिगम की नीतियों के अनुकूल उपयुक्त शिक्षण साधनों की पहचान कर सकेंगे
- आईसीटी का कब उपयोग करना है जान सकेंगे
- **उपरोक्त सभी**

5) आईसीटी उपयोग किया जाता है....

- सूचनाओं के निर्माण में
- सूचनाओं के संग्रहण में
- सूचनाओं के प्राप्त तथा साझा करने में
- **उपरोक्त सभी**

6) स्मार्टफोन एक आईसीटी उपकरण है क्योंकि.....

- इसका उपयोग एक डिजिटल इमेज बनाने में किया जा सकता है
- इमेज को जब भी आवश्यक हो संग्रहित और पुनः प्राप्त करने के लिए किया जा सकता है
- जरूरत के अनुसार डिजिटल इमेज में बदलाव भी किया जा सकता है और उसे दूसरों को भेज कर उस पर प्रतिक्रिया भी प्राप्त की जा सकती है
- **उपरोक्त सभी**

7) शिक्षक आई.सी.टी. का विवेकपूर्ण ढंग से उपयोग करने में तभी सक्षम होंगे जब.....

- वह विषय वस्तु का विश्लेषण कर पाए तथा उसके अनुरूप उपयुक्त मीडिया का चयन कर सके
- उसे उचित ढंग से विद्यार्थियों के सामने प्रस्तुत कर सकें, जिससे विद्यार्थी आसानी से विषय वस्तु समझ सके
- **उपरोक्त दोनों**
- इनमें से कोई नहीं

8) आईसीटी में मानव संसाधन से क्या तात्पर्य है......

- शिक्षकों को तकनीकी जानकारी की उपलब्धता
- आईसीटी को ठीक तरह से समझ पाने में शिक्षकों की योग्यता
- **उपरोक्त दोनों**
- इनमें से कोई नहीं

9) आईसीटी आधारित कक्षा का निर्माण करने के लिए किन बातों पर विचार करना चाहिए ?

- स्कूल में आईसीटी की कौन सी सुविधाएं उपलब्ध हैं
- स्कूल प्रधानाध्यापक शिक्षकों को आईसीटी का उपयोग करने के लिए कितना प्रेरित करते हैं
- शिक्षकों के पास कौन-कौन सी आईसीटी दक्षताएँ हैं
- क्या सभी विद्यार्थी आईसीटी का उपयोग कर सकते हैं
- क्या उपलब्ध सुविधाओं और विषय की आवश्यकता के आधार पर आईसीटी उपकरण चुने गए हैं
- **उपरोक्त सभी**

10) ई-पाठशाला है.....

- हर समय और हर जगह निःशुल्क उपलब्ध
- **सभी**
- सभी शैक्षिक ई संसाधनों जैसेः पाठ्यपुस्तकें, ऑडियो, वीडियो, पत्र-पत्रिका और अन्य प्रिंट और नान प्रिंट किस्म के शैक्षिक ई संसाधनों का प्रदर्शन और प्रसार
- एक वेब पोर्टल या मोबाइल ऐप जो छात्रों, शिक्षकों, माता-पिता और शोधकर्ताओं के लिए शैक्षिक संसाधन उपलब्ध कराता है।

लेखक का नाम
सी. पी. शर्मा
डाइट नीमच (म.प्र.) एवं मॉडयूल लेखन
टीम जिला नीमच

मेंटर/ एक्सपर्ट का नाम
अश्विनी कुमार त्रिपाठी
शिक्षा सलाहकार (यूनिसेफ), भोपाल, म.प्र.
मोबाइल- +91-9479315133
ई मेल- ashwanitripathiedu@gmail.com

❑ ❑ ❑

मॉड्यूल – आदिवासी क्षेत्रों की शालाओं में अपेक्षित नेतृत्व

भाग – 1

आदिवासी बच्चों की स्कूल से बाहर की चुनौतियों को समझना

भाग – 2

आदिवासी बच्चों की स्कूल के अंदर की चुनौतियों को समझना

भाग – 3

प्रधानाध्यापक होने के नाते शाला में किये जाने वाले प्रयास

शीर्षक : आदिवासी क्षेत्रों की शालाओं में अपेक्षित नेतृत्व

उद्देश्य :

1. आदिवासी समुदाय के बच्चों को सीखने–सिखाने के दौरान आने वाली चुनौतियों को समझ पाएंगें।
2. बतौर प्रधानाध्यापक इन चुनौतियों से जूझने के लिए कुछ विकल्पों का चुनाव कर पाएंगें।

परिचय

भारत, विश्व में सबसे अधिक आदिवासी जनसँख्या वाले देशों में से एक है। जनगणना 2011 के अनुसार भारत की जनसँख्या का लगभग 8 प्रतिशत हिस्सा आदिवासी समुदायों का हैं। यह वो समुदाय है जो विकास की सीढ़ी पर सबसे निचले पायदान पर खड़ा नजर आता है। यूँ तो भारत में आदिवासी समुदायों के उत्थान के लिए बहुत सी नीतियों तथा दस्तावेजों ने अपनी-अपनी अनुशंसाएं रखी, फिर भी विकास की परिभाषा में आदिवासियों के जीवन मूल्य को अभी भी समाहित नहीं किया जा सका है। खुद आदिवासी भी अपने संवैधानिक अधिकारों से अनभिज्ञ हैं जिसका मुख्य कारण उनका साक्षर नहीं होना है।

जनजातीय कार्य मंत्रालय (मिनिस्ट्री ऑफ ट्राइबल अफेयर्स), भारत सरकार, देश में आदिवासी समुदाय के एकीकृत सामाजिक-आर्थिक विकास पर, विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से कार्य करता है। मंत्रालय विशेष रूप से बनाई गई योजनाओं के माध्यम से महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में विभिन्न विकासात्मक हस्तक्षेपों के माध्यम से अन्य मंत्रालयों के प्रयासों को भी पूरक बनाता है। आदिवासी समुदायों की साक्षरता दर में सुधार हेतु मंत्रालय के अंतर्गत बहुत सी सरकारी योजनाएं क्रियान्वित हैं जैसे- एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय,आश्रम शाला, मेट्रिक-पूर्व छात्रवृत्ति योजना, मेट्रिक-उपरांत छात्रवृत्ति योजना, गैर सरकारी संगठनों के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक विकास, केंद्र और राज्य द्वारा संचालित कस्तुरबा गाँधी बालिका विद्यालय, इत्यादि।

इन सभी योजनाओं के क्रियान्वयन के फलस्वरूप साक्षरता दर में बदलाव तो आये हैं लेकिन अभी एक लम्बा सफ़र तय करना बाकी है। आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (पेरियौडिक लेबर फोर्स सर्वे) 2017-18, सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, के अनुसार आदिवासी समुदाय की साक्षरता दर 67 प्रतिशत रही जो कि राष्ट्रीय दर भारत सरकार प्रतिशत से कम है। लेकिन 2011 सेन्सस में दिए गए आंकड़ों (59%) की तुलना में अधिक है। वहीं 2018-19 की आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (पेरियौडिक लेबर फोर्स सर्वे) की रिपोर्ट में यह दर और अधिक बढ़कर 69.4 प्रतिशत हो गई है। (pib.gov.in/pressReleasePage posted on 22nd Sep 2020)

मध्य प्रदेश में 46 अनुसूचित जनजाति निवास करती हैं जो कि प्रदेश कि कुल आबादी का 21.1 प्रतिशत हैं (सेन्सस 2011) इन सभी जनजातियों में से भील समूह सबसे अधिक प्रचलित हैं जो कि पूरी जनजातीय आबादी

का लगभग 37 प्रतिशत बनाता है। इसके बाद गोंड, कोल, कोरकू, सहरिया और बैगा जनजातियाँ आती हैं। यह 6 जनजाति समूह मिलकर प्रदेश कि आदिवासी जनसंख्या का 92 प्रतिशत पूरा कर देते हैं। इनमें से भील जनजाति सबसे अधिक मात्रा में धार, बड़वानी और खरगोन जिले में पाए जाते हैं, वहीं गोंड जनजाति डिंडोरी, छिंदवाडा, मंडला, बेतूल, सिवनी और शहडोल जिले में निवास करते हैं। कोल, कोरकू, सहरिया और बैगा सबसे अधिक जनसंख्या में रीवा, खंडवा, शिवपुरी और शहडोल में मिलती है। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य जनजाति समूह भी हैं जो प्रदेश के अन्य भागों में निवास करते हैं जैसे; परधान, सौर, भरिया, भूमिया, माझी, खैरवार, मवासी, पनिका इत्यादि।

मध्यप्रदेश सरकार, भारत सरकार द्वारा संचालित सभी कार्यक्रमों का संचालन पूर्ण रूप से कर रही है। इसके बावजूद विभिन्न सर्वेक्षणों में यह देखा गया है कि जनजातीय समूहों के बच्चे शिक्षा की मुख्य धारा से जुड़ने के बावजूद उच्च शिक्षा तक आते-आते कहीं छूट जाते हैं। इसका उल्लेख राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अध्याय 6 'समतामूलक और समावेशी समाज' में भी किया गया है।

अध्याय 6 समतामूलक और समावेशी शिक्षा

एक समतामूलक और समावेशी शिक्षा व्यवस्था स्थापित करना जिससे सभी बच्चों के सीखने और सफल होने के समान अवसर उपलब्ध हों और परिणामस्वरूप वर्ष 2030 तक सभी लैंगिक और सामाजिक वर्गों की शिक्षा में भागीदारी और सीखने के प्रतिफल के स्तर पर समानता सुनिश्चित हो।

आंकड़े बताते हैं कि पिछले तीन दशकों में भारतीय शिक्षा व्यवस्था (और एक के बाद एक आई सरकारी नीतियों ने) स्कूली शिक्षा के हर स्तर पर लैंगिक और सामाजिक वर्गों बीच गैर-बराबरी को दूर करने में काफी हद तक सफलता पायी है। इसके बावजूद ऐतिहासिक रूप से अल्प-प्रतिनिधित्व वाले समूहों के लिए बड़ी असामान्य, विशेषकर माध्यमिक स्तर पर, आज भी मौजूद हैं।

शिक्षा में URGs के अंतर्गत व्यापक रूप से विशेष लैंगिक पहचान (जिनमें महिलाएं और ट्रांसजेंडर शामिल हैं), सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान (जैसे -SC, ST, OBCs, मुस्लिम और प्रवासी समुदाय), विशेष आवश्यकता वाले (जिन्हें सीखने में विशेष चुनौतियाँ पेश आती हैं और विशेष सामाजिक-आर्थिक परिस्तिथियों वाले (जैसे शहरी गरीब) लोग आते हैं। हालांकि कक्षा 1 से 12 तक लगातार ही सकल नामांकन में गिरावट देखी जाती है (जिसका पूरे देश के स्तर पर ही समाधान खोजे जाने की ज़रूरत है और अध्याय 3 में इस पर चर्चा भी की गयी है)। इनमें से कई URGs के सन्दर्भ में नामांकन में गिरावट कहीं ज्यादा नज़र आती है। U-DISE 2016-17 के आंकड़ों के अनुसार SC समुदाय के बच्चों का प्रतिशत जो प्राथमिक स्तर पर 19.6 था, उच्च-प्राथमिक स्तर घटकर 17.3 प्रतिशत रह गया। नामांकन में यह गिरावट ST छात्रों (10.6 प्रतिशत से घटकर 6.8 प्रतिशत), मुस्लिम छात्रों (15 प्रतिशत से घटकर 7.9 प्रतिशत) और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (1.1 प्रतिशत से घटकर 0.25 प्रतिशत)में और भी ज्यादा नजर आती है। इन URGs के अंतर्गत केवल छात्राओं के आंकड़े देखें तो नामांकन में और भी अधिक गिरावट दिखती है। उच्च शिक्षा में URGs के नामांकन में गिरावट और बढ़ जाती है।

6.1.1 अल्प प्रतिनिधित्व वाले समूहों के छात्रों के लिए अध्याय 1-3 में दिए गए नीतिगत प्रावधानों पर जोर अध्याय 1 से 3 में आरंभिक बाल्यावस्था शिक्षा और देखभाल, बुनियादी साक्षरता/गणना और शिक्षा में पंहुच/

नामांकन/उपस्थिति के सन्दर्भ में जिन महत्त्वपूर्ण शैक्षिक मुद्दों को उठाया गया है वे URGs के विद्यार्थियों के सन्दर्भ में विशेष रूप से प्रासंगिक है। अध्याय 1-3 में वर्णित नीतिगत कदमों पर URGs के छात्रों के सन्दर्भ में विशेष बल दिया जाएगा।

6.1.2 विशिष्ट शिक्षा क्षेत्र (स्पेशल एजुकेशन ज़ोन) स्थापित करना- देश भर के वंचित क्षेत्रों में विशिष्ट शिक्षा क्षेत्र स्थापित किये जाएंगे। यह देखा गया है कि मानव विकास सूचकांकों में राष्ट्रीय औसत से बेहतर प्रदर्शन करने वाले राज्यों में भी विकास को लेकर क्षेत्रीय असमानताएँ हैं। आंकड़े दर्शाते हैं कि कुछ भौगोलिक क्षेत्रों में URGs के छात्र अपेक्षाकृत काफी अधिक संख्या में हैं। राज्यों को प्रोत्साहित किया जाएगा कि वे सामाजिक विकास और सामाजिक-आर्थिक सूचकांकों के आधार पर कुछ निश्चित क्षेत्रों (जैसे कि मध्यप्रदेश के आदिवासी क्षेत्र) को स्पेशल एजुकेशन ज़ोन का दर्जा दें।

– राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

अनुसूचित जनजाति की शिक्षा से सम्बंधित बहुत से शोध तथा पर्चे बच्चों की शिक्षा से दूरी को दर्शाते हैं। रानी, एम (2000) अपने शोध में पाया कि अनुसूचित जनजाति के बच्चों की शिक्षा में आने वाली सबसे बड़ी समस्या भाषा है। क्योंकि यह बच्चे सीखने सिखाने की प्रक्रिया में शिक्षकों के साथ जुड़ने में असमर्थ हो जाते हैं, वही इनके स्कूल से दूरी का कारण बन जाता है। वैद्यनाथन और नायर, (2001) के अनुसार सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में शिक्षकों का प्रोत्साहित रहना उनकी गुणवत्ता से अधिक महत्वपूर्ण है। झा और झिंगरन, डी. (2002) शिक्षा के शुरूआती सालों में मात्रभाषा को निर्देश के माध्यम के रूप में प्रयोग किये जाने पर बल देते हैं। उनके अनुसार यह जनजातीय बच्चों की शिक्षा के लिए और भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि ज्यादातर क्षेत्रों में उनकी भाषा और स्कूल की भाषा में अंतर है।

इसके अलावा भी अन्य सी समस्याएं हैं जो आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा को पनपने नहीं देती। इसके लिए आवश्यक है कि शाला स्तर पर ही मुख्यतः कार्य किया जाए और यह जिम्मेदारी जाती है शाला के प्रधान को। शाला के प्रधानाध्यापक को इन आदिवासी क्षेत्रों में एक बेहतर नेतृत्वकर्ता के रूप में उभरने के लिए और बच्चों को सीखने-सिखाने का एक सहज वातावरण उपलब्ध करवाने के लिए उनके रहन-सहन, उनकी आशाओं और अपेक्षाओं को बेहतर रूप से समझने की आवश्यकता है। मुख्य रूप से उन्हें निम्न बिंदुओं पर अपनी समझ स्थापित करनी होगी जिससे वे एक बेहतर नेतृत्व प्रदान कर सकें।

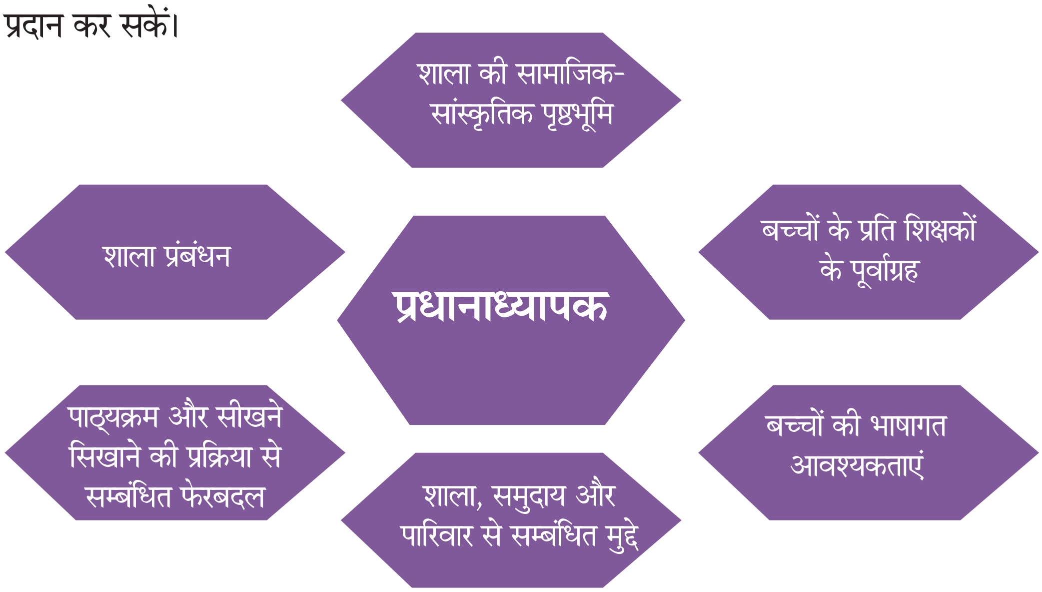

इस मॉडयूल में हम इनमें से कुछ हिस्सों पर प्रधानाध्यापक के अपेक्षित नेतृत्व पर चर्चा करने का प्रयास करेंगें।

भाग - 1 : आदिवासी बच्चों की स्कूल से बाहर की चुनौतियों को समझना

उद्देश्य :

आदिवासी बच्चों की उन चुनौतियों को समझ पाएंगें जो उन्हें शाला तक पंहुचने नहीं देती।

परिचय

विभिन्न शोध तथा नीतिगत दस्तावेज यह कहते हैं कि बच्चों का सीखना - सिखाना बहुत से मुद्दों पर निर्भर करता है। इसमें बच्चों के घर के माहौल के साथ-साथ आसपास होने वाली विभिन्न गतिविधियाँ भी असर डालती हैं। ऐसे में अगर बच्चों को आवश्यक प्रोत्साहन समय पर नहीं मिला तो वह भी शिक्षा से दूर होता जाता है। इसके लिए आवश्यक है कि हम प्रधानाध्यापक होने के नाते कोई भी पहल करने से पहले आदिवासी बच्चों को आने वाली चुनौतियों को जानें। इससे हम उन्हें दूर करने की दिशा में अपने कदम बढ़ा पाएंगें। इस भाग में हम मुख्य रूप से उन चुनौतियों को समझने का प्रयास करेंगें जो बच्चों को स्कूल तक पंहुचने में बाधा उत्पन्न करती है।

इन तस्वीरों को देखें और विचार करें की यह किन चुनौतियों की ओर इशारा कर रही हैं? क्या इन परिस्थितियों का असर बच्चों के सीखने-सिखाने पर पड़ता होगा? यदि हाँ तो किस प्रकार।

....

....

....

....

....

- आदिवासी बच्चे अपनी छोटी सी उम्र में ही बहुत सी चुनौतियों का सामना करते हैं। हाँलाकि उनके लिए वो ही उनकी दुनिया है लेकिन अगर हम समान अवसरों की बात करें तो यह समाज की जिम्मेदारी बन जाती है कि उन्हें सभी सुविधाएं मिलें। सबसे पहली चुनौती जो आदिवासी बच्चे महसूस करते हैं वो हैं मूलभूत सुविधाओं की कमी। आदिवासी समुदाय हमेशा आपको बड़े समुदाय से कटा-छठा ही नज़र आएगा। यह समुदाय आमतौर पर बसाहट से दूर रहता, या अपने खेत या पलियों में बसता दिखाई देता है। इसके कारण इन्हें मूलभूत सुविधाएं जैसे- पीने का पानी, रोजमर्रा का सामान इत्यादि जुटाने के लिए भी कठिन परिश्रम करना पड़ता है। ऐसी स्थितियों में परिवार के छोटे बच्चे भी घर के कामों में मदद करते हैं।
- दूसरी बड़ी चुनौती है पालकों का अशिक्षित होना। इन परिवारों के लिए शिक्षा से अधिक महत्त्वपूर्ण परिवार का पालन-पोषण है। जिस कारण आवश्यकता पड़ने पर वे अपने बच्चों को अन्य कार्यों जैसे; अपने छोटे भाई-बहन की देखभाल, घर के काम, मजदूरी आदि में लगा देते हैं। ऐसी स्थिति में भी बच्चे शिक्षा से दूर होते चले जाते हैं। कई बार यह हमारा पूर्वाग्रह भी रहता है कि आदिवासी बच्चों के पालकों को बच्चों की शिक्षा में कोई दिलचस्पी नहीं है। इसे इस तरह समझने का प्रयास करें कि यह वो समूह है जो बाहरी दुनिया से बिलकुल कटा हुआ है,जिससे ज्यादातर बच्चे स्कूल जाने वाली पहली पीढ़ी हो सकते हैं। ऐसी में पालकों की अपेक्षाएं स्कूल के प्रति थोड़ी बढ़ जाती हैं लेकिन जब उन्हें अपेक्षित परिणाम नहीं मिलता तो वे निराश हो जाते हैं और बच्चों को वापस अपनी ही दुनिया में ले जाने का प्रयास करते हैं। जिससे कम-से-कम उसका अस्तित्व बना रहे। इसके लिए आवश्यकता है इन बच्चों के लिए एक दूरगामी योजना बनाने की। जिससे यह बच्चे आगे बढ़ते रहें और इनके पालकों को भी इनके भविष्य को लेकर कोई संशय न हो।
- काम के सिलसिले में परिवार का पलायन करना भी इन बच्चों के लिए एक बड़ी चुनौती है। खेती, मजदूरी करने आदिवासी परिवार अक्सर एक राज्य से दुसरे राज्य पलायन कर जाते हैं, जिस कारण इनके बच्चों की शिक्षा पर एक गहरा प्रभाव पड़ता है। ऐसी परिस्थिति में बच्चों को स्कूल से जोड़े रखना भी एक चुनौती बन जाती है ।
- इसके अलावा अन्य कई चुनौतियां हैं जो बच्चों को घेरे रहती हैं जैसे ; स्कूल की उनके घर से दूरी, स्कूल का वातावरण इत्यादि।

इन चुनौतियों का एक गहरा प्रभाव आदिवासी बच्चों की शिक्षा पर पड़ता है, जिसके चलते जो बदलाव हम उनके जीवन में देखना चाहते हैं वो देख नहीं पाते। यहाँ प्रधानाध्यापक से यह अपेक्षा नहीं की जा रही की वे इन सभी समस्याओं का हल खोजने का प्रयास करें। यह आवश्यक नहीं कि हम सभी चुनौतियों को दूर कर पाएंगे। लेकिन बच्चों के सामाजिक परिप्रेक्ष्य को जानने के बाद आप अपने स्कूल के नियमों में लचीलापन ला सकते हैं जिससे यह बच्चे अपने आपको महत्त्वपूर्ण महसूस करें। ऐसा करने से हम ज्यादा बेहतर तरीके से उनके साथ जुड़ पाएंगे।

भाग - 2 :

आदिवासी बच्चों की स्कूल के अंदर की चुनौतियों को समझना

उद्देश्य :

आदिवासी बच्चे स्कूल के अंदर जिन चुनौतियों का सामना कर रहे हैं उन्हें समझ पाएंगें।

परिचय

इससे पहले के भाग में हमने जाना कि आदिवासी क्षेत्र में बच्चों को स्कूल तक पंहुचने में बहुत सी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इन सभी चुनौतियों से बच्चे फिर भी पार पाने का प्रयास करते हैं और धीरे-धीरे उनसे उभर भी जाते हैं, लेकिन स्कूल के अन्दर कक्षागत प्रक्रियाओं के दौरान आ रही चुनौतियों का समाधान नहीं किया जाता तो कुछ समय बाद ही यह बच्चे ड्राप-आउट या शाला त्यागी बच्चों की सूची में शामिल हो जाते हैं। बहुत से पर्चे और नीतिगत दस्तावेज आदिवासी बच्चों की शालागत चुनौतियों की ओर इंगित करते हैं, जिसमें से भाषागत चुनौती को मुख्य माना गया है।

विचार करें, आदिवासी क्षेत्रों में बच्चों को स्कूल के अंदर किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है ?

....

....

....

....

....

....

हम सभी जानते हैं कि भाषा सिर्फ संप्रेषण का माध्यम नहीं हैं, भाषा से ही हम अपने विचारों को आकार देते हैं। हमारी दुनिया को समझने का माध्यम हमारी भाषा है। और जैसा नई शिक्षा नीति 2020 का अध्याय 5 कहता है कि सभी महत्त्वपूर्ण संकल्पानाएं हम अपनी भाषा के माध्यम से ही सीखते हैं और अलग-अलग क्षेत्रों में रहने वाले बच्चे अपनी

दुनिया को समझने के लिए अलग-अलग भाषा का इस्तेमाल करते हैं। लेकिन जैसे ही बच्चे अपने घरों के दायरे से निकलकर स्कूल के दायरे या औपचारिक शिक्षा के दायरे में आते हैं तो सीखना -सिखाना मानक भाषा में करवाया जाता है । तो अगर हम आदिवासी क्षेत्र के बच्चों को परिस्थिति में देखें तो वे सीखने के दौरान निम्न चुनौतियां महसूस करते होंगे -

- औपचारिक शिक्षा के शुरुआती सालों में आदिवासी बच्चे जिस चुनौती सामना करते हैं वह है एक सामाजिक संस्था में कदम रखना। व्यवहार से शर्मीले इन बच्चों के लिए यह एक बिलकुल नया अनुभव होता है। सामाजिक तौर पर इन बच्चों के परिवार भीड़-भाड़ से अलग एक बस्ती या अपने खेत में निवास करते हैं, बाहरी दुनिया से इनका मेलजोल बहुत ही सीमित रहता है। ऐसे में अन्य बच्चों के साथ स्कूल में बैठना, सीखना-सिखाना इनके लिए एक नया अनुभव होता है, जो एक चुनौती की तरह पेश आता है।
- पूरी शिक्षण प्रक्रिया का एक नई भाषा में होना आदिवासी बच्चों के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। स्कूल में प्रवेश के बाद अचानक एक बहुत बड़ा बदलाव आदिवासी बच्चों के जीवन में होता है। स्कूल आने से पहले तक जिस भाषा के माध्यम से यह बच्चे अपनी पूरी दुनिया को समझते थे वह भाषा अब उन्हें कहीं सुनाई नहीं देती। अब वे दिनभर ऐसी भाषा को सुनते हैं जिसे न उन्होंने कभी सुना है और न वे उसे समझते हैं। यह माहौल न चाहते हुए भी आदिवासी बच्चों को यह एहसास करवाता है कि अभी तक जो कुछ भी उन्होंने अपनी दुनिया को सुना, समझा और देखा उसका कोई महत्त्व नहीं है और न ही उससे वे आगे कुछ सीख सकते हैं। यह एक तरह से उनके पूरे अस्तित्व पर सवाल खड़ा कर देता है जो किसी भी व्यक्ति के आत्मविश्वास के लिए ठीक नहीं।
- आदिवासी समुदाय की एक समृद्ध मौखिक परंपरा है जिसमें लोकगीत, कथाएं और कहानियाँ लम्बे समय से चली आ रही हैं। लेकिन इस समुदाय के बच्चों ने कभी अपने इस समृद्ध साहित्य को लिखित रूप में नहीं देखा। और अचानक से स्कूल आने के बाद पाठ्यपुस्तक उनके सीखने का केंद्र बना दी जाती है, जो न उन्हें समझ आती है और न ही उनसे वो खुद को जोड़ पाते हैं। न सिर्फ पाठ्यपुस्तक बल्कि स्कूल में इस्तेमाल की जाने वाले किसी भी शिक्षण सामग्री में उनकी संस्कृति की कोई झलक नहीं मिलती है। जब वे इन सभी सीखने-सिखाने के साधनों को इस्तेमाल करने में खुद को अक्षम महसूस करते हैं तो यह उनके लिए स्कूल के प्रति और दूरी बना देता है।
- आदिवासी बच्चों के लिए ये चुनौती और बड़ी हो जाती है जब सीखने -सिखाने में मदद करने वाले शिक्षक ही स्वयं उनकी भाषा नहीं समझ पाते। कई बार यह चुनौती बहुत बढ़ जाती है जब गैर आदिवासी शिक्षक आदिवासी क्षेत्रों में पदस्थ हो जाते हैं। तब सामग्री, माहौल और कक्षा में होने वाला संवाद भी उन्हें स्कूल से जोड़ नहीं पाता। इस परिस्थिति में बच्चे धीरे-धीरे चुप्पी साधने और खुद को सीखने -सिखाने कि प्रक्रिया से अलग-थलग रहने के लिए मजबूर हो जाते हैं।
- विभिन्न नीति दस्तावेज कहते हैं कि बच्चों को सीखने-सिखाने कि प्रक्रिया का हिस्सा बनाया जाए तो वे बेहतर सीखते हैं क्योंकि उन्हें गतिविधियों के माध्यम से सीखे हुए को इस्तेमाल करने का मौका दिया जाता है। लेकिन आदिवासी क्षेत्रों में बच्चे उक्त दर्शाई विभिन्न चुनौतियों के चलते गतिविधियों में भागीदारी नहीं कर पाते तो ऐसे में स्वतः ही उनके सीखने की गति धीमी पड़ जाती है।

ऐसी स्थिति में देखें तो आदिवासी क्षेत्रों के बच्चे अपनी मातृभाषा और मानक भाषा के बीच संतुलन और तालमेल बैठाने में ही अपनी सारी ऊर्जा लगाते रह जाते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि उनका सीखना तो मुश्किल होता है ही साथ ही उनके आत्मसम्मान को भी गहरी क्षति पंहुचती है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009, शिक्षकों की जिम्मेदारी तय करते हुए यह कहता है कि यह शिक्षकों की जिम्मेदारी है कि वे बच्चों को उनकी आयु अनुरूप पूरी क्षमता तक उनका सर्वांगीण विकास करें। लेकिन अगर हमारे स्कूल का माहौल इसके विपरीत कार्य करे तो यह आवश्यक होगा कि हम उसमें बदलाव लाएं। यहीं पर प्रधानाध्यापक की जिम्मेदारी सामने आती है कि वे अपने नेतृत्व कौशल से यह सुनिश्चित करें कि बच्चों कि आवश्यकता के अनुसार स्कूल में अपेक्षित बदलाव हो जिससे शिक्षा के उद्देश्य को पाया जा सके।

भाग - 3 :
प्रधानाध्यापक होने के नाते शाला में किये जाने वाले प्रयास

उद्देश्य :

एक नेतृत्वकर्ता होने के नाते स्कूल की चुनौतियों के समाधान के कुछ सुझावों को चिन्हित कर सकेंगें।

परिचय

इससे पहले के दो भागों में हमने आदिवासी बच्चों को आ रही चुनौतियों के बारे में जाना। लेकिन चुनौतियों को केवल जान भर लेने से बदलाव की अपेक्षा नहीं की जा सकती, उसके लिए कुछ प्रयास करने आवश्यक हैं। कई बार हमारी शालाओं में दिखने वाली चुनौती बहुत बड़ी नज़र आती है जिस कारण उसे हल करने की हम पहल नहीं कर पाते। इसके चलते लम्बे समय तक हमारे स्कूलों में एक ही तरह की स्थिति बनी रहती है जो हमारे अकादमिक प्रयासों को प्रभावित करती है। मॉडयूल के इस भाग में हम यही समझने का प्रयास करेंगें कि प्रधानाध्यापक होने के नाते हम कैसे बड़ी चुनौतियों को छोटे भागों में बांटकर उसके कुछ हल ढूढ़ँने का प्रयास कर सकते हैं जिससे हमारे स्कूलों में बदलाव आये।

शाला वातावरण को सहज बनाने के कुछ प्रयास -

विचार करें, आदिवासी क्षेत्रों की शालाओं में ऐसा क्या किया जा सकता है जिससे बच्चे सहज महसूस कर सकें?

....

....

....

....

....

....

- किसी भी शाला के वातावरण को सीखने-सिखाने के लिए अनुकूल बनाने हेतु आवश्यक है कि बच्चों और शिक्षकों के रिश्ते में समरस्ता हो। और यह कार्य करने के लिए निरंतर प्रयास करना आवश्यक है । बच्चों को शाला से जोड़ने के लिए शुरुआत में प्रधानाध्यापकों को कुछ ऐसे कार्यक्रमों का संचालन करना होगा जिससे बच्चे और शिक्षक एक दुसरे से जुड़ पाएं। कुछ ऐसी गतिविधियों का भी आयोजन कर सकते हैं जिससे बच्चों के कौशल और क्षमताएं उभर कर सामने आएं। जैसे - चित्रकला प्रतियोगिता या अपनी शाला की बाउंड्री पर बच्चों से चित्र बनवाना, लकड़ी के खिलौने इत्यादि बनवाना, तीर कमान बनवाना, वृक्ष लगवाना इत्यादि। इस तरह के प्रदर्शन कार्यक्रमों से बच्चों के मनोबल में भी वृद्धि होगी।
- कई बार शिक्षकों के मन में बच्चों को लेकर और बच्चों के मन में शिक्षकों और शाला को लेकर बहुत से पूर्वाग्रह होते हैं, जिसके कारण शिक्षकों और बच्चों के बीच सामंजस्य नहीं बन पाता। इसके लिए प्रधानाध्यापक अपने स्कूल में बातचीत की संस्कृति का निर्माण कर सकते हैं। यह बातचीत आपके और शिक्षकों के बीच, शिक्षकों और बच्चों के बीच, आपके और बच्चों के बीच या बच्चों की आपस में हो सकती है। इसके लिए आप किसी भी समय का चुनाव कर सकते हैं। आपके और शिक्षकों के बीच यह बातचीत बहुत से बदलाव ला सकती है। इससे शिक्षकों के मन में स्कूली प्रक्रिया या बच्चों को लेकर यदि कोई धारणा है तो उस पर भी चर्चा की जा सकती है।
- शाला में खेल गतिविधियों का आयोजन भी बच्चों में उत्साह वृद्धि कर सकता है। जैसे - दौड़, तीरंदाजी प्रतियोगिता इत्यादि।
- आदिवासी क्षेत्रों की मौखिक परंपरा बहुत समृद्ध है, इनका इस्तेमाल करते हुए प्रधानाध्यापक अपनी शाला में उनके लोकगीतों, कहानियों, किस्सों की संगोष्टी करवा सकते हैं। ऐसा करने से सभी उनकी संस्कृति से परिचित होंगें और आपस में समरस्ता बढ़ेगी।

जब यह सभी गतिविधियाँ शाला में होंगी तो बच्चों की सहभागिता और उत्साह को देखते हुए शिक्षकों का नजरिया और शाला का वातावरण जरूर बदलेगा। यह सभी प्रक्रियाएं शिक्षकों को यह महसूस करवाएंगी की आदिवासी बच्चों की अपनी एक अलग दुनिया है जिसे समझना उनके लिए बुहत आवश्यक है , तभी वे आगे इन बच्चों को सीखने -सिखाने की प्रक्रिया से जोड़ पाएंगे।

भाषागत चुनौतियों से जूझने के लिए किये जाने वाले प्रयास –

शाला के वातावरण को सहज बनाने के बाद सीखने -सिखाने की प्रक्रिया को बेहतर बनाने के लिए भी कुछ कार्य करने आवश्यक हैं। हमारे नीतिगत दस्तावेज भी इन्हें लेकर कुछ अनुसंशाएं पेश करते हैं। आइए इन्हें पढ़ते हैं और देखते हैं कि भाषागत चुनौतियों से जूझने के लिए प्रधानाध्यापक अपनी शाला में क्या-क्या कार्य कर सकते हैं।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 के अनुसार –

- बच्चों को पर्याप्त अवसर मिले तो वह नई भाषाओं को आसानी से सीख सकते हैं।
- शिक्षण का केंद्र व्याकरण न होकर विषयवस्तु पर होना चाहिए।
- शिक्षा में भाषा की भूमिका को समझने के लिए हमें इसके संरचनात्मक रूप के साथ-साथ साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक एवं सौन्दर्यशास्त्रीय पक्षों पर भी ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

4.5 मात्र भाषा/स्थानीय भाषा में शिक्षा, बहु-भाषिकता और भाषा की शक्ति –

भाषा से जुड़े मुद्दे शिक्षा के लिए सबसे अधिक महत्त्व रखते हैं। भाषा संवाद का माध्यम होने के अतिरिक्त किसी व्यक्ति, समाज और इसके सामुदायिक संस्कृति की निरंतरता को बनाए रखने और उसके सम्प्रेषण का माध्यम भी है। किसी भी तरह के ज्ञान-अर्जन या ज्ञान निर्माण और सभी संज्ञानात्मक और सामाजिक गतिविधियों में भाषा सीधे-सीधे मध्यस्तता करती है। बाल-विकास, बाल मनोविज्ञान और भाषा विकास में हुए अध्ययन ये बताते हैं कि बच्चे अपनी मातृभाषा में सबसे बेहतर सीखते हैं। 2 से 8 वर्ष की उम्र के दौरान बच्चों में अनेक भाषाओं को सीखने कि गज़ब की क्षमता होती है। यह एक बेहद महत्त्वपूर्ण सामाजिक क्षमता है जिसको पोषित किया जाना चाहिए। इसी प्रकार बहु-भाषिकता के अनेक फायदे हैं जिनका हमारे जीवन में ख़ासा महत्त्व है।

5 मात्र भाषा/घर की भाषा में शिक्षा –

यह सर्वविदित तथ्य है कि बच्चे सभी महत्वपूर्ण संकल्पनाओं को अपनी मातृभाषा या अपनी घर की भाषा में जल्दी और बेहतर सीखते हैं। यह नीति इस बात से सहमत है कि बड़ी भारी संख्या में बच्चे ऐसे स्कूलों में जा रहे हैं जहां ऐसी भाषा में शिक्षा दी जाती है जो उन्हें समझ में नहीं आती। इसके चलते वे सीखना शुरू करने से पहले ही पिछड़ने लगते हैं और अंततः शिक्षा की प्रक्रिया से बाहर हो जाते हैं। इसलिए यह बेहद जरूरी हो जाता है कि आरंभिक वर्षों में बच्चों की कक्षाएं उनकी अपनी भाषाओं में चलाई जाएं।

5.2 जिनकी भाषा निर्देशों की भाषा अलग है उनके लिए द्विभाषी एप्रोच – शिक्षाकर्म एक लचीली-भाषा एप्रोच को बढ़ावा देगा। कक्षा में इसे प्रोत्साहित करेगा। शिक्षकों को प्रोत्साहित किया जाएगा द्विभाषी एप्रोच को अपनाए न केवल संवाद में बल्कि सीखने-सिखाने की सामग्री भी द्विभाषी हो, ताकि जिन विद्यार्थियों की घर की भाषा और स्कूल की भाषा अलग है उन्हें स्कूल की भाषा में पारंगत होने में सहायता मिले।

नई शिक्षा नीति 2020

- **प्रधानाध्यापक और शिक्षकों की बातचीत** – प्रधानाध्यापक होने के नाते हमें शुरुआत यहीं से करनी होगी कि सभी शिक्षक साथियों के साथ मिलकर भाषागत चुनौतियों पर चर्चा करें। सभी शिक्षक साथियों से सुझाव लें कि हम क्या कर सकते हैं जिससे बच्चों का मनोबल बढ़े और उनका सीखना सुनिश्चित हो। सभी के सुझावों की एक सूची बनाएं और प्राथमिकता तय करें, कि किस कार्य को पहले किया जाना आवश्यक है।
- **विभिन्न गतिविधियों में बच्चों के घर की भाषा और मानक भाषा का प्रयोग** – जैसा हमने भाग 2 के बिन्दुओं में बात की है कि आदिवासी क्षेत्र के बच्चों के लिए स्कूल में इस्तेमाल की जाने वाली मानक भाषा नई होती है, तो हम यह तय कर सकते हैं कि स्कूल खुलने के बाद लगभग 2-3 महीने हम बच्चों के साथ अलग-अलग

गतिविधि करेंगें जिसमें उनकी भाषा और मानक भाषा दोनों का ही इस्तेमाल किया जाएगा। इन गतिविधियों में उस क्षेत्र के स्थानीय खेल/कार्यक्रमों का प्रयोग किया जा सकता है जिससे बच्चे भली-भाँती परिचित हों। इसे करने के लिए आप समुदाय का सहयोग या किसी शिक्षक का सहयोग ले सकते हैं। ऐसे कार्यक्रम बच्चों को स्कूल के माहौल से सहज होने में मदद करेंगे। साथ-ही-साथ यह शिक्षकों और बच्चों के बीच के खिंचाव को भी दूर करेंगे।

हमने पहले भी बात की है कि आदिवासी समुदाय का खुद का एक समृद्ध मौखिक साहित्य है। क्या आप कुछ सुझाव दे सकते हैं कि कैसे इस साहित्य को स्कूली शिक्षा के दौरान इस्तेमाल किया जा सकता है?

....

....

....

....

....

- **शाला स्तर पर बच्चों के साहित्य का निर्माण** – आदिवासी समुदाय के साहित्य को कक्षा शिक्षण के दौरान इस्तेमाल किया जा सकता है और यह बच्चों के लिए बहुत लाभदायक सिद्ध होगा क्योंकि बच्चे इस साहित्य से परिचित हैं। इसे इस्तेमाल करने के लिए आप शुरुआत में कुछ स्थानीय बालगीतों/लोकगीतों, कहानियों को एक चार्ट पर लिखकर पोस्टर की तरह इस्तेमाल कर सकते हैं। इस चार्ट या पोस्टर का मौखिक गतिविधियों के दौरान लगातार इस्तेमाल उन्हें लिपि से जोड़ने में मदद करेगा। यह हमें ध्यान रखना चाहिए कि पाठ्यपुस्तक सिर्फ एक माध्यम है, यदि उसे इस्तेमाल करने के उद्देश्य में कोई और सामग्री भी मदद कर रही है तो हमें जरूर उसे इस्तेमाल

यह बैगा भाषा का गीत है 'तै में' जो 'बजारे' किताब से लिया गया है।

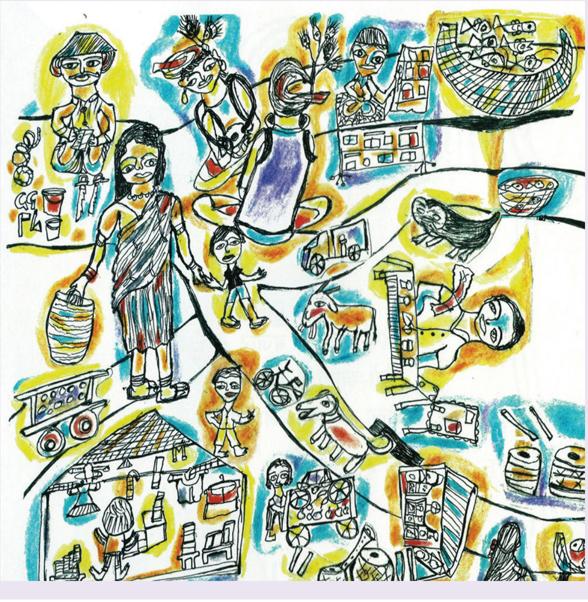

तै में (हम तुम)

तै में जाबो रे बाजार,	हम तुम चलेंगे बाजार
तै में जाबो रे बाजार,	हम तुम चलेंगे बाजार
खांधे झोला टांगके	कांधे पर झोला टांगे
बाजार जाबोरे।	बाजार चलेंगे रे
तै में जाबो मवई के बाजार,	हम तुम चलेंगे मवई के बाजार
तै में जाबो मवई के बाजार,	हम तुम चलेंगे मवई के बाजार
आज नैको बिहाने	आज नहीं कल है
शनिचर के बाजार रे।	शनिवार बाजार रे।
तै में टांगे ढोल टिमकी,	हम तुम टांगे ढोल ढिमकी।
तै में पेहरेन कानतड़की,	हम तुम पहने कान तड़की
मरगा पाख बैगा कर सिंगारे।	मोर पंख बैगा कर सिंगार रे।

करना चाहिए। इस कार्य को आगे बढ़ाते हुए प्रधानाध्यापक अपने स्कूल के पुस्तकालय में आदिवासी साहित्य के भाग का भी निर्माण कर सकते हैं। इसके लिए हाथ से लिखी कहानियों की किताब का निर्माण किया जा सकता है। इसके निर्माण में बच्चे, समुदाय के किसी बुजुर्ग व्यक्ति या कोई युवा भी आपकी मदद कर सकता है। ऐसी कहानियों की किताबों को स्कूल में स्थान देने से, उनकी संस्कृति को सम्मान देने से बच्चों का लगाव स्कूल की ओर बढ़ेगा और भाषा शिक्षण में आपको मदद मिलेगी। इन कहानियों की किताबों को सतत रूप से पढ़कर सुनाने की गतिविधि में इस्तेमाल किया जाना चाहिए जिससे बच्चे सुनने और पढ़ने में संबंध बैठा सकें।

- **पुस्तकालय का इस्तेमाल** – भाषा शिक्षण में पुस्तकालय का उपयोग आपको विशेष उपलब्धि दिलवा सकता है। हमने भाग 2 में भी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 की अनुशंसाएं पढ़ी। जिसमें यह रेखांकित किया गया है कि 'बच्चों को पर्याप्त अवसर मिले तो वो नई भाषाओं को आसानी से सीख लेते हैं।' इसे ध्यान में रखते हुए आदिवासी क्षेत्र के बच्चों को पर्याप्त प्रिंट सामग्री से रूबरू करवाना बहुत आवश्यक है। वैसे तो पूरी शाला के परिसर को ही इस कार्य के लिए प्रयोग में लिया जा सकता है। लेकिन यदि पुस्तकालय का ही पर्याप्त उपयोग किया जाए तो इस चुनौती को चुनौती दी जा सकती है। सबसे पहला कार्य जो प्रधानाध्यापक कर सकते हैं वह यह है कि सभी बच्चों को स्वतंत्र रूप से पुस्तकालय उपयोग करने दें। इसके साथ-साथ हर बच्चे को प्रतिदिन स्वतंत्र पठन के अवसर प्रदान करें। यहाँ स्वतंत्र पठन से आशय यह नहीं है कि बच्चों को किताब देकर पढ़ने के लिए कहा जाए, यहाँ आशय है कि बच्चे किताबों को उठाकर उसके साथ एकांत में कुछ समय बिताएं। जिससे वे किताबों को उठाना, उलटना, पलटना सीखें। यह प्रक्रिया बच्चों को किताबों से जोड़ने के लिए बहुत आवश्यक है। धीरे -धीरे इस प्रक्रिया से आगे बढ़ते हुए पुस्तकालय की कुछ गतिविधियों का संचालन किया जा सकता है। पुस्तकालय से सम्बंधित गतिविधियों को देखने के लिए नीचे दिए गए संलग्नक को पढ़ सकते हैं। ध्यान रखें इन गतिविधियों को करवाते हुए बच्चों के घर की भाषा और मानक भाषा दोनों का प्रयोग करें।

ऊपर दिए वीडियो को देखें और बताएं कि शिक्षक भाषा शिक्षण की प्रक्रिया में कौन सी रणनीति का प्रयोग कर रहे हैं और इससे बच्चों को कैसे मदद मिल रही है?

....

....

पुस्तकालय की गतिविधियाँ.pdf

https://youtu.be/EilkTEvWU&} (EVS)

https://youtu.be/8GUZ-Z_2E7A (Hindi)

- **सीखने-सिखाने के दौरान द्विभाषा रणनीति का इस्तेमाल** – वीडियो में हमने देखा कि शिक्षक भाषा शिक्षण के दौरान द्विभाषा रणनीति का प्रयोग कर रहे हैं। आपने गौर किया होगा कि वे बच्चों से प्रश्न पूछने के दौरान उनकी मातृभाषा में बात कर रहे हैं, लेकिन साथ ही हिंदी शब्द भी बता रहे हैं। इस प्रक्रिया के इस्तेमाल से बच्चों को समझने और दोनों भाषाओं में तालमेल बैठाने में मदद मिलती है। श्यामपट्ट पर लिखते समय भी शिक्षक हिंदी का शब्द बोलते समय लिख रहे हैं और उसके नीचे बच्चों की मातृभाषा के शब्द को भी लिख रहे हैं। यह प्रक्रिया बच्चों को सीखी हुई अवधारणा को और पक्का करने में मदद करेगी। प्रधानाध्यापक होने के नाते हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हमारे स्कूल के भाषा शिक्षक इस अप्रोच से परिचित हों। यदि ऐसा नहीं है तो उन्हें इस प्रक्रिया से अवगत करवाने के लिए डाइट या किसी संस्था जो इस अप्रोच से वाकिफ हों मदद ले सकते हैं। आज के समय में बहुत से ऑनलाइन कोर्स भी उपलब्ध हैं जो शिक्षकों को सीखने -सिखाने की प्रक्रियाओं में मदद कर सकते हैं, आप चाहें तो अपने शिक्षकों को ऐसे कोर्स में भागीदारी लेने के लिए भी प्रोत्साहित कर सकते हैं।
- **बच्चों की सक्रिय सहभागिता** – बच्चों का कक्षा संचालन के दौरान सक्रियता से भाग लेना भी बहुत आवश्यक है। आपने वीडियो में देखा होगा कि शिक्षक ने बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए फ्लैशकार्ड बनाए, जिससे वे सीखे हुए का आंकलन भी कर पाएं। इस प्रकार की गतिविधियाँ न सिर्फ हमें आंकलन करने में मदद करती हैं बल्कि बच्चों के आत्मविश्वास को भी बढ़ावा देती हैं, उनकी झिझक को तोड़ने का काम करती हैं। इस

आदिवासी क्षेत्रों के स्कूलों में भाषा शिक्षण

शिक्षकों द्वारा कहानियों की किताबों का इस्तेमाल करते हुए पढ़कर सुनाने की गतिविधि की जा सकती है जो बच्चों की भाषा सीखने में मदद करेंगी।

- चित्र दिखाते हुए बच्चों की मातृभाषा में कहानी सुनाना,
- चित्रों को दिखाकर बच्चों को अनुमान लगाकर कहानी आगे बढ़ाने के लिए कहना,
- कहानी के पात्रों पर चर्चा (मातृभाषा में),
- बच्चों को कहानी सुनाने के लिए प्रोत्साहित करना (मातृभाषा में),
- कहानी के मुख्य शब्दों को पढ़ाना (मातृभाषा और हिंदी दोनों में),
- वाक्यों में मुख्य शब्दों को पहचानने के मौके देना,
- वाक्यों से शब्दों तक आना,
- शब्दों से अक्षर तक आना,
- वाक्य कार्ड की मदद से कहानी बनाना,
- शब्द कार्ड की मदद से वाक्य बनाना।

नाते हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हमारे स्कूल में शिक्षक अवश्य ही इस प्रक्रिया को अपनाएं और शिक्षण से पूर्व ही इस्तेमाल होने वाली सह-शिक्षण सामग्री का निर्माण करें जिसमें दोनों ही भाषाओं का उपयोग हो।

- यदि आपके स्कूल में गैर आदिवासी शिक्षक हैं तो यह सुनिश्चित करें कि वे धीरे-धीरे स्थानीय भाषा के कुछ शब्द, वाक्य जो आम बोल-चाल में इस्तेमाल होते हैं सीख लें। उनकी मदद के लिए कोई अन्य शिक्षक उस सामग्री निर्माण में सहयोग कर सकता है। आदिवासी क्षेत्रों में यह बहुत आवश्यक है कि शिक्षक बच्चों के सांस्कृतिक और सामाजिक पक्ष से परिचित हों, यदि ऐसा नहीं है तो आपको उन्हें इस पक्ष से परिचित होने में मदद करनी होगी। स्कूल में होने वाले सांस्कृतिक और सामाजिक कार्यक्रम इसमें आपकी मदद कर सकते हैं।
- आदिवासी क्षेत्रों में कक्षा शिक्षण से पूर्व यह बहुत आवश्यक है कि उसकी योजना बनाई जाए। यह इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि हम यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि बच्चे उस अवधारणा को बेहतर तरीके से समझें। प्रधानाध्यापक होने के नाते आपको यह देखना होगा कि सभी शिक्षकों ने पाठ योजना तैयार की है या नहीं। ऐसा करने के लिए आप शिक्षकों को पूरे एक हफ्ते की योजना बनाने का सुझाव दे सकते हैं। ऐसा करने से उन्हें हर दिन योजना बनाने के लिए समय देने की आवश्यकता नहीं होगी और साथ ही यदि वह शिक्षक किसी दिन अनुपस्थित होते हैं तो उनकी योजना के तहत दूसरे शिक्षक पिछले दिन करवाए कार्यों के माध्यम से कुछ कार्य बच्चों को आवंटित कर सकते हैं।
- **साझेदारी** – प्रधानाध्यापक होने के नाते, यह सभी कार्य आप अकेले नहीं कर सकते। इन सभी कार्यों में आपको कभी शिक्षक, कभी समुदाय या कभी बच्चों को आवश्यकता होगी, तो मदद मांगने से झिझके नहीं। क्योंकि आदिवासी क्षेत्रों की चुनौतियां बहुत हैं तो आपको समय-समय पर साझेदारों की आश्यकता होगी। इसके लिए आप स्वयं सेवी संस्थाओं से भी संपर्क कर सकते हैं जिनका अनुभव आदिवासी क्षेत्रों में काम करने का हो। स्कूल शिक्षा विभाग, मध्यप्रदेश ने इसी प्रकार की साझेदारी कुछ संस्थाओं के साथ की है जिनका अनुभव आदिवासी क्षेत्रों में कार्य करने का है। इसके माध्यम से वे उन क्षेत्रों में शिक्षा की गुणवत्ता को बेहतर बनाने का प्रयास कर रहे हैं। आइए संक्षेप में देखते हैं, वे कौनसी संस्थाएं हैं जो यह कार्य कर रही हैं।

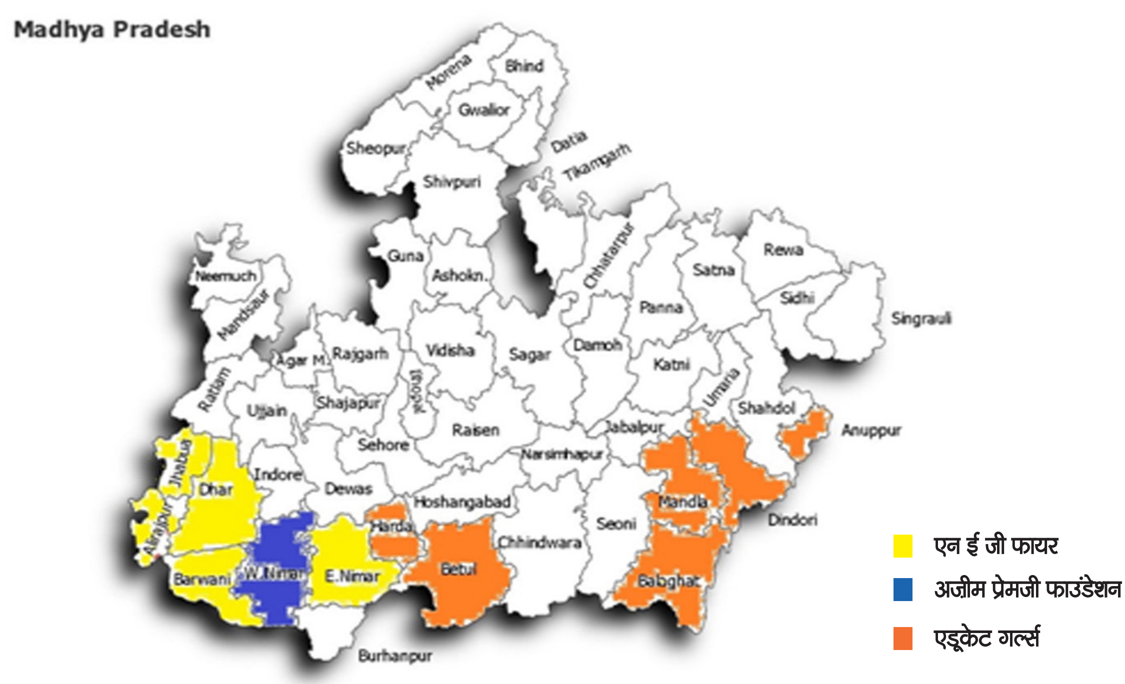

एन ई जी फायर – मध्यप्रदेश के इस नक्शे में जिन जिलों में आपको नारंगी रंग नज़र आ रहा है वह एन ई जी फायर संस्था का है। यह संस्था मध्यप्रदेश के मंडला, डिंडोरी, बैतूल, हरदा, बालाघाट, अनूपपुर एवं खंडवा में कार्य कर रही है। इनका पूरा कार्य मात्रभाषा आधारित बहुभाषीय शिक्षा प्रशिक्षण पर आधारित है। एन ई जी फायर ने मध्यप्रदेश के विद्यालयों में पढ़ने वाले 4-7 वर्ष के बच्चों के लिए गोंडी, बैगानी, भीली भाषा में पुस्तकों का सेट तैयार किया है। इन पुस्तकों में बच्चों के आसपास के क्षेत्रों से जुड़े शब्द उनकी भाषा में दर्शाए गए हैं, चुनिन्दा कहानियों एवं कविताओं का संकलन है एवं उनके परिवेश से जुड़े हुए चित्र हैं। साथ ही शिक्षकों की एक मार्गदर्शिका भी तैयार की गई है जिससे वे शिक्षक भी उन पुस्तकों का इस्तेमाल कर सकें जो स्थानीय भाषा नहीं जानते।

एडूकेट गर्ल्स – नक्शे के पीले भाग में दिखने वाले जिले जिसमें धार, अलीराजपुर, झाबुआ, बड़वानी और खंडवा हैं, उसमें एडूकेट गर्ल्स कार्यरत हैं। एडूकेट गर्ल्स मुख्य रूप से शाला से बाहर छात्राओं के नामांकन को लेकर कार्य कर रहे हैं।

रूम-टू-रीड – मध्यप्रदेश के बड़वानी जिले में रूम-टू-रीड कक्षा 1 से 3 में रीडिंग, राइटिंग एवं मूलभूत दक्षताओं को लेकर कार्य कर रहे हैं।

अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन – इसी प्रकार धार और खरगोन जिले में अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन शिक्षक शिक्षा को लेकर काम कर रहे हैं।

समेकन

आपने देखा कि इस भाग में हमने आदिवासी क्षेत्रों के बच्चों की भाषागत आवश्यकताओं पर चर्चा की और कुछ ऐसे कार्य भी चिन्हित किये जिन्हें हम अपने स्कूल में क्रियान्वित कर सकते हैं। ऐसा संभव है कि इन कार्यों की शुरुआत करने में या करते हुए अपको कुछ कठिनाइयों का सामना करने पड़े, लेकिन आप सतत रूप से उन कार्यों को जारी रखें। ऐसा करने से आपको कुछ ही दिनों में इसका परिणाम दिखाई देने लगेगा। यह बिलकुल सही है कि ऊपर सुझाये कार्य आसान नहीं, इन्हें क्रियान्वित करने के लिए शिक्षकों को लगातार बच्चों के साथ कार्य करने की आवश्यकता होगी, और यहीं आपकी मुख्य भूमिका उभर कर आती है। आपको सतत रूप से शिक्षकों को प्रोत्साहित करना होगा, कभी स्वयं कक्षा संचालित करके, तो कभी उनकी मदद करके।

इस पूरे मॉडयूल में हमने आदिवासी क्षेत्रों की कुछ चुनौतियों को समझने का कार्य किया। इन चुनौतियों के साथ हमने प्रधानाध्यापक होने के नाते कुछ सुझावात्मक कार्यों को भी देखा, जिन्हें हम अपने स्कूलों में लागू कर सकते हैं। आवश्यकता सिर्फ इन कार्यों में निरंतरता बनाए रखने की है और नेतृत्वकर्ता होने के नाते सभी का मनोबल बढ़ाए रखने की है। तभी संभव है कि हम जिस उद्देश्य को लेकर आगे चले हैं वह पूर्ण हो सके।

प्रोजेक्ट कार्य – इस मॉडयूल में दिए गए किसी भी एक कार्य को अपनी शाला में कार्यान्वित करें और उसके अनुभव एक डायरी में नोट करते चलें। उदाहरण - यदि आप पुस्तकालय का संचालन कर रहे हैं तो सतत रूप से उसके अनुभव लिखते चलें।

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

2. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005

3. एन ई जी -फायर शिक्षक प्रशिक्षण मार्गदर्शिका

4. Rani, M. (2000). Tribal languages and Tribal education.SOCIAL ACTION-NEW DELHI, 50 (4), 414-419.

5. Jha,J., and Jhingran, D.(2012). Elementary Education for the Poorest and other deprived Groups, Centre for Policy Research. New Delhi. Retrieve from

   https://journas.sagepub.com/doi/abs/10.1177/006996671004400325

6. Sujatha,K. (2002). Education among Scheduled Tribes. In Givinda. R. (ed.), India Education Report: A profile of Basic Education, New Delhi: Oxford University Press. Retrieve from

   https://www.academia.edu/download/53945926/analysisTribals.pdf

---

लेखक का नाम
केशव कुमार पराशर
डॉ. अशोक कुमार नेगी
डाइट खंडवा (म.प्र.) एवं मॉडयूल लेखन
टीम जिला खंडवा

मेंटर/ एक्सपर्ट का नाम
करिश्मा बाजपई
पूर्व यूनिसेफ सलाहकार
फ्रीलान्स कंसलटेंट, भोपाल (म.प्र.)
मोबाइल- +91-9755380877
ई मेल- karishmamahendru@yahoo.co.in

❑ ❑ ❑

मॉड्यूल – कोविड 19 – स्कूल पुनः खोलना

भाग – 1

कोविड–19 की परिस्थिति में विद्यालय को पुनः खोलने की आवश्यकता

भाग – 2

हितधारकों से संवाद और उनको प्रेरित करना तथा विद्यालय को पुनः खोलने में विभिन्न चुनौतियों को केस स्टडी के माध्यम से समझना

भाग – 3

विद्यालय को पुनः खोलने की चुनौतियों का समाधान एवं कक्षा–शिक्षण को रोचक बनाने हेतु प्रयास

शीर्षक :
वर्तमान कोविड-19 की परिस्थिति में विद्यालय को पुनः खोलना

उद्देश्य :

1. कोविड-19 की परिस्थिति में विद्यालय को पुनः खोलने की प्रक्रिया हेतु घटकों की पहचान कर सकेंगे।
2. कोविड-19 की परिस्थिति में विद्यालय को पुनः खोलने में हितधारकों की भूमिका को समझेंगे।
3. विद्यालय प्रमुख, वर्तमान विषम परिस्थतियों में विद्यालय को पुनः खोलने की प्रक्रिया से संबंधित चुनौतियों की पहचान कर समाधान करने में सक्षम होंगे।

की-वर्ड – विद्यालय पुनः खोलने, कोविड-19 , टीकाकरण , हितधारक, प्रौद्योगिकी।

प्रस्तावना

विश्व में नवम्बर 2019 से वर्तमान समय तक एक महामारी कोविड-19 ने पूरी दुनिया के साथ-साथ हमारे देश को भी प्रभावित किया है, जिससे मानव जाति के अस्तित्व को खतरा बना रहा। इस महामारी से बचाव के लिए सामाजिक दूरी सबसे महत्त्वपूर्ण सावधानी थी। मानव जाति के अस्तित्व को बनाये रखने के लिए पिछले 18 महीने में देश में लॉक डाउन की स्थिति क्रमशः लागू रही। देश में आर्थिक, सामाजिक, औद्योगिक और शैक्षणिक गतिविधियों को बंद रखा गया, सिर्फ अत्यावश्यक सेवाएं ही संचालित रहीं जिसमें अन्य विभागों के कर्मचारी भी शामिल रहे। सबसे ज्यादा शिक्षकों को भी इन अत्यावश्यक सेवाओं में लगाया गया।

इन सब परिस्थिति के कारण शिक्षण व्यवस्था अत्यधिक प्रभावित हुई है। लॉक डाउन में सभी क्रियाकलापों हेतु प्रौद्योगिकी का अधिक से अधिक उपयोग किया गया। शिक्षण व्यवस्था भी प्रौद्योगिकी आधारित संचालित की गई, लेकिन शिक्षण कार्य को प्रौद्योगिकी आधारित करने में काफी समस्याओं का सामना करना पड़ा। औपचारिक शिक्षा के लिये, शालेय शिक्षा के आलावा कोई विकल्प नहीं होता। जिसके कारण विद्यार्थियों के अधिगम में क्षति को देखा गया। अतः विद्यालयों को पुनः खोलने की आवश्यकता को महसूस किया गया। विश्व में वृहद स्तर पर टीकाकरण होने के कारण, कोविड-19 का खतरा कम हुआ। धीरे-धीरे आर्थिक, औद्योगिक, सामाजिक और शैक्षणिक गतिविधियां पुनः संचालित होने लगी। इसी दिशा में विद्यालयों को पुनः खोलने की प्रक्रिया भी शुरू हुई। विद्यालय को पुनः खोलने की प्रक्रिया के संबंध में आपके मस्तिष्क में बहुत से सवाल उठे होंगे जैसे -

1) विद्यालय को पुनः खोलने में प्रधानाध्यापक को क्या-क्या तैयारी करना चाहिए?
2) विद्यालय को पुनः खोलने में क्या -क्या चुनौतियाँ होगी?
3) विद्यालय को पुनः खोलने पर सीखने- सिखाने की क्या रणनीति होंगी?
4) विद्यालय को पुनः खोलने में समुदाय को किस तरह शामिल किया जाए?

इस मॉड्यूल को पढ़कर हम उपरोक्त सवालों के जवाब प्राप्त कर सकेंगे तथा विद्यालय को पुनः खोलने में विद्यालय प्रमुख की भूमिका को केस स्टडी द्वारा समझेंगे।

भाग - 1 :
कोविड-19 की परिस्थिति में विद्यालय को पुनः खोलने की आवश्यकता

उद्देश्य :

1. बच्चों की शालेय शिक्षा के महत्व को जानना।
2. कोविड- 19 का शिक्षक एवं विद्यार्थियों पर प्रभाव तथा विद्यार्थियों की अधिगम क्षति की प्रतिपूर्ति हेतु किए गए प्रयासों को जानना।

1.1 बच्चों की शालेय शिक्षा के महत्व को जानना

लॉकडाउन अवधि में विद्यालय बंद होने के कारण DigiLEP, मोहल्ला कक्षाएं, 'हमारा घर, हमारा विद्यालय' आदि तरीकों से शिक्षण प्रक्रिया को जारी रखा गया इसके बावजूद बच्चों में अधिगम क्षति हुई है क्योंकि औपचारिक शालेय शिक्षा का कोई प्रभावी विकल्प नहीं हो सकता है। शैक्षणिक गतिविधियों से समाज के सबसे महत्त्वपूर्ण घटक (नींव और भविष्य) को शामिल करना पड़ता है अतः इन सब बिंदुओं को दृष्टिगत रखते हुए विद्यालयों को पुनः प्रारंभ करने का निर्णय लिया गया।

कोविड 19 के दौरान शासन एवं शिक्षकों ने बच्चों की शिक्षा के लिए अनेक कदम उठाये। किसी भी प्रकार से बच्चों की पढ़ाई बाधित न हो इसके बाद भी बच्चों के सीखने की संतोष जनक स्थिति नहीं रही। क्योंकि शिक्षक और छात्र के बीच परस्पर संवाद प्रत्यक्ष रूप से नहीं हुआ अतः बच्चों का विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करना अति महत्त्वपूर्ण है। इस सम्बन्ध में RTE, NEP द्वारा शालेय शिक्षा हेतु तय किए गए प्रावधान निम्नलिखित हैं -

> AIIMS के निर्देशक डॉ. रणदीप गुलेरिया ने कहा कि विद्यालय को पुनः खोलने के लिए सरकार को विचार करना चाहिए। डॉ. गुलेरिया के अनुसार विद्यालय खुलने के कारण हमारे बच्चों के लिए सिर्फ सामान्य जीवन देना ही नहीं बल्कि एक बच्चे के समग्र विकास में (शालेय शिक्षा का महत्व बहुत मायने रखता हैं, जो कि लॉक डाउन के कारण) प्रभावित हो रहा है। अतः Onlilne या अन्य वैकल्पिक माध्यमों से शिक्षण के स्थान पर स्कूल जाकर शिक्षा ग्रहण करना ज्यादा जरूरी है।

1) शिक्षा का अधिकार (Right To Education) अंतर्गत -

- RTE अनुसार अनिवार्य और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए प्राथमिक स्तर पर 200 कार्य दिवस।
- माध्यमिक स्तर पर 220 दिवस की शालेय शिक्षा को अनिवार्य बताया गया है।
- साथ ही यह निर्देशित किया गया है कि, शिक्षा ऐसी हो जो राष्ट्रीय एकता, पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता निर्भीकता का भाव उत्पन्न करें, अतः उक्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये शालेय शिक्षा बहुत महत्व रखती है।

2) नई शिक्षा नीति (New Education Policy 2020) -

- विद्यालय में विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना।
- NEP 2020 के अनुसार व्यावसायिक शिक्षा माध्यमिक कक्षाओं से पढ़ाया जाना हैं, इसलिए स्कूल की तैयारी अति आवश्यक है।
- विद्यालय प्रमुखों, शिक्षकों, विद्यार्थियों, सहयोगी स्टॉफ, माता-पिताओं और स्थानीय नागरिकों के बड़े और जीवंत समूहों के आधार पर संसाधनों का कुशल उपयोग करते हुए स्कूल तैयारी की योजना से पूरी शिक्षा व्यवस्था ऊर्जावन और समर्थ होगी।

1.2 कोविड- 19 का शिक्षक एवं विद्यार्थियों पर प्रभाव तथा विद्यार्थियों की अधिगम क्षति की प्रतिपूर्ति हेतु किए गए प्रयासों को जानना।

कोविड-19 की महामारी के कारण मार्च 2020 में लगभग 6 माह स्कूल बंद रहे एवं इस लॉक डाउन में शिक्षक भी निम्नानुसार प्रभावित हुए -

- विद्यालयों में नियमित शिक्षण की प्रक्रिया अचानक बंद हो गई।
- शिक्षकों को शिक्षण कार्य एवं मोहल्ला क्लास में विद्यार्थियों को पढ़ाना पड़ा, जिससे वो भी कोविड-19 के खतरे से डरे सहमे रहे।
- ऑनलाइन प्रशिक्षण प्राप्त करना, ऑनलाइन फीडबैक एवं अन्य आवश्यक ऑनलाइन कार्य, जिससे कुछ शिक्षक जो प्रोद्योगिकी फ्रेंडली नहीं थे उनको काफी परेशानी का सामना करना पड़ा।
- गांवों में बिजली की पूरे समय उपलब्धता न होने के कारण ऑनलाइन पढ़ने पढ़ाने एवं प्रशिक्षण प्राप्त करने में कठिनाइयाँ रही।
- शिक्षकों की डयूटी कोरोना फ्रंट लाइन वर्कर के रूप में लगी रही जिसमें वो अपना शिक्षकीय कार्य के साथ राशन वितरण, टीकाकरण अभियान आदि में डयूटी करते रहे।

कोविड काल में चुनौती-पूर्ण शिक्षण पर शिक्षक के अनुभव -

कोविड-19 काल इस सदी का अब तक का सबसे दुर्गम एवं चुनौती पूर्ण समय रहा है। इस महामारी में जहां एक ओर जन-धन की अपार हानि हुई वहीं दूसरी ओर शिक्षण कार्य भी बहुत बुरी तरह प्रभावित हुआ है, हालांकि इसकी क्षति पूर्ति हेतु विभिन्न कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। व्हाट्सएप पर RSK द्वारा भेजी गई शिक्षण सामग्रियों की लिंक मेरे द्वारा लगातार समय पर भेजी गई एवं फोन द्वारा नियमित संपर्क कर पालकों के माध्यम से विद्यार्थियों को लगातार पढ़ने हेतु प्रेरित किया गया, वे बच्चे जिनके पास एंड्रायड मोबाईल या मोबाईल की व्यवस्था ही नहीं थी उनसे उनके पड़ोसियों के या अन्य विद्यार्थियों के मोबाईल नम्बर प्राप्त कर संपर्क किया।

हमारा घर हमारा विद्यालय कार्यक्रम के अंतर्गत बच्चों से गृह संपर्क के दौरान पता चला कि DigiLEP की शिक्षण सामग्री विद्यार्थी नहीं देख पा रहे हैं, क्योंकि मेरे द्वारा सामग्री समय पर भेजी जाने के बावजूद पालक बच्चों को समय पर मोबाईल उपलब्ध नहीं कराते। वे खेत पर चले जाते हैं या अपने अन्य कामों के दौरान मोबाईल अपने साथ ले जाते थे। यहां दीक्षा एप पर लिए प्रशिक्षणों ने बहुत मदद की और कुछ पालकों को समझाने तथा विद्यार्थियों को शिक्षण हेतु मोबाईल फोन उपलब्ध कराने में सफल रहा। इसी दौरान मैंने अपने शिक्षक साथियों के साथ मोहल्ला कक्षा लगाना

प्रारंभ किया, जहां हम इन सभी विद्यार्थियों को जोड़ने का प्रयास कर रहे थे जो अभी तथा शिक्षण कार्यों में शामिल नहीं हो पाये थे। लपेट श्याम पट्ट पर तथा विभिन्न गतिविधियों के द्वारा बहुत सारे विद्यार्थियों को अब हम कोविड-19 के नियमों का पालन करते हुए शिक्षण को सफल बनाने का प्रयास कर इस गंभीर चुनौती काल में भी आगे बढ़ रहे थे। मोहल्ला कक्षाओं के दौरान व्हाट्सएप आधारित मूल्यांकन जो प्रति शनिवार सभी विद्यार्थियों को कराने की एक बड़ी चुनौती मेरे समक्ष थी। विद्यार्थियों के पास एन्ड्रायड सेट न होना, इंटरनेट की कमी तथा अन्य ग्रामों से आने वाले विद्यार्थियों तक पहुँच बनाना एक दुष्कर कार्य था। ऐसे समय में सबसे पहले तो उन विद्यार्थियों को चिंहित किया गया जिनके पास एन्ड्रायड फोन व इंटरनेट दोनों रहते हैं, इसके बाद विद्यार्थियों का रजिस्ट्रेशन उनके मोबाईल में कराया तथा जिनके मोबाईल आधारित मूल्यांकन का प्रतिशत 50 प्रतिशत से ज्यादा करने में शिक्षण में आई इन चुनौतियों का सामना करते-करते सीखा कि काम मुश्किल अवश्य होते हैं, लेकिन करने में यदि जुट जाएं तो नामुमकिन नहीं होते। वर्तमान समय में बच्चे धीरे-धीरे ही सही, अध्ययन कार्य में पुनः रूचि लेने लगे हैं।

गतिविधि

कोविड काल के दौरान बच्चों को पढ़ाने में आपके क्या अनुभव रहे? संक्षेप में वर्णन कीजिए।

जवाब लिखें

....

....

....

भाग - 2 :

हितधारकों से संवाद और उनको प्रेरित करना तथा विद्यालय को पुनः खोलने में विभिन्न चुनौतियों को केस स्टडी के माध्यम से समझना

उद्देश्य :

1. कोविड –19 की परिस्थिति में गाइडलाइन के अनुसार स्कूल संचालन की तैयारी को सुनिश्चित करना।
2. हितधारकों से संवाद और उनको प्रेरित करना।
3. विद्यालय को पुनः खोलने की प्रकिया में विभिन्न चुनौतियों को जानना

2.1 कोविड –19 की परिस्थिति में गाइडलाइन के अनुसार स्कूल संचालन की तैयारी को सुनिश्चित करना

स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा जारी गाइडलाइन-

स्वास्थ्य मंत्रालय ने स्कूल फिर से खोलने के लिए एस ओ पी (Standard Operating Procedure) जारी किया है। इस दस्तावेज में विद्यार्थियों के लिए कक्षाएं आयोजित करने के लिए जरूरी उपायों और दिशा निर्देशों का विवरण है। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा जारी गाइडलाइन के अनुसार-

स्कूलों को टीचिंग और नॉन-टीचिंग स्टॉफ के लिए 50 प्रतिशत क्षमता के हिसाब से खोलने की अनुमति होगी। साथ ही, छात्रों को स्वैच्छिक आधार पर स्कूल जाने की अनुमति दी जाएगी। मंत्रालय ने आगे कहा है कि स्कूलों को यह सुनिश्चित करना होगा कि इस अवधि में ऑनलाइन कक्षाएं और वर्चुअल सेशन जारी रहें और उन्हें प्रोत्साहित किया जाए। इसके अलावा एस ओ पी में यह भी कहा गया, कि छात्रों को स्कूल जाने के लिए माता-पिता की सहमति के तहत अनुमति दी जाएगी।

विद्यालय प्रवेश के लिए एस ओ पी –

- उन्ही लोगों को परिसर में आने की अनुमति दी गई है, जिन्हें कोविड 19 टीकाकरण का सर्टिफिकेट मिला है।
- कंटेनमेंट जोन में स्टूडेंट्स/टीचर और स्टॉफ को स्कूल जाने की अनुमति नहीं है। छात्रों और शिक्षकों को सलाह दी जाती है कि वे स्कूल जाते समय कंटेनमेंट ज़ोन से न जाएं।
- लॉकडाउन के दौरान जिन स्कूलों को क्वरंटीन सेंटर के तौर पर इस्तेमाल किया गया था उन्हें WHO द्वारा जारी SOPs के अनुसार ठीक से सैनिटाइज और अच्छे तरीके से साफ किया जाना चाहिए।
- सामान्य निवारक उपाय जैसे फिजिकल डिस्टेंसिंग, फेस कवर / मास्क का अनिवार्य उपयोग हो, बार-बार हाथ धोना और स्वास्थ्य की सेल्फ मॉनिटरिंग करना।
- श्वसन लेबल का सख्ती से पालन किया जाए। इसमें टिश्यू / रूमाल / फ्लेक्स कोहनी के साथ खाँसी / छींकने के दौरान किसी के मुंह और नाक को ढंकने का सख्त प्रैक्टिस शामिल है और उपयोग किए गए टिश्यू को ठीक

से फेंके। इसके साथ किसी को भी थूकना सख्त वर्जित है।

- दिशानिर्देश में स्कूल परिसर के भीतर खुले स्थानों पर क्लास संचालित करने के सुझाव दिए गए हैं। मौसम को देखते हुए ऐसा कर सकते हैं।
- एयर-कंडीशनिंग / वेंटिलेशन के लिए, सीपीडब्ल्यूडी के दिशानिर्देशों का पालन किया जाएगा जो इस बात पर जोर देता है कि सभी एयर कंडीशनिंग उपकरणों की तापमान सेटिंग 24-30^{o} C की सीमा में होनी चाहिए। सापेक्ष आर्द्रता 40-70 प्रतिशत, सेवन की सीमा में होनी चाहिए। ताजी हवा जितना संभव हो उतना होना चाहिए और क्रॉस वेंटिलेशन पर्याप्त होना चाहिए।
- शालेय गतिविधियाँ को फिर से शुरू करने से पहले, प्रयोगशालाओं, अन्य सामान्य उपयोगिता क्षेत्रों सहित शिक्षण / प्रदर्शन आदि को सही तरीके से साफ किया जाना चाहिए। अक्सर स्पर्श की गई सतहों पर विशेष ध्यान देने के साथ 1 प्रतिशत सोडियम हाइपोक्लोराइट घोल के साथ साफ किया जाएगा।
- प्रवेश द्वार पर हाथ स्वच्छता (सैनिटाइज़र डिस्पेंसर) और थर्मल स्क्रीनिंग प्रावधान अनिवार्य है। अगर संभव हो तो स्कूल में एंट्री और एग्जिट के लिए कई फाटक/ अलग द्वार उपयोग प्रदान करने की सलाह दी गई है। विद्यालय में विजिटर्स के सख्त विनियमन को बनाए रखा जाना चाहिए।
- रोगसूचक व्यक्ति - शिक्षकों / कर्मचारियों / छात्रों को स्कूलों के अंदर नहीं जाने दिया जाएगा और उन्हें निकटतम स्वास्थ्य केंद्र में भेजा जाएगा।

कक्षाएं संचालित करने के लिए एसओपी

- कुर्सियों, डेस्क आदि के बीच 6 फीट की दूरी सुनिश्चित करने के लिए बैठने की व्यवस्था।
- कक्षा के परिसर की पर्याप्त फिजिकल डिस्टेंस और कीटाणुशोधन के लिए अनुमति देने के लिए, अलग-अलग समय स्लॉट के साथ गाइडेंस एक्टिविटी पर अधिक ध्यान रखने की सलाह दी गई है।
- टीचिंग फैकल्टी यह सुनिश्चित करेगा कि वे स्वयं और विद्यार्थियों की टीचिंग / एक्टिविटी के संचालन के दौरान मास्क पहनते हैं।
- विद्यार्थियों के बीच नोटबुक, पेन / पेंसिल, इरेज़र, पानी की बोतल आदि जैसी वस्तुओं को शेयर करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।
- सामान्य क्षेत्रों में एक्टिविटी को उचित दूरी बनाए रखते हुए संचालित करना होगा।
- एक्टिविटी जैसे असेंबली, खेल एक्टिविटी आदि जो अधिक भीड़ का कारण बन सकती हैं, उन्हें इस समय के लिए अनुमति नहीं दी जाएगी।
- इसके अलावा स्विमिंग पूल (जहां भी लागू हो), स्कूल कैफेटेरिया बंद रहेंगे।

इन गाइडलाइन्स के अलावा, एसओपी उन प्रक्रियाओं को भी सूचीबद्ध करता है जिनका किसी विद्यार्थियों या शिक्षक / कर्मचारियों के स्कूलों में सूचक होने की स्थिति में पालन किया जाना है। स्कूलों को पर्याप्त व्यक्तिगत सुरक्षा उपायों जैसे मास्क और गलव्स, सैनिटाइजर आदि की व्यवस्था करने का भी निर्देश दिया गया है। अल्कोहल वाइप्स या 1 प्रतिशत सोडियम हाइपोक्लोराइट सॉल्यूशंस और डिस्पोजेबल पेपर टॉवल आदि।

2.2 हितधारकों से संवाद और उनको प्रेरित करना

(A) समुदाय से संवाद

विद्यालय तैयारी प्रक्रिया में समुदाय सहभागिता के निम्नलिखित लाभ होंगे -

- समुदाय सहभागिता से विद्यालय पुनः खोलने में स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां आने पर स्थानीय समुदाय के सहयोग से समाधान किया जा सकता है।

विद्यालय तैयारी की सूचना निम्नानुसार सुनिश्चित करना -

- विद्यालयों को तैयारी हेतु दूरसंचार के माध्यम जैसे Radio, TV, Mobil Phone इत्यादि द्वारा प्रचार प्रसार किया जाए।
- समुदाय में किसी भी प्रकार की भ्रांतियां न फैले इस बात का भी विशेष ध्यान देना चाहिए और मुख्य संदेश कोरोना के प्रति हमारे भय को दूर करने में सहायक होना चाहिए।
- समुदाय को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनके आसपास की परिस्थितियां और परिवेश के मुताबिक व क्षेत्र के सम्मानीय व्यक्तियों की सलाह को ध्यान में रखते हुए विद्यालय पुनः खोलने के प्रचार प्रसार करना चाहिए।

(B) अभिभावकों से संवाद -

शिक्षिका द्वारा अभिभावकों को बताया गया कि कोविड-19 की गाइड लाइन के अनुसार विद्यालय को पुनः खोला जा रहा है एवं निम्न व्यवस्था की गई है जैसे -

- पूरे स्कूल भवन का सेनेटाईजेशन किया गया है।
- 50 प्रतिशत क्षमता के साथ विद्यार्थियों की बैठक व्यवस्था रखी है।
- विद्यार्थियों को लंच लेकर भेजिएगा। मध्यान्ह भोजन का सूखा राशन दिया जा रहा है।
- कोविड -19 के सुरक्षा साधनों को स्वयं रखकर उचित उपयोग करे और सामाजिक दूरी का ध्यान रखे।

शिक्षिका ने अभिभावकों को उपरोक्त जानकारी देकर विद्यार्थियों को स्कूल भेजने के लिए प्रेरित किया।

(C) सरपंच/ग्राम के माननीय व्यक्तियों से संवाद -

शिक्षिका द्वारा स्वास्थ्य विभाग द्वारा जारी गाइडलाइन की जानकारी सरपंच एवं पंचायत सदस्यों को दी गई। सरपंच जी ने बताया कि जगह-जगह स्कूल खुलने की तैयारी हो रही है। पंचायत के ग्रुप से स्कूल खुलने के आदेश की जानकारी मिली है। जिसकी गांव में डोडी (डुग्गी) पिटवाकर पूरे गांव को खबर कर दी है। शिक्षिका द्वारा पंचायत से पालकों को प्रोत्साहित करने का भी आग्रह किया गया।

2.3 विद्यालय को पुनः खोलने की प्रकिया में विभिन्न चुनौतियों को जानना

विद्यालय को पुनः खोलने की प्रक्रिया में विद्यालय प्रमुख के समक्ष आने वाली चुनौतियों को हम एक केस स्टडी के माध्यम से समझेंगे -

केस स्टडी – भाग 1

झीलों की नगरी भोपाल के सैन्य क्षेत्र में हरे भरे वृक्षों और हरियाली के बीच स्थित है, शा.मा. विद्यालय सुल्तानियां लाईन शाहजहानाबाद, जिसमें 07 शिक्षिका कार्यरत हैं एवं 103 विद्यार्थी कक्षा 1 से 8 तक अध्ययनरत हैं। इस स्कूल की स्थापना सैनिकों के विद्यार्थियों को शिक्षा देने हेतु की गई थी। सेना द्वारा स्वयं का स्कूल बना लिए जाने के कारण वर्तमान में इस विद्यालय में सैन्य क्षेत्र से लगी गरीब बस्ती के बच्चे ही अध्ययनरत हैं। प्रधानाध्यापिका श्रीमती सुनीता गौड़ के अथक प्रयासों से राज्य सरकार को राशि हेतु तथा सैन्य अधिकारियों को मरम्मत हेतु तैयार करने में सफलता प्राप्त की। फलस्वरूप जीर्ण-शीर्ण पुराने भवन की दीवारें, फाल्स सीलिंग, फर्श, शौचालय आदि की मरम्मत का कार्य शुरू हुआ।

विद्यालय में उपरोक्त मरम्मत का कार्य चल ही रहा था एवं साथ-साथ प्रधानाध्यापिका के नेतृत्व में साथी शिक्षकों एवं विद्यार्थियों द्वारा विद्यालय की व्यवस्थाएं एवं साज-सज्जा का कार्य भी शुरू किया। तभी Covid-19 के कारण लॉकडाउन लग गया, जिसके कारण विद्यालय लंबे समय तक बंद रहा। कोविड-19 का वेक्सीनेशन आने एवं शासन के सघन टीकाकरण अभियान से शासन स्तर से शैक्षक गतिवधियां को क्रमशः संचालित करने के निर्देश दिये गये, जैसे ही प्रधानाध्यापिका एवं शिक्षिका विद्यालय पहुंचे, सैन्य क्षेत्र में बाहरी व्यक्ति का प्रवेश Covid-19 के कारण वर्जित था।

इस बड़ी चुनौती के लिये प्रधानाध्यापिका द्वारा सेना के कमांडर से विद्यार्थियों की शिक्षा एवं भविष्य पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करने हेतु आग्रह किया। तब जाकर सेना ने अपने चेक पोस्ट पर विद्यार्थियों की सूची रखी एवं सूची अनुसार ही स्टाफ एवं विद्यार्थियों को सैन्य क्षेत्र में आने की अनुमति दी। प्रधानाध्यापिका द्वारा विद्यार्थियों को अभ्यास पुस्तक, राशन आदि स्वयं की कार में रखकर मोहल्ले में जाकर बांटा।

दूसरी चुनौती यह थी कि विद्यालय लंबे समय तक बंद रहने के कारण विद्यालय परिसर में घुटनों तक घास झाड़ियां उग आई थीं। सैन्य क्षेत्र होने के कारण बसाहट काफी दूर-दूर होने से विद्यालय परिसर एवं भवन में सांप एवं जहरीले जंतुओं द्वारा डेरा जमा लिया था। ऐसी स्थिति में मजदूरों ने भी घास झाड़ियाँ काटने से मना कर दिया था।

प्रधानाध्यापिका ने सेना कमांडर से पुनः अनुरोध करके मशीन द्वारा घास कटवा कर परिसर को साफ करवाया। भवन में जहां-जहां मरम्मत का काम छूट गया था, लंबी अवधि तक यूं ही छूटने के कारण फर्श के टाईल्स, फाल्स सीलिंग उखड़ गये थे, इन सब टूट-फूट की मरम्मत कार्य को सुनिश्चित किया गया। स्कूल तैयारी की सूचना के बावजूद अभिभावक विद्यार्थियों को विद्यालय नहीं भेज रहे थे। विद्यालय परिवार द्वारा अभिभावकों एवं विद्यार्थियों को मनोवैज्ञानिक रूप से विद्यालय आने हेतु तैयार किया एवं विश्वास दिलाया कि विद्यालय का सुरक्षित शिक्षण वातावरण है। आप कोविड सुरक्षा के उपाय अपना कर विद्यार्थियों को शिक्षण हेतु विद्यालय भेज सकते हैं। इतने लंबे भय एवं आशंका के दौर से गुजर कर विद्यार्थियों को विद्यालय में एकदम से सिर्फ पढ़ाया जाना उचित नहीं था। अतः उनके लिए विद्यालय को और विद्यालय में अन्य गतिविधियों को आकर्षक बनाने की योजना बनाई।

एक चुनौती तो भी ये रही कि कोविड-19 के कारण लॉकडाउन हुआ। परिणामस्वरूप बहुत सारे अभिभावकों की आर्थिक स्थिति बहुत बिगड़ गई, जिससे उसका सीधा असर विद्यार्थियों की पढ़ाई पर पड़ रहा है। अभिभावक अन्य व्यवस्था को प्राथमिकता दे रहे हैं। विद्यार्थियों को विद्यालय भेजने में रूचि नहीं ले रहे, क्योंकि बच्चें घर में रहने में तो घर की निगरानी एवं छोटे मोटे काम भी कर लेते थे।

विद्यालय परिसर की साफ सफाई करवाना, कक्षाएं व्यवस्थित करना, स्वच्छ पानी, शौचालय, खेल का मैदान आदि को उपयोग हेतु तैयार करना भी एक चुनौती ही रही है।

पूरे लॉकडाउन समय अवधि में शिक्षिका भी विद्यार्थियों को WhatsApp आधारित शिक्षण, राशन, वितरण मोहल्ला क्लास, कोविड ड्यूटी आदि में लगे रहे । पूरे समय मानसिक रूप से जुड़े रहे। अब उनके बालकों को विद्यालय में भेजने हेतु अभिभावकों को प्ररित करने के लिये घर-घर सर्वे में लगाया एवं अपनी-अपनी कक्षा के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्तर की जानकारियां को अद्यतन करने का कार्य प्रशिक्षण प्लान आदि कार्य किए।

सबसे पहले, स्वयं को भी मानसिक रूप से तैयार करना, कक्षा में इतने बच्चे आएंगे क्या वो कोविड-19 संक्रमण के सुरक्षा मापदण्डों का पालन करेगें, उनकी स्वच्छता आदतों को पालन करना, विद्यालय में पढ़ते एवं लंच के समय क्या सोशल डिस्टेन्स को ध्यान में रख सकेगें। इतने दिन बच्चे घर में अपनी मर्जी से पढ़ते रहे। बहुत से बच्चे तो पढाई में बहुत पिछड़ गये हैं, क्योंकि बच्चे भी घरों मे डरे सहमे रहे। वो अपनी मूल पढ़ाई में ज्यादा ध्यान नहीं दे पाये। उनकी अधिगम क्षति हुई है। साथ ही उनको अगली कक्षा में प्रोन्नत भी कर दिया। विद्यार्थियों का कक्षा अनुरूप शिक्षण एवं अन्य शासकीय उत्तरदायित्वों के मध्य समन्वय करना चुनौती है। विद्यार्थियों को विद्यालय मे पुनः भेजने हेतु अभिभावकों को प्रेरित करने के लिये घर घर सम्पर्क करना भी चुनौती रही है।

विचारणीय प्रश्न

प्र.1. एक प्रधान अध्यापक के रूप मे लम्बे समय से बंद अपने विद्यालय को पुनः खोलने हेतु आप क्या तैयारी करेगें?

....

....

....

प्र.2. विद्यालय के शिक्षकों को विद्यार्थियों के साथ भावनात्मक सपोर्ट हेतु किस तरह प्रेरित करेगें?

....

....

....

प्र.3. विद्यार्थियों को कक्षा अनुरूप पढ़ाई के स्तर पर लाने हेतु आपकी क्या योजना होगी?

....

....

....

प्र.4. विद्यार्थियों को पुनः विद्यालय में भेजने में अभिभावकों के समक्ष आने वाली परेशानियों को लिखिए?

....

....

....

भाग - 3 :
विद्यालय को पुनः खोलने की चुनौतियों का समाधान एवं सीखने-सिखाने की रणनीति तैयार करना

उद्देश्य :

1. विद्यालय को पुनः खोलने की चुनौतियों के समाधान हेतु किए गए प्रयास।
2. सीखने सिखाने की रणनीति तैयार करना।
3. शिक्षक एवं विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के सुदृढ़ीकरण हेतु किए जाने वाले प्रयास।

3.1 विद्यालय को पुनः खोलने की चुनौतियों के समाधान हेतु किए गए प्रयास –

विद्यालय को पुनः खोलने की चुनौतियों के समाधान हेतु किए गए प्रयास को केस स्टडी के माध्यम से समझेंगे -

केस स्टडी भाग – 2

विद्यालय को पुनः खोलने की चुनौतियों के समाधान हेतु किए गए प्रयास

केस स्टडी के भाग 1 में देखा कि प्रधान अध्यापक को विद्यालय तैयारी में किन-किन चुनौती का सामना करना पड़ा। प्रधानाध्यापिका के कुशल नेतृत्व एवं जुझारू कार्य शैली से विद्यालय की केस स्टडी के प्रथम भाग में उल्लेखित चुनौती का किस तरह समाधान कर विद्यालय तैयारी हेतु प्रयास इस भाग में समझेंगे -

प्रधानाध्यापिका ने सबसे पहले विद्यालय में भौतिक सुविधा एवं मरम्मत को गति प्रदान की है। विद्यालय परिवार ने हमारा घर हमारा विद्यालय अन्तर्गत घर-घर सर्वे के माध्यम से अभिभावक और विद्यार्थियों के मन में कोरोना के भय को निकाला एवं पठन-पाठन हेतु सुरक्षित शैक्षणिक वातावतरण के प्रति अभिभावकों को विश्वास दिलाया, फलस्वरूप अभिभावक विद्यार्थियों को विद्यालय भेजने में सहमत हुए। विद्यालय में Covid सुरक्षा मानकों को अपना कर संक्षिप्त प्रार्थना उपरांत PT करवाना सुनिश्चित किया। विद्यालय पुनः आरंभ करने में विद्यार्थियों के साथ भावनात्मक रूप से संबल प्रदान करने हेतु समस्त शिक्षकों को सीएम- राइज के मानसिक स्वास्थ्य प्रशिक्षण शृंखला को शिक्षिका डायरी से पढ़कर विद्यार्थियों की मानसिक स्वास्थ्य एवं परामर्श (Mental Health & Counselling) अनुसार व्यवहार किया गया। गरीबी के कारण हताश हुए अभिभावकों द्वारा अपने विद्यार्थियों को बाल श्रमिक के रूप में काम पर न भेजने हेतु जागरूक किया कि बाल श्रमिक बच्चे सामान्य रूप से शारीरिक तथा बौद्धिक दृष्टिकोण से पिछड़ जाते हैं, जिससे भविष्य में अच्छे रोजगार प्राप्त करने से वंचित रह जाते हैं।

शैक्षणिक उपलब्धि बढ़ाने हेतु प्रधानाध्यापिका द्वारा समय सारणी के साथ-साथ समस्त स्टाफ का क्रियाकलाप कैलेण्डर बनाया, जिसमें पढ़ने-पढ़ाने, TLM निर्माण, विद्यार्थियों संपर्क आदि कार्यों का ब्यौरा अंकित करने हेतु बनाया गया, जिसमें शिक्षिका के छोटे से छोटे प्रयास से लेकर बड़ी उपलब्धि को स्थान दिया।

कोरोना का संक्रमण सबसे ज्यादा स्वच्छता की आदतों पर निर्भर करता है, अतः विद्यालय में विद्यार्थियों के प्रवेश करते

ही तापमान लेना एवं हाथ सेनेटाईज करवाने की व्यवस्था सुनिश्चित की। बच्चे विद्यालय अवधि में हाथ धो सकें इस हेतु सुविधा युक्त हाथ धुलाई स्थान (Hand wash Station) स्थापित किया गया। शिक्षकों द्वारा प्रत्येक विद्यार्थियों को हाथ धोने के स्टेप सिखाये गये। विद्यालय में सेनेटाईजर उपलब्ध कराया। विद्यार्थियों द्वारा बार-बार आंख, नाक, मुंह पर हाथ लगाने की आदत को सुधारने हेतु प्रेरित किया गया।

विद्यालय वातावरण को भय मुक्त एवं आकर्षक रूप देने हेतु विद्यार्थियों से रचनात्मक एवं रूचिकर गतिविधियों के अन्तर्गत स्वच्छता अभियान के पोस्टर बनवाना, बागवानी द्वारा विज्ञान शिक्षण एवं विद्यालय में जुड़ाव हेतु कार्य करवाया, विद्यार्थियों ने पत्तियों से आकर्षक कलाकृति बनाई इससे विद्यार्थियों में प्रकृति के संरक्षण हेतु संवेदन शीलता विकसित हुई। इन सब गतिविधियों में विद्यार्थियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया एवं कोविड-19 के भय से ध्यान हटा।

शिक्षण की सबसे महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक गतिविधि पाठ्यपुस्तक एवं अन्य पुस्तकों को पढ़ना लिखना है। इस हेतु विद्यार्थियों में पाठय पुस्तकों के प्रति रूचि पैदा करना एवं पढ़ने की आदतों को प्रोत्साहित करने, शब्द ज्ञान बढ़ाने, कल्पना शक्ति बढ़ाने आदि के लिए पुस्तकालय की पुस्तकें पढ़ने हेतु प्रेरित किया।

सर्वविदित है कि लॉकडाउन के कारण बच्चे अपनी मूल पढ़ाई के स्तर से नीचे आ गए हैं और उनको अगली कक्षा में प्रोन्नत भी कर दिया गया है। जिससे उनके अधिगम की प्रक्रिया में एक अन्तराल आ गया है। साथ ही साथ अधिगम की क्षति हुई हैं जिसको दूर करने के लिए दक्षता उन्नयन, दक्षता उन्नयन बूस्टर कक्षाओं का आयोजन, नेस की तैयारी, माक टेस्ट, साप्ताहिक अभ्यास, प्रश्न के अनुसार अभ्यास सुनिश्चित एवं प्रयास अभ्यास पुस्तिका में अभ्यास कार्य आदि द्वारा शैक्षणिक व्यवस्था सुनिश्चित की गयी। इसके साथ ही विद्यार्थियों को घर में भी पढ़ने हेतु अभ्यास प्रश्न देकर प्रेरित किया जा रहा हैं। राज्य शिक्षा केंद्र से प्राप्त अकादमिक योजना अनुसार शिक्षण व्यवस्था सुनिश्चित की गयी है।

प्रधानाध्यापिका एवं शिक्षिका द्वारा कक्षा शिक्षण हेतु विषयवार अतिरिक्त प्रयास निम्नानुसार किये गये –

कक्षा शिक्षण को रुचिकर एवं आनंददायी बनाने हेतु प्रधानाध्यापिका द्वारा विभिन्न अवधारणाओं पर आधारित शिक्षण अधिगम सामग्री का निर्माण किया गया। इसकी झलक हम वीडियो में देखेंगे-

गतिविधि

प्रः1 एक प्रधान अध्यापक के रूप में लंबे समय से बंद विद्यालय को पुनः खोलने हेतु कोई 4 तैयारियां लिखिए?

....

....

....

प्र:2 विद्यालय के शिक्षकों को विद्यार्थियों के साथ भावनात्मक रूप से संबल हेतु किस तरह प्रेरित करेंगे?

....

....

....

प्र:3 विद्यार्थियों में अधिगम क्षति को कम करने हेतु आपकी क्या योजना होगी?

....

....

....

प्र:4 विद्यार्थियों को पुनः विद्यालय में भेजने में अभिभावकों के समझ आने वाली सामान्य कठिनाइयों को लिखें।

....

....

....

विद्यालयों को भौतिक परिवेश के अनुसार व्यवस्थित करना –

- विद्यालय प्रमुख के द्वारा अभिभावकों में Safe Learning वातावरण को realise कराने हेतु SOP के अनुसार विद्यालय परिसर की संपूर्ण साफ सफाई, सेनेटाईजेशन व्यवस्था को आवश्यक सुनिश्चित करना। विद्यार्थियों के साथ मिलकर Covid-19 के Sop अनुसार कुछ नियम बताकर विद्यालय परिसर में कई स्थानों पर चस्पा करना। विद्यालय में Hand Wash साबुन तथा स्वच्छ पानी की उपलब्धता बनाये रखना एवं Hand Wash station बनाना।

विद्यार्थियों एवं अन्य लोगों के विद्यालय परिसर में प्रवेश करते समय वे मास्क पहने हों, की निगरानी करना तथा बुखार व खांसी की जाँच (Screening) की व्यवस्था रखना व विद्यार्थियों की यदि बुखार होने की जानकारी सामने आये तो उनके अभिभावकों को सूचना देना साथ ही उन्हें निकट के स्वास्थ्य केन्द्र में ले जाने की सलाह देना। विद्यालय की प्रत्येक कक्षा में 50 प्रतिशत विद्यार्थियों उपस्थिति के अनुसार समय सारणी का निर्माण एवं सामाजिक दूरी (Social Distancing) के साथ बैठक व्यवस्था सुनिश्चित करना। व्यवस्थाओं हेतु शिक्षण एवं बाल केबिनेट के सदस्यों की टीम बनाना।

- स्कूल बंद रहने के कारण विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि जैसे पाठ्यपुस्तक पढ़ना, संवाद लिखना आदि के स्तरों पर गिरावट दर्ज की गई। बेस लाइन टेस्ट (Base line test) के आधार पर 8वीं कक्षा तक के विद्यार्थियों के दो समूह-अंकुर व तरूण बनाना। शासन की नीति अनुसार पाठ्यक्रम को 40 प्रतिशत कम व सरल किया गया। उसके अनुसार पाठ्यपुस्तकों से लर्निंग आउट-कम्स (Learning outcomes) को चिंहित करना एवं कक्षाएं एक साथ संचालित न कर थोड़ा अंतराल से लगाना। शैक्षणिक गतिविधियों को लचीलापन अपना कर संचालित करना।

लॉकडाउन के कारण विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति उदासीनता दर्ज के साथ ही, Learning gap में उसके सुधार हेतु दक्षता उन्नयन एवं ब्रिज कोर्स, दक्षता उन्नयन बूस्टर, नेस (NAS) की तैयारी सुनिश्चित करना।

विद्यालय में विद्यार्थियों को वर्तमान दिशा-निर्देशों के अनुसार विद्यालय में मध्यान्ह भोजन की व्यवस्था को स्थगित किया गया है, इसके स्थान पर विद्यार्थियों को सूखा राशन वितरित किया गया है।

विद्यार्थियों में कक्षा शिक्षण के अभाव के कारण कक्षा अनुशासन प्रभावित हुआ है।

अतिरिक्त तैयारियों के जानने योग्य बिंदु -

- बीमार पड़ने पर विद्यार्थियों और कर्मचारियों को घर पर रहने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए उपस्थिति और चिकित्सा अवकाश की लचीली नीतियां बनाई और लागू की जा सकती हैं।
- यदि कोई कोविड का संदिग्ध मामला संज्ञान में आता है तो प्रोटोकॉल के अनुसार कार्रवाई करना।
- विद्यार्थियों को पर्यावरण, भाषा, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और कला विषयों को अध्यापन कराने के दौरान विभिन्न अवधारणाओं को एकीकृत करके कोविड के बारे में संवेदन शीलता विकसित करना।
- शिक्षकों और विद्यार्थियों की रूचि बढ़ाने के लिए डिजिटल और ऑन लाईन प्रशिक्षण जैसे CM-Rise, NI-SHTHA, प्रशिक्षण आदि की निर्देशित गतिविधियों को संपन्न कराना।
- शिक्षार्थियों द्वारा अभ्यास लक्ष्यों की प्राप्ति सुनिश्चित करने के लिए रचनात्मक मूल्यांकन (Formetive Assesment) करना। शैक्षणिक उपलब्धि अनुसार विषय कक्षा एवं विषयवार कक्षाएं।
- विद्यालय त्यागी विद्यार्थियों की उपस्थिति सुनिश्चित करने हेतु स्कूल वापसी अभियान या हम नहीं रूकेंगे, कार्यक्रम संचालित करना।

3.2 सीखने सिखाने की रणनीति तैयार करना

सीखने सिखाने की रणनीति के चरण –

1. अधोसंरचनात्मक व्यवस्था
2. अनंदायी एवं सुरक्षित वातावरण
3. गतिविधि आधारित रोचक कक्षा शिक्षण योजना
4. सीखने का वातावरण एवं विद्यार्थियों की सहभागिता
5. समुदाय, पालक शिक्षक संघ एवं समस्त हितधारकों के साथ समय समय पर विद्यार्थियों की प्रगति को साझा करना

3.3 शिक्षक एवं विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के सुदृढ़ीकरण हेतु किए जाने वाले प्रयास –

कोविड- 19 के कारण विद्यालय लंबे समय तक बंद रहे, इस दौरान शिक्षक एवं विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति भी काफी प्रभावित हुई है। शिक्षक स्वयं तथा विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को करने हेतु CM RISE के प्रशिक्षण का पुनः अध्ययन कर उक्त हेतु उसका उपयोग करेंगे-

1. मानसिक स्वास्थ्य प्रशिक्षण शृंखला भाग-1, भाग-2, भाग-3

2. बच्चों का मानसिक स्वास्थ्य प्रशिक्षण शृंखला भाग-1, भाग-2, भाग-3, भाग-4

विद्यालय को को पुनः खोलने में आने वाली चुनौतियां एवं उनके समाधान –

क्र.	चुनौतियां	समाधान हेतु उठाए गए कदम
1.	कोरोना की तीसरी लहर की आशंका के बीच अभिभावकों को उनके विद्यार्थियों को विद्यालय भेजने हेतु मानसिक तौर पर तैयार करना।	विद्यालय प्रमुख एवं शिक्षकों द्वारा यह कार्य घर-घर संपर्क एवं मो/वाटसएप सन्देश द्वारा प्रेरित करना।
2.	विद्यालयों, शिक्षा के महत्व को अभिभावकों द्वारा न समझाना।	गृह संपर्क द्वारा/ मोहल्ला कक्षा द्वारा स्कूल की शिक्षा के महत्व को समझाना कोविड गाईड लाईन का कैसे पालन करना है, समझाना है।
3.	अभिभावकों द्वारा विद्यार्थियों को पैतृक कार्य एवं घर के अन्य कार्य में संलग्न रखना।	विद्यार्थियों को पैतृक कार्य एवं पढ़ाई के मध्य संतुलन स्थापित करने हेतु प्रेरित करना।
4.	अधिगम क्षति को कम करना।	विद्यार्थियों को पूर्व कक्षा के अनुसार शिक्षण कराना तथा उन में विश्वास जगाना आदि।
5.	परम्परागत शिक्षण के तरीकों को आकर्षक बनाना।	प्रधान अध्यापक एवं शिक्षकों द्वारा स्वच्छता अभियान, डर को दूर करना, बागवानी, पुस्तक का जिज्ञासा के रूप में उपयोग, TLM बनाना।

आपके विचार में

1. कोविड-19 महामारी के कारण स्कूल बंद होने पर आपको शिक्षण कार्य में कोन-कौन सी चुनौतियों का सामना करना पड़ा ?

....

....

....

2. एक प्रधानाध्यापक होने के नाते विद्यालय (sop) की तैयारी हेतु आपके क्या उत्तरदायित्व हो सकते हैं ? कोई तीन उत्तरदायित्वों को लिखिए।

....

....

....

बच्चों की शैक्षणिक संलग्नता और अधिगम स्तर को बनाये रखना महत्त्वपूर्ण है। विद्यालयों के वातावरण में बच्चों को गणित विज्ञान, भाषा व अन्य विषयों के साथ -साथ सामाजिक संबंधों और परस्पर व्यवहार करते हुए एक अच्छे नागरिक बनने की शिक्षा भी मिलती है, इसलिए बच्चों का विद्यालय से जुड़े रहना जरूरी है। समस्त पहलुओं को ध्यान में रखते हुए बच्चों के लिए सुरक्षात्मक वातावरण प्रदान करना होगा और सभी हितधारकों के सहयोग से विद्यालय को पुनः खोलकर साथ ही अधिगम की उत्तम रणनीतियों के द्वारा विद्यालयों का पुनः संचालन करना होगा।

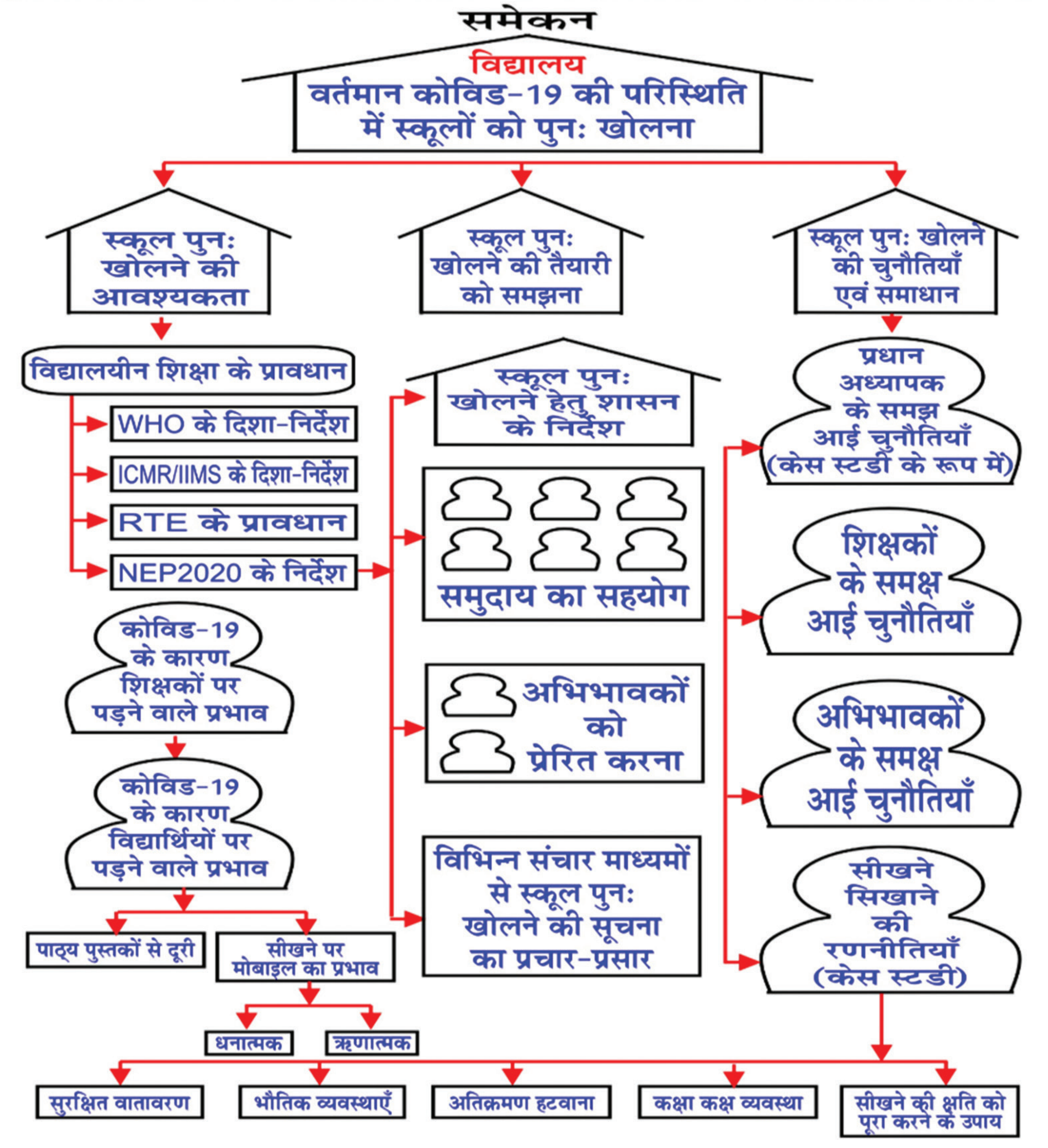

सन्दर्भ सूची

- https://www.tsteachers.in/2020/06/ncert-guidelines-recomondations-to-reopen-schools-due-to-corona-covid19.html
- https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/SOP_Guidelines_for_reopening_schools.pdf
- https://timesofindia.indiatimes.com/city/bengaluru/school-reopening-parents-reluctant-institutions-in-bengaluru-opt-to-wait/articleshow/87269112.cms
- https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/SOP_Guidelines_for_reopening_schools.pdf
- https://www.momjunction.com/hindi/bacho-ko-mobile-se-nuksan-hanikarak-kaise-dur-rakhe/
- https://www.shikshaniti.com/2020/08/standards-for-schooling-and-certification.html

---

लेखक का नाम
अंजुम आरा
निशी शर्मा
डाइट भोपाल, म.प्र.

मेंटर/ एक्सपर्ट का नाम
हरीश कुमार मारण
प्रभारी प्रधानाध्यापक
शासकीय माध्यमिक शाला, रतनपुर सड़क, भोपाल
जिला - भोपाल, म.प्र.
मोबाइल- +91 9893553807
ई मेल- harishkumarmaran@gmail.com

❑ ❑ ❑

स्कूल लीडरशिप अकादमी
मध्यप्रदेश

यूनिसेफ
मध्यप्रदेश